Compendium for the 3rd International Sustainable Development Goals (SDGs) Conference, 25th-27th February 2024 at Chitrakoot, Madhya Pradesh, India

With the Support of the
Government of Madhya Pradesh; and
The Ministry of Panchayati Raj
& Rural Development,
Government of Madhya Pradesh.

WORLD SDG FORUM

Deendayal Research Institute
Arogyadham Campus
Chitrakoot, District Satna. M.P. 485334
Email: info@dri.org.in Website: https://www.dri.org.in
https://sdginterventions.org/

मोदी जी की गारंटी

यानी गारंटी पूरी होने की गारंटी

"हर संकल्प पूरा करने को प्रतिबद्ध" - डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश शासन

मध्यप्रदेश संकल्प पत्र 2023 में उल्लेखित कुछ प्रमुख संकल्प

सशक्त नारी
- पात्र बहनों को आर्थिक सहायता एवं पक्का आवास
- 15 लाख महिलाओं को लखपति योजना में कौशल प्रशिक्षण देकर बनायेंगे लखपति
- लाड़ली लक्ष्मियों को 21 वर्ष तक कुल ₹ 2 लाख
- पात्र बहनों को ₹ 450 में गैस सिलेण्डर
- बीपीएल परिवार की बेटियों को केजी से पीजी तक मुफ्त शिक्षा

जनजातीय कल्याण
- ₹ 3 लाख करोड़ से जनजातीय समुदाय का सशक्तिकरण
- तेंदूपत्ता संग्रहण दर बढ़कर होगी ₹ 4,000 प्रति बोरा
- हर एसटी ब्लॉक में एकलव्य विद्यालय
- एसटी बहुल मंडला, खरगोन, धार, बालाघाट एवं सीधी जिले में मेडिकल कॉलेज की स्थापना
- ₹ 100 करोड़ से पूजा स्थलों का विकास एवं नवीनीकरण

सुशासन एवं कानून व्यवस्था
- कमिश्नर प्रणाली भोपाल एवं इंदौर के बाद जबलपुर और ग्वालियर में होगी लागू
- भोपाल में राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय का निर्माण

सबका साथ, सबका विकास
- 5 वर्षों तक मिलता रहेगा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का लाभ
- प्रधानमंत्री आवास योजना के साथ ही मुख्यमंत्री जन आवास योजना में पक्के आवास
- वरिष्ठ एवं दिव्यांग जन को ₹ 1500 मासिक पेंशन
- गिग वर्कर्स के कल्याण एवं अधिकारों के लिए बोर्ड
- पीएम विश्वकर्मा योजना में पारंपरिक कारीगरों को ₹ 15 हजार की वित्तीय सहायता, ₹ 500 दैनिक भुगतान
- असंगठित श्रमिकों के लिए ई-श्रम पोर्टल, आयुष्मान भारत का 100% पंजीकरण

स्वस्थ प्रदेश
- आयुष्मान योजना में ₹ 5 लाख से ऊपर खर्च होने पर प्रदेश सरकार उठाएगी इलाज का खर्च
- ₹ 20,000 करोड़ से सुचारू होंगी स्वास्थ्य सुविधाएं
- हर संभाग में एम्स की तर्ज पर मध्यप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस की स्थापना
- हर संसदीय क्षेत्र में मेडिकल कॉलेज एवं 2,000 मेडिकल सीटों की वृद्धि

सांस्कृतिक धरोहर एवं विकसित पर्यटन
- संत शिरोमणि गुरुदेव श्री रविदास जी का स्मारक निर्माण एवं ₹ 150 करोड़ से धरोहर संरक्षण मिशन शुरू करके ऐतिहासिक स्मारकों का नवीनीकरण
- सभी जनजातीय नायकों के भव्य स्मारकों का निर्माण
- 13 सांस्कृतिक लोकों का निर्माण
- नमामि नर्मदे परियोजनाएं शीघ्र होंगी पूर्ण
- ₹ 7,500 करोड़ के निवेश के साथ 2 लाख युवाओं को पर्यटन के क्षेत्र में प्रशिक्षण, रोज़गार तथा स्वरोज़गार के अवसर

समृद्ध किसान
- किसानों को पीएम किसान एवं मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में ₹ 12,000 की प्रतिवर्ष सहायता
- ₹ 2700 प्रति क्विंटल गेहूं एवं ₹ 3100 प्रति क्विंटल धान की खरीद, बोनस भी

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

उत्तम शिक्षा एवं सक्षम युवा
- गरीब परिवारों के छात्रों को कक्षा 12 तक मुफ्त शिक्षा
- मिड-डे मील के साथ पौष्टिक नाश्ता भी
- हर संभाग में IIT की तर्ज पर मध्यप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- हर परिवार में कम से कम एक युवा को रोज़गार-स्वरोज़गार
- मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना में कौशल प्रशिक्षण एवं ₹ 10 हजार तक स्टाइपेंड
- हर ज़िले में एक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स

सुदृढ़ आधारभूत संरचना
- क्षेत्रीय विकास के लिए बुंदेलखंड, विंध्य एवं महाकौशल विकास बोर्ड
- अटल गृह ज्योति योजना में ₹ 100 में 100 यूनिट बिजली
- विंध्य एक्सप्रेसवे, नर्मदा पथ, अटल प्रगति पथ, मालवा-निमाड़ पथ, बुंदेलखंड पथ एवं मध्य भारत विकास पथ का निर्माण
- 80 रेलवे स्टेशनों का विश्वस्तरीय आधुनिकीकरण
- वंदे मेट्रो एवं वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का विस्तार
- रीवा, सिंगरौली एवं शहडोल में हवाई अड्डे
- भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर में मेट्रो रेल

प्रगतिशील अर्थव्यवस्था एवं औद्योगिक विकास
- अगले 7 वर्षों में प्रदेश को ₹ 45 लाख करोड़ की अर्थव्यवस्था बनायेंगे
- ₹ 20 लाख करोड़ का निवेश लाकर प्रति व्यक्ति आय करेंगे दोगुनी
- एक्सप्रेस-वे के पास औद्योगिक कॉरिडोर का निर्माण कर 4.50 लाख से अधिक युवाओं को रोज़गार और स्वरोज़गार के अवसर
- 10 नए एमएसएमई क्लस्टरों का निर्माण एवं ₹ 5 हजार करोड़ के निवेश के साथ एमएसएमई उद्योगों को न्यूनतम दर पर ऋण

एमपी के मन में मोदी

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास

CONTENTS

S.No.	SUBJECT	Page No.
1.	Foreword	8
2.	Outcome Document 3rd International SDG Conference	11
3.	Webinars: 'Lifestyles for Environment (LiFE)' Webinar	14
4.	'Partnerships For Development' Webinar	25
5.	'Climate Change – What Individuals Can Do' Webinar	32
6.	'Technology & SDG's' Webinar	40
7.	'Innovative Financing for SDG Acceleration'	48
8.	'Strong Local Governance Institutions for Effective Skill Development' Webinar	62
9.	3rd International SDG Conference: Plenary Session	66
10.	Introduction of the Concept by Shri Vasant Pandit, Treasurer, Deendayal Research Institute, and Convenor, World SDG Forum	68
11.	Keynote Speech by Professor Naresh Singh on 'Applied Spirituality and Sustainable Development Policy'	77
12.	Keynote Address by Dr. Seshadri Chari, Member, Governing Council of Research & Information Systems (RIS)	96
13.	Address by Shri Ganesh Singh, Member of Parliament, Satna, M.P.	105
14.	Address by Shri R. K. Singh Patel, Member of Parliament, Banda, U.P.	107
15.	Address by Sushri Usha Thakur, MLA, Ambedkar Nagar, Mhow, M.P.	108
16.	SDG 2 Discussions - Zero Hunger	111
17.	SDG 2 Session I - What We Grow	115
18.	SDG 2 Session II - How We Grow	151
19.	SDG 2 Session III - What We Eat	187
20.	SDG 4 Discussions - Quality Education	215
21.	SDG 4 Session I - Where We Learn	217
22.	SDG 4 Session II - How We Learn	239
23.	SDG 4 Session III - What We Learn	265
24.	Session IV – Joint Closing for Outcomes Closing Session 27th February 2024	333
25.	Shri Amitabh Vashistha, Moderator	344
26.	Dr. Rajendra Singh Negi – Summary of Discussion on SDG 2 – Zero Hunger	345
27.	Dr. Manoj Tripathi - Summary of Discussion on SDG 4 – Quality Education	346
28.	Dr. Seshadri Chari, Concluding Remarks	348
29.	Sh. Vasant Pandit, Convenor, Closing Remarks	354
30.	Shri Deepak Khandekar, Closing Remarks	356
31.	Newspaper Coverage	359
32.	Photographs	372

सेवा, समर्पण और सर्वस्पर्शी विकास के 90 दिन

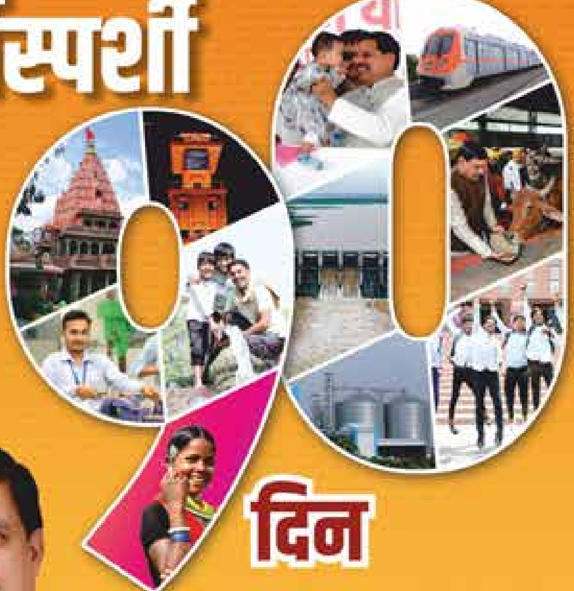

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

"प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में हमारी प्रतिबद्धता घोषणाओं और शिलान्यासों तक सीमित नहीं हैं, हम विकास को धरातल पर उतारने में विश्वास रखते हैं और इसी के लिए निरंतर कार्यरत हैं। वर्ष 2047 तक देश और मध्यप्रदेश को विकसित बनाने के लिए हम तेज गति से दौड़ रहे हैं। एयरपोर्ट, हाई-वे और रेलवे जैसी अधोसंरचना के साथ-साथ पढ़ाई, पानी और पर्यावरण से जुड़े कार्यों को भी नई गति मिली है। देश में तेजी से हो रहे नगरीकरण के अनुकूल आधुनिक अधोसंरचना का विस्तार किया जा रहा है, यही डबल इंजन सरकार का मूल मंत्र है।"

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

90 उपलब्धियां

आध्यात्मिक अभ्युदय ►►►

- श्रीराम-वन-गमन पथ विकास के लिये न्यास की पहली बैठक का आयोजन
- भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े स्थानों को धार्मिक स्थलों के रूप में विकसित करने की योजना
- प्रधानमंत्री जी द्वारा स्वदेश दर्शन योजना 2.0 में चित्रकूट के घाट पर अध्यात्म का अनुभव परियोजना का भूमिपूजन
- गौरवशाली संस्कृति एवं ऐतिहासिक विरासत पर केन्द्रित विक्रमोत्सव 2024 का उज्जैन में आयोजन
- प्रधानमंत्री जी द्वारा उज्जैन में विश्व की पहली विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का शुभारंभ
- देवस्थानों के उत्कृष्ट प्रबंधन के लिये मंत्रीगणों की समिति का गठन
- सिंहस्थ महाकुंभ-2028 के कार्यों के लिये 19 विभागों की ₹19 हजार करोड़ की प्रारंभिक कार्ययोजना
- इंदौर से उज्जैन, ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग, जबलपुर से चित्रकूट तथा ग्वालियर से ओरछा एवं पीताम्बरा पीठ के लिये हेलीकॉप्टर सेवा प्रारंभ करने का निर्णय
- श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये अयोध्या में आस्था भवन (धर्मशाला) निर्माण का निर्णय
- शासकीय कैलेंडर में विक्रम संवत अंकित किये जाने का निर्णय
- देवालयों में लगने वाली सामग्री के निर्माण को कुटीर उद्योग के अंतर्गत प्रोत्साहन देते हुए स्व-सहायता समूहों और युवाओं को प्रशिक्षण एवं मंदिरों में सामग्री के स्टॉल लगाए जाने का निर्णय

गौ-संरक्षण एवं संवर्धन ►►►

- भारतीय नव वर्ष अर्थात इस चैत्र माह से अगले वर्ष तक गौ-वंश रक्षा वर्ष मनाने का निर्णय
- गौशालाओं को प्रति गौ-वंश मिलने वाले ₹ 20 की राशि बढ़ाकर ₹40 करने का निर्णय
- चरनोई की भूमि से अतिक्रमण हटाए जाएंगे

- गौशालाओं को भूसा प्रबंधन के लिये आधुनिक मशीनों एवं उपकरणों के लिये अनुदान तथा प्रोत्साहन
- प्रत्येक 50 किलोमीटर पर घायल गायों को इलाज के लिये परिवहन हेतु हाइड्रोलिक कैटल लिफ्टिंग वाहन का टोल व्यवस्था के अंतर्गत प्रबंध का निर्णय
- अधूरी गौशालाओं का निर्माण पूर्ण कर नई गौशालाएं प्रारंभ करने का निर्णय
- गौशालाओं को श्रेष्ठ संचालन के लिये पुरस्कृत किया जाएगा।

किसान कल्याण ►►►

- गेहूं का समर्थन मूल्य ₹2275 के साथ ₹125 प्रति क्विंटल बोनस देने का निर्णय
- किसान सम्मान निधि में 80 लाख से अधिक किसानों को ₹1816 करोड़ की सहायता
- फसल बीमा योजना खरीफ (2023) में 25 लाख से अधिक किसानों को ₹755 करोड़ के दावों का भुगतान
- शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर कृषकों को फसल ऋण की सुविधा

महिला सशक्तिकरण ►►►

- 1.29 करोड़ लाड़ली बहनों को ₹4728 करोड़ की सहायता
- 46 लाख बहनों के खाते में ₹450 में गैस सिलेंडर की रीफिलिंग के लिए ₹ 118 करोड़ की राशि का अंतरण
- 2 लाख 45 हजार से अधिक लाड़ली लक्ष्मी बेटियों को ₹86 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्ति
- महिला स्व-सहायता समूहों को ₹ 9838 करोड़ की ऋण सहायता

जनजातीय कल्याण ►►►

- प्रधानमंत्री जी द्वारा ₹170 करोड़ की लागत से खरगोन में क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय का शिलान्यास
- तेंदूपत्ता संग्राहकों का मानदेय ₹3000 प्रति बोरा से बढ़कर ₹4000 हुआ, लगभग 35 लाख तेंदूपत्ता संग्राहकों को लाभ
- पीएम जन-मन योजना अंतर्गत विशेष पिछड़ी जनजातीय बहुल जिलों में ₹ 7300 करोड़ की लागत से हो रहे अधोसंरचना कार्य। 11 लाख से अधिक भाई-बहन लाभान्वित
- श्रीअन्न उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना के तहत किसानों को प्रति क्विंटल ₹1000 का अतिरिक्त प्रोत्साहन
- पीएम जन-मन मिशन में बैगा, भारिया और सहरिया अविद्युतीकृत घरों में बिजली पहुंचाने के लिये एक किलोवॉट क्षमता की ऑफ ग्रिड प्रणाली (सोलर+बैटरी) से बिजली पहुंचाने की योजना

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

अधोसंरचना विकास ►►►

- ₹5000 करोड़ की लागत से उज्जैन-जावरा 4-लेन ग्रीनफील्ड एक्सेस कंट्रोल्ड हाई-वे निर्माण का निर्णय
- ₹10 हजार करोड़ से अधिक लागत की 724 कि.मी. लंबी 24 सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास
- ₹350 करोड़ की लागत से इंदौर में एलिवेटेड कॉरिडोर का भूमिपूजन। भोपाल, देवास, ग्वालियर, जबलपुर एवं सतना में भी बन रहे हैं एलिवेटेड कॉरिडोर
- प्रधानमंत्री जी द्वारा राजमाता विजयाराजे सिंधिया ग्वालियर एयरपोर्ट के नये टर्मिनल भवन का लोकार्पण। ₹24 हजार 500 करोड़ की अधोसंरचना परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण
- 33 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्यों का शिलान्यास तथा 133 रेल ओवर ब्रिज और अंडरपास का शिलान्यास एवं लोकार्पण
- भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन एवं सागर में प्रधानमंत्री ई-बस सेवा में 550 से अधिक शहरी ई-बसों के संचालन का निर्णय
- ₹1540 करोड़ की लागत से भोपाल मेट्रो के 8 नये स्टेशनों का भूमिपूजन
- कायाकल्प अभियान में ₹2500 करोड़ के निवेश से बदल रही है शहरी सड़कों की तस्वीर
- ₹308 करोड़ की लागत से खरगौन जिले में जलूद ऊर्जा संयंत्र का भूमिपूजन
- ग्वालियर-बेंगलुरु, ग्वालियर-अहमदाबाद और ग्वालियर-दिल्ली-अयोध्या विमान सेवा का शुभारंभ
- जबलपुर में ₹486 करोड़ की लागत से मध्यप्रदेश राज्य न्यायिक अकादमी के लिये नवीन भवन निर्माण की स्वीकृति

जल प्रबंधन ►►►

- ₹35000 करोड़ लागत की 3.37 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता की पार्वती- कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना स्वीकृत
- ₹4168 करोड़ की लागत से 1.20 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता की सीतापुर-हनुमना माइक्रो सिंचाई परियोजना को स्वीकृति
- खरगोन जिले में ₹557 करोड़ से अधिक की पीपरी माईक्रो उद्वहन, बलकवाड़ा माइक्रो उद्वहन, चौण्डी जामुनिया माईक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजनाएं तैयार
- शामगढ़-सुवासरा, मोहनपुरा तथा आगर-मालवा की कुण्डालिया वृहद सिंचाई परियोजनाओं से 1.39 लाख हेक्टेयर में सिंचाई क्षमता का विस्तार

स्वास्थ्य ►►►

- **पीएम श्री एयर एम्बुलेंस का शुभारंभ।** गंभीर बीमार अथवा दुर्घटनाग्रस्त मरीज़ों को एयरलिफ्ट से समय पर उपचार की सुविधा। आयुष्मान कार्ड धारकों को मिलेगा निःशुल्क लाभ
- निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेजों में उपकरणों के लिये ₹1200 करोड़ की स्वीकृति
- प्रदेश में 13 नये नर्सिंग कॉलेज खोलने का निर्णय
- उज्जैन में नये शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय निर्माण के लिये ₹592 करोड़ की स्वीकृति
- सभी जिला अस्पतालों में शव वाहन की व्यवस्था
- सागर, शहडोल, नर्मदापुरम, धार, झाबुआ, मंडला, बालाघाट, श्योपुर एवं खजुराहो में नये आयुर्वेदिक महाविद्यालय स्थापित करने का निर्णय

शिक्षा एवं युवा कल्याण ►►►

- प्रत्येक जिले में एक शासकीय महाविद्यालय का पी.एम. उत्कृष्टता महाविद्यालय के रूप में उन्नयन का निर्णय
- सागर में रानी अवंतीबाई लोधी विश्वविद्यालय, गुना में तात्या टोपे विश्वविद्यालय एवं खरगोन में क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय का शुभारंभ
- आईआईटी इंदौर के सहयोग से उज्जैन में देश के पहले शोध-आधारित नवाचार, प्रौद्योगिकी एवं उद्यमिता अनुभवात्मक विद्यार्जन केन्द्र का लोकार्पण
- शासकीय नौकरियों के लिये चयनित लगभग 10 हजार उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र प्रदाय
- प्रदेश के स्टार्ट-अप्स को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता के लिये ₹50 हजार से लेकर ₹ 1.50 लाख तक वित्तीय सहायता का प्रावधान
- राज्य स्तरीय रोज़गार दिवस के अवसर पर 7 लाख युवाओं को ₹5 हजार करोड़ का स्व-रोज़गार ऋण वितरित
- शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों को छठवें वेतनमान स्कीम के अनुरूप अकादमिक ग्रेड-पे दिए जाने का निर्णय
- विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की अंकसूची एवं उपाधियों को डिजी लॉकर में अपलोड करने की व्यवस्था
- आगर-मालवा में नया विधि महाविद्यालय प्रारंभ करने का निर्णय
- शिक्षा में गुणवत्ता के लिये भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, रीवा के 6 विश्वविद्यालयों में इन्क्यूबेशन केंद्रों की स्थापना
- उच्च शिक्षा के सकल नामांकन अनुपात में मध्यप्रदेश राष्ट्रीय औसत से अग्रणी
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 लागू करने वाला देश का पहला राज्य बना मध्यप्रदेश
- व्यावसायिक शिक्षा एवं सामान्य शिक्षा का एकीकरण कर क्षेत्रीय आवश्यकताओं के आधार पर 35 व्यावसायिक विषयों का पाठ्यक्रम में समावेश

उद्योग एवं निवेश ►►►

- औद्योगिक विकास को तेज करने के उद्देश्य से उज्जैन में दो दिवसीय रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का सफल आयोजन
  - कॉन्क्लेव में 283 इकाइयों को 508 हेक्टेयर भूमि का आवंटन। इन इकाइयों द्वारा ₹12 हजार 170 करोड़ से अधिक का निवेश। 20 हजार से अधिक लोगों को मिलेंगे रोज़गार के अवसर
  - ₹10 हजार करोड़ से अधिक लागत की 61 से अधिक उद्योग इकाइयों का शुभारंभ, 17 हजार से अधिक रोज़गार सृजन की संभावना
  - ₹1 लाख करोड़ से अधिक के मिले निवेश प्रस्ताव
  - कॉन्क्लेव में कुल 12 देशों और 650 से अधिक औद्योगिक निवेशकों द्वारा भागीदारी। 4000 से अधिक डेलिगेट्स ने लिया भाग, 2100 से अधिक बिजनेस-टू-बिजनेस बैठकें
- प्रदेश के प्रमुख शहरों में भी रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के आयोजन का निर्णय
- ग्वालियर व्यापार मेला की तर्ज पर उज्जयिनी विक्रम व्यापार मेला प्रारंभ। ₹2300 करोड़ के कारोबार का अनुमान

जनोन्मुखी प्रशासन ►►►

- लाउड स्पीकर के अनियंत्रित एवं अनियमित प्रयोग पर प्रतिबंध
- प्रदेश में खुले में मांस-मछली की बिक्री प्रतिबंधित
- प्रशासनिक संवेदनहीनता तथा लापरवाही पर कठोर कार्यवाही
- जनहितैषी विषयों पर त्वरित निर्णय- बीआरटीएस हटाने का फैसला
- प्रधानमंत्री जी द्वारा सायबर तहसील परियोजना का सभी 55 जिलों में शुभारंभ
- मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संभागों की समीक्षा बैठकों का आयोजन, विकास एवं कानून व्यवस्था के विषयों पर चर्चा तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप त्वरित निर्णय
- प्रशासनिक सीमाओं का पुनर्निर्धारण एवं युक्तियुक्तकरण के लिये प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग बनाने का निर्णय
- राजस्व महाअभियान के तहत 10 मार्च तक नामान्तरण, बंटवारा, अभिलेख दुरुस्ती, सीमांकन आदि के 30 लाख से अधिक लंबित प्रकरणों का निपटारा
- चिकित्सा शिक्षा विभाग और लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग का विलय सुशासन और कार्यदक्षता का उदाहरण बना
- प्रदेश में बोरवेल के खुले गड्ढे अभियान चलाकर किये गये बंद
- 2 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों को पात्रतानुसार उच्च पद का प्रभार
- मंत्रिपरिषद के सदस्यों के नेतृत्व क्षमता विकास पर लीडरशिप समिट बनी दूसरे राज्यों के लिये उदाहरण
- प्रत्येक जिले में जिला पुलिस बैंड का गठन

श्रमिक कल्याण ►►►

- इंदौर की हुकुमचंद मिल के 4800 श्रमिक परिवारों को ₹224 करोड़ की राशि का भुगतान
- अकुशल श्रमिकों की मासिक मजदूरी ₹1,625 से ₹11,450, अर्धकुशल श्रमिकों की मजदूरी ₹1,764 से ₹12,446, खेतीहर मजदूर की मजदूरी ₹1,396 से बढ़ाकर ₹9,160 करने का निर्णय
- श्रमिकों को ई-स्कूटर खरीदने पर आर्थिक मदद का फैसला
- संबल योजना के माध्यम से दिवंगत या विकलांगता के दौरान दी जाने वाली सहायता राशि ₹1 लाख से बढ़ाकर ₹4 लाख करने का फैसला

विविध ►►►

- स्वच्छ सर्वेक्षण-2023 में देश के सबसे स्वच्छ शहर का लगातार सातवीं बार इंदौर को मिला पुरस्कार
- मध्यप्रदेश को देश का दूसरा स्वच्छतम् राज्य और भोपाल को मिला स्वच्छतम् राजधानी का पुरस्कार
- मध्यप्रदेश को देश में सर्वाधिक खनिज ब्लॉकों की नीलामी में मिला प्रथम स्थान
- भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा देशभर के 10 सर्वश्रेष्ठ थानों में देवास के सिविल लाइन थाने का चयन
- राज्यों की स्टार्ट-अप रैंकिंग 2022 और राष्ट्रीय स्टार्ट-अप पुरस्कार 2023 के अंतर्गत मध्यप्रदेश "लीडर" के रूप में पुरस्कृत

क्रमांक : म.प्र. माध्यम/2024

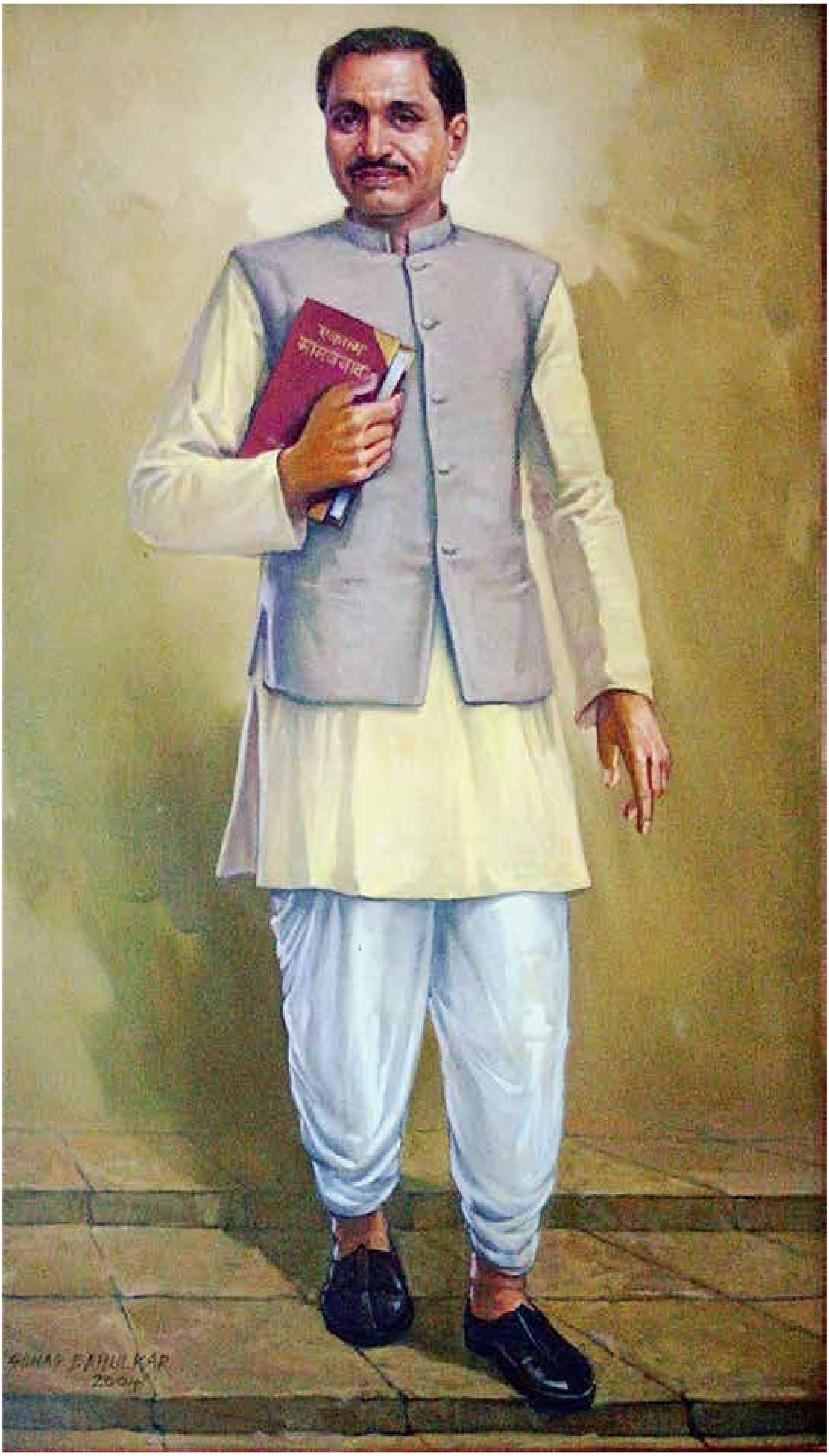

One who earns will feed, and everyone will have enough to eat.

वास्तव में हमारा नारा होना चाहिये कमाने वाला खिलायेगा, जन्मा सो खायेगा। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। कमाने की पात्रता शिक्षा से आती है और समाज में जो कमाते नहीं हैं, वो भी खाते हैं।

– Pt. Deendayal Upadhyaya

The original goal of education was to teach humanity to human beings, but instead of this, education today has become a means of achieving materialistic goals and monetary gains.

शिक्षा का मूल लक्ष्य मनुष्य को मानवता की शिक्षा देना था लेकिन इसके स्थान पर शिक्षा आज भौतिकवादी लक्ष्यों और आर्थिक लाभ प्राप्त करने का साधन बन गई है।

– *Nana Deshmukh*

FOREWORD

Deendayal Research Institute (DRI), founded by Bharat Ratna Rashtrarishi Nanaji Deshmukh in 1968, is an independent "think-and-do tank" devoted to rural upliftment and empowerment of all!

Given that nearly two-thirds of carbon emission today occurs at the household level, the imperative of LiFE cannot be overemphasized. Since the Hon Prime Minister, Shri Narendra Modi's speech at the COP 20 on the 1st of November, 2021 in Glasgow where he introduced the idea of Life – Lifestyles for Environment and called upon the global community of individuals and institutions to drive LiFE as an international mass movement towards "mindful and deliberate utilisation, instead of mindless and destructive consumption" to protect and preserve the environment, there has been a major conversation around the concept, at both the individual level as well as the national and international arenas. He added that LiFE puts individual and collective duty on everyone to live a Life that is in tune with Earth and does not harm it.

During India's G-20 presidency, there was a large, concerted effort to ensure that LiFE took centre stage in the discussions of the C-20. The Varanasi Development Ministerial meeting on 12 June 2023, produced a document "G20 High Level Principles on Lifestyles for Sustainable Development" that articulated the Lifestyles for Sustainable Development Approach that called for an embodiment of the spirit of One Earth. One Family. One Future.

1. Respectful, responsible conservation, sustainable use and regeneration of natural resources is at the heart of environmentally conscious lifestyles as well as consumer choices – One Earth.

2. Requires collective and coherent actions, collaboration and coordination amongst stakeholders at all levels, including individuals, communities, academia, media, civil society, government, international organisations, private sector, and industry to combat land degradation and desertification, halt and reverse biodiversity loss by 2030, reduce environmental pollution, and achieve global net zero greenhouse gas emissions by or around mid-century, through low GHG emissions/low-carbon, climate resilient and environmentally sustainable development pathways, taking into account different national circumstances, and capacities – One Family.

3. Integrated approach for achieving our shared goals on development, environment and climate1 with human beings at the centre of our actions, leaving no one behind – One Future.

The last official G20 program of the India Presidency was a 'Global Summit on LiFE Economy: From Principles to Action' conducted by Research and Information System for Developing Countries (RIS) at the Vigyan Bhavan in Delhi from the 26th to 28th November 2023, where delegates tried to address the elephants. In the room and looked to initiate a paradigm shift in the thinking of Global economies, its objectives and measurement systems.

This is easier said than done and will not happen by itself. People need to be aware of concepts like LiFE, circularity and sustainability – and then practice these in everyday Life. Global fora will take time to absorb and trickle down messages and money for everyday practice by people. We now need to build dialogue on large scale public action that is unfettered by the constraints of government and intergovernmental bodies.

Deendayal Research Institute with its MoU partners at the World SDG Forum, whose 'Chitrakoot Declaration', adopted at is 2nd International SDG Conference in Chitrakoot, called for 'India and the global South, to initiate efforts for a new and inclusive world economic order, which will hasten the process of fulfilling SDG's in a cooperative economic architecture'.

In May 2023, a hybrid WSF webinar was hosted by Deendayal Research Institute along with RIS. It precisely flagged this aspect for the realization of LiFE. The objective was also to share the Indian tradition within which concepts like LiFE, circularity and sustainability have been practiced in everyday life.

The major points from the keynote remarks, Q&A and the online interventions were as follows:

❑ The concept and practice of LiFE have been rooted in indigenous traditions across civilisations, but eroded and marginalised by the provenance of capitalism and industrial society. The current crisis – banking crisis, climate change, inequality and conflict ongoing simultaneously – offers an opportunity to re-cast everyday behaviour and find again the spiritual and moral basis for action. The New Washington Consensus is an example of this quest. - The philosophy of Integral Humanism enunciated by Pandit Deendayal Upadhyay and put into practice by Nanaji Deshmukh at Chitrakoot, provides both an example of and a foundation for LiFE – working with very poor, tribal people and communities in most remote regions of India, to build a society based on cooperation and integration of each human being, where each is responsible for the welfare of all others, where the distinction between self and society is obliterated and LiFE is based upon interdependence and complimentarily.

The Chitrakoot Declaration is a brave yet practical commitment to bring together SDG practitioners and interventions from across the globe under the aegis of the World SDG Forum (WSF). The G 20 presidency of India and the troika (Indonesia, India and Brazil) is an important

platform to highlight the urgency of accelerating progress towards SDG's not only till 2030 but also beyond.

- The resurgence of the Global South is evident, and India is today among the leaders of world based both on its demographic size as also track record in economic growth and poverty reduction. The WSF must seize the opportunity offered by this fortunate conjuncture and showcase its promise with more effective outreach of the concept and knowledge network. National and international consultations can help achieve this as also international and UN partnerships to join WSF and indeed build up Chitrakoot as the Davos of SDG's.

The 3rd International SDG Conference to be held at Chitrakoot on 25-27 February 2024, will explore the idea of a LiFE Society that would place the concept of 'Vasudhaiva Kutumbakam' with sustainability and equity as its pillars. The conversation around LiFE has thus far focused on economic models. Given that individuals and households do not choose their lifestyles, the transition to a 1.5 degree economy needs a shift towards as LiFE Society, where food, wellbeing and lifelong learning come together to build a social contract around which new and more sustainable ways of managing growth and fighting climate change can be built.

Accordingly, the Third International SDG Conference will focus on specific SDG's, within the overall context of building a LiFE Society, in continuation of its mission to bring SDG practitioners front and center in the discussions on the accelerating progress towards SDG's, as also partnerships to sustain beyond 2030.

The Conference started with a Keynote address from Dr. Naresh Singh, Professor and Executive Dean, Jindal School of Government and Public Policy; Director, Centre for Complexity Economics, Applied Spirituality and Public Policy, amongst others. Dr.Naresh emphasized the need to include Spirituality in Sustainable Development Policy and an Integrated Public Policy approach, if progress was to be made on achieving the SDG's. Other speakers addressed the need for a LiFE Society in pursuit of the SDG's. The plenary and closing sessions book-ended the parallel sessions on SDG's 2 (End Hunger, Achieve Food Security, Improve Nutrition and Promote Sustainable Agriculture) and SDG 4 (Ensure Quality and Inclusive Education for All and Promote Lifelong Learning). The conference brought together global experts, national advisors, state and district administration, civil society, as well as the actual beneficiaries on the single platform of the World SDG Forum.

– ***Vasant Pandit***

Convenor

OUTCOME DOCUMENT
3rd INTERNATIONAL SDG CONFERENCE, 25th-27th February 2024, CHITRAKOOT

The 3rd International conference on SDG's was held on 25th-27th February, 2024 at Chitrakoot. In continuation of the resolutions made during the earlier two conferences and on the template of EkatmaManavDarshan (Integral Humanism) as propounded by PanditDeendayalUpadhyaya, this conference focused on two of the seventeen SDG's, SDG 2 and 4, namely Freedom from Hunger and Education for All.

The 3rd Conference plenary session examined the concept of Lifestyle for Environment (LiFE) propounded by PM Modi at the Glasgow Conference of Parties and a highlight of the G-20 Summit deliberations and declarations. The keynote remarks and interventions at the opening plenary highlighted the imperative of going beyond economistic approaches and instead having a comprehensive social transformation approach where human development and spiritual wellbeing of the individual, the household and community were at the centre stage and models of growth focused on sustainability instead of more and more mindless extraction and increased consumerism, to create a LiFE Society. The speakers stressed the ever more urgency of action on the ground, building alliances and networks for SDG interventions.

The conference draws its inspiration from Rashtra Rishi NanajiDeshmukh whose Punya Tithi falls on 27th February. His seminal work in providing a working platform for the philosophy of *Ekatma Manav Darshan* in the form of all-round development of villages around Chitrakoot is illuminating our path in the ongoing process and activities of the World SDG Forum undertaken by Deendayal Research Institute (DRI), established in 1968.

The technical sessions on SDG 2 "End hunger, achieve food security and improved nutrition and promote sustainable agriculture"; and SDG 4 "Ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all", discussed and deliberated on all the aspects of these two important areas. The scholarly gathering of eminent educationists, economists, agricultural experts and practitioners drawn from nearby villages suggested a way forward concerning these two SDG's:

1. There is an urgent need to re-look at the fundamentals of the problems concerning eradication of hunger. While food production could have gone up marginally and new techniques of increasing the per acre yield of food grains are being implemented, the quality of output seems to have deteriorated.

2. There is a need to find ways and means to educate people, and incorporate certain corrective action regarding food waste, which according to some experts, form nearly fifty percent of the total waste, both bio-degradable and otherwise.

3. Agricultural practices are increasingly becoming dependent on chemical fertilizers and pesticides which leave harmful substances as residue in the farm products leading to harmful consequences to health and environment. Based on the "Chitrakoot Model of Farming", a more structured and practical way of organic farming should be promoted.

4. A more nuanced view and action plan is needed to devise a workable strategy for not only zero hunger, but more importantly, zero malnutrition.

5. As far as education is concerned, much needs to be done on the three aspects of what we learn, how we learn and where we learn. As such, education does not have a universally accepted definition. The need and steps in education is different for every person and society. One pattern cannot fit all countries universally. It is therefore necessary to consider the following:

   5.1 Include spirituality, moral and ethical values in primary, secondary and higher education by integrating appropriate course material in the pedagogy at these levels.

   5.2 Teach about Indian Knowledge Systems and inculcate a sense of belonging to the society so as to strengthen social bonding. This will help bridge the gap between problems and solutions.

The conference called upon the participants to take the philosophy of *Ekatma Manav Darshan* propounded by PanditDeendayalji and its practical application as is evident in Chitrakoot initiative of Rashtra Rishi Nanaji Deshmukh to all the stakeholders and policy makers for inclusion and implementation through Public Policy.

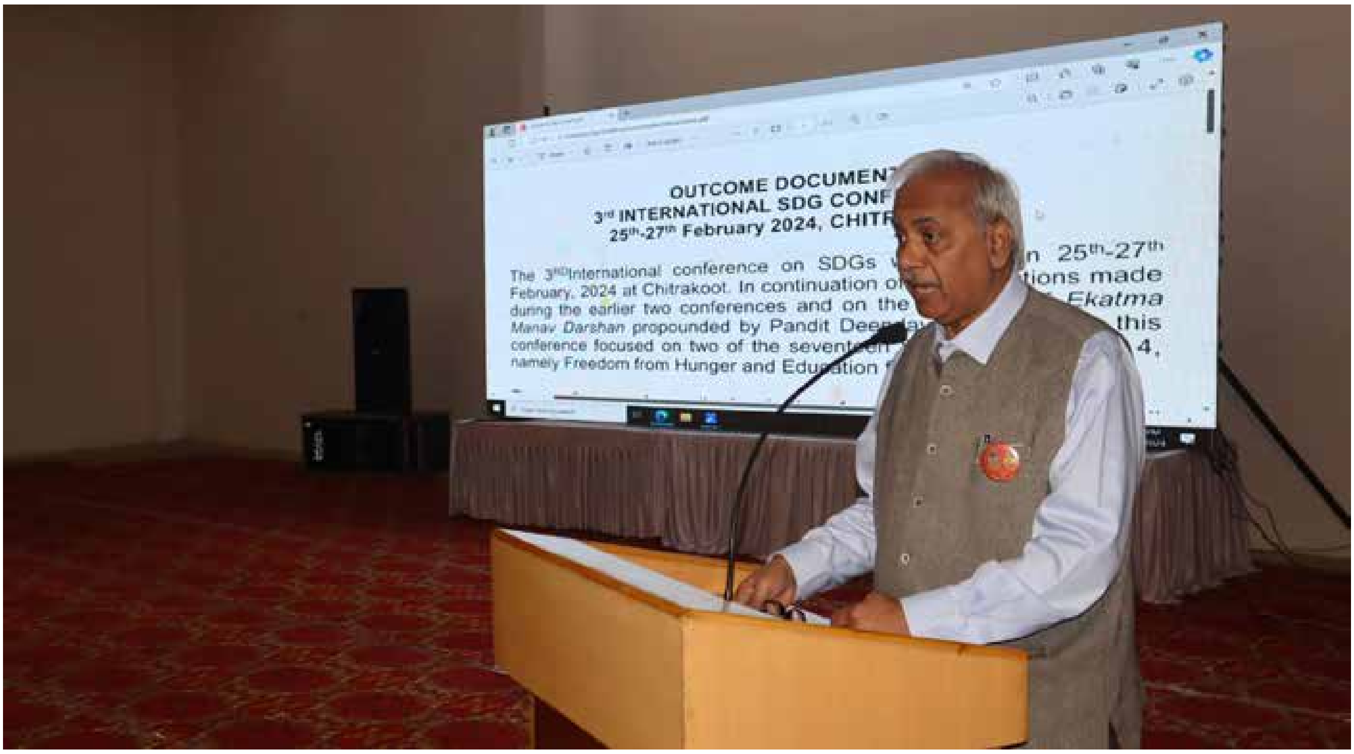

A Webinar on

"Lifestyle for Environment (LiFE) and SDGs – India's role in its Acceptance and Propagation"

At 11.00 am on 27th May 2023

G. Parthasarathi Hall, RIS

To ideate and conceptualise a strategy on how India could possibly take the lead globally in this conversation of G20, C20 and the implementation of SDGs.

"The Indian maxim of *Vasudeva Kutumbakam*, which means 'The whole world is a family', and *Sarve Bhavantu Sukhinah* (Happiness for All) should be the basis of our International relations, to ensure an equitable and sustainable relationship."

– Rashtrarishi Bharat Ratna Nanaji Deshmukh

RIS
Research and Information System for Developing Countries

DEENDAYAL RESEARCH INSTUTUTE

LiFE is Our Responsibility

Note on LiFE Webinar

The achievement of SDG targets has been seriously debilitated by the Coronavirus pandemic and the resultant economic setback that all countries experienced. Besides the pandemic, the unending conflicts have added an element of uncertainty in economic governance and resulted in retarding the global consensus building process towards meeting SDG targets.

Given the limitations of several countries and the UN bodies, the responsibility for accelerating progress on SDG's seem to be falling on the shoulders of stakeholder communities, households and individuals. This calls for drastic change in attitudes and practices which can in turn catalyse a transformation in the way people live, interact, produce and consume.

This is easier said than done, and certainly will not happen by itself. People need to be aware of concepts like LiFE, circularity and sustainability – and then practice these in everyday life.

While Indian philosophy and value system is very much based on sustainability, we have moved away from such fundamentals since the time we were Colonised and subsequently fated with economic and governance models that were dependent on economic exploitation and social oppression *(Shoshan aadhaarit arthavyavastha evam utpeedan moolak samaaj vyavasthaa),* totally alien to this land and its traditional way of life. But the urge to dissociate with alien parameters and adopt homegrown models of development is growing in the country at all levels, and evidently more pronounced in the last few years.

This metamorphosis has to be institutionalised by building strong, lasting and mutually beneficial partnerships for SDG's (and more importantly for SDG 17 in particular as it incorporates all SDG's). As the late Bharat Ratna, Rashtra Rishi Nanaji Deshmukh, founder of the Deendayal Research Institute (DRI) said, "The Indian maxim of Vasudhaiva Kutumbakam, which means 'The whole world is a family', and SarveBhavantuSukhinah (Happiness for All) should be the basis of our International relations, to ensure an equitable and sustainable relationship."

At the Glasgow Conference of Parties (COP), India gave a clarion call for forging global partnerships on these lines. Global institutions and stronger countries may take time to forge such partnerships due to their domestic and international commitments and constraints. Until then, independent non-governmental institutions may have to take the initiative to share experiences and make money and material available for collective and cooperative efforts towards achieving SDG targets.

Under India's Presidency of the G-20, and within the rubric of C20/ T20, the dialogue was begun interlinking the SDG's and G20, with a fruitful civil society meeting at Manipal in March 2023. It is now proposed to conduct a webinar in hybrid mode on LiFE from principle to practice. This conference under the aegis of G20's LiFE vertical is inspired by late PanditDeendayalUpadhyaya's credo of Integral Humanism (EkatmaManavDarshan) and the Chitrakoot Declaration for a World SDG Forum (WSF) as a platform for practitioners.

The hybrid mode webinar will bring together India's thought leaders on SDG's and international partners with a countrywide (and global) audience to discuss practical solutions and pathways for their replication and upscaling.

It is expected that the webinar – the first in a series for the WSF – will trigger online and offline conversations among like-minded people who so far might be working in diverse silos and geographies.

We hope to catalyse a process to create a cadre of committed individual with a complete understanding of LiFE and its centrality across SDG's.

The hybrid mode meeting, to be hosted at Delhi by LiFE vertical of the G20 (as Secretariat), RIS (as anchor for T20) and DRI (as the catalyst for WSF).

The contours of the program, tentatively scheduled for 27 May 2023, could be as follows: Duration: 90 minutes

Structure/ Sequence: 4 speakers (two Indians to keynote, one UN representative to provide global perspective and one from G20 to provide the way forward under the G20 process) and one moderator.

Each speaker will speak initially for 8-10 minutes, followed by a set of questions for the speakers posed by the moderator and respective responses (5-7 minutes each).

The moderator will then canvas 4-5 questions from the audience (including from online participants) which would be directed at specific speakers for their response (2-3 minutes).

The moderator will then provide a brief summary of the main points and conclude with a note of thanks.

The tentative name of the Seminar is "Lifestyle for Environment (LiFE) and SDG's – India's role in its Acceptance and Propagation."

Speaker I: Introduction of LiFE and Bharati Sanskriti. A Macro view. [Dr. Sachin Chatruvedi]

In this context, the concept of 'Lifestyle for the Environment (LiFE) was introduced by Prime Minister Narendra Modi at COP26 in Glasgow on 1st November 2021, calling upon the global

community of individuals and institutions to drive LiFE as an international mass movement towards "mindful and deliberate utilisation, instead of mindless and destructive consumption" to protect and preserve the environment. LiFE puts individual and collective duty on everyone to live a life that is in tune with Earth and does not harm it. Those who practice such a lifestyle are recognised as Pro Planet People under LiFE.

"Realising the inadequacy of the present global economic binaries in the progression towards achieving the Sustainable Development Goals, it is imperative for India and the global South, to initiate efforts for a new and inclusive world economic order, which will hasten the process of fulfilling SDG's in a cooperative economic architecture."

Speaker II: The Chitrakoot Declaration and the establishment of the World SDG Forum. [Dr. Seshadri Chari]

"Recalling the experiences and experiments of institutions such as the Deendayal Research Institute (DRI), especially at Chitrakoot, it will be relevant to delve on a new narrative laying emphasis on family as the fulcrum of solutions in the spirit of 'Local to Global'— Gramoday to Sarvoday (village to the universe); from grassroots to global."

This is to be done with 'the idea of "Integral Humanism", based on Bharat's world view and propounded by Pandit Deendayal Upadhyaya, was translated into action by Rashtra RishiNanaji Deshmukh, with Chitrakoot as its epicentre.'

Some additional thoughts from Pt. DeendayalUpadhyaya and NanajiDeshmukh:

*An economic system must achieve the production of all the basic things essential for the maintenance and development of the people, as well as the protection and development of the Nation.**

*Having satisfied the basic minimum requirements, the question naturally arises whether there should be more production for greater prosperity and happiness. Western societies consider it most essential, and even desirable, to go on continuously and systematically increasing the desires and needs of man. There is no upper limit in this context. Normally, desire precedes the effort to produce the things desired. But now the position is reverse. People are induced to desire and use the things that have been or are being produced. Instead of producing to meet the demand, the search is on for markets for the goods already produced. If the demand does not exist, systematic efforts are made to create demand.**

Now this economic structure is not merely consumption-oriented, but is clearly leading to destruction. Throw away the old one, and buy a new one! Rather than satisfying the need and demand of the people, to create fresh demand has become the aim of modern economics. Supposing that we

*need not worry about the limited supply of natural resources, there is yet the question of balance in nature. There is a cyclic relationship in different parts of nature. If one of the three sticks, which stand with mutual support, is removed, the other two will automatically fall. The present economic system and system of production are fast disturbing this equilibrium of nature. As a result, on the one hand, new products are manufactured for satisfying ever increasing desires, and on the other hand, new problems arise every day, threatening the very existence of humanity and civilisation.**

*It is essential, therefore, to use up that portion of the available natural resources which nature itself will be able to recoup easily. When the fruits are taken, the fruit tree is not injured; it may even be helpful to the tree. However, in the effort to take a greater harvest from the land, chemical fertilisers are used, which in a few years' time, will render the land altogether infertile. Lakhs of acres of land lie barren in America due to this factor. How long can this dance of destruction go on? The industrialist provides for a depreciation fund to replace machines when they are worn out. Then how can we neglect the depreciation fund for nature? From this point of view, it must be realised that the object of our economic system should not be to make extravagant use but a well-regulated use of available resources. The physical objects necessary for a purposeful, happy and progressive life must be obtained. The Almighty has provided that much. It will not be wise, however, to engage in a blind rat-race of consumption and production as if man is created for the sole purpose of consumption. Engine needs coal for its proper working, but it has not been produced merely to consume coal. On the contrary, it is only proper, always, to see that with the minimum coal consumption, maximum energy is produced. This is the economic viewpoint. Keeping in view the aim of human life, we must endeavour to see how, with the minimum of fuel, man proceeds to his goal with the maximum speed. Such a system alone can be called civilisation. This system will not think of merely a single aspect of human life, but of all its aspects, including the ultimate aim. This system will be constructive rather than destructive. This system will not thrive on the exploitation of nature, but will sustain nature, and will in turn itself be nourished. Milking, rather than exploitation, should be our aim. The system should be such that overflow from nature is used to sustain our lives.**

*The use of manpower and the employment question will have to be thought of in the context of the human being as a whole, as an integral being.**

*Reaching the pinnacle in productivity and observing restrain in consumption is the true meaning of one's life indicating the prosperity in society.***

* From the 4 Lectures of Pt. DeendayalUpadhyaya on Integral Humanism

** From quotes of Pt. DeendayalUpadhyaya in Deendayal Park, Deendayal Research Institute, Chitrakoot.

Above are some quotes from Pt. DeendayalUpadhyaya that are relevant to this topic.

"Our Indian civilization is unique. It nurtures the capacity for gratitude in humanity. Indian

tradition thus venerates all beneficial elements. He reveres the god-like Himalayas, the goddess-like River Ganga, the life-giving Mother Earth and the bountiful cow. The exploitation of nature for man's own selfish ends is thus not a part of Indian tradition. Rather man considers himself a child of nature, who makes his mother happy by growing strong on her milk. Tradition has imbued the farmer with a deep-rooted love for his land. Nurtured on the treasures he gets from his land, he works hard to maintain its fertility." – NanajiDeshmukh

"A system has to be evolved, in the context of modern science and technological progress, so that our moral values, education, health, governance, entrepreneurship, literature and arts etc. are reflected in every facet of society. Otherwise, consumerism born out of modern industrial culture would decimate our humanitarian traditions." – Nanaji Deshmukh

LiFE is Our Responsibility!

Speaker Profiles

Prof. Sachin Chaturvedi, Director General of RIS

Prof. Sachin Chaturvedi is currently Director General at the Research and Information System for Developing Countries (RIS), a New Delhi-based Think-Tank. He works on issues related to development economics, involving development finance, SDG's and South-South Cooperation, apart from trade, investment and innovation linkages with special focus on WTO. Currently he is Member, Board of Governors, Reserve Bank of India. He was Global Justice Fellow at the MacMillan Center for International Affairs at Yale University; Developing Country Fellow at the University of Amsterdam (1996); Visiting Fellow at the Indian Institute of Advanced Studies, Shimla (2003); and Visiting Scholar at the German Development Institute (2007). He has served as a Visiting Professor at the Jawaharlal Nehru University (JNU) and has been closely associated with the UN Food and Agricultural Organization, World Bank, UN-ESCAP, UNESCO, OECD and many other agencies.

His book "The Logic of Sharing – Indian Approach to South-South Cooperation" has been acclaimed internationally as one of the best volumes on international development cooperation. Apart from this he has authored/edited 21 other books, apart from contributing several chapters in the edited volumes and publishing several research articles in prestigious journals.

Spoke on Introduction of LiFE and Bharati Sanskriti. A Macro view.
Dr. Seshadri Chari, Member, RIS Governing Body

Dr. Seshadri Chari is an alumnus of Mumbai Vidyapeeth (then it was Bombay University). He did his B. Com, LLB, and MA from here. He is the Governor's nominee in the Managing Council of Mumbai University.

His PhD thesis is on "Regional Dynamics of Indo-Pacific Region and Implications of China's Influence in India's Extended Neighbourhood".

Dr. Chari is an acclaimed commentator on strategic and security issues with a vast experience in the formulation of policies for national security and actionable strategic plans. He was formerly editor of the English weekly Organiser for 12 years from 1992 to 2004. He was also the Convenor of the Foreign Policy Cell of the BJP.

Dr. Chari was engaged as consultant on governance, UNDP, posted in Southern Sudan (2006-2009) where he worked on projects such as capacity building of political parties, Constitution

drafting, facilitation of participation of women in post-conflict democratic set up and conflict resolution in Southern Sudan.

He is the member of the Governing Council of Research & Information Systems (RIS) an autonomous institution under the Ministry of External Affairs.

He is presently the Chairman, China Study Centre, MAHE, Manipal and Centre for Indo-Pacific Studies. He is also the member of the Planning & Monitoring Board of Manipal University (MAHE).

He is Professor Emeritus at SavitribaiPhule Pune University and Ministry of Defence Chair in the Department of Defence & Strategic Studies.

He is the Secretary General of Forum for Integrated National Security (FINS), Director (International Affairs) at the Institute of National Security Studies, Research Director at the Chronicle Society of India for Education & Academic Research (CSIEAR).

His mother tongue is Tamil and can read, write & speak nine languages.

Dr. Chari was Pracharak of RSS since 1978 for 18 years. He is one of those few lucky ones who has seen Pandit Deendayalji and worked with Rashtra Rishi Nanaji Deshmukh.

Spoke on The Chitrakoot Declaration and the establishment of the World SDG Forum. Dr. Suraj Kumar, Advisor & Chief Mentor, Kalinga Institute of Social Sciences.

Bio: Dr Suraj Kumar is an expert practitioner on Sustainable Development Goals and Governance Reform – has served SDG Advisor to Governments of Chhattisgarh and Tripura and the national Ministry of Electronics & Information Technology. He is International Partnerships Advisor to Kalinga Institute of Social Sciences (KISS) & KIIT University. He is also a member of the SDG Board at Deendayal Research Institute (DRI).

He has worked in the development sector since 1993 at senior levels (17 years with the UN) in design and implementation of regional, national, and subnational programmes on human development, urban governance, skill development, women's empowerment, and ICT for Development.

Dr. Kumar has written and lectured extensively on SDG's and is co-editor and contributor for a book on Social Development and SDG's in South Asia, published in September 2019 by Routledge UK.

Spoke on Sustainable Lifestyles to achieve SDG's
Ambassador, Manjeev Singh Puri

Manjeev Singh Puri is a former Indian Ambassador. He joined the Indian Foreign Service in 1982 and served as Ambassador of India to the European Union, Belgium, Luxembourg (2013-2017) and

Nepal (2017-2019). He has also served as Ambassador/Deputy Permanent Representative of India to the UN from 2009-2012, a period during which India was on the Security Council. Prior to that, from 2005-2009, he headed the division in the Ministry of External Affairs dealing with UN issues on the social and economic side. In addition, he has served twice in Germany (in Bonn and Berlin), in Cape Town, Muscat, Bangkok and Caracas. He retired on 31 December 2019 in the rank of Secretary, Government of India.

Major areas of his experience relate to multilateralism (UN), Europe and Nepal and he was involved as a lead member of the Indian delegation at numerous global negotiations on, migration, human rights and UN reforms. His professional focus has been on issues relating to the environment, climate change and sustainable development. He was a lead negotiator for India at the UN on issues relating to the post 2015 development agenda, Sustainable Development Goals and at the UN Conference on Sustainable Development held in Rio de Janeiro, Brazil in June 2012. He was a key member of India's delegation at various Climate Change negotiations, including the Conference of Parties of the UNFCCC in Copenhagen in December 2009 and before that at Montreal, Bali, Bonn and Poznan. Furthermore, he was involved with India's participation in the G8-G5 Summits from 2005 and was the point-person for the Major Economies Forum.

Ambassador Puri has a Masters' degree in Management, and did his BA (Honours) in Economics from St. Stephen's College, Delhi. He is presently Distinguished Fellow at The Energy and Resources Institute (TERI) and a Distinguished Visiting Fellow with the Ananta Centre.

Spoke on 'Role in Multilateralism in Accelerating Achievement of SDG's'.

"Lifestyle for Environment (LiFE) and SDG's - India's role in its Acceptance and Propagation" Webinar Outcomes held at the G. Parthasarathi Conference Hall, RIS, New Delhi on 27th May, 2023.

DRI, RIS, the C20 LiFE Working Group and Yojak partnered to design and host a hybrid mode Seminar on LiFE and SDG's on 27 May 2023 entitled, "Lifestyle for Environment (LiFE) and SDG's - India's role in its Acceptance and PropagaEon". The topic was chosen based on the Prime Minister's call at Glasgow COP to focus on Lifestyle for Environment (LiFE) as a major pathway for tackling climate change and ensuring progress towards SDG's. India's G20 Presidency spotlights LiFE (Lifestyle for Environment), with its associated, environmentally sustainable and responsible choices, both at the level of individual lifestyles as well as national development, leading to globally transformative actions resulting in a cleaner, greener and bluer future.

The idea behind LiFE is to evolve an international mass movement towards "mindful and deliberate utilisation, instead of mindless and destructive consumption" to protect and preserve the environment. Given that nearly two-thirds of carbon emission today occurs at the household level, the imperative of LiFE cannot be over-emphasised. India has emerged as the largest country and is slated to become the third largest economy in a few years. Despite, India's significant development needs, India is championing sustainable lifestyles as a global movement as the only way to survive climate change.

The objective of this session, therefore, was to share the Indian traditions within which concepts like LiFE, circularity and sustainability have been practiced in everyday life. The precepts enunciated in the Chitrakoot Declaration and the launch of the World SDG Forum (WSF) were also shared.

The seminar – the first in a series for the WSF – aimed to trigger online and offline conversations among like-minded people who thus far might be working in diverse silos and geographies. This would not only strengthen the conviction but would give enormous opportunities of peer learning and advocacy.

The keynote speakers at the seminar included think-tank leaders who reflected on Indian ethos of sustainability and its current salience, social scientists working on the relationship between *Ekatma Manav Darshan* (Integral Humanism), G20 and SDG's, distinguished diplomats with experience in multilateralism and India's legacy and leadership; and SDG literati and practitioners.

The major points from the keynote remarks, Q&A and the online interventions were as follows:

- The concept and practise of LiFE have been rooted in indigenous traditions across civilisations but eroded and marginalised by the provenance of capitalism and industrial society. The current crisis – banking crisis, climate change, inequality, and conflict raging simultaneously – offers an opportunity to re-cast everyday behaviour and rediscover the spiritual and moral drivers of human action.
- The philosophy of Integral Humanism enunciated by Pandit Deendayal Upadhyaya and put into practice by Rashtra RishiNanajiDeshmukh provides both an example of and a foundation for LiFE – working with very poor, tribal people and communities in most remote regions of India. It is imperative to go beyond discussions on GDP and economic growth to focus on sustainable human development approaches that build the capabilities of people with regard to their social integration. Any appraisal for human progress should have parameters to cover loss of biodiversity and loss of other species and plants. The Chitrakoot model is absolutely clear as to how human beings, nature and biodiversity may all be brought together and can be reconciled in the development model.
- The Chitrakoot Model of rural upliftment has been sustained and validated as a best practice. The task ahead is replicate and upscale - to share the practice and the processes with a very wide audience and expand the open-source knowledge plaeorm www.sdginterventions.org
- The Chitrakoot Declaration is a brave and practical commitment to bring together SDG practitioners and interventions from across the globe under the aegis of the World SDG Forum (WSF). The G20 presidency of India and the troika (Indonesia, India and Brazil) is an important platform to highlight the urgency of accelerating progress towards SDG's not only till 2030, but also beyond.
- The resurgence of the Global South is evident, and India is today among the leaders of world based both on its demographic size as also track record in economic growth and poverty reduction. The WSF must seize the opportunity and showcase its promise, with more effective outreach of the concept and knowledge network. National and international consultations can help achieve this, at prominent international forums including at the UN. Upcoming events such as the SDG Summit and Summit of the Future can be leveraged for this. Global network and visibility will propel ever greater number of interventions to join WSF and indeed promote Chitrakoot as the Davos of SDG's.

The seminar affirmed the relevance of the WSF and provided the following pointers for the way forward:

- Leverage the global perception change regarding India, reflected very well in India's G20 Presidency, to drive the global conversation on SDG's and beyond.

- We must evolve WSF as a global collective to accelerate the achievement of SDG's which can happen only when interventions happen on the ground and not confined to expert level dialogues.
- Expand the set of interlocutors for the WSF seminars with greater representation and participation of international partners such as the UN, World Bank and other multilateral organisations.
- Sustain outreach to embassies, permanent missions and diaspora to bring in more and more SDG interventions and practitioners from across the globe.
- Maintain the momentum with regular seminars and webinars focusing on accelerating SDG's, leading up to the Third International Conference on SDG's.
- Partner with more organisations – national and international – working on SDG solutions and capacity building.

Vasant Pandit
Convenor
World SDG Forum

Note on Webinar on Partnerships for Development

The UNGA Resolution 70/1 on Transforming our World: the 2030 Agenda for Sustainable Development at its very outset mentions the imperative of acting in collaborative partnership to achieve the SDG's. It states – " We are determined to mobilize the means required to implement this Agenda through a revitalised Global Partnership for Sustainable Development, based on a spirit of strengthened global solidarity, focussed in particular on the needs of the poorest and most vulnerable and with the participation of all countries, all stakeholders and all people."

We are now at the mid-point of the time-frame for the SDG's. Progress has been slowed if not retarded by the concurrent impact of Covid-19 Pandemic, war in Ukraine, banking crisis in US and Europe and ongoing conflicts in Africa and Middle East and slowdown of growth momentum.

The UNSG Special SDG Progress Report 2023 draft states "… halfway to 2030, that promise is in peril. The Sustainable Development Goals (SDG's) are disappearing in the rear-view mirror – and with them the hope and rights of current and future generations. A fundamental shift is needed – in commitment, solidarity, financing and action - to put the world on a better path. And it is needed now."

The scale of the challenge requires all hands on deck. It is time to now assess how new partnerships (including old ones with new stakeholders) for development can enable speedier recovery and impart fresh momentum for SDG's (and beyond). **"It require different sectors and actors working together in an integrated manner by pooling financial resources, knowledge and expertise."**

Cross-sectorial and innovative multi-stakeholder partnerships will play a crucial role not only for accelerating progress but also catalysing dialogue for post-2030 scenario, including on climate justice and net-zero transitions.

Multi-stakeholder partnerships for SDG's need very large-scale connection between grassroots interventions and local champions for change - going beyond the usual desultory philippics of UN agencies talking to governments, NGOs and select private sector organisations. The conversations between these solution networks could inter alia be around mobilizing and sharing knowledge, expertise, technologies and financial resources.

The grassroots to global orientation has been a pillar of the current Indian Development model with its emphasis on 'Antyodaya' – reaching the last man; and 'Gramodaya se Sarvodaya'

(From Rural Upliftment to Upliftment of All); and from 'Sarvodaya to Abhyudaya' (From upliament for All to the Rise of All).

The ChitrakootDeclaration adopted at the Second International Conference on SDG's states: "Realising the inadequacy of the present global economic binaries in the progression towards achieving the Sustainable Development Goals, it is imperative for India and the global South, to initiate efforts for a new and inclusive world economic order, which will hasten the process of fulfilling SDG's in a cooperative economic architecture… the World SDG Forum (WSF) will eventually transform into a global forum for all, with every stakeholder as a partner, participant and beneficiary".

To trigger and sustain conversation on new partnerships for sustainable development, DRI and RIS are organising a seminar on the very theme – with keynote speakers, online and offline interlocutors and attendees from Indian and international CSOs, private sector and UN agencies.

This Webinar is inspired by late Pandit Deendayal Upadhyaya's credo of Integral Humanism ***(Ekatma Manav Darshan)*** and the Chitrakoot Declaration for a World SDG Forum (WSF) as a platform for practitioners.

It hopes to bring together India's thought leaders on SDG's and international partners with a countrywide (and global) audience to discuss practical solutions and pathways for their replication and upscaling.

It is expected that the webinar – the second in the WSF webinar series – will trigger online and offline conversations among like-minded people who thus far might be working in diverse silos and geographies.

Speaker Bios

Mr. Amit Lahiri

Mr. Amit is a PhD candidate at the School of Environment, Enterprise and Development (SEED), Faculty of Environment at the University of Waterloo in Canada. He combines a BSc in chemistry, life sciences and environmental science from St. Xavier's College, Mumbai with a MSc in molecular biology from the University of Mumbai along with a MES in environmental studies from York University in Toronto Canada. He simultaneously earned a graduate diploma in Business and The Environment from the Schulich School of Business also at York University. After spending the bulk of the first decade of his career with two European life science MNCs, working across Europe, the Middle East and India, he transitioned into the higher education sector. The next two decades of his career have been working with the Ontario Colleges of Applied Arts & Technology sector in Canada as a professor and spearheading sustainability at a prominent private university- Jindal Global University- in India, as their first chief sustainability officer. His work has resulted in impactful innovative curriculum development, applied research, partnerships development and strategic policy development. He was recognized for his work at the Ontario Colleges with a Board of Governors Award of Excellence in Community Partnerships in 2015. He combines an eclectic interest in classical, jazz and world music, nature and wilderness treks and recipes of ecologically conscious global cuisine.

Spoke on Partnerships for Development: A Historical Overview of Three Decades

Ms. Ratnamala Kapur

Ms. Ratnamala Kapur, the Founder and Managing Trustee of Village Ways Charitable Trust (established in 2008). With her extensive experience in the healthcare sector and her passion for community development, Ms. Ratnamala has become a prominent figure in the efforts towards improving the lives of those living in remote Himalayan villages in Uttarakhand. Her Trust, Village Ways Charitable Trust, has been working tirelessly to provide access to preventive and primary healthcare services to these communities, by deploying modern technologies such as telemedicine. As a pioneer for establishing a healthier lifestyle in these areas, Ratnamala's speech today on partnerships for development in the sustainable development goal framework will surely provide a fresh perspective, and valuable insights on how we can all work together towards building a more equitable and sustainable future.

Spoke on the Village Ways Model for connecting isolated communities with medical facilities.

Mr. Digvijay Choudhari

He graduated in Electrical Engineering from IIT Bombay, India and then completed his M.S. in Electrical & Computer Engineering from the University of Texas at Austin, USA. Later, he worked with Cadence Design Systems, a leading EDA company, in Austin and Bay Area. Deeply inspired by the

humanitarian work of Sri SriRavishankar he moved from Silicon Valley to the global headquarters of the Art of Living Foundation at Bengaluru, India. He has been a fulltime volunteer with the Foundation for the last 16 years driving large projects including infrastructure and development. As the Chief Administrator of the Foundation's Headquarters at Bengaluru, he set up and streamlined the operations of the 350-acre campus by creating simple, adaptable and scalable systems suitable to a volunteer-driven non-profit organization.

Next, he established and scaled Sri Sumeru Realty Private Limited as a professionally-managed quasi-social enterprise in the area of Real Estate & Construction delivering projects totaling 20 lac sft area worth more than USD 60M, with an industry-leading profit margin.

Currently he is focused on building Sobus Insight Forum as a global platform that catalyzes sustainable, scalable social impact via a holistic ecosystem for social startups to establish and grow.

Spoke on What the Wheels Global Foundation is doing to create Partnerships that accelerate the achievement of SDG's, and how the model could be replicated. Mr. Shombi Sharp

Mr Shombi Sharp, a national of the United States of America, is the UN Resident Coordinator for India since November 2021. Mr. Sharp has devoted more than 25 years of his career to promoting inclusive and sustainable development internationally, bringing experience he has acquired at the United Nations and externally to this new position.

Within the Organization, he most recently served as United Nations Resident Coordinator in Armenia, after holding several leadership positions at the United Nations Development Programme (UNDP), where he was Resident Representative in Armenia, Deputy Resident Representative in Georgia, Deputy Country Director in Lebanon, Regional HIV/AIDS Practice Team Leader for UNDP Europe and the Commonwealth of Independent States in the Russian Federation, Programme Manager for the Western Balkans in New York and Assistant Resident Representative in the Russian Federation.

Prior to joining the United Nations, Mr. Sharp began his career in development with the international non-profit CARE International in Zimbabwe. He is a published author of works in health economics and was a United States Agency for International Development (USAID) "Policy Champion" as well as a nominee for the UNDP Administrator's Award.

Mr. Sharp holds a postgraduate diploma in HIV/AIDS management from the National Medical University of South Africa and Stellenbosch University, in South Africa; a master's degree in economics from the University of Colorado, in the United States; and a bachelor's degree in business administration from the University of Kansas, United States.

He is fluent in English and Russian.

Spoke on the UN General Secretary's remarks of "Promise in Peril".

Outcome Document on the Deendayal Research Institute (DRI) Webinar on Partnerships for Development

On 24 June 2023, Deendayal Research Institute (DRI) anchored the second webinar of the World SDG Forum Webinar series. The theme of the conversation was Partnerships to Accelerate the Achievement of SDG's.

In view of the impact of the Covid-19 Pandemic and the irruption of conflicts in Eastern Europe and elsewhere, the already slowing pace of progress towards the achievement of the SDG's has suffered a severe jolt.

We are now at the mid-point of the time-frame for the SDG's. Progress has been slowed if not retarded by the concurrent impact of Covid-19 Pandemic, war in Ukraine, banking crisis in US and Europe and ongoing conflicts in Africa and Middle East and slowdown of growth momentum.

The UNSG Special SDG Progress Report 2023 draft states "… halfway to 2030, that promise is in peril. The Sustainable Development Goals (SDG's) are disappearing in the rear-view mirror – and with them the hope and rights of current and future generations. A fundamental shift is needed – in commitment, solidarity, financing and action - to put the world on a better path. And it is needed now."

The scale of the challenge requires all hands on deck. It is time to now assess how new partnerships (including old ones with new stakeholders) for development can enable speedier recovery and impart fresh momentum for SDG's (and beyond). "It require different sectors and actors working together in an integrated manner by pooling financial resources, knowledge and expertise."

Cross-sectoral and innovative multi-stakeholder partnerships will play a crucial role not only for accelerating progress but also catalysing dialogue for post-2030 scenario, including on climate justice and net-zero transitions.

Multi-stakeholder partnerships for SDG's need very large-scale connection between grassroots interventions and local champions for change - going beyond the usual desultory philippics of UN agencies talking to governments, NGOs and select private sector organisations. The conversations between these solution networks could inter alia be around mobilizing and sharing knowledge, expertise, technologies and financial resources.

Accordingly, the WSF webinar on partnerships triggered a conversation on new partnerships for sustainable development. – with keynote speakers, online and offline interlocutors and attendees from Indian and international CSOs, private sector and UN agencies.

The speakers at the 24th June Webinar included CSR scholar-practitioners, best practice exemplars in remote areas, serving and retired UN officials, UN Resident Coordinator for India, thought leaders on Indic roots of sustainability, and a representative array of civil society in the interactive Q&A.

This hybrid mode confab is inspired by late PanditDeendayalUpadhyaya's credo of Integral Humanism (EkatmaManavDarshan) and the Chitrakoot Declaration for a World SDG Forum (WSF) as a platform for practitioners.

The seminar brought together global thought leaders on SDG's and international partners with a countrywide (and global) audience to discuss practical solutions and pathways for their replication and upscaling.

The grassroots to global orientation has been a pillar of the current Indian Development model with its emphasis on 'Antyodaya' – reaching the last man; and Gramodaya se Sarvodaya (From Rural Upliftment to Upliftment for All).

The Chitrakoot Declaration adopted at the Second International Conference on SDG's states: "Realising the inadequacy of the present global economic binaries in the progression towards achieving the Sustainable Development Goals, it is imperative for India and the global South, to initiate efforts for a new and inclusive world economic order, which will hasten the process of fulfilling SDG's in a cooperative economic architecture… the World SDG Forum (WSF) will eventually transform into a global forum for all, with every stakeholder as a partner, participant and beneficiary".

WORLD
SDG
FORUM

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

13 CLIMATE ACTION

14 LIFE BELOW WATER

15 LIFE ON LAND

A Webinar on "Climate Change – What Individuals Can Do."

At 11.00 am on 29th July, 2023

Environmental degradation and climate change are global phenomena where actions in one part of the world impact ecosystems and populations across the globe. Estimates suggest that if requisite action is not taken against the changing environment, approximately 3 billion people globally could experience chronic water scarcity. The global economy could lose up to 18% of GDP by 2050. This Webinar seeks to find those individual and community actions and behavioural changes that can make a significant contributions to solutions to the environmental and climate crises.

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE

"Act as if what you do makes a difference. It does."
- William James

WORLD SDG FORUM

Note on Webinar "Climate Change – What Individuals Can Do."

The containment of the increase in global temperatures to below 1.5 degrees Celsius (2.7 degrees Fahrenheit) by 2030 is at the heart of the SDG's. It is well understood that this is not only a matter of climate science and technology but a fundamental change in lifestyle for individuals, households, communities, economies, and nations – while ending the development deficit in terms of poverty, hunger & malnutrition, ill-health, illiteracy, gender discrimination, basic services and an entire gamut of growth and equity issues and governance challenges.

The 5 Ps – People, Planet, Prosperity, Peace, and Partnerships – encapsulate both the challenges before us and the resoluIon of these challenges.

Sustainability is at the heart of it all. The concept and practices of sustainability are of course grounded in indigenous traditions and scriptures across the globe. Within the Indic civilizational sphere, the relationship between Prakriti and Purusha (Nature and Humanity) is one of mutual sustenance and beneficiation.

The World SDG Forum (WSF) is based on this very understanding and aims to build up a global alliance of SDG interventions (and interventionists), distinct from the exalted circle of policy gurus, experts, national and global agencies, etc. As a community of practitioners (www.sdginterventions.org), the WSF has its mandate and vision enshrined in the Chitrakoot Declaration, driven by successive International Conferences on SDG's, held at Chitrakoot in April 2022 and February 2023.

Under the aegis of the WSF, the webinar series is intended to build up the conversations on how to learn from practice and accelerate the achievement of SDG's.

Under the rubric of the SDG's, three goals focus specifically on environment and ecology – climate change (Goal 13), life under water (Goal 14) and life on land (Goal 15). These three goals are of course related to progress under the social development, and economic growth goals, the targets for climate change action, ocean conservation and protection of land ecosystems (water, forests and land) have a direct bearing on arresting climate change. These three goals are also the intersection between the Paris Treaty under the UNFCC and the 2030 Agenda under the UNGA Resolution.

"Taking urgent action to combat climate change and its devastating impacts is therefore imperative to save lives and livelihood, and key to making the 2030 Agenda for Sustainable Development and its 17 Goals – the blueprint for a better future – a reality."

Governments, experts and international agencies have indeed focused on the role of states, markets and global agreements to take up the gauntlet of climate change – its mitigation and adaptation to it as also resilience in its wake. However, comparatively less action is given to the role of individuals in tackling climate change. India has taken up the credo of LiFE (Lifestyle for Environment) and the High Principles for LiFE under the G20 consultations have indeed amplified the imperative for a new mode of lifestyles. The SDG Action Agenda taken up under the G20 dialogue have also stressed the importance of grassroots SDG interventions grounded in the ethos of Vasudhaiva Kutumbakam.

Under the WSF webinar series, our objective is to bring practitioners into the conversation as to what we as individuals and organisations can do to achieve SDG's – bringing the micro or local perspective to bear on macro or global topics.

It is therefore timely and moot to focus on the role of individuals to arrest the spiral of climate change – to reduce the carbon footprint, clean up the oceans and stop the degradation of land, water bodies and forests.

The keynote speakers at the webinar would include practitioners of volunteer-based beach cleanup, forest restoration and private sector partnership to remove ocean plastics and practice leaders from UN and international agencies. We expect also to hear from grassroots interventions from rural India and an interactive discussion regarding what works and how to obtain a way forward for replication and upscaling.

Nick Anthony

Sh. Nick Anthony is the Co-Founder of SEEK, a Phuket based Civic Society Organisation that supported the Thai Government with writing and implementing an intervention based sustainability plan pre SDG's in 2012 with the support of IUCN and WWF. He has advised and implemented plastic mitigation policies across the Indian Ocean including the Mumbai Municipalities drastic waste policy changes in 2015. He has advised National Geographic on the Ganges cleanup and was part of a UN Tech labs Mithi river cleanup. He continues his work on ridge to reef solutions, currently based in Pokhara he is developing waste reduction and take backs in the Himalayas. Nick is on working groups with the OECD localizing SDG's and UNESCO's Education for Sustainable Development (ESD), he has been a member of the Paris Peace Forum since inception. Connecting for a future.

Spoke on Ridge to Reef. Connectivity and pollution go hand in hand, river pollution and air pollution know no boundaries. We are one blue planet, all is connected. Positive Interventions and solutions are available today but last mile community education and local knowledge is lacking.

Sh. Sarbjit Singh Sahota

Sh. Sarbjit works at UNICEF as a Disaster Risk Reduction Specialist. He is an Architect and Urban Planner with over 25 years of professional experience of steering development and humanitarian strategies and programmes across Government and frontline UN agencies. Sarbjit is an alumnus of 'International Visitor Leadership Programme-2005' Department of State, Government of USA.

Spoke on Scale-down to Scale-up ' - Individual's link to the systems.

Dr. M. Prabhakar

Dr. M. Prabhakar obtained B Sc (Ag) and M Sc (Ag) from Andhra Pradesh Agricultural University and Ph.D. in Entomology from IARI, New Delhi. His key areas of interest are climate change research, remote sensing of crop stress and decision support systems for crop stress management. He has 27 years of research experience in ICAR. Presently, he is leading National Innovations in Climate Resilient Agriculture (NICRA), a flagship network project of ICAR being implemented in 41 ICAR institutes, 151 KVKs across the country. He has to his credit 54 research publications, authored and edited several books. Dr Prabhakar is the visiting scholar, Oklahoma State University, USA; Fellow of the Royal Entomological Society, London; Nuffic Fellow, Netherlands; MASHAV Fellow, Israel; Fellow of national Academy of Biological Sciences, Fellow of Entomological Society of India and Plant Protection Association of India. He is the recipient of Young Scientist Award by DST, Best Scientist Award (Crop Sciences) by PEARL Foundation, Bangalore, Outstanding Agricultural Scientist by BV David Foundation, Chennai. He has been deputed by Govt of India to represent in several international

fora viz., SAARC, G20, QUAD, BIMSTEC, IPCCC, UNEP etc., related to climate resilient agriculture. Very recently to the COP26 at Glasgow, UK and UNFCCC World climate change conference at Bonn, Germany.

Spoke on National Innovations in Climate Resilient Agriculture.
Sh. Mayank Gandhi

Sh. Mayank Gandhi was an international urban planner who turned into a social activist. He was earlier a core member of India against Corruption movement and part of the National Executive of the AAP party. But in 2016, he quit politics completely and started his own NGO, Global Vikas Trust to work in some of the worst areas of India for farmer welfare.

Since then, GVT has been working to multiply farmer annual incomes from Rs. 20-25000 to over Rs 1,00,000 per acre. With his model of changing cropping pattern, he has been successful in removing over 19000 farmer families from the poverty trap in 2900 villages of Maharashtra and MP. This has been achieved by planting over 40 crore fruit trees, training and supporting farmers to increase their incomes.

A new, state-of-the-art Krishikul farmer training centre is being constructed to train farmers from all over the country to increase their incomes by 4 to 8 times.

Spoke on his model of development that also mitigates Climate Change.

Padma Shri, Shri Umashankar Pandey is social activist from Banda, Uttar Pradesh, he played an important role in ground water conservation in Bundelkhand region. He spoke on the program he has been working on called Har Keth par Medh; Har Medh par Ped.

Shri Mayank Gandhi

Outcome Document of WSF 'Climate Change – What Individuals Can do' Webinar 29 July 2023

The containment of the increase in global temperatures to below 1.5 degrees Celsius (2.7 degrees Fahrenheit) by 2030 is at the heart of the SDG's. It is well understood that this is not only a matter of climate science and technology but a fundamental change in lifestyle for individuals, households, communities, economies, and nations – while ending the development deficit in terms of poverty, hunger & malnutrition, ill-health, illiteracy, gender discrimination, basic services and an entire gamut of growth and equity issues and governance challenges.

Sustainability is at the heart of it all. The concept and practices of sustainability are of course grounded in indigenous traditions and scriptures across the globe. Within the Indic civilizational sphere, the relationship between Prakriti and Purusha (Nature and Humanity) is one of mutual sustenance and beneficiation.

The World SDG Forum (WSF) is based on this very understanding and aims to build up a global alliance of SDG interventions (and interventionists), distinct from the exalted circle of policy gurus, experts, national and global agencies, etc.

As a community of practitioners (www.sdginterventions.org), the WSF has its mandate and vision enshrined in the Chitrakoot Declaration, driven by successive International Conferences on SDG's, held at Chitrakoot in April 2022 and February 2023. Under the aegis of the WSF, the webinar series is intended to build up the conversations on how to learn from practice and accelerate the achievement of SDG's.

Under the rubric of the SDG's, three goals focus specifically on environment and ecology – climate change (Goal 13), life under water (Goal 14) and life on land (Goal 15). These three goals are of course related to progress under the social development and economic growth goals, the targets for climate change action, ocean conservation and protection of land ecosystems (water, forests, and land) have a direct bearing on arresting climate change. These three goals are also the intersection between the Paris Treaty under the UNFCC and the 2030 Agenda under the UNGA Resolution.

"Taking urgent action to combat climate change and its devastating impacts is therefore imperative to save lives and livelihood, and key to making the 2030 Agenda for Sustainable Development and its 17 Goals – the blueprint for a better future – a reality"

Comparatively less attention is given to the role of individuals in tackling climate change. India has taken up the credo of LiFE (Lifestyle for Environment) and the High Principles for LiFE under the G20 consultations have indeed amplified the imperative for a new mode of lifestyles.

It is therefore timely and moot to focus on the role of individuals to arrest the spiral of climate change – to reduce the carbon footprint, clean up the oceans and stop the degradation of land, water bodies and forests.

The keynote speakers at the webinar included practitioners of volunteer-based beach cleanup, forest restoration and private sector partnership to remove ocean plastics and practice leaders from UN and international agencies. We also heard from grassroots interventions from the Indian hinterland and an interactive discussion regarding what works and how to obtain a way forward for replication and upscaling.

Sh. Nick Anthony, co-founder of SEEK provided insights into removal of microplastics from oceans, mountainsides, and urban gutters. shared his journey towards climate change adaptation working in 25 countries (beginning with Phuket in Thailand) with beach and mountain communities and experience in removing ocean plastic, including in partnership with Health ministries that tend be stable despite changes in political regime. Individual action against climate change is relevant as it is context specific – across religions, cultures, and countries. In India, plastic waste especially microplastics that last for over 500 years, gets accumulated not only in cities and plains but also at riverheads and riverbanks. It is a moving tapestry. For India, four geography-based (mountain, rural, urban, and coastal) solutions can be found, and individuals triggered to act – from the Himalayas to the Oceans. He stated that sustainable solutions require cohesive communities – and Chitrakoot model for fostering community solidarity can be most suitable.

Sh. Sarabjeet Singh Sahota, UNICEF shared his experience with UNICEF working on Behaviour Change communication in urban settings. He spoke on scaling down to scale up – arguing that in case of climate change the risk is global but resilience has to be local – hence individuals have a key role. The solutions have to be at two levels – changes in individual behaviour and changes in social norms. Mission LiFE focus on 75 behaviours and these must become default behaviours.

Agriculture (and allied industries including animal husbandry) not only accounts for nearly a third of global emissions but also provides employment to more than half the world's population and food and feed or the entire planet (human and animal population in toto).

Dr. M. Prabhakar (Indian Council of Agricultural Research's Central Institute for Dryland Agriculture/ICAR-CRIDA) shared perspective as to how farmers as individuals and risk taking entrepreneurs can combat climate change. He explained that farmers can adopt climate resilient technologies on their fields, and that this has already been undertaken under the ICAR project on Climate Resilient Villages – 446 villages in 151 village clusters with demonstrated success of 352

technologies benefiting 183, 752 households. It would now be critical to understand the process and share it under the umbrella of the World SDG Forum (WSF).

Sh. Mayank Gandhi shared his perspectives for SDG interventions based on his experience of very large-scale afforestation. He showed that a sustained collective of individuals drawn from local communities can go well beyond the performance of government agencies. He explained that while climate change seems to be on a roll, individuals can make a big difference as they have a key role in promoting partnerships across civil society organisations as also demanding accountability from large programs and projects.

Padmashri Uma Shankar Pandey, a SDG interventionist mentored by Nanaji Deshmukh and Deendayal Research Institute, shared his experience of combating climate change in Banda district, UP. He pointed out that growing up in a water-scarce landscape where daily availability of water was 100 gm – hardly enough to even bathe oneself, he had understood the importance of water conservation and revival of water bodies. The initiative "Medh per Ped" – Tree on Field Boundary – had succeeded on a very large scale and now the focus was also on fruit bearing trees that would totally transform the arid landscape in this part of Bundelkhand.

The Q&A and open discussion at the Webinar affirmed that individuals – as consumers and producers and community leaders- have a central role in combating climate change and it would now be important to sustain engagement and build platforms for sharing knowledge and processes of good practices. WSF and its partners need to understand process, map them and disseminate widely both online and through its offline and hybrid mode consultations and knowledge management forum.

WORLD SDG FORUM

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
A Webinar on "Technology and SDGs."
At 4.00 pm on Saturday, 26th August 2023
This webinar would discuss the potential for leveraging technology trends (Promise) – including the new world of work fashioned by AI/Machine Learning, to strengthen implementation mechanisms for SDGs. The speakers and participants would reflect on the current state of play (Performance) and highlight opportunities, challenges and risks (Prospects). The webinar would focus on appropriate technology and grassroots initiatives that harness it. It would also look at the role of the private sector both as a provider of technological solutions and a user oriented towards sustainability and growth that is pro-nature, pro-women and pro-jobs.
"Act as if what you do makes a difference. It does."
- William James
DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE
WORLD SDG FORUM

Note on World SDG Forum Webinar on Technology and SDG's

The Sustainable Development Goals (SDG's) signal a concerted international commitment to aset of normative principles, motivated by an urgent need to end destitution, disease anddegradation and deprivation sustainably. By ratifying the declaration, the global community has agreed to act, collectively and individually, to achieve economic, environmental, and social goals in an integrated manner. The SDG's build upon earlier work particularly the Millennium Declaration (UN 2000) and the earlier Copenhagen World Summit for Social Development (WSSD) which had emphasized international development and poverty alleviation, peace and security, human rights and environmental conservation as major objectives for the international community.

The achievement of SDG's has suffered a setback due to the cumulative global impact of Covid and Conflict in Ukraine. The "polycrisis" is now abating or at least metastasizing and the economic growth globally is picking up – with India, US and Western Europe rebounding significantly. Accelerating progress toward the 2030 targets – and beyond - requires harnessing technological advancements for grassroots communities, enterprises and households at the bottom of the pyramid. The Antyodaya philosophy enshrined in the Chitrakoot Declaration is more relevant now than ever before.

Under its webinar series of the World SDG Forum, DRI along with its partners is hosting a conversation on Technology and SDG's.

This webinar would share experiences regarding the use of technological advances and innovation to accelerate progress that arise when the 2030 Agenda for Sustainable Development is translated into an action agenda by member countries and SDG interventions across the globe.

SDG's offer not only a greater sense of urgency and scope for convergence but also a fresh set of ideas and opportunities to tackle 21st century challenges, technological innovations, including innovation in data use and visualisation for action.

Technological innovation of course will contribute to greater efficiency in operations – whether in agriculture, forestry, wetland conservation, healthcare, school education, income & employment generation, justice and human rights. However, the relationship is predicated on universal accessibility and utility of the technological innovations.

Technology can enable but the lack of access to it can disable the poor and disadvantaged groups and people living in India's remote locations. If the digital divide has to be bridged, the SDG credo of "No One Leave Behind" must be the objective of all stakeholders – government, private sector, civil society, scientific & research institutions and of course the tech leaders. Technology is of course a double edged sword – AI can and will displace existing jobs and nanotech can provide people with ready access to sex selection and worsen the sex ratio. While one cannot be a Luddite and resist the insertion of disruptive innovation in homes, workplaces and public spaces, it is important to ensure a focus on the grassroots. For this to happen issues aligned to SDG's – in education, healthcare, rural development, slum up gradation, grievance redressal and community monitoring of basic services need to be addressed

with a technology lens, for the world to successfully accelerate its progress towards achieving the SDG's.

The webinar would discuss the potential for leveraging technology trends (Promise)– including the new world of work fashioned by AI/Machine Learning, to strengthen implementation mechanisms. The speakers and participants would reflect on the current state of play (Performance) and highlight opportunities, challenges and risks (Prospects). The webinar would focus on appropriate technology and grassroots initiatives that harness it. It would also look at the role of the private sector both as a provider of technological solutions and a user oriented towards sustainability and growth that is pro-nature, pro-women and pro jobs.

The webinar brought together keynote speakers and discussants from grassroots innovator, tech sector, multilateral organisations and youth leaders to not only share experiences and critiques but also identify a practical way forward to ensure that the race to achieve SDG's in the aggregate does not leave the poorest folk behind. It is imperative that the digital divide between the few and the many is transformed into digital dividends for everyone.

Speaker Bios

Ms. Sayonee Chatterjee

Ms. Sayonee Chatterjee is currently Vice President, Women and Youth Engagement, Gram Vaani, a social tech company incubated out of IIT-Delhi. She has been a development practitioner for more than 15 years, working with grass-root communities, especially, women and youth in rural India, across range of issues including microfinance, maternal and child health and nutrition, sexual and reproductive health and rights, schemes and entitlements, youth leadership, livelihood, etc. In Gram Vaani, she takes care of engagement strategies, partnership and content, with special focus on youth and women. Our interventions have critical focus on behaviour shifts of the beneficiaries through actionable information and handholding, facilitated by trained community champions and low-end, easy to access mobile based technology. She have a Master Degree in Sociology and a diploma in Gender Studies from University of Pune.

Spoke on 'Tech Innovations Powering Community Development for the Next Billion'.

Dhruv Patel

Mr. Dhruv Patel is a dynamic and accomplished professional with a diverse background spanning technology entrepreneurship, academia, corporate social responsibility (CSR), and scientific research. With a passion for innovation and a commitment to making a positive impact on society, Mr. Patel has carved an impressive path in multiple domains. Hi is the Founder & CEO, D3S Healthcare Technologies, Co-Founder, Loop Robotics Technologies, Head of Resource & Program Development, Chiripal Group-WSRO, Former Assistant Professor, Department of Mechanical Engineering, Silver Oak University, Marwadi University &Gardi Engineering College and a Former Research Scientist, National Metallurgical Laboratories.

Spoke on his innovation for Early Breast Cancer Detection.

Dr. Jyothi Vastrad, Dean, College of Community Science, Central Agricultural University, Tura, Meghalaya

Dr. Jyoti V. Vastrad, a seasoned academic and administrative leader, has a rich and varied professional journey. With over 25 years of undergraduate teaching and 18 years as a postgraduate teacher, she's left an indelible mark on education.

Her administrative experience spans multiple roles, including National-Technical Coordinator and Head of Department. Dr. Vastrad has contributed to curriculum restructuring, designed e-courseware, and guided numerous postgraduate students. Her research prowess is reflected in diverse projects, patents and technologies developed. A prolific author, she's published extensively in NAAS-rated journals and authored books and chapters. Her extension efforts include empowerment through women's groups and impactful awareness programs.

Currently working with eco-friendly and sustainable textiles that include the non-conventional textile fibre extraction, product development, natural dyeing and printing, textile recycling, etc.

Spoke on 'Towards Sustainable Research – Focus on Textiles.'

Dr. Suraj Kumar

Dr. Suraj Kumar, Advisor & Chief Mentor, Kalinga Institute of Social Sciences is an expert practitioner on Sustainable Development Goals and Governance Reform – has served SDG Advisor to Governments of Chhattisgarh and Tripura and the national Ministry of Electronics & Information Technology. He is International Partnerships Advisor to Kalinga Institute of Social Sciences (KISS) & KIIT University. He is also a member of the SDG Board at Deendayal Research Institute (DRI).

He has worked in the development sector since 1993 at senior levels (17 years with the UN) in design and implementation of regional, national, and sub national programmes on human development, urban governance, skill development, women's empowerment, and ICT for Development. Dr. Kumar has written and lectured extensively on SDG's and is co-editor and contributor for a book on Social Development and SDG's in South Asia, published in September 2019 by Routledge UK.

Spoke on Tech to Accelerate SDG's - Challenges and Opportunities.

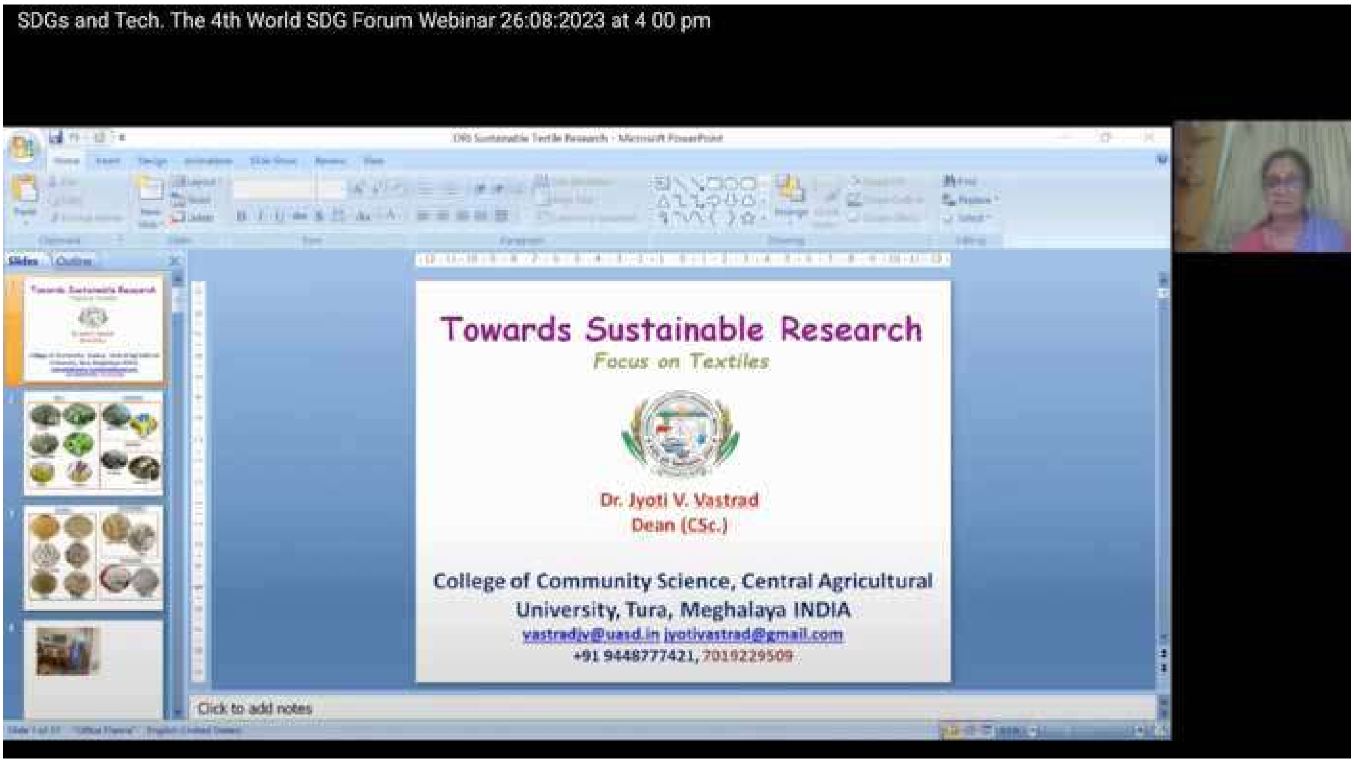

Outcome Document of World SDG Forum Webinar on Technology and SDG's

The Sustainable Development Goals (SDG's) signal a concerted international commitment to a set of normative principles, motivated by an urgent need to end destitution, disease and degradation and deprivation sustainably. By ratifying the declaration, the global community has agreed to act, collectively and individually, to achieve economic, environmental, and social goals in an integrated manner. The SDG's build upon earlier work particularly the Millennium Declaration (UN 2000) and the earlier Copenhagen World Summit for Social Development (WSSD) which had emphasized international development and poverty alleviation, peace and security, human rights and environmental conservation as major objectives for the international community.

Under its webinar series of the World SDG Forum, DRI along with its partners hosted a conversation on Technology and SDG's. Speakers and discussants at the webinar shared experiences regarding the use of technological advances and innovation to accelerate progress that arise when the 2030 Agenda for Sustainable Development is translated into an action agenda by member countries and SDG interventions across the globe.

The achievement of SDG's has suffered a setback due to the cumulative global impact of Covid and Conflict in Ukraine. The "polycrisis" is now abating or at least metastasizing and the economic growth globally is picking up – with India, US and Western Europe rebounding significantly. Accelerating progress toward the 2030 targets – and beyond - requires harnessing technological advancements for grassroots communities, enterprises and households at the bottom of the pyramid. The Antyodaya philosophy enshrined in the Chitrakoot Declaration is more relevant now than ever before.

SDG's offer not only a greater sense of urgency and scope for convergence but also a fresh set of ideas and opportunities to tackle 21st century challenges, technological innovations, including innovation in data use and visualization for action.

Technological innovation of course will contribute to greater efficiency in operations – whether in agriculture, forestry, wetland conservation, healthcare, school education, income & employment generation, justice and human rights. However, the relationship is predicated on universal accessibility and utility of the technological innovations.

Technology can enable but the lack of access to it can disable the poor and disadvantaged groups and people living in India's remote locations. If the digital divide has to be bridged, the SDG credo of "No One Leave Behind" must be the objective of all stakeholders – government, private sector, civil society, scientific & research institutions and of course the tech leaders. Technology is of course a double edged sword – AI can and will displace existing jobs and nanotech can provide people with ready access to sex selection and worsen the sex ratio. While one cannot be a Luddite and resist the

insertion of disruptive innovation in homes, workplaces and public spaces, it is important to ensure a focus on the grassroots. For this to happen issues aligned to SDG's – in education, healthcare, rural development, slum up gradation, grievance redressal and community monitoring of basic services need to be addressed with a technology lens, for the world to successfully accelerate its progress towards achieving the SDG's. Keynote speakers at the webinar highlighted specific cases from the social development sectors. The gave examples of harnessing the potential for leveraging technology trends (Promise)– including the new world of work fashioned by AI, Machine Learning, to strengthen implementation mechanisms.

The speakers and participants reflected on the current state of play (Performance) and highlighted opportunities, challenges and risks (Prospects). The cases discussed were those of appropriate technology harnessed for grassroots initiatives. The discussion then centered around the role of the private sector both as a provider of technological solutions and a user oriented towards sustainability and growth that is pro-nature, pro-women and pro-jobs.

It is imperative that the digital divide between the few and the many is transformed into digital dividends for everyone.

The webinar brought together multiple perspectives that connect the SDG interventions with tech and private sector. The keynote speakers and discussants from grassroots innovator, tech sector, multilateral organisations and youth leaders only shared experiences and critiques but also identified practical way forward to ensure that the race to achieve SDG's in the aggregate does not leave the poorest folk behind. India is a global exemplar with its emphasis on Digital Pulbic Infrastructure (DPI) that overlays the existing IT infrastructures to deliver directly to households and businesses across the country. It would be timely to build on this success to evolve Digital Infrastructures for specific SDG's such as Health and other Social Sector goals.

The network of SDG interventions with due process mapping and systematic convening under the rubric of World SDG Forum (WSF) can deliver precisely this for the planet and its people.

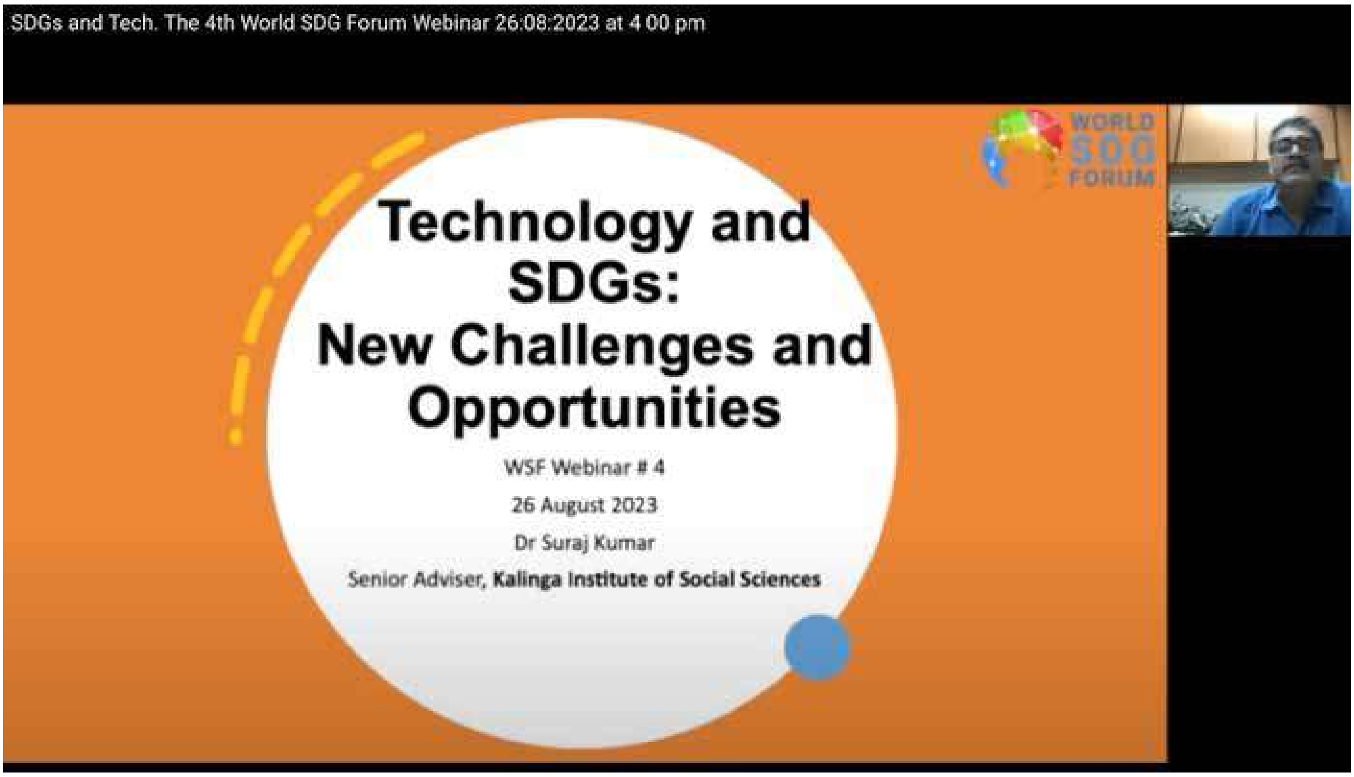

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

WORLD SDG FORUM

A Webinar on "Innovative Financing for SDG Acceleration."
At 4.00 pm on Saturday, 30th September 2023

This Webinar would look at the need to harness the growing interest among the investor community and sharper ESG reporting requirements of financial market regulators to identify specific modalities whereby the energy and resources of financial markets can be hitched as financing instruments (social stock exchanges, impact funds etc) for SDG interventions on the ground.

It would garner perspectives from a non-traditional community as far as the dialogue on SDGs is concerned, viz,. financial market players (including regulators mandating sustainability reporting), leaders of ESG work mandated by the boards, associations of Social entrepreneurs and connect them with on the ground interventions in social sectors. It would also bring in perspectives from relevant UN agencies working on innovative finance.

DEENDAYAL
RESEARCH
INSTITUTE

"Ní hé lá na gaoithe lá na scolb"
"The day of the wind is not the day for fixing the thatch"
- Old Irish Proverb

Note on World SDG Forum Webinar on 'Innovative Financing for SDG Acceleration'

The achievement of the SDG's is in peril. At the midpoint of the 2030 Agenda, the progress on most of the SDG's is either moving much too slowly or has regressed below the 2015 baseline.

"There's an old Irish proverb, *"Ní hé lá na gaoithe lá na xd scolb."* Roughly translated, it means that "the day of the wind is not the day for fixing the thatch" — a common roofing material for homes in rural Ireland back in the day. The saying is a reminder that if you wait until the last minute to take action, you are done for… Now, at the halfway point of the 2030 Agenda, the thatch is sodden and the wind is going only stronger.

The world was already off-track in achieving a majority of the SDG's before the COVID-19 pandemic. Without immediate course correction and acceleration of progress toward achieving the SDG's, our world is destined to face continued poverty, prolonged periods of crisis and growing uncertainty.

There has been positive progress in a limited number of areas. There are efforts under way globally, to achieve the 2030 Agenda and the Addis Ababa Action Agenda, including through SDG investments, reforming the international financial architecture, and supporting SDG interventions on the ground to accelerate sustainable development. The UN Secretary General has indeed proposed a SDG Stimulus Fund.

The World SDG Forum (WSF) is based on this very understanding and aims to build up a global alliance of SDG interventions (and interventionists), linking them to each other and to finance and markets. As a community of practitioners (www.sdginterventions.org), the WSF has its mandate and vision enshrined in the Chitrakoot Declaration, driven by successive International Conferences on SDG's, held at Chitrakoot in April 2022 and February 2023.

Under the aegis of the WSF, the webinar series is intended to build up the conversations on how to learn from practice, build coalitions of like-minded people and accelerate the achievement of SDG's. We now need to harness the growing interest among the investor community and sharper ESG reporting requirements of financial market regulators to identify specific modalities where by the energy and resources of financial markets can be hitched as financing instruments (social stock exchanges, impact funds etc) for SDG interventions on the ground.

In the light of the above, it is proposed to hold a 2-hour webinar on "What can the Financial Markets do, to accelerate progress towards the SDG's and beyond."

The webinar would garner perspectives from a non-traditional community as far as the dialogue on SDG's is concerned, viz,.financial market players (including regulators mandating sustainability reporting), leaders of ESG work mandated by the boards, associations of Social entrepreneurs and connect them with the ground interventions in social sectors. The webinar would also bring in perspectives from relevant UN agencies working on innovative finance.

The format for the webinar will be consistent with previous WSF webinars. It would be a closed group conversation (to ensure cyber-safety and avoid spams and hoaxers), wherein confirmed speakers and registered participants will receive a webinar link, so that they can surely login. A designated moderator would introduce the theme, purpose and sequencing of the webinar. Each keynote speaker would make an intervention on their work and state-of-art in the thematic area for 10-15 minutes, followed by a Q&A. After the keynotes, there would be an open forum wherein insights would be sought from speakers and participants respectively, followed by a summary by webinar conveners and moderator.

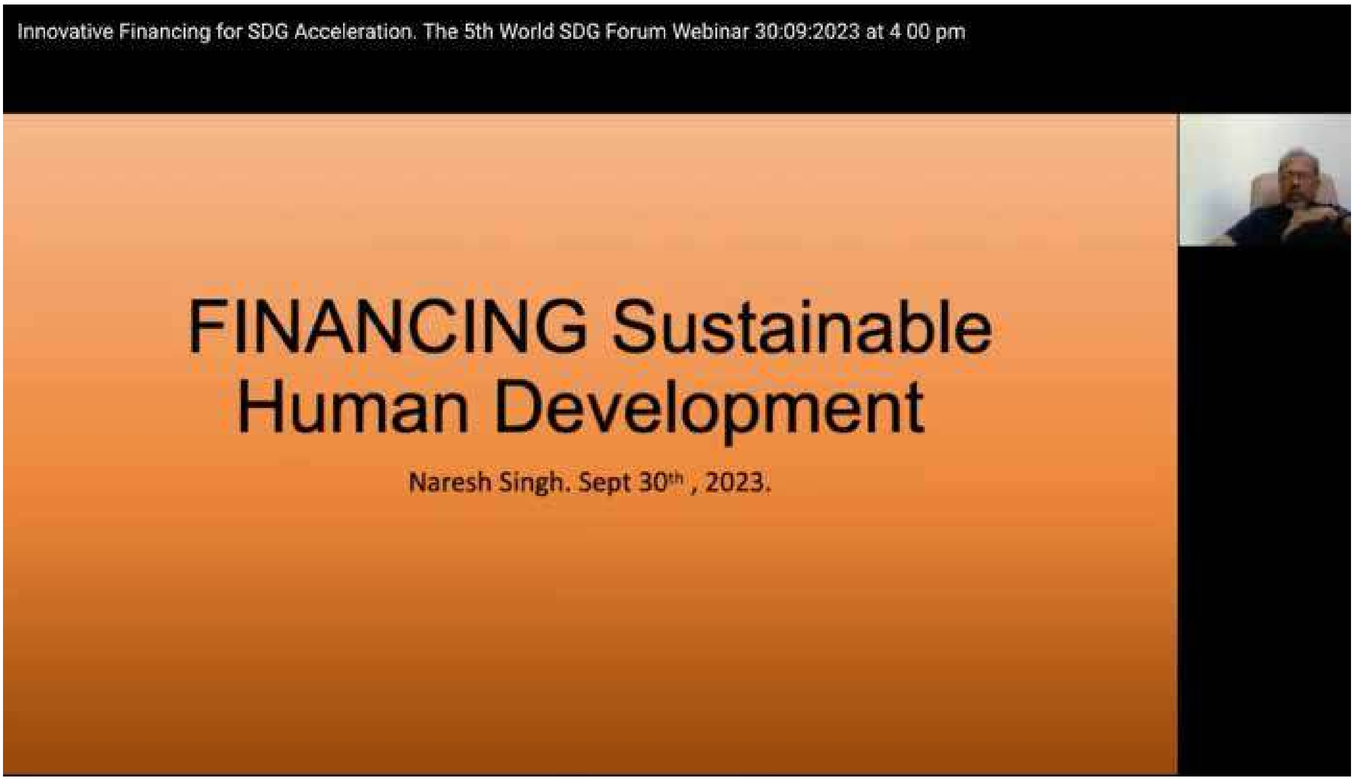

Speaker Bios

Dr. Naresh Singh

Is the Professor and Executive Dean at the Jindal School of Government and Public Policy; Director of the Centre of Complexity Economics, Applied Spirituality and Public Policy (CEASP) and Co director of the Centre for Legal Empowerment of the Poor (CLEP).

He has served in several high-profile international positions such as:

- Executive Director of the Global Commission on Legal Empowerment of the poor hosted by UNDP and co-chaired by Madeleine Albright and Hernando de Soto (Dti Level)
- Director General (Policy), Federal Govt of Canada.
- Principal Adviser on Poverty and Sustainable Livelihoods at UNDP New York (D2 level)

He has also been an international consultant to UNDP, FAO, ILO, and the Commonwealth Secretariat (London)

Spoke on 'Innovative Financing of Sustainable Human Development'.

Sh. Priyank Tiwari

Senior Director, Research and Advisory, Impact Investment Exchange, Singapore has nearly 2 decades of experience in marketing, business development, innovation programs, and impact investing across banking, multilateral and consulting sectors. In his current role, he leads IIX's engagement with a wide range of institutional and multilateral clients in developing impact investing ecosystem across various countries, with a focus on the Global South.

Previously, he has worked at the UN Capital Development Fund, YES BANK, Intellecap-Aavishkaar Group and KPMG. He has set up and scaled various initiatives from the ground-up across India, Southeast Asia and Africa. Sh. Priyank Tiwari is a graduate of IIM, Ahmedabad.

Spoke on 'Transforming the World For Equitable and Sustainable Growth'

Ms. Pratibha Jain

Ms. Pratibha Jain is the Head of Strategy and Group General Counsel at Everstone Group. She's an alumnus of Harvard Law School, Oxford University and Delhi University. She brings with her a breadth of international and Indian experience having worked with Sullivan & Cromwell in New York, Tokyo and Hong Kong, with Skadden Arps Slate, Meagher and Flom LLP in Hong Kong and Goldman Sachs in Mumbai. Prior to Everstone, Ms. Pratibha Jain was a Partner at Nishith Desai Associates where she founded their New Delhi office and lead their Funds and Regulatory practice.

She has worked on some of the most challenging projects in financial services and regulatory sector globally and in India, including representing Ministry of Finance for structuring of India's first USD 6 billion quasi sovereign wealth fund (National Infrastructure Investment Limited NIIF) and

designing USD 1.3 billion special 'window for funding stalled affordable and middle income housing projects' as an AIF fund.

She sits on various important committees including IVCA Executive Committee, FICCI Capital Markets Committee and CII Financial Markets Committee.

Spoke on 'Responsible Investing and ESGs-lessons from the Private Equity space'

Sh. C.K. Mishra

Sh. C.K. Mishra has been a career as Civil Servant belonging to the Indian Administrative Service. He joined the Service (IAS) in 1983 and superannuated as Secretary in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India. He has been spearheading the Indian efforts at addressing climate change issues and at policy interventions in matter relating to pollution and air quality. He led India's negotiations at important forums such as United Nations Framework Convention on Climate Change (Conference of the Parties (COP)) to assess progress in dealing with climate change; Montreal Protocol on Substances that Deplete the Ozone Layer and various other multilateral events. He was also the administrative head of Forest & Wildlife conservation efforts in India where India saw continuous increase in forest cover. His interventions and policy initiatives have brought India in the category of very few countries in the world on course to achieve the 2 degree target of global warming.

Prior to this, he was Secretary in the Ministry of Health & Family Welfare and also held the additional charge of Ministry of AYUSH for some time. As Additional Secretary & Mission Director, National Health Mission, he led one of the largest public health programmes globally. In about 37 years of public service, he has served as an administrator, policy-maker and public health strategist holding a wide range of assignments in the fields of health, education, industry and power.

Born in Patna, Bihar, Sh. C.K. Mishra earned his Bachelor's Degree in History (Hons.) from St. Stephens College, Delhi University. In addition to this, he has received a Post Graduate Diploma in Media Law at NALSAR, Hyderabad. He has also completed the Advanced Leadership Programme from Australia and New Zealand School of Government (ANZSOG), Australia.

Spoke on 'Sustainable Financing for Sustainable Development'.

WORLD SDG FORUM

Outcome Document of the WSF Webinar on Innovative Financing for SDG Acceleration

Globally, people are becoming more aware that a time of reckoning is imminent. They are slowly acknowledging that the global financial system is fundamentally flawed and not just going through a cyclical low. We are also more skeptical now about the ability of the prevailing market culture to ensure even basic well- being for the seven billion people who inhabit the earth.

Without immediate course correction and acceleration of progress toward achieving the SDG's, our world is destined to face continued poverty, prolonged periods of crisis and growing uncertainty. There are efforts under way globally to achieve the 2030 Agenda and the Addis Ababa Action Agenda, including through SDG investments, reforming the international financial architecture, supporting SDG interventions on the ground to accelerate sustainable development. The UN Secretary General has indeed proposed a SDG Stimulus Fund.

The World SDG Forum (WSF) is based on this very understanding and aims to build up a global alliance of SDG interventions (and interventionists), linking them to each other and to finance and markets. As a community of practitioners (www.sdginterventions.org), the WSF has its mandate and vision enshrined in the Chitrakoot Declaration, driven by successive International Conferences on SDG's, held at Chitrakoot in April 2022 and February 2023.

Under the aegis of the WSF, the webinar series is intended to build up the conversations on how to learn from practice, build coalitions of like-minded people and accelerate the achievement of SDG's. We now need to harness the growing interest among the investor community and sharper edge requirements of financial market regulators to identify specific modalities whereby the energy and resources of financial markets can be hitched as financing instruments (social stock exchanges, impact funds etc) for SDG interventions on the ground.

In the light of the above, a 2-hour webinar was held on 30 September 2023, with the topic on "what can the Financial Market sector do to accelerate progress towards the SDG's and beyond"

The webinar garnered perspectives from a non-traditional community as far as the dialogue on SDG's is concerned, viz,. financial market players (including regulators mandating sustainability reporting), leaders of ESG work mandated by the boards, associations of Social entrepreneurs and connect them with the ground interventions in social sectors. The webinar would also bring in perspectives from relevant UN agencies working on innovative finance.

As we move from UN Climate Week to COP28 in Dubai later this year, we must stop the "green wishing" and "green washing" and start thinking about the instruments that will enable the private sector and private investors to channel more capital toward climate resilience and sustainable development. While the public sector has an important role to play in this respect, scalable solutions require significant commitments of private-sector resources. With climate change already wreaking havoc on poor and rich countries alike, unlocking this largely untapped pool of capital has become an urgent priority.

Many investors associate climate-centric investments with "social impact" and reduced profitability. While sophisticated investors have the means to deploy their capital profitably toward decarbonization, the energy transition, and other climate-related sectors, such investments tend to be illiquid. They remain tightly wound up in private-equity funds, and thus inaccessible to the ordinary investors and savers who are most exposed to climate-driven food, water and energy insecurity.

The solution is to create climate investments that are profitable, liquid, and accessible to all. COP28 offers an opportunity to rethink how we deliver such market solutions, and how we can harness digital innovation to scale up promising models. To mobilize capital at scale, we must draw on the global savings of individual investors as well as institutions such as pension funds, insurers, and sovereign funds. Risk diversification can be achieved through retail-friendly, liquid, easily accessible instruments such as exchange-traded funds (ETFs).

The sensible way to construct a profitable, long-term, climate-aligned, widely accessible investment strategy is to develop a diversified portfolio of assets that

directly or indirectly support climate financing. For investors with a long-term horizon, a portfolio that meets these requirements should be composed of three main asset types.

The first is climate-resilient real estate and infrastructure – meaning assets in weather- proof, stable geographies that have low climate exposure. Real-estate and infrastructure valuations in such regions are poised to appreciate significantly on the back of population shifts from high-risk areas across the Southern Hemisphere to more resilient communities in North America, Northern Eurasia, and select geographies in the Global South.

Real Estate Investment Trusts (REITs) and exposure to greenfield developments through ETFs are two ways to secure reliable returns from climate- adaptation efforts. And as an added bonus, such investments offer broader economic and societal benefits, including productivity growth, job creation, and the provision of employment and housing for migrating populations.

The second component is green commodities. An orderly transition to a more resilient future requires massive investments not only in energy, food, and water assets, but also in the metals and critical minerals used in renewable energy and electric vehicles (EVs). These include commodities such as soy, wheat, copper, rare-earth elements, cobalt, lithium, and so forth. To avoid "greenflation" (inflation caused by decarbonization efforts) and supply bottlenecks, we urgently need to boost production and lower the cost of securing these commodities.

Finally, a sensible climate-aligned portfolio should include assets that provide a hedge against inflation and geo-economic risks, such as short-term and inflation-indexed sovereign bonds and gold. Not only does the negative correlation between these assets and other climate-related investments offer extra ballast, but it also provides liquidity and low volatility to meet the needs of many individual investors, pensioners, and savers. And again, there is an added bonus: greater investments in inflation-proof sovereign assets will allow governments to do more to finance the green transition.

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

12 RESPONSIBLE CONSUMPTION AND PRODUCTION

A Webinar on "Sustainable Consumption & Sustainable Production."
At 4.00 pm on Saturday, 28th October 2023

At the heart of the efforts to achieve the Sustainable Development Goals, is the message encapsulated in SDG 12 – 'Responsible Consumption and Production', or more correctly, 'Sustainable Consumption and Sustainable Production'. Without it, nothing will be achieved. It is at the core of the 17 Goals, 169 targets and 232 indicators.
This webinar will explore the manner in which this could be achieved, what measured would need to be taken globally and the role spirituality can play.

"The greatest threat to our planet is the belief that someone else will save it."
– Robert Swan, Author

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE

WORLD SDG FORUM

Note on World SDG Forum Webinar on
'Sustainable Consumption and Sustainable Production'

"Civilization, in the real sense of the term, consists not in the multiplication, but in the deliberate and voluntary reduction of wants". As the Buddha once said ""no sorrow can come to those who do not try to possess things or people as their own." The challenge is to translate credo into conviction and ambition into intent for implementation. Spirituality can play a major role to catalyse sustainable consumption as well as sustainable production. Ethics provides the pathway for spirituality into everyday life and action.

As a champion of the waste to wealth concept, Union Road Transport and Highways Minister Sh. Nitin Gadkari recently said at an event in Delhi, "Conversion of waste into wealth can generate Rs 10 lakh crore per annum for the Indian economy'.

At the heart of the efforts to achieve the Sustainable Development Goals, is the message encapsulated in SDG 12 – 'Ensure Sustainable Consumption and Production Patterns" or more succinctly, 'Sustainable Consumption and Sustainable Production'. Without it, nothing will be achieved. It is at the core of all the 17 Goals, 169 targets and 232 indicators.

Pt. Deendayal Upadhyaya's philosophy of 'Integral Humanism' articulated the idea more clearly. Among the numerous quotes on the subject, the clearest was, "It is essential, therefore, to use up that portion of the available natural resources which nature itself will be able to recoup easily. ... The industrialist provides for a depreciation fund to replace machines when they are worn out. Then how can we neglect the depreciation fund for nature? From this point of view, it must be realised that the object of our economic system should not be to make extravagant use but a well-regulated use of available resources... It will not be wise, however, to engage in a blind rat-race of consumption and production.. Such a system alone can be called civilisation...This system will not thrive on the exploitation of nature, but will sustain nature, and will in turn itself be nourished. Milking, rather than exploitation, should be our aim. The system should be such that overflow from nature is used to sustain our lives."

अति सर्वत वर्जयेत्

Ati Sarvatra Varjayet

Excess of anything is bad.

The World SDG Forum's Webinar series has been trying to conduct a conversation on the issues around the SDG's and draw like-minded individuals and organisations to explore avenues that would help accelerate the achievement of the SDG's as well as to create a community of practitioners that would nudge the current process.

This webinar, the sixth in the series, takes its lead from the outcome of the fifth Webinar on Innovative Financing for SDG's that concluded that without Sustainable Consumption and Production, the financing of SDG's would not achieve the results we require.

The Webinar aims to bring together the voices that can articulate the different elements required to achieve this Goal as well as practitioners who have succeeded in the endeavour to create sustainable consumption and production models.

The format for the webinar will be consistent with previous WSF webinars. It would be a closed group conversation (to ensure cyber-safety and avoid spams and hoaxers), wherein confirmed speakers and registered participants will receive a webinar link, so that they can surely login. A designated moderator would introduce the theme, purpose and sequencing of the webinar. Each keynote speaker would make an intervention on their work and state-of-art in the thematic area for 10-15 minutes, followed by a Q&A. After the keynotes, there would be an open forum wherein insights would be sought from speakers and participants respectively, followed by a summary by webinar convener and moderator.

Speaker Bios

Senacharya Swami Achalanand Giri, Jodhpur

Spoke on 'Spirituality and Sustainability'.

Shri Atul Jain, General Secretary, Deendayal Research Institute.

Spoke on 'Integral Humanism and Sustainable Consumption and Sustainable Production.

Sh. Tejinder Singh Sandhu

Sh. Tejinder Sandhu has over four decades of varied multi-country, multi-sector experience spanning the social development sector in six South-western states of Nigeria, Africa, and the Indian states in the North-east, Rajasthan, Bihar, Jharkhand and Maharashtra.

A 17 years stint with the Indian Administrative Service, Government of India focusing on governance and public affairs, especially in rural and urban administration, including social development; and 27 years at UNICEF across sectors have imbued Sh. Tejinder Singh Sandhu with a unique perspective on developmental issues, both at the national and international level.

Currently, he advises several leading not for profit organisations, including Center for Communication and Change - India, a Johns Hopkins Communication Centre affiliate; Kalinga Institute of Social Sciences, Covid Action Collaborative.

Spoke on Ensuring Sustainable Consumption and Production - *Insights from Action Plans*

Dr. Kishore Malviya

Dr. Kishore Malviya, is a PhD in Environment Science, Specialization in Wastewater Treatment from National Environment Engineering Research Institute, (NEERI) Nagpur, and is among his other duties a Director, of SMS Envocare Ltd., Chairman, CII-Vidarbha-Zone, Member, EAC-Committee appointed by MOEF&CC, Govt. of India, Member, River Rejuvenation-Committee appointed by Govt. of Maharashtra and Member, National Committee on Environment of CII. He has more than 22 years of experience in Environmental sector.

Spoke on Liquid Waste Management Waste to Wealth – The Nagpur Story

Dr. Seshadri Chari

Dr. Seshadri Chari is an alumnus of Mumbai Vidyapeeth (then it was Bombay University). He did his B. Com, LLB, and MA from here. He is the Governor's nominee in the Managing Council of Mumbai University. He is also a member of the Governing Council of Research & Information Systems (RIS) an autonomous institution under the Ministry of External Affairs.

Spoke on Sustainable Production and Sustainable Consumption.

Outcome Document from World SDG Forum Webinar on 'Sustainable Consumption and Sustainable Production'

The World SDG Forum's Webinar series has been trying to conduct a conversation on the issues around the SDG's and draw like-minded individuals and organisations to explore avenues that would help accelerate the achievement of the SDG's as well as to create a community of practitioners that would nudge the current process.

This webinar, the sixth in the series, takes its lead from the outcome of the fifth Webinar on Innovative Financing for SDG's that concluded that without Sustainable Consumption and Production, the financing of SDG's would not achieve the results we require.

The SDG 12 Webinar brought together the voices that articulate the different elements required to achieve this Goal as well as practitioners who have succeeded in the endeavour to create sustainable consumption and production models.

The speakers from the world of civil society, spiritual guidance, industry and rural development shared their experiences and perspectives – with a common refrain being the mutually reinforcing relationship between production and consumption so that while all needs are met but the focus is on responsivity towards nature today and future generations tomorrow.

"Civilization, in the real sense of the term, consists not in the multiplication, but in the deliberate and voluntary reduction of wants". As the Buddha once said "No sorrow can come to those who do not try to possess things or people as their own." The challenge is to translate credo into conviction and ambition into intent for implementation. Spirituality can play a major role to catalyse sustainable consumption as well as sustainable production. Ethics provides the pathway for spirituality into everyday life and action.

As a champion of the waste to wealth concept, Union Road Transport and Highways Minister Sh. Nitin Gadkari recently said at an event in Delhi, "Conversion of waste into wealth can generate Rs. 10 lakh crore per annum for the Indian economy''.

At the heart of the efforts to achieve the Sustainable Development Goals, is the message encapsulated in SDG 12 – 'Ensure Sustainable Consumption and Production Patterns" or more succinctly, 'Sustainable Consumption and Sustainable Production'. Without it, nothing will be achieved. It is at the core of all the 17 Goals, 169 targets and 232 indicators.

Pt. Deendayal Upadhyaya's philosophy of 'Integral Humanism' articulated the idea more clearly. Among the numerous quotes on the subject, the clearest was, "It is essential, therefore, to use up that portion of the available natural resources which nature itself will be able to recoup easily. The industrialist provides for a depreciation fund to replace machines when they are worn out. Then how can we neglect the depreciation fund for nature? From this point of view, it must be realised that the object of our economic system should not be to make extravagant use but a well-regulated use of available resource. It will not be wise, however, to engage in a blind rat-race of consumption and production. Such a system alone can be called civilization. This system will not thrive on the exploitation of nature, but will sustain nature, and will in turn itself be nourished. Milking, rather than exploitation, should be our aim. The system should be such that overflow from nature is used to sustain our lives.

अति सर्वत वर्जयेत्

Ati Sarvatra Varjayet

Excess of anything is bad.

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

16 PEACE, JUSTICE AND STRONG INSTITUTIONS

A Webinar on
"Strong Local Governance Institutions for Effective Skill Development ."
At 4.00 pm on Saturday, 25th November 2023

Strong Local Institutions are a key factor in accelerating the achievement of the SDG Goals. While there is a large body of work and corpus of practices on vocational training and technical education, it might be useful to begin a dialogue on new avenues of skill development – FinTech, GovTech, Digital Economy, etc. - and the role that local governance institutions can play – and how to leverage climate finance for these. This webinar will explore the steps being undertaken at the National, State and Local level to achieve this, as well as new initiatives and ideas.

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE

WORLD SDG FORUM

Note for WSF Webinar on 'Strong Local Governance Institutions for Effective Skill Development'

The global conversation on sustainability has now begun to focus more explicitly on skill development as a gateway to sustainable livelihoods for the population entering the workforce – India alone has nearly a billion people in the working age cohort who need to be productive and profitably employed. If the youth dividend is to be harnessed, high-quality human capital with the right mix of skill, attitude and orientation is required, else many countries with a young population today will not reap benefits. "They might get old before they get rich."

While there is a large body of work and corpus of practices on vocational training and technical education, it might be useful to begin a dialogue on new avenues of skill development – FinTech, GovTech, Digital Economy, etc. - and the role that local governance institutions can play – and how to leverage climate finance for these.

Skill development in FinTech is a case in point. To achieve maximum impact, the climate-investment instruments must be made available to the average investor on liquid, low-cost terms. While ETFs can help, not everyone has a brokerage account, or even a bank account. We tend to overlook the unbanked populations of the Global South, as well as the younger generations, for whom digital assets may be more appealing. According to the World Bank 1.4 billion adults are unbanked globally, and the share of the unbanked population exceeds 50% in several Middle Eastern, Asian, and African countries with larger youth ("digital native") populations.

To build climate-resilient communities, encourage cross-border public-private partnerships, secure critical green supplies, and accommodate climate-driven population shifts around the world, policymakers and asset owners urgently need to rethink how we channel capital towards skill development at scale. With climate-driven costs escalating rapidly, innovation (both technological and financial) remains the most powerful tool at our disposal. Innovation of course requires local action and this is where local governance institutions can play a catalytic role.

Accordingly, it is proposed to have a virtual dialogue under the aegis of the WSF on new and innovative areas for skill development and the role that local governance institutions – both urban and rural – can play. There is now a significant body of work on local governance and SDG's – including SDG plans for rural councils and urban local bodies. It is time now to bring the body of work on local planning for SDG's to bear on innovative and effective pathways for skill development and higher quality of human capital.

At this webinar, we expect to bring together experts working on sustainability and digital and grassroots practitioners working on skill development, including in sunrise sectors such as financial services, logistics sector (India's Gati Shakti for example) and infrastructure workers, etc.

Speaker Bios

Dr. Sunil Shukla

Dr. Sunil Shukla, Director General of Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, is credited with pioneering innovative models in research, education, policy advocacy, corporate efficiency, start-ups, MSME growth and grassroots sustainable livelihoods. Dr. Shukla has institutionalized entrepreneurship in formal education and Institutes of National Importance with the launch of internationally recognized post-graduate program and target-oriented, result-driven modules in entrepreneurship. As Editor of the premier scholarly 'Journal of Entrepreneurship', published by SAGE, and as the Lead of the Indian Chapter of the world's largest Annual Study of Entrepreneurial Dynamics, Dr. Shukla continues to strengthen entrepreneurship within and outside the country. Besides India, several regions of South-East and South Asian countries, Africa, the USA, Iran and Uzbekistan have also sought his support in rooting entrepreneurship successfully.

Spoke on 'Entrepreneurship and Government Initiatives'

Dr. Sanjay Saraf

Dr. Sanjay Saraf is from the 1991 batch of the State Rural Development Services. He is presently the Joint Commissioner, Development, Indore Division, and also Director, Mahatma Gandhi State Institute of Rural Development &Panchayati Raj, Jabalpur for the last 8 years.

Spoke on the Role of Panchayati Raj Institution in skill development in rural M.P.

Dr. Archana Patankar

Dr. ArchanaPatankar is a Consultant, Researcher and Practitioner with substantial National and International experience in the field of Climate Change, Health and Environment. She is currently associated with the National Skill Development Corporation as a Senior Consultant Economist and working on data and demand-driven skilling and livelihood generation initiatives for vulnerable communities in rural areas and urban MSMEs. Dr. Archana Patankar brings over a rich experience of conceptualizing, operationalizing and leading policy and practice-oriented assignments across different verticals such as climate change vulnerability and adaptation, urban health issues, applied environmental economics and economics of energy sector. She has worked with global institutions such as the World Bank, Asian Development Bank, UNEP-DTU Partnership, Oxford Policy Management and Asia Pacific Network for Global Change Research as well as private sector organizations in India. She holds PhD in Economics from Indian Institute of Technology Bombay (IITB) and has taught Economics for more than a decade at undergraduate and postgraduate levels. She also completed LLM in Energy and Environmental Law at Birmingham Law School, University of Birmingham recently.

Spoke on about new avenues for skill development for NSDC to strengthen sustainability and adaptive capacity of local communities.

Sh. YogeshTamrakar, Mayor, Satna, Madhya Pradesh, spoke on 'The Satna experience on Skilling Municipal Workers and service providers, as well as implementation of skill services for youth and unemployed'.

Outcome Document from WSF Webinar on 'Strong Local Governance Institutions for Effective Skill Development'

The global conversation on sustainable livelihoods for the population entering the workforce – India alone has nearly a billion people in the working age cohort who need to be productive and profitably employed. If the youth dividend is to be harnessed, high-quality human capital with the right mix of skill, attitude and orientation is required, else many countries with a young population today will not reap benefits. "They might get old before they get rich." Government cannot provide jobs on scale, but it can provide policy signals and fiscal incentives for the private sector to do so – including through the PPP modality. While there is a large body of work and corpus of practices on vocational training and technical education, it might be useful to begin a dialogue on new avenues of skill development – FinTech, Gov. Tech, Digital Economy, etc. - and the role that local governance institutions can play – and how to leverage climate finance for these.

Skill development in FinTech is a case in point. To achieve maximum impact, the climateinvestment instruments must be made available to the average investor on liquid, low-cost terms. While ETFs can help, not everyone has a brokerage account, or even a bank account. We tend to overlook the unbanked populations of the Global South, as well as the younger generations for whom digital may be more appealing. According to the World Bank 1.4 billion adults are unbanked globally, and the share of the unbanked population exceeds 50% in several Middle Eastern, Asian, and African countries with larger youth ("digital native") populations.

Accordingly, WSF team hosted a webinar in November 2023 on new and innovative areas for skill development and the role that local governance institutions – both urban and rural – can play. There is now a significant body of work on local governance and SDG's – including SDG plans for rural councils and urban local bodies. It is time now to bring the body of work on local planning for SDG's to bear on innovative and effective pathways for skill development and higher quality of human capital.

The webinar brought together sustainability and digital economy experts and grassroots practitioners working on skill development, including in sunrise sectors such as financial services, logistics sector (India's Goshawk for example) and infrastructure workers, etc.

The conversation at the webinar reflected diverse perspectives with a common purpose – showing how to yoke skill development initiatives – both on national scale and local actionsto accelerate progress towards SDG's – go beyond.

- To build climate-resilient communities, encourage cross-border public-private partnerships, secure critical green supplies, and accommodate climate-driven population shifts around the world, policymakers and asset owners urgently need to rethink how we channel capital towards skill development at scale.
- With climate-driven costs escalating rapidly, innovation (both technological and financial) remains the most powerful tool at our disposal. Innovation of course requires local action, and this is where local governance institutions can play a catalytic role. They can provide the on-ground momentum to replicate and upscale successful practices in skill development.
- Currently, the roles for skill development missions and those of local bodies tend to be silo-ed. These silos need to be converged. This challenge is global but the opportunities to resolve it are local. Convergence to achieve SDG's through skill development is an imperative.
- Given the flexibility and resources – and technical experience- of skill development missions, the convergence with PRIs can radically transform the quality of human capital and boost India's progress towards SDG's and its leadership role as lodestar for SDG interventions globally.

PLENARY SESSION
"CREATING A LiFE SOCIETY"
3rd International Conference
Sustainable Development Goals
25th-27th February 2024
तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन
सतत् विकास के लक्ष्य
25 –27 फरवरी 2024
पं. दीनदयाल उपाध्याय
2 ZERO HUNGER
4 QUALITY EDUCATION
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
Deendayal Research Institute,Chitrakoot, India

Plenary Session, 25th February, 2024. Speakers and Brief

SPEAKER I

Shri Vasant Pandit, Treasurer, Deendayal Research Institute, and Convenor, World SDG Forum introduced the Concept.

SPEAKER II

Dr. Naresh Singh, is the Professor and Executive Dean at the Jindal School of Government and Public Policy; Director of the Centre of Complexity Economics, Applied Spirituality and Public Policy (CEASP) and Co-director of the Centre for Legal Empowerment of the Poor (CLEP). He has served in several high-profile international positions such as:

- Executive Director of the Global Commission on Legal Empowerment of the poor hosted by UNDP and co-chaired by Madeleine Albright and Hernando de Soto (D2 Level)
- Director General (Policy), Federal Govt of Canada.
- Principal Adviser on Poverty and Sustainable Livelihoods at UNDP New York (D1 level)

He has also been an international consultant to UNDP, FAO, ILO, and the Commonwealth Secretariat (London), and has just published a book entitled 'Applied Spirituality and Sustainable Development Policy'.

Spoke on 'Applied Spirituality and Sustainable Development Policy'.

SPEAKER III

Dr. GajananDange is a veterinary doctor by education who has dedicated his life to the development of the rural and janjati (tribal) areas. He is the Founder and President of YOJAK, which promotes Bharatiya Vikas Chintan. He is also a member of the National Rural Livelihood Promotion Society (NRLPS), under the National Rural Livelihood Mission, Ministry of Rural Development (GOI). He was a member of the Rajiv Gandhi Science and Technology Commission, Maharashtra State.

Known for his passion for farming, and his concern for farmers and the environment, Dr. Gajanan Dange, has been instrumental in the establishment and development of the KVK (Krishi Vigyan Kendra), Nandurbar, Maharashtra (India). He has guided and headed numerous research-based development solution projects for rural development. He has experimented with new forms of social systems where communities can take the lead in development activities. He started the Biodiversity and Agriculture Technology Festival in KVK Nandurbar, which was later upscaled and has now been implemented by more than 700 KVKs in India. He is closely associated with grass root organizations and research institutions across the country.

Later, he focused his research on problems created due to developmental policies, the thought process behind them, and the possible sustainable solutions to this. After realizing that we need Bharatiya philosophy-based development, he took the lead in the establishment of YOJAK in 2012. He was India Coordinator, LiFE, Working group of C20.

Spoke on the 'Conclusions of C20 LiFE Discussions and link to LiFE Society'

SPEAKER IV

Dr. Seshadri Chari is an alumnus of Mumbai Vidyapeeth (then it was Bombay University). He did his B. Com, LLB, and MA from here. He is the Governor's nominee in the Managing Council of Mumbai University.

He is the member of the Governing Council of Research & Information Systems (RIS) an autonomous institution under the Ministry of External Affairs.

He is presently the Chairman, China Study Centre, MAHE, Manipal and Centre for Indo-Pacific Studies. He is also the member of the Planning & Monitoring Board of Manipal University (MAHE).

He is also Professor Emeritus at SavitribaiPhule Pune University and Ministry of Defence Chair in the Department of Defence & Strategic Studies, and Secretary General of Forum for Integrated National Security (FINS), Director (International Affairs) at the Institute of National Security Studies, Research Director at the Chronicle Society of India for Education & Academic Research (CSIEAR).

Dr. Chari was a Pracharak of RSS since 1978 for 18 years. He is one of those few lucky ones who has seen Pandit Deendayal ji and worked with Rashtra Rishi Nanaji Deshmukh.

He gave an overview of what we are trying to achieve with the International SDG Conferences, World SDG Forum and with the Chitrakoot Declaration and the subsequent Webinars last year, our direction with a LiFE society.

COMPERE.

Shri Amitabh Vashistha, General Manager, Deendayal Research Institute.

Introduction of the Concept by Shri Vasant Pandit, Treasurer, Deendayal Research Institute and Convenor, World SDG Forum.

- The concept of 'Lifestyle for the Environment (LiFE) was introduced by Prime Minister Narendra Modi at COP26 in Glasgow on 1st November 2021, calling upon the global community of individuals and institutions to drive LiFE as an international mass movement towards "mindful and deliberate utilisation, instead of mindless and destructive consumption" to protect and preserve the environment.
- During India's G20 Presidency, under the C20 deliberations, LiFE was a major focus.
- At the end of the Presidency, a Conference was held in Delhi by RIS, a discussion was sought on how to proceed with a LiFe Economy.
- It is as I had mentioned there, it is a paradox. The measurement of a country's progress and development is in terms of GDP. Increased GDP requires increased production and increased consumption. Without a change in how we measure progress, we cannot talk about sustainability.
- Deendayalji and Nanaji's reason for establishing and promoting the vision of an alternate socio-economic system – Integral Humanism.
- And the belief that this model, based on Bharatiya Sanskriti, could offer an alternate to the world, where consumerism, the sustaining pillar of the Industrial Revolution and its subsequent economic models, whether capitalist or socialist, rely on maximum production and maximum consumption as measure of its success.

- What Integral Humanism offers: Sustainability in both production and consumption.
- Sustainability is the basis of a LiFE society. Adaptability is the key.
- It is what Deendayal Research Institute has been working on and is hoping to achieve. A part of its vision attributes is social consciousness. Nanaji believed that "the goal of Education is to create socially conscious contributing members of society."
- The 3rd International Conference is focused on SDG 2 - Zero Hunger and SDG 4 – Quality Education. One the major reasons for Deendayalji rejecting the philosophies of the West was their take on feeding their countrymen.
- Deendayalji's basic though on SDG 2 in Integral Humanism is "Those who earn will feed". And I quote: "our slogan should be that the one who earns will feed, and every person will have enough to eat". The right to food is a birthright. The ability to earn is a result of education and training. In a society, even those who do not earn must have food. The children and the old, the diseased and the invalids, all must be cared for by society. Every society generally fulfils this responsibility. The social and cultural progress of mankind lies in its readiness to fulfil this responsibility. The economic system must provide for this responsibility. The economic system must provide for this task. Economics as a science does not account for this responsibility. A man works not for bread alone, but also to shoulder this responsibility."
- This is also reflected in the Indian behaviour of giving. Ashoka study of Indian giving, showed that over 90% of Indian charity is to temples, gurudwaras and other religious institutions to feed people through bandaras, langars, etc.
- Nanaji's believed that the goal of Education is to create socially conscious contributing members of society. He Wrote:

"Why is Education Necessary for Man?

Being a corporal animal, man, like all other animals, consumes to survive. Though all other animals have to satisfy their corporal needs as well, they have neither the instinct, nor the ability, to accumulate what they need to consume. But man has both the ability and the means to accumulate more than enough to satisfy his needs. This instinct to accumulate is the root of greed in man. Greed has no end. Due to this greed, man can accumulate more than his needs and cause an imbalance in society. This imbalance causes dissatisfaction, which in turns disrupts the peace and harmony of society, and generates negative feelings like envy and jealousy. It is in anticipation of these unpleasant situations, that nature has also endowed man with the virtue of tolerance. Tolerance towards others awakens a sense of conscientiousness in man. Conscientiousness does not merely restrain one from hurting others, it also inspires one to give happiness and rejoice at the happiness of others. This is also a special attribute given to man.

These two inherent instincts of man, namely greed and conscientiousness are not naturally balanced, and there is always an internal conflict between these two contrary facets of man's personality going on inside his mind. It is to balance these two instincts that man needs education, as education is what adorns human beings with humanity.

The original goal of education was to teach humanity to human beings, but instead of this, education today has become a means of achieving materialistic goals and monetary gains.

Spirituality leads to tolerance. It inspires goodwill between human beings. It is for this reason that for India's overall development, social and administrative progresses are both equally important and need to be treated on par. Else we cannot expect the overall progress in the country.

A system has to be evolved, in the context of modern science and technological progress, so that our moral values, education, health, governance, entrepreneurship, literature and arts etc. are reflected in every facet of society. Otherwise, consumerism born out of modern industrial culture would decimate our humanitarian traditions."

I hope the discussion over the next 3 days will give us some ideas on how to proceed on the road to building a LiFE Society.

Thank you.

आप सब का बहुत-बहुत धन्यवाद यहाँ आने के लिए। बहुत लोगों को एस.डी.जी. का मतलब मालूम नहीं है, क्योंकि समस्या ये है कि हम दिल्ली में इस समस्या पर बात नहीं कर सकते हैं, पर फिर भी आप यहाँ थोड़ा सीखने थोड़ा सुनने के लिये आये इसके लिये हम बहुत-बहुत आभारी हैं। बहुत लोग मुझसे कहते हैं कि वसंत दिल्ली में क्यों नहीं करते हो? यहाँ चित्रकूट में करने में कष्ट होता है, लोग आते नहीं-जाते नहीं। मैंने बोला कि हम शबरी जैसे यहाँ बैठेंगे तो लोग आ जायेंगे, दो-तीन साल लगेगा लोगों को आने में, अपना ये तीसरा एस.डी.जी. कॉनफ्रेंस है, और काफी लोग आये हुए हैं। इस साल में बहुत सारी अपने प्रधानमंत्री ने चर्चा किया। 2019 में जो COP-20 है उसमें एक चर्चा किया कि ये जो अपनी पृथ्वी है, वो खराब हो रही है, उसके बचाव के लिये यदि हम लोग कुछ नहीं करेंगे तो आगे जो पीढ़ी आयेगी उसके लिये कुछ नहीं होगा। पृथ्वी के बारे में सरकार अभी जो योजनाएं चलाकर कार्य कर रही है वो तो कर ही रही है। पर जो सरकार करती है वो अलग, हम क्या कर सकते हैं? इस पर पूरे साल जो चर्चा हुई थी, इसके बारे में गजानन जी जो बैठे हुए हैं वो हम लोगों को बताने वाले हैं। इसके बारे में चर्चा हुई थी कि प्रधानमंत्री ने जो लाइफ स्टाइल का विषय है, उसमें योजनायें प्रारम्भ किया। उसे कैसे पूरे विश्व में लाने के लिये और देश में लाने के लिये चर्चा करी थी।

देश के लिये सरकारें जो करती हैं, उससे अलग हम लोगों को कुछ करना है। यह वर्ल्ड कार्यक्रम G-20 दिल्ली में हुआ, उसमें पर्यावरण बचाने के लिये पूरे विश्व ने एक साथ बैठ कर चर्चा की। उसमें कैसे पूरे विश्व को उसमें आने के लिये चर्चा किया। बहुत सारे देशों ने उसको एक्सेप्ट किया उसको एक साथ लाने के लिये चर्चा किया था। उसमें हम लोग Life Economy के बारे में चर्चा की। इसमें इकोनोमिस्ट का ही बोलबाला है, और जब तक इकोनामिस्ट को

हम हटायेंगे नहीं तब तक कुछ बदलने वाला नहीं है। पर उसको हटाना बहुत कठिन काम है। यह कार्य जल्दी तो नहीं होने वाला है। हम लोग ये जो काम करने की कोशिश कर रहें है इसमें आगे बढ़ने के पहले एक चीज हम लोगों को ध्यान में रखना है कि जो दुनिया में राजनीतिज्ञ रूप से सिस्टम जो पिछले 200 साल से चला हुआ है, उसके पहले हमारे पास कोई कारखाना नहीं था। जो छोटी-छोटी दुकानें थी उसमें ही कार्य करके हम छोटी-छोटी वस्तुऐं बनाते थे। अपनी जरूरतों की चीजें हम छोटे स्केल पर बनाते थे पर 200 साल पहले वे सब फैक्ट्री में बनने लगी। और उसमें पूरा बदलाव हो गया था और उस बदलाव से पूरी जिन्दगी जो सिस्टम था वो पूरा बदल गया था। तो ये 200 साल में जो प्रक्रिया हुई उसमें अर्थतंत्र में तो पूरा बदलाव हो गया था पर वो बदलाव जिन्दगी में नहीं हुआ।

सिस्टम में बदलाव हुआ फिर भी भूख है, फिर भी स्वास्थ्य ठीक नहीं है, व्यक्तियों के पास घर नहीं है रहने के लिए, इससे स्पष्ट है कि वो सिस्टम फेल हो गया। वो सिस्टम अगर काम कर रहा होता तो हम इस स्थिति में नहीं होते। 1964 में दीनदयाल जी ने जो सोचा था कि ये दोनों चीज हम हटा के रखेंगे और उन्होंने एकात्म मानवदर्शन लिखा था। यह एकात्म मानवदर्शन जो उन्होंने दिया वो कुछ नई चीज नहीं है। वह केवल भारतीय संस्कृति ही है और जो हमारी भारतीय संस्कृति में लिखा है, उसका ही नया रूप है, क्योंकि वो सब लिखा था 2000 साल पहले। और जो 1964 में लोग थे वो 2000 साल पुरानी बात समझ नहीं पाते थे इसलिये उसे नई भाषा में लिखा। तो आज जो विकास की सोच है, वो सब जी.डी.पी. में चलते हैं, जी.डी.पी. बढ़ाना ही सरकार का मुद्दा है। अभी की व्यवस्था में जी.डी.पी. को कैसे बढ़ायें? उसके लिये ज्यादा बनाओ, ज्यादा कन्ज्यूम करो कभी हम ज्यादा बनायेंगे और ज्यादा कन्ज्यूम करेंगे तो हम 'सस्टेनबिलिटी' की बात कैसे करेंगे? ये हो ही नहीं सकता है। अतः इसके लिये हमें अपनी सोच में बदलाव करना पड़ेगा। पं. दीनदयाल जी ने अपने एकात्म मानवदर्शन में इसी सोच में बदलाव लाने का विचार दिया। दीनदयाल शोध संस्थान में हम कोशिश कर रहे हैं कि जो सोच चल रही है और जो समाज में चल रहा है, हम कैसे उसमें बदलाव लायें? ये जो तीसरा एस.डी. जी. सेमिनार है इसमें हम एस.डी.जी. 2 एवं एस.डी.जी. 4 पर बात करेंगे। एस.डी.जी. 2 में 'कोई भूखा न रहे' और एस.डी.जी. 4 में 'गुणवत्तायुक्त शिक्षा' के विषय में चर्चा करेंगे। इसमें एस.डी.जी. 2 के संदर्भ में पं. दीनदयाल जी का एक Quote पढ़ना चाहता हूँ। दीनदयाल जी ने कहा–''वास्तव में हमारा नारा होना चाहिये कमाने वाला खिलायगा, जन्मा सो खायेगा, खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है, कमाने की पात्रता शिक्षा से आती है, खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है और समाज में जो कमाते नहीं हैं, वो भी खाते हैं, बच्चे, बूढ़े, रोगी, अपाहिज, सबकी चिन्ता समाज को करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज में इस कर्तव्य के निर्वहन की क्षमता पैदा करना ही अर्थव्यवस्था का काम है। मनुष्य अपने इस कर्तव्य के निर्वहन के लिये काम करता है। अन्यथा जिनकी भूख मिट गई है वो काम नहीं करेंगे।'' अब तो Capitalism और Communism की फिलासोफी है उसका मूल है कि जो 'कमायेंगे वो खायेंगे।' पर भारतीय संस्कृति कहती है 'जो कमायेंगे वो खिलायेंगे भी।' अपनी भारतीय और दूसरी परम्पराओं में अन्तर है। और यह पाठ हम दुनिया को सिखा सकते हैं। अशोका विश्वविद्यालय ने चैरिटी के ऊपर एक सर्वे किया। क्यूंकि सब लोगों को लगता है कि भारतीय लोग ज्यादा चैरिटी नहीं करते हैं। परंतु ये बिल्कुल गलत अवधारणा है। क्या होता है जो अमेरिका और पश्चिम में लोग पैसा इकट्ठा करते हैं, वे सोचते हैं कि मैं जाने वाला हूँ तो अपने नाम से एक ट्रस्ट बनाते हैं। ट्रस्ट, बिल गेट्स फाउंडेशन, बड़ा-बड़ा ट्रस्ट बनाकर कोई स्कूल, यूनिवर्सिटी में पैसा देते है, कोई अस्पताल में पैसा देते हैं, और

अपना नाम बनाते है। पर अशोका यूनिवर्सिटी ने जो सर्वे किया उसमें यह ज्ञात हुआ कि 95 प्रतिशत राशि जो भारतीय दान करते हैं वो खिलाने के लिये दान देते हैं, भण्डारा के लिए देते हैं, लंगर में इसका पैसा जाता है। पं. दीनदयालजी का Quote मैंने लिया SDG 2 'कोई भूखा न रहे' और SDG 4 के लिये हम नानाजी का शब्द लेगें। शिक्षा के विषय में नानाजी का विचार ''मानव के लिये शिक्षा आवश्यक क्यों? मनुष्य के जीवधारी होने के कारण मानव को भी उपभोग की आवश्यकता होती है। पर अन्य प्राणी भोग प्रवण होते हुए भी उनमें उपभोग सामग्री संग्रह करने की न वृत्ति होती है और न ही क्षमता, किन्तु मानव उपभोग के साथ ही सामग्री का संग्रह कर सकता है। यह प्रवृत्ति लालसा की जनक है। लालसा की सीमा नहीं होती, इस कारण मानव आवश्यकता से अधिक उपभोग सामग्री संग्रहीत कर समाज में असन्तुलन का निर्माण करता है। परिणाम स्वरूप समाज में विषमता बढ़ती है, विषमता समाज जीवन में अशांति, विद्वेष एवं कलह का कारण बनती है। उपर्युक्त विषम परिस्थिति की संभावना के कारण प्रकृति ने मानव को संवेदनशीलता का भी वरदान दिया है। संवेदनशीलता अन्यों के प्रति आत्मीयता का भाव जगाती है। वह केवल अन्यों को कष्ट पहुंचाने से रोकती ही नहीं, अपितु सुख पहुंचाने के लिये प्रेरित भी करती है। यह मानवीयता का स्त्रोत है। मानव की अंतरनिहित उपभोग लालसा एवं संवेदनशीलता में अपने आप सामंजस्य संभव नहीं होता। इन दोनों परस्पर विरोधी वृत्तियों में खींचतान सदैव चलती रहती है। इस खींचतान में समन्वय एवं सामंजस्य स्थापित करने के लिये ही मानव को शिक्षा की आवश्यकता होती है। जो मानव को मानवीयता से विभूषित करती है। आध्यात्मिकता, सहिष्णुता की ओर ले जाती है। यह मनुष्य को मनुष्यों के बीच सद्भावना को प्रेरित करती है। यही कारण है कि भारत के समग्र विकास के लिये सामाजिक और प्रशासनिक प्रगति दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण है और इन्हें समान रूप से व्यवहार करने की आवश्यकता है। अन्यथा हम देश में समग्र प्रगति की उम्मीद नहीं कर सकते। आधुनिक विज्ञान और तकनीकि प्रगति के संदर्भ में एक प्रणाली विकसित करनी होगी ताकि हमारे नैतिक मूल्य, शिक्षा, स्वास्थ्य, शासन, उद्यमिता, साहित्य और कला आदि समाज के हर पहलू में प्रतिबिम्बित हों अन्यथा आधुनिक औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न उपभोक्तावाद हमारी मानवीय परम्परा को नष्ट कर देगा।''

मुझे आशा है कि हम ये तीन दिनों में जो चर्चा करेंगे उसमें लाइफ सोसायटी की जो दिशा है, उस दिशा में हम लोगों को कुछ मिलेगा।

Bharatratna Rashtrarishi Nanaji Deshmukh and Pandit Deendayal Upadhyaya's thoughts on a LiFE Society, Hunger and Education.

LiFE समाज, भूख और शिक्षा पर भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख और पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार।

1

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

25th-27th February 2024

आधुनिक विज्ञान और तकनीकि प्रगति के संदर्भ में एक प्रणाली विकसित करनी होगी, ताकि हमारे नैतिक मूल्य, शिक्षा, स्वास्थ्य, शासन, उद्यमिता, साहित्य और कला आदि समाज के हर पहलू में प्रतिबिंबित हों। अन्यथा, आधुनिक औद्योगिक संस्कृति से उत्पन्न उपभोक्तावाद हमारी मानवीय परंपराओं को नष्ट कर देगा।

"A system has to be evolved, in the context of modern science and technological progress, so that our moral values, education, health, governance, entrepreneurship, literature and arts etc. are reflected in every facet of society. Otherwise, consumerism born out of modern industrial culture would decimate our humanitarian traditions."

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

2

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

25th-27th February 2024

कारखानेदार मशीन आदि के लिए क्षय-निधि की व्यवस्था करता है। परंतु प्रकृति के इस कारखाने के लिए हम किसी भी क्षय-निधि की चिंता न करें यह कैसे हो सकता है? इस दृष्टि से विचार किया जाये तो कहना होगा कि हमारी अर्थव्यस्था का लक्ष्य अमर्यादित उपभोग नहीं, संयिमत उपभोग होना चाहिये। सोद्देष्य, सुखी विकासमान जीवन के लिए जिन भौतिक साधनों की आवश्यकता है, वे अवश्य प्राप्त होने चाहिये। भगवान की सृष्टि का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उतनी व्यवस्था उसने की है। किंतु जब हम यह समझकर कि भगवान ने मनुष्य को केवल उपभोग-प्रवण प्राणी बनाया है, उसके अधाधुंध उपयोग के लिए अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करें तो यह ठीक नहीं होगा।

The industrialist provides for a depreciation fund to replace machines when they are worn out. Then how can we neglect the depreciation fund for nature? From this point of view, it must be realised that the object of our economic system should not be to make extravagant use but a well-regulated use of available resources. The physical objects necessary for a purposeful, happy and progressive life must be obtained. The Almighty has provided that much. It will not be wise, however, to engage in a blind rat-race of consumption and production as if man is created for the sole purpose of consumption.

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

3

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

25th-27th February 2024

सारांश में एकात्म मानव दर्शन वह नाम है जिसे हमने भारतीय संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं, स्थायी, गतिशील, संश्लेषण और उदात्तता के योग को दिया है। यही वह आदर्श है जो हमारी दिशा निर्धारित करता है। लेकिन हमारे आदर्शवाद का मतलब कोई सैद्धांतिक रुढ़िवादिता नहीं है। आदर्श को व्यवहार में परिणित करना होगा। इसलिये, हमारे कार्यक्रम को यथार्थवाद पर आधारित होना चाहिये। वास्तव में यथार्थवाद हमारे दर्शन की ताकत, हमारी उपलब्धियों की माप और हमारे आदर्श की कसौटी है।

Integral Humanism is the name we have given to the sum total of various features of Bharatiya Sanskriti, abiding, dynamic, synthesising and sublime. This is the ideal which determines our direction. But our idealism does not mean any doctrinal obtuseness. An ideal has to be translated into practice. Our programme, therefore, has to be grounded in realism. Indeed realism, is the forte of our programme, the measure of our achievements and the touchstone of our ideal.

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

4

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024

वसुधैव कुटुंबकम की भारतीय कहावत, जिसका अर्थ है पूरी दुनिया एक परिवार है, और **सर्वे भवंतु सुखिनः** (सभी के लिए खुशी) एक न्यायसंगत और टिकाऊ संबंध सुनिश्चित करने के लिए हमारे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का आधार होना चाहिए।

"The Indian maxim of Vasudeva Kutumbakam, which means 'The whole world is a family', and Sarve Bhavantu Sukhinah (Happiness for All) should be the basis of our International relations, to ensure an equitable and sustainable relationship."

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

5

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024

आध्यात्मिक सहिष्णुता की ओर ले जाती है। यह मनुष्य-मनुष्य के बीच सद्भावना को प्रेरित करता है। यही कारण है कि भारत के समग्र विकास के लिये, सामाजिक और प्रशासनिक प्रगति दोनों समानरूप से महत्वपूर्ण हैं और इन्हें समानरूप से व्यवहार करने की आवश्यकता है। अन्यथा देश में हम समग्र प्रगति की उम्मीद नहीं कर सकते।

Spirituality leads to tolerance. It inspires goodwill between human beings. It is for this reason that for India's overall development, social and administrative progresses are both equally important and need to be treated on par. Else we cannot expect the overall progress in the country.

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

6

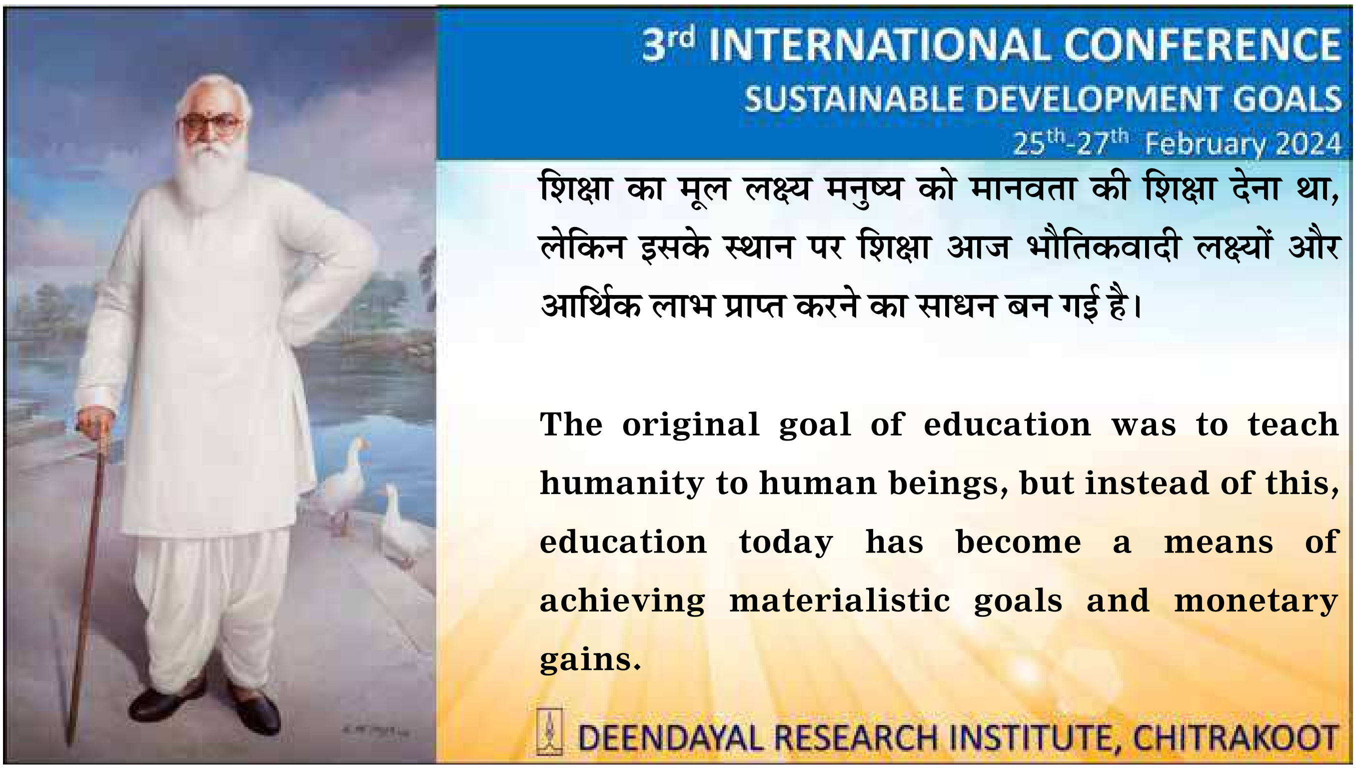
3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024
शिक्षा का मूल लक्ष्य मनुष्य को मानवता की शिक्षा देना था, लेकिन इसके स्थान पर शिक्षा आज भौतिकवादी लक्ष्यों और आर्थिक लाभ प्राप्त करने का साधन बन गई है।
The original goal of education was to teach humanity to human beings, but instead of this, education today has become a means of achieving materialistic goals and monetary gains.
DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

7

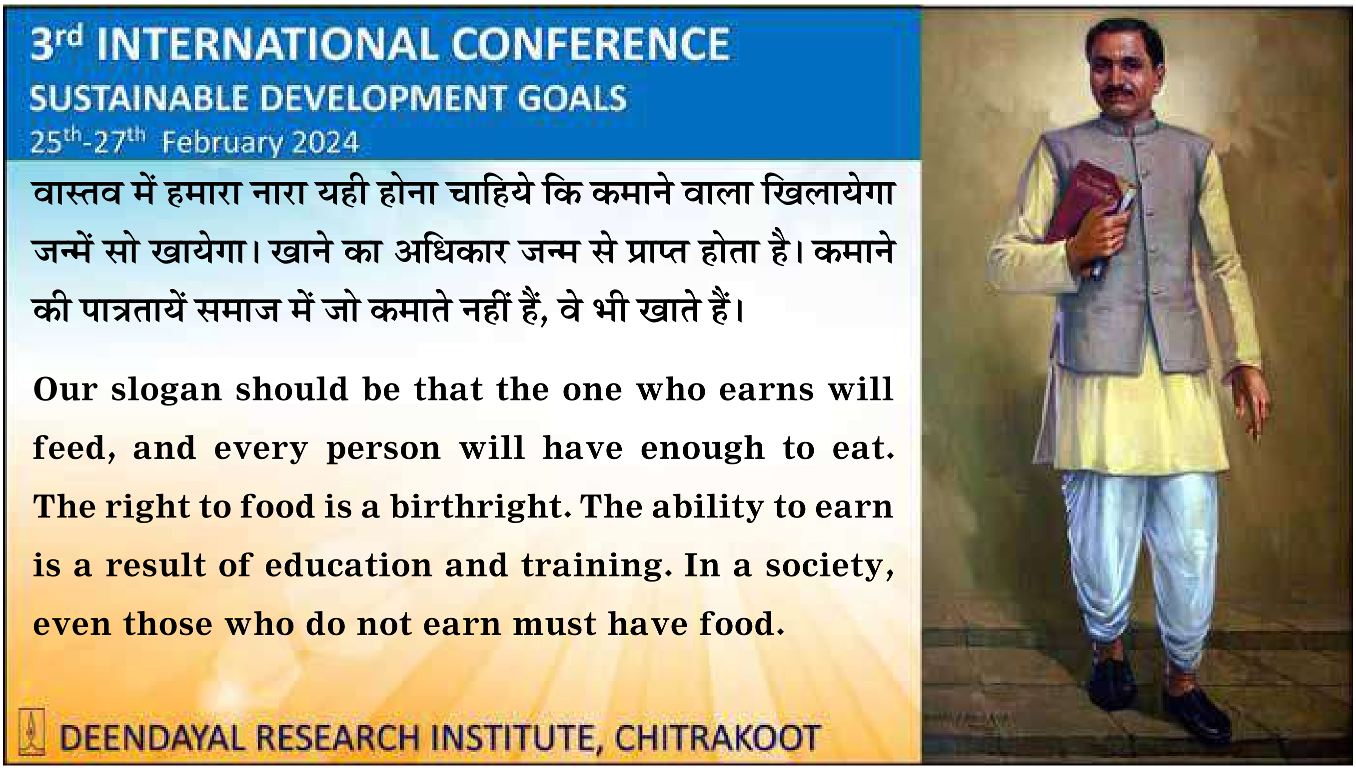
3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024
वास्तव में हमारा नारा यही होना चाहिये कि कमाने वाला खिलायेगा जन्में सो खायेगा। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। कमाने की पात्रतायें समाज में जो कमाते नहीं हैं, वे भी खाते हैं।
Our slogan should be that the one who earns will feed, and every person will have enough to eat. The right to food is a birthright. The ability to earn is a result of education and training. In a society, even those who do not earn must have food.
DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

8

Keynote Speech by Professor Naresh Singh on 'Applied Spirituality and Sustainable Development Policy'.

Dr. Naresh Singh is Professor and Executive Dean at the Jindal School of Government and Public Policy; Director of the Centre of Complexity Economics, Applied Spirituality and Public Policy (CEASP) and Co-director of the Centre for Legal Empowerment of the Poor CLEP). He has served in several high-profile international positions such as

- Executive Director of the Global Commission on Legal Empowerment of the poor hosted by UNDP and co-chaired by Madeleine Albright and Hernando de Soto (D2 Level)
- Director General (Policy), Federal Govt of Canada.
- Principal Adviser on Poverty and Sustainable Livelihoods at UNDP New York (D1 level)

He has also been an international consultant to UNDP, FAO, ILO, and the Commonwealth Secretariat (London), and has just published a book entitled 'Applied Spirituality and Sustainable Development Policy'.

Dr. Naresh Singh is Professor and Executive Dean at the Jindal School of Government and Public Policy; Director of the Centre of Complexity Economics, Applied Spirituality and Public Policy (CEASP) and Co-director of the Centre for Legal Empowerment of the Poor (CLEP).

He has served in several high-profile international positions such as:

- Executive Director of the Global Commission on Legal Empowerment of the poor hosted by UNDP and co-chaired by Madeleine Albright and Hernando de Soto (D2 Level)
- Director General (Policy), Federal Govt of Canada.
- Principal Adviser on Poverty and Sustainable Livelihoods at UNDP New York (D1 level)

He has also been an international consultant to UNDP, FAO, ILO, and the Commonwealth Secretariat (London), and has just published a book entitled 'Applied Spirituality and Sustainable Development Policy'.

So let me thank Vasant ji and all the organizers here at DRI, the Deendayal Research Institute. Let me recognize all the distinguished leaders on the dais. Ladies and gentlemen, it's really a rare privilege and honor for me to be able to share with you some of the insights that I have developed over the years that I've been working, both at the grassroots level as well as at the policy level. I want to start by apologizing for not being able to speak in Hindi. I think if I tell you the reason, you will forgive me. My great-grandfather left this country 135 years ago and settled in the West Indies in a little country called British Guyana at that time. So you can really imagine over four generations and 135 years things happen and so we don't have our Hindi anymore. That's a great loss, I recognize. But we will get some support and we will get a little bit of translation as I proceed.

Okay, so what I want to share with you in the little time that I have is I will start with the Prime Minister's vision of the life society in which Vasant ji has articulated already quite clearly. And then I will share some of the work that I did in the United Nations on sustainable livelihoods and legal empowerment of the poor, about where the SDG's are and where they're headed. And I will tell you why this is so. It's because I have spent 30 years in the international system and the local system working on these problems. And at one point, I was almost frustrated, but then I got a new surge of energy, which I will explain to you. But I don't think that we will achieve the SDG's. We will achieve a lot, but we will not achieve the goals. But I will say what I think we will achieve, and the reason that we will fail to achieve the sustainable development goals is because we have not been acting on the vision that was articulated as you heard very well in Integral Humanism, Deendayalji had articulated quite clearly. And we have been not acting on a lot of the principles that this Institute stands for in India and around the world. And the way I will summarize that is we have been walking an outward journey. Almost all of the work on sustainable development goals has been focused on economy and investment and technology, and on and on. And yes, that is important, but it is not enough. We have neglected the inner journey. And unless we walk on both of these legs, I don't think we will get there.

So I call that inner journey, applied spirituality.

When the world is looking for spirituality, they turn to India. India is the home of the loftiest spiritual wisdom. But somehow, we are not putting that into public policy. It is as though spirituality is for the little temple that we have in our homes, a private affair, and that should never be linked to public policy. I think the time for that has come. We have to change that. And when Prime Minister Sh. Narendra Modi talks of all these very visionary ideas, Viksit Bharat and so on, mainly we hear about economic growth and we don't hear always about that inner journey as much as we should. I will share with you a few thoughts on how you bring public policy and applied spirituality together so that we might move towards the SDG's. And I will call that integral public policy. You notice the resonance with integral humanism. So let me move ahead.

So on the life program, Sh. Vasant Pandit ji has already explained most of the things. Let me just highlight three, those last three points. deliberate utilization instead of mindless and destructive consumption. And that was the phraseology taken from the conference that you had done. That's a really important thing, but how do we get there? How do we make that shift? And we need to establish clearly in this conference how we will make that shift.

This conference will deal with how we eat, but how we eat needs to include how we waste. See, 50% of the waste generated in this country is from food, wet waste. We have people starving and yet we are generating 50% of the waste of food. So that has to be included in our debate and in our discussions. And things are changing in the world, not always in India. India is taking the lead on several things. The United Nations Development Program now has a Conscious Food Systems Alliance in which food, agriculture and consciousness practitioners in Africa, in Latin America and in Asia are already working on conscious food alliance system.

So change is beginning to happen but we don't know whether it will happen fast enough. I will share with you two things that I did over my pretty long career in working on these challenges that we called 'sustainable livelihoods'. And what is the difference in this work that we did? Just one or two differences I'll point out and we'll go forward. When we work with poor communities, we do not start with what the people need. We start with what the people have. And that makes a big difference. You then connect to their energy. You connect to their vision of what they want out of life, not what you want them to have out of life and that makes all the difference in the world. When I came up with that idea in the UN, they rejected it for a very long time because that is not in the best interest of agencies who want to continue to serve the poor.

And when I was preparing for this talk, and I once again went through PanditDeendayalji's Integral Humanism, I saw this close resemblance to the work that we had done all over this 25 years ago, which I had not been aware of. It draws on the issue of progress for all, Sarvodaya, Swadeshi, building on the domestic issues, and Gram Swaraj, which were of course, Gandhian ideas, which

were incorporated by Pandit Deendayalji in Integral Humanism. And I was really delighted when I found that these two had this pretty clear convergence.

So on the SDG's, so this conference is about the SDG's. I was at Rio in 1992. I was at the first climate conference in 1990. I helped negotiate the climate change convention in 1992 in New York. So just to give you a sense, I've been in this thing for a while. And I get the sense that we are not going to achieve the SDG's, maybe one or two, but we have learned a few lessons which I want to share that we might use in this conference. The first thing is that we recognize a lot of innovation has happened. We need to recognize that and build on it. These innovations have happened in policy, technology, investment, and community action at the local level. So that's one big thing that we have already achieved. But we have not recognized in SDG work the need for the inner journey which I have mentioned to you, which is the recognition of our own spiritual nature. And people might feel that that is not connected in any way to SDG's. Why are we talking about that? I believe that it is fundamentally connected to SDG's. And this is the idea of walking on two legs.

So what is this spirituality I am talking about? This will be nothing new to anyone here. But before I tell you what I am talking about, this person that I am taking this quotation from, Resource Development Fund. He was the head of the World Resources Institute and then he was the head of the United Nations Development Program. And I'm happy to say he was also my boss. He was the guy who hired me when I served at the United Nations Development Program. It's interesting that after all these years he has come to the same conclusion, quite independently, that I have come. And that conclusion is, he says, and I'll read it with you, I used to think that the top environmental problems were biodiversity loss, ecosystem collapse, and climate change. I thought that with 30 years of good science we could address those problems. But I was wrong. The top environmental problems are selfishness, greed and apathy. And to deal with those, we need a cultural and spiritual transformation. And we scientists don't know how to do that. That's Gospet, an American. Okay, now if you look at many of the spiritual leaders, they have come long before this, they have come to that conclusion. But we, our world is so dominated by Western science, and I was trained as an environmental scientist. My PhD is in environmental science, hard sciences. The point I'm making is that the time has come for the convergence. And we have a center at the OP Jindal Global University where I now teach.

As you heard, I'm Executive Dean of the School of Government and Public Policy. But we have a center on applied spirituality and public policy, where we have begun to make the bridge. So understanding our own true nature, as I said, is nothing new to you. It's about going deeper and asking the question, who am I? So this path of Advaita Vedanta, you know, Sri RamanaMaharshi, Sri Nisargadatta, Papaji, it has come from the time of the Upanishads. So that, I believe, everybody in this audience probably knows very well. But not always are we living that life, coming to the conclusion of who are we truly. So you quickly find out that you are not the body, you are not the mind, you are

not the thoughts. You go through that process and you come to a point, you know, in our heads we keep believing that we are something. After a while that disappears, that process that's called in Sanskrit 'netineti', it goes to the point at which you become like you can't find what you are. You are like nothing. But because the walls that confine you to an ego state begin to dissolve, then you find you are intimately connected to all. We all share that one consciousness. That is so important in sustainable development goals policy because it goes to the heart of the problem. See, we believe we are separate from each other. We are individualistic in our behavior. We are separate from nature and therefore we can exploit nature at free will. When you recognize that close connection, then we have a different basis of public policy compared to the extractive economic systems we have been using so far. And that's the heart of the problem that I think for 30 years has led to the frustration I have felt with we go to all these conferences in the UN, we make lots of declarations, all our prime ministers come. You know at the big conference in Rio, the leader of that conference was asked, Maurice Strong, who was somebody I knew well, he was asked how many leaders came to this conference. He said, I can tell you how many prime ministers and presidents came, but I'm afraid I cannot tell you how many leaders were here. It's a big difference. And this kind of depth of understanding and public policy and leadership is what academics need to do. I mean, I was a practitioner for 30 years. I'm now an academic. And we need to crack this, and we need to give it the academic rigor that it needs for us to go forward. So that deep understanding I'm talking about, knowing that you are Brahman and that you are not the mind, the body, the thoughts and so on and that connection, I think this is what leads to a non-dual understanding of the world. It's not merely a word, but that inner realization of non-duality makes you come into contact with the friction, this imaginary thing we think we are, this ego, this separation, and that illusion is what we need to get rid of. When that happens, then we are able to move to a different set of public policies.

We are all and we teach our children that rational thinking is extremely important. And as professors, we do that. Critical thinking, rational thinking, we have in our world come to the point that we overrate thinking compared to other forms of our intelligence. Thinking is only one part of our intelligence structure. And that IQ, which many young students have to measure and hope to have an IQ like Einstein or something. It's only one aspect. So then we got EQ. You know, people used to say that President Ronald Reagan is the most successful Republican president in America for all times. And he had a low IQ. But he had a very high EQ, which is the ability to deal with people, to connect with people and to make change. So then we learned and the research shows that EQ or social capital, not only material capital, is just as important as material capital. And that's all good. Well, we are arguing now that the most important capital of all, has not been put into the policy equation. And that capital is spiritual capital. Now there are several books written. It's not only me. Many Western authors from France, UK, Germany, and so on, are writing now on spiritual capital. So it is going to get both Asian and well as Western credibility. But that's the key. That's the research work we are doing now, putting and I'm showing you practically, how you will put spirituality into

public policy. Because typically, in public policy, we can relate to capital. We can't really understand if we just say spirituality.

So if we take this on board, that spiritual capital is important and we understand that, how will public policy shift? How will we have to make public policy? And I'll go through a few points with you so you get a clear sense of where we have to go, saying the only country in the world who is ready to lead in this direction will be India. And I'm sure you will see the reasons in a minute. So the first public policy implication is, as you have heard from Sh. Vasant Pandit ji, is that we have to move from GDP per capita as the sole measure of progress. And Public Policy objectives must also include greater love, harmony, inner development and compassion in the society.

Not only at the individual level, public policy is about the society as a whole. That's the first big shift. The second one is ethical public policy. Now, ethical public policy has been there with us forever. But that ethical public policy was utilitarian. It was just about how to use goods and services. It was also about right and wrong. But it was not about life support systems. The most articulate leader who has talked about this other kind of ethics. So we had utilitarian, we had the ontological or moral ethics, but we have not had ontological ethics. Swami Vivekananda was the leading thinker on ontological ethics or the ethics of being. That is where we are now, and that needs to be articulated. The final shift here, you know, I'm just going to give you a few because I teach a whole course and wrote a whole book on this stuff. But I'm just going to give you maybe one more. Political economy. Those people who have studied political economy have studied about who gets what how. It's all about material things. When you look at your life, you are busy thinking about what you do and what you have. So we should be called human doings or human havings, not human beings, because we don't spend any time on the politics of being or, the ethics of Life. That is what we have to shift.

Just two points on this slide and we move on. Two big shifts and then we'll go. One is that we have to move from playing games to win, from playing games to continue to play.

See, I have a lot of friends and colleagues who are working on game theory. So game theory, somebody has to win. But in sustainable development, you don't play to win, you play to continue to play, so that the planet will always be there. So that's one. The second one is, in a lot of my work on politics and power, politicians tell me that power is always a zero-sum game. For me to win, you have to lose. And maybe in politics it's like that. But in sustainable development policy, we have to make power a positive sum game. You do not have to lose for me to win. And you do not have to be wrong for me to be right. We have to have win-win situations. And I think that's possible. And that's going to be another big shift. So let me now wrap it up. There's a lot more. I will not take your time. I will just move now and close this. I will just move now and close this.

So this is the way we are able to bring together all the different pieces of public policy, spirituality or consciousness, together with behavioral change, with systems changes and culture. These have to

be brought together. I won't go into the depths of this, but we have just written a paper which is now being reviewed. That paper I can make available to Sh. Vasant Pandit ji as soon as it gets published to show you how practically we will bring this together in what we will call integral public policy.

So from Integral Humanism, I think the time has come for integral sustainable development goals policy. And I think we can do that. We are doing it already. Finally let me just say in conclusion that I have considered, I have lived in New York for 10 years, I have lived in Canada for 30 years, I have lived in many countries of the world including the South. When I look at some country will have to lead this revolution in public policy, which country is that? The Scandinavians are progressive, but they are too small. They don't have the geopolitical clout. The Americans are stuck with exploitative economic growth. The Canadians, New Zealanders and Australians are also middle powers that are partly capitalistic, partly socialistic, and sort of living a schizophrenic life. Look around and see, and the only democracy that remains that has the demographic dividend, have all the youth, energy, power, the technology savvy, and the geopolitical clout, and above all, the spiritual legacy and authenticity, is India. And that is why I came back after all these years of living overseas to work here, as I believe that India can lead the world on a new trajectory of prosperity and sustainability.

Thank you.

AMITABH VASHISTHA, Moderator

प्रो. नरेश सिंह जी ने जो कहा उसका सार संक्षेप–आपने 30 वर्ष लम्बे संयुक्त राष्ट्र एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय अनुभवों के आधार पर प्रो. नरेश का मानना है कि SDG's के लक्ष्यों को पूर्णतः पाना संभव नहीं है, हम एक बड़ी मात्रा में पायेंगे, पर पूर्णतः नहीं, क्योंकि हम अपने निर्धारित सिद्धातों के विजन के अनुरूप नहीं चल रहे। जैसा पं. दीनदयालजी ने एकात्म मानवदर्शन में बताया था। SDG's पर हमारा सारा फोकस अर्थव्यवस्था, निवेश एवं तकनीक पर है, जोकि एक तरह से बाह्य यात्रा है। सफल होने के लिये हमें Applied spirituality की आंतरिक यात्रा भी तय करनी होगी। जब आध्यात्मिकता Spirituality की बात होती है, तो दुनिया भारत की ओर देखती है। आध्यात्मिकता को Public Policy हिस्सा बनाना होगा। जब Applied Spirituality को Public Policy में सम्मिलित कर लेंगे, तो SDG's को पाना आसान हो जायेगा।

जब हम 'How we eat' पर विचार करते हैं, तो हमें 'How we waste' पर भी विचार करना होगा। देश में कुल waste का 50 प्रतिशत खाद्य पदार्थों का waste होता है। प्रो. नरेशजी का मानना है कि हमें गरीबों की जरूरतों के हिसाब से काम करना चाहिये। हमें उनकी जीवनदृष्टि अथवा जीवन में वे क्या चाहते हैं? की दृष्टि से काम करना चाहिये। ठीक यही बात पं. दीनदयाल उपाध्यायजी ने एकात्म मानवदर्शन में कही।

Applied Spirituality and Sustainable Development Policy: Towards an Integral Approach

Naresh Singh, Professor and Executive Dean,
Jindal School of Government and Public Policy.

3rd International SDG Conference,

Plenary Session,

Chitrakoot.

1

Outline: Weaving a few threads together for the SDG mosaic

- Lifestyle for Environment (LiFE)
- Sustainable Livelihoods
- SDG's where are we headed
- Applied Spirituality and Sustainable Development Policy
- Integral Public Policy for Transformation towards SDG's

2

LiFE

- Environmentally sustainable and responsible choices from individual to national to global level
- Cleaner greener bluer future. Climate leadership
- Mindful and deliberate utilization, instead of mindless and destructive consumption.
- How we eat needs to include how we waste (50% waste is wet waste from food.)
- Conscious food systems alliance (UNDP) : food, agriculture, consciousness practitioners

3

Sustainable Livelihoods Approach

1. Starts with what people have not needs, Assets Mapping
2. Facilitate a vision of what community sees as more sustainable livelihoods with indicators for measuring change.
3. People define what they can do on their own to get to their vision
4. Only then what help is need from outsiders is negotiated.
5. Needs can be policy, governance, investment, technology.

   The bottom up and top down feature. Macro micro linkages. (Noticed in hindsight the similarities to Sarvodaya (progress of all) Swadeshi (domestic) and Gram Swaraj (Village Rule)

4

SDG's Lessons learned

- Since we are not going to achieve the SDG's what can do get from all the effort?
- Many lessons about the outward journey : innovations in SD policy,, technology, investment, community action etc.
- Few of us have recognized the need for progress on the inner development journey
- Even fewer on bringing the inner and outer journeys togther by waking on two legs. This I believe is the new frontier: Applied Spirituality and Sustainable Development Policy

5

The most important environmental challenges:

I used to think the top environmental problems were biodiversity loss, ecosystem collapse, and climate change. I thought that with 30 years of good science, we could address those problems. But I was wrong.
The top environmental problems are selfishness, greed, and apathy and to deal with those we need a cultural and spiritual transformation. And we scientists don't know how to do that.
- Gus Speth -

6

Understanding our nature

- Understanding human nature through the process Who am I (Neti neti) not to find out anything really but to come to the end of the questioner. The process leads from you as something; to nothing; to everything. I am not the body not even the mind.
- How to interpret being everything: Tat Twam Asi. You are that: Brahman; (Sat Chit Anand: Truth,

7

Being the change

- This leads to a non-dual understanding of the world leading to the idea of Oneness Oneness with nature and with each other. The fiction or delusion of separation is revealed. This not to deny our individuality in the mind body world in which we live our material lives but the underlying oneness or nor non dual nature of reality shines through.
- The ego that we take to be us is fictional; imaginary yet it is in total control of most of humanity.
- Act according to our true nature

8

Capital	Intelligence	Function	Public Policy Implication
Material	Rational (IQ)	What I think	Reductionist/ current analytical approaches
Social	Emotional (EQ)	What I feel	Participatory, citizen engagement , HLS
Spiritual	Spiritual (SQ)	What I am	Beyond process to motive. From what government does to how government is . Value of love, compassion, inclusion from growth and individual accumulation

9

Public policy implications

- a) The default purpose of public policy is made more consistent with this alternative understanding of human nature and the place of humans in the world. This means a shift from the standard public policy objective of just increases in GDP per capita to greater love, harmony, inner development, compassion etc;
- b) Ethical public policy shifts from merely utilitarian or deontological ethics to ontological ethics : the ethics of being or policies in support of life systems;
- c) Political economy shifts from the politics of having (who gets what how) to the politics of being (and we shift from human havings to human beings) ;

10

PUBLIC POLICY IMPLICATIONS (2)

- d) leadership and public management shift from the dominant transactional modes to a more transformational mode based on principles of authentic, servant, spiritual and participatory leadership styles.
- Institutions (as rules of the game) shift from design based confrontation, competition and underlying incentives to cooperation, adaptation and learning; from playing games to win to playing games to continue to play; from power as a zero game to power as a positive sum game
- In the meantime, we have to continue our tinkering with shifts to circulareconomics; donut economics; technology for clean green energy; policies and politics of prosperity without growth degrowth, post growth, etc.

11

Ken Wilbers Integral Quadrants

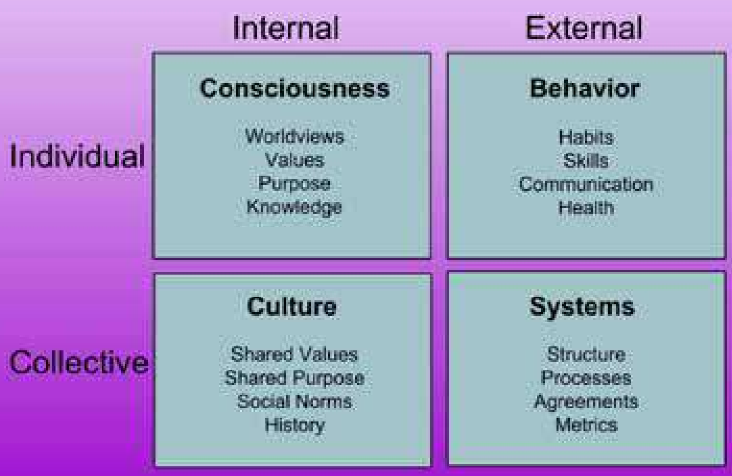

12

Transpersonal Leadership (Leading beyond the Ego; J. Knights, 2018.)

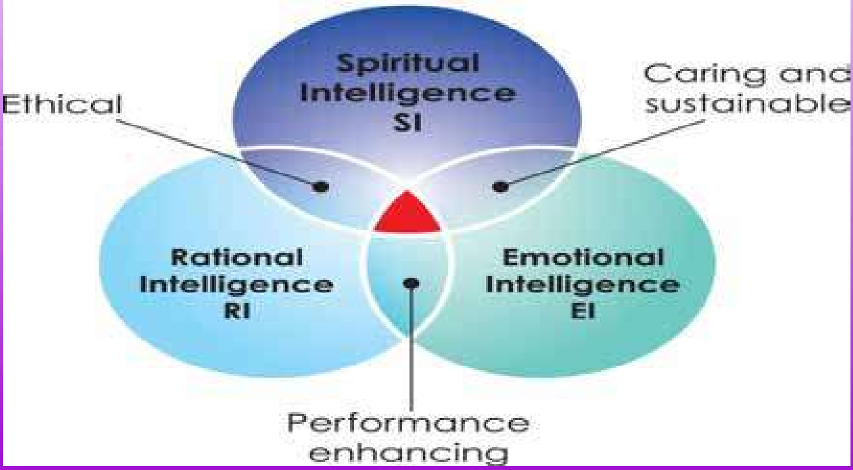

13

India's global leadership

- Well poised to lead : Demographic Dividend, Technological Progress, G 20 Chair and Voice of the South, North South respect etc.
- Problems like caste, social inclusion, green growth etc. need attention.
- Who else? North America, Europe, Scandinavia?
- The world looks at India as the home of spiritual wisdom, but also growth, technological innovation, investment....

14

Keynote Speech by Dr. Gajanan Dange on 'Conclusions of C20 LIFE Discussions and a LiFE Society'

Dr. Gajanan Dange is a veterinary doctor by education who has dedicated his life to the development of the rural and janjati (tribal) areas. He is the Founder and President of YOJAK, which promotes BharatiyaVikasChintan. He is also a member of the National Rural Livelihood Promotion Society (NRLPS), under the National Rural Livelihood Mission, Ministry of Rural Development (GOI). He was a member of the Rajiv Gandhi Science and Technology Commission, Maharashtra State.

Known for his passion for farming, and his concern for farmers and the environment, Dr. GajananDange, has been instrumental in the establishment and development of the KVK (KrishiVigyan Kendra), Nandurbar, Maharashtra (India). He has guided and headed numerous research-based development solution projects for rural development. He has experimented with new forms of social systems where communities can take the lead in developmental activities. He started the Biodiversity and Agriculture Technology Festival in KVK Nandurbar, which was later upscaled and has now been

implemented by more than 700 KVKs in India. He is closely associated with grass root organizations and research institutions across the country.

Later, he focused his research on problems created due to developmental policies, the thought process behind them, and the possible sustainable solutions to this. After realizing that we need Bharatiya philosophy-based development, he took the lead in the establishment of YOJAK in 2012. He was India Coordinator, LiFE, Working group of C20.

आप में से सभी लोग जानते ही हैं और पिछले वर्ष हम लोगों ने लगातार सुना है कि जी-20 की पूरी प्रक्रिया में सी-20 नाम का एक group होता है। जैसे अलग-अलग चर्चा के मंच होते हैं वैसे समाज की संस्थाओं के कार्यकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, ऐसे सभी लोग मिलकर के, समाज की अगली रणनीति क्या होनी चाहिये? सरकार की भी अगली नीति क्या होनी चाहिये? अलग अलग राष्ट्रों के ऐसे लोग इस पर विचार मंथन करते हैं। उसकी एक policy brief तैयार होती है जो राष्ट्राध्यक्षों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तो पिछले वर्ष भारत में एक विशेष विषय चला, जिसकी आज ये पूरे कार्यक्रम की मध्यवर्ती कल्पना है 'पर्यावरण सम्मत जीवन शैली' Life style for Environment। यह विषय सी-20 की आज तक के पूरे जीवनकाल में पहली बार ही भारत में इसका group तैयार हुआ और इसकी बहुत महत्वपूर्ण चर्चा इस पूरे वर्ष के दरमियान हुई।

हम लोग इसको एक टीम बनाकर देख रहे थे। मेरे साथ में सिलीगुड़ी से यूथ ऑफ इंण्डिया के शैलेश सिंघल जी सहयोग कर रहे थे और कोलम्बिया से एड्रियना शलजार ये अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक के रूप में इस सी-20 के ग्रुप में साथ दे रही थी। इस पूरी प्रक्रिया में वर्ष में बहुत सघन चर्चाएं, समाज के विभिन्न गुटों में हुई। लगभग 70 से अधिक संगोष्ठियाँ, कार्यक्रम, उपक्रम, वेबिनार राष्ट्रीय-अन्तर्राष्टीय स्तर पर हुए। इसमें 75 से अधिक स्वयंसेवी संस्थाओं ने, समाज के मनीषियों ने भाग लिया। 12 से अधिक राष्ट्रों के मनीषियों ने इसमें भाग लिया और सबसे महत्वपूर्ण बात है कि 100 से अधिक ऐसे जीवंत उदाहरणों को संकलित किया गया है कि जो केवल जीवन शैली की केवल बात नहीं करते बल्कि जीते भी हैं।

इस प्रकार से 100 से अधिक उदाहरणों को संकलित किया गया। आप अगर पॉलिसी पैक में देखेंगे तो भारत में जितने भी working group बने थे उसमें अधिकाधिक सहभागिता जिस group में हुई उसमें से यह Life style for Environment, यह एक ग्रुप था। अभी-अभी डॉ. नरेश जी ने बहुत सुन्दर पक्ष रखा है इस पूरी चर्चा में एक बात उभर कर आयी कि ये जो वर्तमान विकास की प्रक्रिया है उसकी वैचारिक चिकित्सा होनी चाहिये।

अब बात केवल कार्यक्रम-उपक्रमों को बदलने से बदलने वाली नहीं है। उसके पीछे का जो विचार है, उसकी चिकित्सा होनी चाहिये। उसे बदलने के बारे में विचार करना चाहिये, यह बात सभी मंथनों में उभर कर सामने आयी। सभी लोगों को यह महसूस हुआ कि हम लोग भी विश्व को कुछ दे सकते हैं। अब तक का जो दौर था हम सबकी मानसिकता विदेशियों से कुछ न कुछ लेने की रही है, जो अच्छा है वो लेना भी चाहिये पर लेते-लेते हम लोग कभी देने वाले भी बने इसकी मानसिकता कमजोर हो रही थी। मगर इसकी चर्चा ने एक बहुत सकारात्मक विचार तैयार किया।

भारत के छोटे से छोटे गाँव के लोगों में ये अनुभूति रही कि हाँ हम इस विषय के माध्यम से विश्व को कुछ दे सकते हैं, क्योंकि आज वर्तमान में जो विकास के सारे प्रश्नों की चर्चा चल रही है और जो पूरे विश्व में लोग उसका समाधान ढूंढ रहे हैं। वो समाधान विचारों में है, इसके लिये भारत में चर्चा हुई, ये पूरी चर्चा का नवनीत था। उसमें भारत की प्रक्रिया में दो बातें उभर कर आई कि भारत में 'जीवन दृष्टि' और 'जीवन शैली' इन दो बातों का बहुत महत्व है।

हम लोगों की जो जीवन शैली है वो एक विशिष्ट प्रकार के जीवन दृष्टि से तैयार होती है और ये जो जीवन दृष्टि है, ये हमारे हजारों वर्ष का अध्ययन, अनुसंधान है। ये वो प्रणाली है जिसके द्वारा हम लोगों को एक जीवन दृष्टि मिली है जो जीवन दृष्टि हम लोगों को कहती है कि यह 'एकत्व' का अविष्कार है। ये विविधता में एकता इस बात को स्पष्ट करना चाहिये हम लोग एकता के विविध रूपों को मानने वाले लोग हैं। तो ये जो एकत्व का आविष्कार सभी में विद्यमान है, जो हमारी जीवन दृष्टि है, ये जीवन दृष्टि ही पूरे विश्व को सीखने का माध्यम है।

यहाँ से चर्चा प्रारम्भ हुई और फिर आगे चलकर के इस एकत्व की अनुभूति कराने वाली जीवन दृष्टि को आधार बनाकर हमने जीवन शैली का निर्माण किया। इस जीवन शैली को भारत ने केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं रखा। इस जीवन शैली के लिये भारत में सूत्र तैयार किये गये जो सूत्र अगर जीवन में अपनाते हैं तो जीवन शैली अपने आप पर्यावरण पूरक बनती जाती है और ये सारे सूत्र जो हैं वो हमारे ऋषि-मुनियों की हजारों वर्षों की तपस्या के आधार पर तैयार हुई। उसमें से कुछ सूत्र जो आये कि ये पर्यावरण संगत जीवन शैली उसके लिये सूत्र है अपरिग्रह। दूसरा सूत्र है भारत का विकेन्द्रीकरण का, तीसरा है सामूहिकता का। स्वावलम्बन और परस्परावलम्बन विनोबाभावे जी ने अपनी भाषा में स्पष्ट किया कि कैसे भारत में स्वावलम्बन और परस्परावलम्बन का महत्व है। पं. दीनदयालजी एवं श्रद्धेय नानाजी ने भी इस पर बल दिया है।

एक अन्य महत्वपूर्ण सूत्र है प्रकृति के चक्रीयता का सम्मान। इन सूत्रों को हम लोग यदि धीरे-धीरे आगे बढ़ाते हैं तो हम लोगों को ध्यान में आता है कि भारत में विविधता का सम्मान एक महत्वपूर्ण सूत्र है। हम लोगों ने हमेशा प्रकृति में विद्यमान विविधता का सम्मान किया, उसको संजो कर रखने की प्रक्रिया चलायी और उसके आधार पर हम लोगों ने जैविक विविधता को बचाकर रखा। अलग-अलग प्रान्तों में अलग-अलग भाषाओं में, अलग-अलग राज्यों में, अलग-अलग भौगोलिक स्थितियों में यह सारे सूत्र हम लोगों को भारत में एक समान दिखते हैं। इसमें और एक महत्वपूर्ण विषय जोड़ा गया कि भारत की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, प्रकृति के साथ, प्राकृतिक संसाधनों के साथ, विज्ञान आधारित श्रद्धाभाव। ये हमारे बहुत मजबूत पक्ष हैं। ये हमारे सूत्र हमारी सी-20 की परिकल्पना में उभर कर आये कि हमारी शाश्वत कल्पना क्या है? यह मध्यवर्ती सूत्र है जिन सूत्रों को हमने अपनी जीवन शैली में ढालकर रखा है। इस सबके कारण भारत को अलग से sustainability सिखाने की आवश्यकता नहीं है।

इन सूत्रों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करना, इस विषय को लेकर बहुत अधिक चर्चा करना, सी-20 की सारी प्रक्रिया में हुआ। और एक बात का विशेष जिक्र हुआ, कि विश्व के अलग-अलग देशों में चर्चा में उभर कर आया था, कि सारे विश्व के लोग, अधिकार/आधारित समाज व्यवस्था निर्मित करना चाहते हैं। इसके अधिकार, उसके अधिकार, बेटों के अधिकार, बूढ़ों के अधिकार, पशुओं के अधिकार, पक्षियों के अधिकार, अधिकार आधारित समाज

निर्माण की व्यवस्था पूरे विश्व में चल रही है। भारत में हम कर्तव्य आधारित जीवन-शैली और कर्तव्य आधारित समाज रचना को मानते हैं। हम सब लोग ऋण की कल्पना मानते हैं, अधिकार की नहीं। हम लोग ऋण की कल्पना मानते हैं, इसलिये हम लोग देव ऋण, पितृ ऋण की बात करते हैं। ये ऋण आधारित संकल्पना जो हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं, उसे हम लोग उसको वापस देना चाहते हैं, हम लोग उसका ऋण अदा करना चाहते हैं। ये जो संकल्पना है, ये जो मान्यता है, ये विश्व के लोग अब जानना चाहते हैं कि कैसे समाज जीवन में भारत के इन मूल्यों को स्थापित किया जाये। ये हमारे लिये सुअवसर है कि भारत के सुमूल्यों को विश्व पटल पर बढ़-चढ़कर रखा जाये। ये जब बात आई तो अलग-अलग देशों के लोगों ने प्रश्न पूछें कि हमारी नई पीढ़ी मानेगी या नहीं।

इसको कैसे ट्रान्सलेट किया जाये? क्या पद्धति अपनायी जाये? ये बात लिखने में बहुत अच्छी लगती है, इसको जीवन में कैसे ढाला जाये? बहुत सुन्दर अनुसंधान भारत में हुआ, पिछले वर्ष में लोगों ने बहुत सुन्दर कार्य किया। भारत में प्रकृति के एकत्व को अंगीकार करने के लिये किस प्रकार की पद्धतियाँ विकसित की गई। आप सब लोग जानते ही हैं, भारत के लोग इसको बोलते हैं, ऋतुचर्या अर्थात जैसी ऋतु आयेगी उस प्रकार से अपनी जीवन शैली को ढालना। सण्डे हो या मण्डे ये हमारी मान्यता नहीं है, हमारा हर दिन अलग है, हमारे चन्द्र की गति अलग है, हमारे सूर्य की गति अलग है, उसके अनुसार हमारे ऋतु अलग है हमारा खान-पान अलग है, हमारे रहने की पद्धति अलग है। हमारी एक बहुत बड़ी विशेषता है कि हमने केवल बात को नहीं रखा, हमने विचार को नहीं रखा, हमने सूत्र को रखा और हमने केवल सूत्र को ही नहीं रखा, हमने एक कार्यशैली को दिया कि आप अगर अपने आप को प्रकृति के साथ जीना चाहते हैं तो आप ऋतुचर्या को सीखिए। हम लोगों ने अस्पताल बनाकर रोगियों को बढ़ाकर जीडीपी बढ़ाने की कल्पना नहीं की है हमने **सर्वे सन्तु निरामया** की कल्पना की है।

हम स्वस्थ्य रहना चाहेंगे हमारा जी.डी.पी. चाहे जितना हो। ये स्वस्थ्य रहने की कल्पना भारत की ऋतुचर्या एवं दिनचर्या के आधार पर भारत में बनायी एक क्रमबद्ध प्रोटोकाल है। समाज जीवन के सूत्रों का आधार भारत ने दिया। सहसंबंध प्रस्थापित करने की क्रिया चलाई है। जब ये चर्चा चली तो हमने भारत के सैकड़ों विद्वानों के साथ चर्चा किया कि यदि जीवन शैली की चर्चा करनी है तो किन-किन बिन्दुओं पर चर्चा करनी है। बहुत सुन्दर सुझाव आये कि अगर विश्व में जीवन शैली को बढ़ावा देना है तो हमको अन्न पर चर्चा करना चाहिये, क्योंकि अन्न हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण है, क्यूंकि जैसा अन्न वैसा मन। भारत में अशिक्षित व्यक्ति भी जानता है कि मन की शुद्धता करनी हो तो प्रारम्भ अन्न से करना पड़ता है, तो ये बात विश्व के सामने आनी चाहिये तो हमने अपनी चर्चा में बिन्दु रखा था 'फूड एण्ड लाइफ।' दूसरा बिन्दु चर्चा में आया 'फैशन' यह विश्व का बड़ा महत्वपूर्ण विषय है। सस्टेनेबिलिटी के साथ फैशन को कैसे जोड़कर देखना चाहिये? हमने फैशन भी की मगर फैशन करते समय प्रकृति के साथ धोखा नहीं किया।

विश्व में इस विषय पर भी चर्चा होने की आवश्यकता है। इसके लिये हमारा एक सब ग्रुप था फैशन एण्ड लाइफ। जो चर्चा में लोगों के सुझाव आये उसमें एक सुझाव था कि ये इस्टीट्यूशन्स रिसर्च की मांग पूरे विश्व में बढ़ती जा रही है। भारत गाँव के सृजन को मान्यता देता है। हम लोग Institutional Research को नकारेगें नहीं मगर हम गाँव के सृजन को ठुकरायेगें भी नही। ये गलती भारत ने की, ये गलती विश्व ने की, इसके लिये सी-20 में समाज जीवन में

बहुत सुन्दर चर्चा उभर कर आयी 'ग्रास रुट इनोवेशन।' ये ग्रास रूट इनोवेशन का सम्मान करना चाहिये।

गाँव में जो लोग अपनी अपनी परिस्थिति में प्रकृति के अनुरूप जो प्रश्नों के उत्तर अथवा समस्याओं के समाधान ढूँढ़ते हैं, वो कम खर्चीला होता है। इसके लिये ग्रास रूट लेवल की चर्चा, इनोवेशन की चर्चा हुई, west पर भारत की परिकल्पना क्या है। NATURE BASED SOLUTION इस पर दुनिया की नजर है, पंचतंत्र, INDIC SOLUTION, दुनिया में चर्चा का बडा विषय है। वेद गन्थों से 108 मंत्रों को सेलेक्ट किया जो शाश्वत भारतीय परंपरा को उजागार करते है उनका हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद किया।

नदी के साथ हमारा व्यवहार कैसे होना चाहिये? नदी के साथ करने वाले सोलह पाप ऐसा उल्लेख किया है ग्रंथों में ये सोलह पाप हैं, जो हम लोग नदी के साथ नहीं कर सकते हैं। ऐसे Indic Wisdom को हम लोगों ने ये C-20 के माध्यम से लाया। हम लोगों ने एग्रीकल्चर के सेक्टर में, जो संपूर्ण विश्व में क्राइसिस आ रहा है और नये नये शब्द को लेकर भारत में और भारत के बाहर भी कृषि को लेकर सारे वैज्ञानिक चिंता ग्रस्त हैं, ऐसे में भारत के कुछ लोगों ने मिलकर बताया कि देश में भूमि सुपोषण की एक अत्यंत वैज्ञानिक परंपरा विद्यमान हैं और यह अत्यंत वैज्ञानिक परंपरा भारत में मौखिक ज्ञान द्वारा आज भी प्रवाहित हो रही है उसको हमने गत आठ वर्ष से डाक्यूमेंट करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की।

आप बंगाल के लोग भी यहाँ होंगे। बंगाल में खाना और बचन नाम से कहावतें चलती हैं कि किस प्रकार से एक घर की सबसे वृद्ध महिला अपनी बहु-बेटियों को कृषि को उपजाऊ बना कर रखने के लिये भूमि का सुपोषण कैसे करना चाहिये? ये बचन अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक ज्ञान परंपरा से देती हैं। ऐसे मौखिक ज्ञान परंपरा को हमने संकलित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की और एक व्यापक जन अभियान प्रारम्भ किया कि समाज के द्वारा भूमि को सुपोषित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान प्रारम्भ किया। हम प्रक्रिया को समझना चाहते हैं, इसके लिये वेबसाइट बनाई गई है।

भूमि सुपोषण के नाम से वेबसाइट बनाई गई हैं सारे पॉलिसी पेपर्स उसमें रखे गये हैं इसमें सारे डॉक्यूमेंट सबके लिये उपलब्ध किये गये हैं आप सब लोगों से निवेदन हैं कि इस प्रक्रिया के साथ जुड़े। हम लोगों ने केवल पिछले वर्ष तक इस विषय को सीमित नहीं रखा है अब हम लोगों ने ये प्रक्रिया को प्रभावी बनाने की पद्धति प्रारंभ की हैं और हम लोगों ने इस बार भारत में internalization of life नाम से अपना मिशन प्रारंभ किया है। क्यों बार-बार बाहर के देशों से मिशन आये? इस बार पहले हमारे जो सहयोगी रहे ISKCON यह फूड के लिये कौन्स्यस फूड डिकेड विश्व में घोषित करने जा रहे हैं।

इस प्रकार से C-20 का प्रयोग भारत की ओर से, समाज की ओर से नए नए विषयों का प्रतिपादन आने वाले समय में होगा यह एक बहुत सुन्दर अवसर था जो भारत को, भारतीयता को देखने का एक गौरवपूर्ण अनुभव हम लोगों को हुआ। हम सब लोग मिलकर विश्व की सस्टेनेबिलिटी के लिये एक बहुत सुन्दर रास्ता दिखायेंगे।

Dr. Seshadri Chari, Member, Governing Council of Research & Information Systems (RIS), gave an overview of what we are trying to achieve with the International SDG Conferences, World SDG Forum and with the Chitrakoot Declaration and the subsequent Webinars last year, our direction with a LiFE society.

Dr. Seshadri Chari is an alumnus of Mumbai Vidyapeeth (then it was Bombay University). He did his B. Com, LLB, and MA from here. He is the Governor's nominee in the Managing Council of Mumbai University.

He is the member of the Governing Council of Research & Information Systems (RIS) an autonomous institution under the Ministry of External Affairs.

He is presently the Chairman, China Study Centre, MAHE, Manipal and Centre for Indo-Pacific Studies. He is also the member of the Planning & Monitoring Board of Manipal University (MAHE).

He is also Professor Emeritus at Savitribai Phule Pune University and Ministry of Defence Chair in the Department of Defence & Strategic Studies, and Secretary General of Forum for Integrated National Security (FINS), Director (International Affairs) at the Institute of National Security Studies, Research Director at the Chronicle Society of India for Education & Academic Research (CSIEAR).

Dr. Chari was a Pracharak of RSS since 1978 for 18 years. He is one of those few lucky ones who has seen Pandit Deendayal ji and worked with Rashtrarishi Nanaji Deshmukh.

He gave an overview of what we are trying to achieve with the International SDG Conferences, World SDG Forum and with the Chitrakoot Declaration and the subsequent Webinars last year, our direction with a LiFE society.

अभी जो कुछ भी हुआ उन विषयों का और आगे चलकर हमें क्या करना है, अभी एक सामूहिक दृष्टि से हम लोगों ने बैठकर सोचा कि इन सभी विषयों के बारे में हम क्या कर सकते हैं। अभी हमने देखा कि G-20 के जितने भी कार्यक्रम हुए उसमें RIS का एक बहुत बड़ा भाग था। RIS को कहा गया कि इस G-20 के विषय का प्रचार-प्रसार करना चाहिये। जैसे कि हम सब जानते हैं G-20 में कुल मिलाकर 20 देश हैं, और हर प्रत्येक वर्ष एक देश उसका प्रतिनिधित्व करता है, अध्यक्ष बनता है अब तक जो G-20 हुए मुझे सवाल पूछने की आवश्यकता नहीं है, उनका इतना प्रचार नहीं हुआ अगर मैं कहूँ कि भारत जब G-20 का अध्यक्ष बना तो भारत के पहले G-20 का अध्यक्ष कौन था? बहुत कम ऐसे लोग होंगे जो इस प्रश्न का उत्तर दे पायेंगे। इसका कारण यह है कि इसके पहले जितने G-20 हुआ करते थे, वह अक्सर गवर्नमेंट टू गवर्नमेंट (G to G) होते थे, इसीलिए G-20 में 20 देशों के बड़े-बड़े लोग आये, इकट्ठा किया, किसी फाइव स्टार होटल में भाषण किया, तालियां बजाई सब चले गये। "दुनिया के सामने बहुत बड़े-बड़े प्रश्न हैं, हमारे देश के सामने प्रश्न हैं, हम सबको इकट्ठा होकर कुछ काम करना चाहिये और अगर हम यह नहीं करेंगे तो दुनिया खत्म हो जायेगी और दुनिया जब खत्म हो जायेगी उसमें हम सब खत्म हो जायेंगे।" यही भाषण होते थे, और चले जाते थे। भारत के पास यह अध्यक्षता अब आयी। भारत के पहले इंडोनेशिया था इसका प्रमुख और भारत ने आगे ब्राजील को दिया है। भारत, ब्राज़ील, साउथ अफ्रीका ऐसे तीन देश हैं यह तीन देश तीन कॉन्टिनेंट में है और यह तीनों देश डेमोक्रेटिक है, इसलिये इन तीनों देशों को मिलाकर एक संस्था बनाई गई उसको (IBSA) कहते हैं। अभी G-20 का भारत अध्यक्ष रहा और भारत ने ब्राजील को अध्यक्षता दी है।

उसके बाद ब्राजील से यह अध्यक्षता साउथ अफ्रीका के पास जायेगी। तो आने वाले समय में एक दृश्य से देखा जाये तो यह जी-20 की अध्यक्षता है वह इन्हीं देशों के साथ रहेगी जिसको हम IBSA के माध्यम से भी हमारी जो एजेंडा हमने तय किया है जिसके बारे में अभी हमने सुना है विस्तार में इन सभी विषयों को हम आगे करेंगे। भारत ने एक और दो और विशेष महत्वपूर्ण काम किये G-20 को लेकर, सबसे पहले यह हुआ कि G-20 कोई G to G (गवर्नमेंट टू गवर्नमेंट) संस्था होनी नहीं चाहिये कि सरकारी लोग आये, बात किया, भाषण किया, चले गये, ऐसा नहीं होना चाहिये। इसलिये G-20 का जो उद्देश्य है उसको जनता तक लेकर जाना चाहिये। अनेक ऐसी संस्थाएं होती है जिनका उद्देश्य कुछ अलग होता है, पर उसकी जो परिणीति है वह कुछ अलग ही होता है। कभी अच्छा भी होता है कभी इतना अच्छा नहीं होता है, जैसे यूनाइटेड नेशंस को हम जानते हैं। यूनाइटेड नेशंस के पहले 'लीग ऑफ नेशंस' था। पहले विश्व युद्ध के बाद लोगों ने सोचा कि विश्व युद्ध होते क्यों है? होना ही नहीं चाहिये, तो विश्व युद्ध को कैसे रोका जाये? तो विश्व युद्ध को रोकने के लिये 'लीग ऑफ नेशंस' बनाया, लेकिन 'लीग ऑफ नेशंस' के आधार पर विश्व युद्ध नहीं रुके। सेकंड वर्ल्ड वॉर शुरू हो गया। सेकंड वर्ल्ड वार होने के बाद लोगों ने सोचा कि जिस काम के लिये हमने 'लीग ऑफ नेशंस' बनाया था वह काम ही नहीं पूरा हुआ तो फिर 'लीग ऑफ नेशंस' को रखकर क्या करना है, तो उसको समाप्त कर दिया। फिर दूसरा महायुद्ध समाप्त हुआ तो लोगों ने सोचा कि इसके आगे युद्ध नहीं होना चाहिये, शांति होनी चाहिये, तो उसके लिये यूनाइटेड नेशंस बनाया। लेकिन यूनाइटेड नेशंस बनने के बाद भी पिछले 75-76

साल में क्या इस देश दुनिया में कोई युद्ध ही नहीं हुआ, दुनिया में कोई संघर्ष नहीं हुए, दुनिया में कोई समस्या नहीं हुई? सब प्रकार की समस्याएं हुई, अभी भी चल रही है, कहीं रसिया-यूक्रेन का है, कोई फ़्लैश पॉइंट है, कोई इराक का मामला है, कोई अफगानिस्तान का मामला, कोई वियतनाम का मामला है और कहीं ईरान का मामला है कहीं इजराइल और हमास का मामला है। ऐसा कोई दुनिया का भाग नहीं है जिसमें युद्ध नहीं हो रहा है, संघर्ष नहीं है, जिसमें समस्याएं नहीं हैं। तो फिर यूनाइटेड नेशंस बनाने का क्या उपयोग हुआ, अब उसके बारे में चिंता होनी चाहिये। वह अलग विषय है पर वैसे ही जी-20 जो है वह 1999 में जब इकोनामिक क्राइसिस हुआ और इकोनामिक क्राइसिस कोई पहली बार नहीं हुआ उसके पहले भी इकोनॉमिक क्राइसिस हुए थे, USA में सबसे बड़ा इकोनामी क्राइसिस हुआ और अजीब बात यह है कि किसी और देश में क्राइसिस होता है तो वह क्राइसिस उस देश का क्राइसिस होता है, पर जब USA में क्राइसिस होता है उसको ग्लोबल क्राइसिस कहते हैं। तो ग्लोबल क्राइसिस हो गया, तो उस पर कुछ लोगों ने विचार विनिमय किया। और कहा जो कुछ विशेष देश हैं जिन देशों के जो फाइनेंस मिनिस्टर्स हैं और उनके सेंट्रल बैंकों के अध्यक्ष जैसे हमारे देश में रिजर्व बैंक के गर्वनर हैं। वे इकट्ठा हुए और कहा कि इसके बारे में हमें कुछ सोचना पड़ेगा। अगर दुनिया की जो आर्थिक समस्या अगर इतनी बड़ी हो जाती है तो उसका परिणाम क्या होगा? इसके लिये G-20 बनाया।

धीरे-धीरे उनके सामने विषय आया कि आर्थिक समस्या के अलावा जो समस्याएं हैं दुनिया के सामने, उन समस्याओं को देखते हुए आर्थिक समस्या तो कुछ भी नहीं है। आर्थिक समस्या से तो हम निपट सकते हैं। एक ऐसा समय आया जब क्लाइमेट चेंज बहुत बड़ा मामला हो गया। कुछ डर ऐसा लगने लगा कि पृथ्वी की जो गर्मी है वह जिस गति से बढ़ रही है। तो इसका इतना बुरा परिणाम होगा कि जो ग्लेशियर है वह पिघल जायेंगे। ग्लेशियर पिघल जायेंगे तो जो 'एक्जिस्टिंग वाटर' है उसकी समस्या बढ़ जायेगी। क्योंकि पानी की मात्रा बढ़ेगी इसका मतलब यह नहीं कि पानी लोगों को उपलब्ध होगा, उल्टा जो अच्छा पानी है वह समाप्त हो जायेगा और यही पानी समुद्र में जायेगा, खारा होगा और जिसे कोई पी भी नहीं सकेगा और समुद्र के तल से नीचे जो देश हैं, जैसे मॉरीशस, मेडागास्कर या मालदीव एवं बांग्लादेश के कुछ ऐसे प्रदेश हैं और कुछ लिटरल state हैं। जैसे लक्षद्वीप के जैसे अनेक द्वीप है यह सब डूब जायेंगे। तो यहाँ के लोग जायेंगे कहाँ? यहाँ के लोग जो स्थान डूबेगा नहीं उसी प्रदेश में आयेंगे तो यह डेमोग्राफिक चेंज ही नहीं होगा, डेमोग्राफिक चेंज के साथ-साथ सिविलाइजेशन चेंज भी होगा। 'सिविलाइजेशन चेंज' के साथ-साथ 'कल्चरल एडेप्टेबिलिटी' का प्रॉब्लम आयेगा। पानी की ऐसी समस्या होगी लोगों का मानना है कि The third world war will be on the basis of water। तो लोगों ने कहा की आर्थिक समस्या तो बाद में निपटाएंगे पहले तो जीवन मरण का प्रश्न है, इससे कैसे निपटें? इसीलिए G-20 के सामने ऐसे विषय धीरे-धीरे आने लगे। जब भारत के पास अध्यक्षता आई तो भारत ने कहा कि यह जो समस्याएं हैं यह केवल सरकारी लोग या प्रधानमंत्री या फाइनेंस मिनिस्टर इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते हैं। इन समस्याओं को लोगों तक लेकर ले जाना चाहिये। आज दुनिया के सामने क्या समस्याएं हैं? उसका समाधान क्या है? हम लोगों तक ले जायेंगे। इसीलिए बहुत से ऐसे कार्यक्रम हुए जो

G-20 का जो एजेंडा है उसको लोगों तक ले जाने के लिये बहुत बड़ा कार्यक्रम हुआ। उसमें सिर्फ लोगों तक नहीं परंतु आगे आने वाली पीढ़ी के बारे में जो लोग सोचते हैं, जैसे विद्यार्थी हैं, यूनिवर्सिटीज है। यूनिवर्सिटी के जो बच्चे हैं। उनके सामने भी विषय होना चाहिये। दुनिया के सामने जितनी समस्याएं उन सभी समस्याओं का समाधान ढूंढने में कहीं ना कहीं यह लोग काम कर सकते हैं। क्या भारतीय मूल के आधार पर विचार के आधार पर हम समस्याओं का समाधान कर सकते हैं? 'यूनिवर्सिटी कनेक्ट' का एक बहुत बड़ा कार्यक्रम हुआ। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि कम से कम 75 यूनिवर्सिटीज में कार्यक्रम होना चाहिये। RIS के पास यह सारा कार्यक्रम था। यह G-20 के अंतर्गत ही था लेकिन बहुत बड़ा कार्यक्रम हुआ 75 से भी ज्यादा कार्यक्रम हुए 100 से भी अधिक यूनिवर्सिटीज में यह कार्यक्रम हुआ। यह जी-20 का अवेयरनेस कार्यक्रम था और उसके बाद एक और विषय हुआ जैसे विषय को लोगों तक ले जाने का काम हुआ, यूनिवर्सिटी तक ले जाने का काम हुआ, तो हमने यह भी सोचा कि जी-20 जो है वह एक समाप्त हो जायेगी पर उसके बाद लोग उसको भूल जायेंगे। लेकिन समस्याएं नहीं मिटने वाली हैं, इसलिये इन समस्याओं का समाधान के लिये जो यूनाइटेड नेशंस ने सोचा MDG जिसको हम कहते हैं मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स। वर्ष 2000 में यह मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स को पा लेना था। लेकिन ऐसा हुआ नहीं और होना भी नहीं था क्योंकि मुश्किल था। इसलिये 2015 में सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स 'SDG' को यूनाइटेड नेशंस ने adopt किया। SDG and MDG में अंतर था, MDG के मामले में यह हुआ कि MDG की कभी चर्चा नहीं हुई। कुछ लोग इकट्ठे हुये, उन्होंने कहा कि दुनिया के सामने समस्यायें हैं, इसीलिए हम MDG तैयार करेंगे। इसमें किसी stakeholder को नहीं बुलाया गया। लेकिन SDG के समय में 15 साल इस पर चर्चा की और stakeholders को बुलाया गया। सभी देशों को कहा गया कि वे सुझाव दें। इसलिये 17 ऐसे सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDG's) निकाले और यह कहा गया कि इन 17 सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स जो हैं, उन पर हम चर्चा करेंगे और उनका हम समाधान ढूंढेंगे। U.N. ने जिस दिन उसे एडाप्ट किया वो दिन था 25 सितंबर 2015, वह पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का सेंटेनरी सेलिब्रेशन दिन था। यह एक दैवीय योगायोग है। किसी ने प्लान नहीं किया पर जिस व्यक्ति ने 1964 में तीन भाषणों के आधार पर दुनिया के सामने एक विषय रखा कि दुनिया में सोचने की जो पद्धति है वह एक दृष्टि से अलग है। एक नए विचार की आवश्यकता है यानि पश्चिम के विचार और कम्युनिज्म के विचार से अलग धार्मिक विषयों पर आधारित होकर समाज के बारे में चिंतन करने वाली एक और विचारधारा है। इन सभी विचारधाराओं के आधार पर जो समाज की रचना की व्यवस्था करने की सोच रहे हैं उसके आधार पर जिस प्रकार के समाज की रचना करेंगे वह समसामयिक नहीं हो पायेगा। वह कभी छोटे-मोटे जो प्रश्न हैं, उन समाज के सामने उनका शायद तात्कालिक समाधान दे पर वह भी 'परमानेंट' नहीं यानि 'सस्टेनेबल सॉल्यूशन' भी नहीं होगा। तो 'परमानेंट' और 'सस्टेनेबल सॉल्यूशन' क्या हो सकता है? भारतीय मनीषियों ने जो बातों का विचार किया उसके आधार पर 'एकात्म मानवदर्शन' आया। यह क्या है? इस पर दीनदयाल जी ने भाषण किये थे। तीन भाषण हुए थे, उसका संकलन एकात्म मानवदर्शन है। लेकिन वह तीन भाषण ऐसे हैं कि इसके बारे में जैसे वेदों के आधार पर उपनिषद लिखा जा सकता है और दुनिया के सभी विचारों को वेदों में समेटा जा सकता है। उसी प्रकार से एक दृष्टि से

देखा जाये तो विश्व के सामने भारत ने अनेक वर्षों तक जो विषय रखे थे, उन सभी विषयों के निचोड़ के आधार पर एकात्म मानवदर्शन का विषय रखा था। इस एकात्म मानवदर्शन में जो प्रमुख विषय था, वह था हमारी जीवन शैली, उस विषय को G-20 ने समाज के सामने रखने का प्रयत्न किया। यदि SDG को 2030 तक पूरा करना है तो मैं निराशावादी नहीं हूँ। लेकिन क्या हम 2030 तक ऐसा कर पायेंगे? अब हम 2024 में हैं मतलब 6 वर्षों में हम यह सारे गोल पूरा कर पायेंगे क्या? शायद नहीं कर पायेंगे। कोई बात नहीं है लेकिन इस पर अवेयरनेस निर्माण करना है। जितना कर सकें उतना करना है और 2047 तक क्या हम एक नया विचार दुनिया के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं? ऐसा विचार प्रधानमंत्री ने G-20 के आधार पर सबके सामने रखा। और उसका एक संकेत के नाम पर उन्होंने कहा Lifestyle for Environment जो आज जितनी समस्याएं हैं SDG के बाद, हम देखेंगे तो इन सभी समस्याओं का कहीं ना कहीं जो संबंध है, वह पर्यावरण से है और जीवन शैली से है। क्या हम पर्यावरण और जीवन शैली में परिवर्तन करके इन सभी विषयों के बारे में कुछ सोच सकते हैं? क्या जीवन शैली में परिवर्तन करने का मतलब किसी और पुराने जीवन पद्धति की तरफ जाना है यानि विमान से छोड़कर बैलगाड़ी में बैठना। नहीं ये ऐसी बात नहीं है, जीवन शैली में परिवर्तन करना मतलब जीवन शैली को किस-किस के आधार पर चलना? **जीवन शैली के आधार क्या होगा?** जीवन शैली को आधार मूल्य के आधार पर तो मूल्य का मतलब क्या है? इन सभी विषयों के बारे में अभी हमने चर्चा की, और दो दिनों में हम इन सभी बातों के बारे में, जीवन शैली और मूल्यों के बारे में चर्चा भी करेंगे। अच्छे जीवन का मूल्य क्या है? जीवन मूल्यों के आधार पर चर्चा करनी है, इसका मतलब क्या है? इन सभी बातों के बारे में हमने अभी सुना भी है और अनेक विषयों पर आगे चलकर भी सुनेंगे। लेकिन भारतीय मनीषियों ने केवल अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में नहीं सोचा। उनके सभी विचार जितने भी हमारे देश के विचार थे वह सभी पूरे संसार के लिये थे। पूरे संसार के लिये अगर हम इस प्रकार कोई सलाह या सुझाव देते हैं, एक समाज और संसार के सामने जितने प्रश्न हैं, उन सभी प्रश्नों के लिये एक 'प्रिस्क्रिप्शन' देते हैं कि आपकी यह बीमारी है तो यह आपकी दवाई है, तो वह दवाई सही है कि नहीं इसका भी कहीं ना कहीं 'एक्सपेरिमेंट' करके देखना पड़ेगा। तो वह लैबोरेट्री कौन-सी है? वह 'लैबोरेट्री' को उन्होंने भारत बनाया। भारत को एक लैबोरेट्री बनाया, जहाँ पर इन सभी समस्याओं का समाधान, इन सभी बातों के आधार पर करके दिखाया। और यह जो हमारी एक जीवन शैली थी मूल्य के आधार पर, उस प्रकार की जीवन शैली के प्रति श्रद्धा के साथ अगर हम फिर जायेंगे, उन जीवन शैलियों के आधार पर हम अगर समस्याओं के बारे में विचार करेंगे तो हो सकता है कि दुनिया के सामने जितनी समस्याएं हैं वह दूर हो सकती हैं। जैसे भारत के सामने जितनी समस्याएं हैं तो जब तक हमने इन सभी बातों के आधार पर लिया तब तक हमें समस्या नहीं थी। जब धीरे-धीरे हमें ऐसा लगने लगा पिछले 100-200 वर्षों में कि हमारी जो जीवन पद्धति या जीवन शैली है उसमें कहीं ना कहीं कुछ कमियां हैं और जो पाश्चात्य जीवन शैली है वह सही है, यानि जो वेस्ट ओरिएंटेड जीवन शैली थी, उसको हमने सही मान लिया और जो बचत ओरिएंटेड जीवन शैली थी उसको हमने गलत मान लिया। जो समाज और प्रकृति का शोषण करने वाली जीवन पद्धति है, उस शोषण आधारित जीवन पद्धति को सही मान लिया और समाज के प्रति देने की जो बात थी उसको हमने

नकार दिया। हम इसे साधारण व्यवहार में भी देख सकते हैं, यदि हमारे घर कोई मेहमान आये तो हम पानी पिलाते थे, तो यदि वह पानी पीकर रख देते थे, वह पानी हम फेंकते नहीं थे। अगर थोड़ा भी ऐसा बच गया पानी है तो कहीं ना कहीं वह पौधे में चला जाता था वेस्ट नहीं होता था। और उसके आधार पर प्रदूषण भी बढ़ने नहीं दिया जाता था। लेकिन यहाँ मैं एक विषय कहना चाहूँगा, यह जो पीने के पानी की प्लास्टिक बोतल हमारे सामने रखी है वह नहीं होनी चाहिये। यह समाप्त हो जाना चाहिये क्यों रखते हैं हम प्लास्टिक बोतल? यह पानी भी वेस्ट होगा और यह प्लास्टिक जो है वह बायोडिग्रेडेबल नहीं है। यह पड़ा रहेगा। अब आजकल लोग कहते हैं कि हम बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक भी बना सकते हैं और जितने प्लास्टिक वेस्ट है उस सबको मिलाकर हम सड़क बना सकते हैं। उस प्लास्टिक का जो सड़क बनायेंगे तो गर्मी में क्या होगा? यदि जो पश्चिमी जगत में किसी यूनिवर्सिटी में किसी ने एक्सपेरिमेंट किया और उसके आधार पर उसने कह दिया, वह हमने कह दिया कि वह ठीक है। पर ऐसा नहीं है यानि जो चीज प्रकृति के साथ सुसंगत नहीं है उस चीज को हम क्यों अपने लिये मानकर चल रहे हैं? क्यों हमें करना चाहिये? ये ठीक है कि जो हमारे बाप दादाओं ने किया वो अगर गलत भी निकला तो उसको भी हमें मान्य नहीं करना चाहिये, परंतु जो पश्चिम में लागू हुआ वह हमारे यहाँ पर लागू होगा ही इसकी कोई गारंटी नहीं है। जो अच्छी बात है, वह हम लेंगे पर जो हमारे पर्यावरण को दूषित करने वाली बातें हैं वह हम स्वीकार नहीं करेंगे। ऐसे अनेक विषय हैं जिस पर हमें आग्रह करना चाहिये। और हमने सुना डेवलपमेंट का क्या आधार होना चाहिये? केवल धन प्राप्ति ही डेवलपमेंट नहीं है, केवल 'वेल्थ एक्विजिशन' करना यह डेवलपमेंट नहीं है। डेवलपमेंट के अनेक प्रकार के परिणाम हैं और पूरी पृथ्वी का अगर विचार करना है तो किस प्रकार का हम डेवलपमेंट के बारे में विचार कर सकते हैं? हम सब बार-बार इन सभी विषयों में राम राज्य का उल्लेख करते हैं, तो यानि वह कहते हैं कि–

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम काज नहिं काहुहिं व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती।।

यह जो परस्पर प्रीति की बात है या परस्पर वार्ता की बात है यह डेवलपमेंट पैराडाइम हो सकता है क्या? यानि हम यह नहीं विचार करते हैं जैसा पश्चिम ने विचार किया कि डेवलपमेंट का मतलब क्या है, डेवलप्ड नेशंस, अंडर डेवलप्ड नेशंस, डेवलपिंग नेशंस फिर उन्होंने बीच में भी कह दिया की 'थर्ड वर्ल्ड कंट्रीज।' पहले रेलवे में होता था पहली श्रेणी, दूसरी श्रेणी एवं तीसरी श्रेणी, 'थर्ड क्लास' का मतलब ही कुछ ऐसा खराब, ऐसा एक माहौल बनाया था। इसलिये जो देश थे वह third world countries, under developed country, least developed country। फिर धीरे-धीरे उनको भी लगने लगा कि ऐसी बात करना नहीं चाहिये। इसीलिये उन्होंने धीरे-धीरे कहा कि Developed Economies and Developing Economies फिर अभी थोड़ा और परिवर्तन करने लगे, कहते हैं कि Imaging Economies. भारत के बारे में क्या कहा? Imaging Economies। फिर एक नार्थ-साउथ, डिवाइड लाया। नॉर्थ मतलब प्रगतिशील देश, साउथ मतलब जिसमें कोई प्रगति नहीं हुई। लेकिन बाद में धीरे-धीरे समझ में आया कि जिसको वह नॉर्थ कहते थे उसमें ऐसे भी देश हैं जो अपने आप को दिवालिया घोषित कर चुके हैं,

और जिसमें आज दुनिया का साउथ है, उसमें सबसे बड़े Economies हैं। आज जो दुनिया की बड़ी Economies है उनमें तीन तो इस साउथ में हैं। अतः भारत ने कहा कि यह जो आप north south बेकार की बात कर रहे हैं, वह ठीक नहीं है। What was earlier North has become South and what was earlier South is now becoming North. इसीलिए आप अपना बहुत गर्मी मत रखिये, गर्व मत करिए, घमंड मत रखिए कि पश्चिम मतलब विकसित और पूर्व मतलब विकास नहीं। विकास नहीं हुआ ऐसा नहीं है। आर्थिक विकास के मामले में भी हमारे अपने आर्थिक विचारों के आधार पर भी हम आर्थिक विकास करके दिखा सकते हैं, यह हमने धीरे-धीरे साबित किया। इसीलिए हमने कहा कि विकास का मतलब क्या है? विकास का मतलब सर्वांगीण होना चाहिये, सर्वसम्मत होना चाहिये, सार्वभौम होना चाहिये, सर्वव्यापी होना चाहिये, सर्वस्पर्शी होना चाहिये और सर्वगुण संपन्न होना चाहिये। यह विकास के कुछ आधारभूत आयाम हैं, जिसके बारे में भारत ने कहा कि हम अगर विकास के बारे में विचार करेंगे तो इन सभी आयामों के आधार पर भारत के विकास के बारे में विचार करेंगे। तो अब यह सब विचार जो है, यह क्या केवल सरकार का मामला है? क्या केवल सरकार ही करेगी? क्या अभी G-20 के बारे में हमने जो सुना वो यही था? सिटीजन C-20 के तहत हमने विचार किया कि कैसे हम इन सभी विषयों को संसार के सामने लेकर जायें? जो प्रश्न हैं, उन सभी को लोगों तक लेकर जायेंगे तथा लोग और समस्या इसके बीच में एक कड़ी की दृष्टि से हम कैसे विचार कर सकते हैं? इसीलिये SDG के बारे में विचार करते समय 3 वर्ष पूर्व हमने भी थोड़ा बहुत विचार किया था कि हम क्या कर सकते हैं? एक मॉडल दुनिया के सामने था वह सही मॉडल था या सही मॉडल है, ऐसा मेरा दावा नहीं है और मैं कहना भी नहीं चाहता हूँ लेकिन एक World Economics Forum बना है। किसी सरकार ने नहीं बनाया यूनाइटेड नेशंस ने नहीं बनाया। दुनिया में इस प्रकार के आर्थिक विचार के बारे में सोचने वाले कुछ लोग इकट्ठा हुये, उसमें कंपनियां भी थी, बड़े-बड़े मल्टीनेशनल कॉरपोरेशन थे, अर्थशास्त्र में पारंगत ऐसे भी लोग थे। उन सभी लोगों ने कहा कि World Economic Forum बनाना चाहिए। अब वह 'डावेस' में मिलते हैं। हर साल मिलते हैं। उसमें सभी देशों के प्रतिनिधि जाते हैं। चर्चाएं होती हैं। अब वह कितना समाधान कर पाये? कितना कर पायेंगे? कितने इश्यूज भी होंगे, यह हमारी आज की चर्चा का विषय नहीं है। परंतु एक सही दिशा में अगर इस बात के बारे में सोचना है तो जैसे World Economic Forum है। वैसा क्या वर्ल्ड 'SDG फोरम' हम सोच सकते हैं? SDG's 2030 में समाप्त नहीं होंगे। SDG के जो 17 गोल हैं, वह शायद पूरे नहीं हो पायें, क्योंकि समस्याएं समाप्त होने वाली नहीं हैं, इसलिये इन समस्याओं को लेकर हम आगे भी जाकर विचार करें। तीन बातों के बारे में विचार करें, जो नानाजी बार-बार कहा करते थे कि जो हम समाधान ढूंढते हैं वह sustainable होना चाहिये। 'लोकल प्रॉब्लम' का 'लोकल सॉल्यूशन' हो तो यह सॉल्यूशन सस्टेनेबल होगा। दूसरा 'Replicable' होना चाहिये। एक स्थान पर जो स्थापित हुआ, क्या हम दूसरे 10 स्थान पर उसे कर सकते हैं। जैसे उन्होंने गाँव का उदाहरण दिया जहाँ भील समाज ने यह तय किया कि हम प्रकृति से पानी लेते रहे हैं तो क्या हम पृथ्वी को वापस पानी दे सकते हैं? इसके बारे में सोच सकते हैं क्या? यह 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' होगा। प्रयोग 'रिप्लीकेबल' होगा क्या? क्या हम रिप्लिकेट नहीं कर सकते हैं? जैसे मध्य प्रदेश सरकार ने

पिछले कुछ वर्षों से पेड़ पौधे लगाने का एक बहुत बड़ा अभियान लिया। म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री जो थे उन्होंने स्वयं तय किया कि रोज कम से कम एक पेड़ लगाऊंगा। अर्थात् कम से कम प्रतिवर्ष 365 पेड़ तो उन्होंने खुद ही लगाया। यह अच्छा प्रयोग है लेकिन क्या बहुत बड़ा अभियान हुआ? क्या यह अभियान हम देश भर में कर सकते हैं? ऐसे ही महाराष्ट्र में कुछ लोगों ने एक बार ऐसा विचार किया था। उत्तरांचल में हमारे बहुत बड़े बुजुर्ग थे, उन्होंने एक नई बात की शुरूआत की थी। घर में जब बच्चा पैदा होता है या शादी होती है, या कोई भी अच्छा विषय होता है तो उस दिन वह एक पेड़ लगा देंगे। किसी का जन्मदिन हो तो उस दिन एक पेड़ लगायेंगे। तो ऐसे ही बहुत से विचारों के बारे में, चीजों के बारे में हम विचार कर सकते हैं। अतः एक तो हमारे जो सॉल्यूशन हैं वह 'सस्टेनेबल' होना चाहिये। दूसरा 'रिप्लीकेबल' होना चाहिये। तो इन सभी बातों के बारे में विचार करने के लिये हमने यह वर्ल्ड SDG फोरम बनाया है लेकिन केवल संस्था बनाकर कुछ होने वाला नहीं है।

नानाजी का जो विचार है उसके आधार पर चलने वाले बहुत सारे लोग हैं इसलिये हमें संस्था बनाने में कोई बहुत बड़ा आनंद नहीं है। परंतु इसके आधार पर हम क्या कार्यक्रम कर सकते हैं? और इसके बारे में चिंतन करने के लिये अगर एकत्र हो रहे हैं तो वह कहाँ होना चाहिए? हम किसी five star होटल में नहीं करेंगे। हम स्विट्जरलैंड में मीटिंग नहीं करेंगे। वर्ल्ड डेवलपमेंट फोरम में गरीबी कैसे मिटाई जाये इसकी मीटिंग स्विट्जरलैंड में हो रही है। साथ ही पर्यावरण की समस्या 'क्लाइमेट चेंज' और 'ग्लोबल वार्मिंग' इसकी भी बड़ी चर्चा होती है। ग्लोबल वार्मिंग की चर्चा में बड़े-बड़े देशों के 200 लोग इकट्ठा होते हैं और वह सब अपने-अपने देश से प्लेन में आते हैं, चार्टर्ड प्लेन में आते हैं। अंदाज लगाइये कितना 'वार्मिंग' हुआ? कितना कार्बन एमिशन हुआ? इससे अच्छा आप अगर अपनी जगह पर बैठकर भाषण कर देते कम से कम ग्लोबल वार्मिंग तो कम होता। इसीलिये हमने तय किया कि जितने SDG's के बारे में मीटिंग होंगी। वह वहीं पर होंगे जहाँ पर उनके सॉल्यूशंस के बारे में केवल सोचा ही नहीं जा रहा है बल्कि प्रत्यक्ष 'सॉल्यूशन' कर भी रहे हैं। और वह 'सॉल्यूशन' भी कोई साइंटिस्ट नहीं कर रहा है। समाज का सबसे जो गरीब व्यक्ति है, समाज में जो काम करता है, कृषि का काम करता है, पानी का काम करता है, वह आदमी उसके सामने जो समस्या है, उस समस्या के बारे में जो समाधान जहाँ ढूंढता है, वहीं पर हम इन सभी समाधानों के बारे में सोचेंगे। इसीलिये हमने तय किया कि हम जितने भी कार्यक्रम करेंगे वो सब हम चित्रकूट में ही करेंगे। किसी भी five star होटल में नहीं करेंगे। हमें जो कार्यक्रम करना है वह हम वहाँ पर करेंगे जहाँ पर प्रैक्टिकल है। Chitrakoot is the laboratory for the tomorrows world! क्या हम यह साबित करके दिखायेंगे? वास्तव में यह हो सकता है और यही प्रेरणा नानाजी ने दिया। अगर नानाजी चाहते तो वह दिल्ली में भी जगह ले सकते थे, मुंबई में भी जगह खरीद सकते थे, पर उन्होंने कहा कि वहाँ जायेंगे और वहाँ काम करेंगे जहाँ समस्या है और यशस्वी काम करके दिखाया और इसी के आधार पर हमने यह विचार किया। लेकिन हमने केवल संस्था बनाया ऐसा नहीं है, हमने सोचा कि उस कार्यक्रम को आगे कैसे किया जाये तो हमने कहा कि कम से कम यह जो SDG's के 17 विषय हैं, उन विषयों के बारे में सोचनेवाले समझनेवाले जो experts हैं उनको हम बुलायेंगे। हर महीने के आखिरी शनिवार को हम वेबीनार करेंगे। क्योंकि भ्रमण

आदि आजकल के समय में मुश्किल है इसलिये वेबीनार करेंगे। उसमें कोई ना कोई एक विषय लेकर, उस विषय की चर्चा करेंगे। प्रश्न क्या है? वह समझेंगे? और उसके विषय में उन्होंने अगर कुछ experiment किया है, उस एक्सपेरिमेंट के बारे में सुनेंगे। वास्तव में हमें कम से कम 11 इस प्रकार की मीटिंग करनी थी लेकिन कुछ ना कुछ दिक्कत रही, इसलिये पूरे साल भर में छह मीटिंग कर पाये। हम अभी सोच रहे हैं कि आगे केवल महीने में एक बार नहीं कम से कम महीने में दो बार वेबीनार क्या हम कर पायेंगे? ऐसा भी एक विचार है। धीरे-धीरे सोचकर उसको भी करेंगे। हम तो हिमालय पर चढ़ने वाले लोग हैं हम छोटे-छोटे दिक्कतों से डरने वाले लोग नहीं हैं। रामधारी सिंह दिनकरजी की कविता है, **'रश्मिरथी'** उसमें कहते हैं–

सच है विपत्ति जब आ जाती है, कायर को दहलाती है।

सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते।।

इसलिये हमारे सामने जितनी समस्याएं आयेंगी, उन सभी समस्याओं का समाधान करने के लिये हमारे पास व्यवस्था है, व्यक्ति है, आधार है। इसके आधार पर आगे हम सब मिलकर प्रयास करेंगे और इन दो दिनों में, इन सभी विषयों के बारे में और चर्चा करेंगे। इसके बारे में और सुझाव क्या हो सकते हैं? उन सभी विषयों के बारे में हम समाधान ढूंढ़ें। हमने जो कुछ भी प्रयोग किये हैं, उन प्रयोग को करते समय अनेक गलतियां होती हैं। हममें से बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने नानाजी के साथ काम भी किया है। नानाजी मुंबई प्रवास पर आते थे तो उन दिनों में मैं मुंबई में प्रचारक था। जब वे मुंबई आते थे, तो बड़े-बड़े जो उद्योगपति हैं, उनसे मिलते थे और बातचीत करते थे। सभी उद्योगपति उनसे कहते भी थे कि नानाजी आप ऐसा क्यों नहीं करते हैं कि आप जो कुछ भी समस्याओं के बारे में रिसर्च करना चाहते हैं। उसके लिये हमारी फैक्ट्री में हम आपको 1000 स्क्वायर फीट जगह देते हैं, आप वहाँ पर एक फैक्ट्री बना डालिए और वहाँ पर रिसर्च करिए। नानाजी उनसे कहते थे कि आप ऐसे क्यों नहीं करते हैं कि 1000 स्क्वायर फीट जो आप मुझे दे रहे हैं मैं आपको 10,000 स्क्वायर फीट दे रहा हूं। आप चित्रकूट में आकर फैक्ट्री लगाइए। वे उद्योगपति कहते थे, आपका विचार अच्छा है, पर फिर वो कुछ डोनेशन देकर चले जाते थे, वे सोचते थे कि ये आदमी हमारी फैक्ट्री बंद करवायेगा। इसलिये वह छोड़ देते थे। पर नानाजी कभी प्रयास करना नहीं छोड़ते थे। इसलिये हम गलती भी करते हैं, करेंगे भी, सुधारेंगे भी, गिरने का डर नहीं है, गिरना गलत नहीं है लेकिन गिरने के बाद अगर नहीं उठ पाये तो वह गलती है। इसीलिये हम करने की, एवं सीखने की प्रक्रिया जारी रखेंगे और नई-नई चीजों पर प्रयोग करेंगे। यही हमारा यह दो दिन का मकसद है। इन सभी विषयों पर हम अगले दो दिनों में आपस में चर्चा करेंगे। धन्यवाद

Shri Ganesh Singh
Member of Parliament, Satna, M.P.

Shri Ganesh Singh, is a 4 term Member of Parliament from the Satna Constituency. He is deeply involved in the development work in the Vindhya region and had focused on the empowerment of Gram Panchayats and providing basic amenities to the area.

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रयासों से यहाँ पर 3 वर्षों से लगातार सतत विकास के लक्ष्यों पर चर्चा हो रही है, और इसमें कई शोध भी हुए हैं। फिर तीन दिवसीय विचार गोष्ठी आज से शुरू हो रही है। ये बात सही है कि पूरी दुनिया में कई ऐसी समस्यायें है जो एक जैसी हैं और इन समस्याओं का कोई न कोई हल निकलना चाहिये। पूरी दुनिया सोच रही है कि इनका समाधान सतत विकास के अनुकूल और मानव जीवन के अनुकूल हो। पिछले दिनों हम लोगों ने देखा है जब जी-20 की हमारे देश में अध्यक्षता आयी, हमारे प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने जी-20 देशों के प्रतिनिधियों के साथ देश के लगभग 64-65 स्थानों पर विचार गोष्ठियाँ हुईं। उनमें से जो सबसे महत्वपूर्ण विषय थे उनमें पर्यावरण था, उसमें ऊर्जा संरक्षण भी था, जल संरक्षण था, गरीबी से कैसे लोगों को मुक्त किया जाये, प्राकृतिक खेती कैसे करें, पयर्टन को कैसे हम बढ़ावा दे सकें? और श्री अन्न को कैसे बढ़ावा मिले आदि विषयों पर चर्चा हुई। हमारे प्रधानमंत्री जी ने 2014 से लेकर 2024 तक इन 10 वर्षों में कई ऐसे innovative steps लिये हैं। उनके परिणाम सामने दिख

रहें हैं। हमारे सामने जो समस्या है, उनका समाधान तो खोज रहें हैं लेकिन विश्व के लिये विकास ऐसा हो जिससे मानव जीवन बेहतर बने। चित्रकूट तो एक प्राकृतिक स्थान है भगवान राम जी ने यहाँ 11 वर्ष 6 माह का समय बिताया था। कई ऐसे सन्त-महात्मा यहाँ पर आये जिन लोगों ने इसकी प्राकृतिक सौन्दर्यता बनाये रखने पर काम किया। पूज्य नानाजी भी 90 के दशक में यहाँ आये और उन्होंने जो ग्राम विकास की, स्वावलम्बन की, आत्म-निर्भरता की, जो भी बात किया, जो काम किया यहाँ पर आज वो पूरी दुनिया में दिखाई दे रहा है। अब ये श्री अन्न योजना जो हमारे जी-20 के चर्चाओं के दौरान निकलकर आयी, उसमें जो पौष्टिक तत्वों का समावेश है उसे पूरी दुनिया ने मान लिया। अब किसानों को श्री अन्न की महत्वता समझ में आ रही है एवं उसका उचित मूल्य भी किसानों को मिल रहा है। अब इस तरफ किसानों का भी ध्यान गया है। पं दीनदयाल जी का एकात्म मानव दर्शन है, गांधी जी का दर्शन है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने जीवन में उतारा। हम विकसित भारत बनाना चाहतें हैं, जिसमें हमारे मुख्य स्तम्भ हैं, जैसे-गरीबी में हमें बहुत काम करना है, आज उनके जीवन स्तर में बदलाव भी आया है। उन्हें दूसरे स्तर पर युवा वर्ग जिन्हें रोजगार की आवश्यकता है। हमारे देश का कृषि क्षेत्र है यह पूरी तरह से रासायनिक खाद के प्रयोग से दूषित हो रहा है तो अब इसमें हमें प्राकृतिक खाद का प्रयोग करके अधिक उपज बढ़ाना है। अब गाँवों में लोग पानी की बचत, साफ-सफाई आदि के बारे में जागरुक हुए हैं। स्वच्छता को ग्रामीण जनों ने जन आन्दोलन बना दिया है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा कि हम विकसित भारत बनाना चाहते हैं। लेकिन चार विषयों पर विशेष ध्यान दिया है। नारी शक्ति जो देश की आधी आबादी है जब तक हम नारी शक्ति को आत्मनिर्भर नहीं बनायेगें तो देश का विकास संभव नहीं है। इसलिये महिला शक्ति को आगे करना होगा। मैं इतना ही निवेदन करूंगा कि आप लोगों ने जो विचार रखें वो विचार बहुत ही सार्थक हैं, अभी तीन दिन आप लोग और चर्चा करेंगे, कैसे इसे और सार्थक बनाया जाये, उस दिशा में हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जो कार्य शुरू किया है, मैं मानता हूँ कि 2047 जब देश की आजादी का 100वाँ वर्ष मनायेंगे तब हम इन सारी समास्याओं से छुटकारा पाकर हम एक ऐसा राष्ट्र बनायेंगे, जो सचमुच एक उदाहरण होगा।

LiFE Outcomes presented to Deendayal Research Institute by Dr. Gajanan Dange

Shri R. K. Singh Patel
Member of Parliament, Banda, U.P.

Shri R. K. Singh Patel is a 2 term M.P. from Banda Constituency, U.P. and has focused on efforts on the upliftment of the Bundelkhand region.

हमारे यहाँ कृषक उत्पादक संगठनों FPD's के इस तीन दिवसीय कांफ्रेंस में कार्यकर्ताओं के कौशल सवंर्धन एवं उद्यमिता में भी विशेष चर्चा करना आवश्यक है। कार्यक्रम में हमारी जो धरती माँ है, उसको हम लोग बंजर बनाने के लिये बहुत सारी रासायनिक उर्वरक डाल करके उसका दोहन करते हैं, इस पर भी विचार करें। पहले परम्परा रही है, मैं किसान हूँ और मुझे याद है आज से 35-40 साल पहले, जैसा आपने कहा कि हम भूमि को आराम दें। हम उससे जब लेते हैं तो कुछ आराम भी उसको देना चाहिये। हमारी परम्परा रही है कि एक सीजन में हम फसल उगाते थे तो अगले सीजन में हम खाली छोड़ देते थे, हम अगर रबी की फसल लेते थे तो खरीफ की फसल हम उस खेत से नहीं लेते थे। हम उसको फसल चक्र के रूप में विकसित करते थे, और गहरी जड़ों वाली फसल को बोते थे तो फिर झबरा जड़ वाली को बोते थे। ऐसा कुछ हमारे पूर्वजों को पहले से ज्ञान प्राप्त हुआ था। मुझे यहाँ से कुछ सीख मिल रही है और निश्चित तौर पर आने वाली पीढ़ियों को हमें इसे अपनाने की आवश्यकता है। नानाजी ने इस क्षेत्र के लिये, चित्रकूट धाम की पावन धरा के लिये ये एक जो धरोहर हमारे लिये यहाँ पर दिये हैं, वो हमारे लिये प्रेरणादायी है, और इससे हम प्रेरणा ले करके इस क्षेत्र के लोग, इस चित्रकूट के लोग, और देश के लोग आगे बढ़ें यही मेरा सभी से आग्रह है, निवेदन है। भारत माता की जय।

Sushri Usha Thakur Keynote Speech

Sushri Usha Thakur is the MLA from Dr. Ambedkar Nagar, Mhow. She served as the Minister of Tourism, Culture and Religious Trust & Endowment in the Government of Madhya Pradesh. She is very vocal on her views on women.

श्रद्धेय मंच और उपस्थित आप सभी सुधी जनों को प्रणाम करती हूँ। विशेषज्ञों के माध्यम से बहुत ही बेहतर तरीके से हम भारतीय सनातन जीवन पद्धति के सभी तौर-तरीकों को आधुनिक तारतम्य में समझने की लगातार कोशिश यहाँ कर रहे हैं। मैं ऐसे प्रकांड विद्वानों के सामने क्या रख सकती हूँ? हमने जो छोटे-छोटे प्रयोग किये और उनको जो सब परिणाम समाज में देखें, उन्हीं को मैं निवेदन करना चाहती हूँ। मुझे गर्व है कि जब तक विश्व सनातन वैदिक जीवन पद्धति की ओर नहीं मुड़ेगा तब तक भौतिकता से तन्मयता, सुख-शांति और संतुष्टि प्राप्ति कर ही नहीं सकती। जी-20 में हमको जो अध्यक्षता मिली और इतनी सुंदर विषयों पर विमर्श हुआ, पर मैं कहूंगी कि भारतीय संस्कृति की रीढ़ यदि कुछ है तो वह आध्यात्मिकता है। और यह आध्यात्मिकता ही हमें अधिक सहनशील बनाते हुए हर जीव की, चिंता के लिये हमें प्रेरित करती हैं। हमें अति संवेदनशील बनाती हैं। अध्यात्म विभाग सौभाग्य से मध्य प्रदेश का नानाजी के आशीर्वाद से मेरे पास था। आज भारत रत्न नानाजी की पुण्यतिथि के अवसर पर जिन बातों का हम विचार मंथन कर रहे हैं। मैं सबसे करबद्ध प्रार्थना करना चाहती हूँ कि किसी का जन्मदिन मनाना या किसी की पुण्यतिथि मनाना तभी

सार्थक है जब जो उन्होंने किया वह हम सब करके दिखायें। नानाजी ने जो स्वावलंबन, जो मौलिक जीवन, जो स्वदेशी, जो सर्वोदय के लिये एक जीता जागता ज्वलंत उदाहरण हमारे सामने दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से क्षेत्र में रखा, क्या हम सब अपने-अपने गली मोहल्ले में कोई छोटी जगह चुनकर हम इस प्रकार के प्रयोग को कर सकते हैं। क्योंकि यह छोटे-छोटे प्रयोग ही समाज को बदलेंगे और राजनीति हो, समाज क्षेत्र के लोग हो यदि हम समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम स्वयं को प्राप्त शक्तियों को बनाएं तो मुझे लगता है कि जैसा माननीय प्रधानमंत्री जी जो सपना देख रहे हैं कि 2047 तक हम विश्व गुरु के रूप में पुनर्स्थापित होंगे। जी-20 के जिन विषयों पर मंथन हुआ वह हमें विश्वास दिलाते हैं कि हम निश्चित रूप से सफलता को प्राप्त करेंगे। भारत की यह भारतीयता ही इस पावन दिशा में समग्र मानवता का मार्ग प्रशस्त करने वाली है।

जब मुझे अध्यात्म विभाग मिला तो मैंने देखा, आप आश्चर्य करेंगे, हमने सारे डॉक्यूमेंटेशन पहली बार आध्यात्मिक विभाग का कराया। 21,000 शासन संचालित मंदिर है मध्य प्रदेश के साथ, जो मध्य प्रदेश बनने के वक्त सरकार ने अपनी जिम्मेदारी पर दिए थे। आप आश्चर्य कीजिएगा उन 21,000 मंदिरों की कोई भूमिका नहीं, उनका कोई कर्तव्य नहीं बस उनको क्या मिल रहा है, कितनी जमीन पर उसकी खेती करना, जमीन को कैसे हड़प जाना है, इसी बात में हर व्यक्ति लगा हुआ था। हमने पूरे प्रमाणों व तथ्यों को इकट्ठा किया। कौन पुजारी कहाँ पर है? और मध्य प्रदेश की सरकार ने पहली बार मध्य प्रदेश के पुजारियों का मानदेय 5,000 करने का निर्णय किया। बड़ा विचित्र था कहीं ढाई सौ, 300, 200 इस प्रकार से उनका मानदेय था। और इसके साथ ही पुजारियों से प्रार्थना की, की यह मंदिर बहुत छोटा है पर इसके बदले में आपको भी कुछ कर्तव्य करना होगा। तो हर मंदिर के surrounding area में 62 लोगों को आप चुनिए उनका आधार कार्ड, समग्र आईडी, मतदाता क्रमांक और जिस देवी देवता का विग्रह उस मंदिर में स्थापित है, उससे आसपास के 62 घरों को जोड़िये। वहाँ के बच्चों को देवी देवता की प्रार्थना सिखायें क्योंकि यह प्रार्थना और यह सस्वर पाठ, कर्मकांड और धर्मांधता नहीं है बल्कि यह शुद्ध विज्ञान है।

हम सब जानते हैं पुणे की अक्षर विज्ञान संस्थान ने किस प्रकार से इसको प्रमाणित किया। यदि हम कोई इस पाठ से सस्वर नाभी से उच्चारण करके करते हैं तो हमारा सारा तंत्रिका तंत्र बेहतर स्वास्थ्य को प्राप्त करता है। हम सकारात्मक रहते हैं, हमारा Aura बढ़ता है और इसके जीवन्त प्रयोग को मैंने कोरोना के चलते किया। आप आश्चर्य करेंगे कि मेरे घर में मेरे जन्म से आज तक सूर्योदय सूर्यास्त के वक्त अग्निहोत्र होता है। देसी गाय के गोबर के कंडे पर अक्षत, देसी गाय का घी और भीमसेनी कपूर की दो आहुति सूर्योदय के वक्त और दो आहुति सूर्यास्त के वक्त। साथियों यह कर्मकांड नहीं यह शुद्ध विज्ञान है। अभी गजानन जी भी बता रहे थे कि यह सब वैज्ञानिकता हमारे जीवन शैली में शामिल होगी तभी हम बेहतर पर्यावरण और आने वाले पीढ़ी को बेहतर जीवन दे सकते हैं। इस छोटी सी प्रक्रिया में इथाईलीन ऑक्साइड बनता है, मेथेलीन बनता है और इसके नैनो पार्टिकल्स जब हम अग्निहोत्र करते हैं और गहरी सांसों के साथ आत्मसात करते हैं तो उसके चमत्कारी परिणाम होते हैं। हमने 108 मंत्र आचरण में चुने जिसमें दुर्गा सप्तश कुंजिका के आठ श्लोक और सप्त श्लोकी दुर्गा के सात श्लोक और अर्गला के 25, महिषासुर मर्दिनी का पूरा 10 पाठ, और 32

नामों की देवी की माला। इसका एक छोटा सा पाठ्यक्रम बनाया और मैंने अपनी विधानसभा की 17000 माता बहनों को इसे कंठस्थ कराया, मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ इसका डॉक्यूमेंटेशन भी आपको मिल सकता है, कि हर याद करने वाले ने कहा कि यह प्रार्थना जब से उसने कंठस्थ करके करना प्रारंभ की तब से उसके जीवन में कोई समस्या कहीं बची ही नहीं है। और यह अग्निहोत्री की छोटी सी प्रक्रिया के विश्वास ने कोरोना के काल में मैंने मास्क नहीं लगाया, मुझे सब ने डाँटा भी बहुत, पर मैंने कहा कि मैं आपकी बात इसलिये नहीं मानूंगी क्योंकि मैं वैदिक जीवन पद्धति को जीती हूँ, सनातन परंपराओं में विश्वास रखती हूँ। यह लड़ाई मैकाले की शिक्षा पद्धति के साथ मेरी है, आप निश्चिंत रहिए मुझे कुछ नहीं होगा। और आपको बताते मुझे गर्व है कि इस अग्निहोत्र की छोटी सी प्रक्रिया ने मुझे नहीं लाखों लोगों को सुरक्षित रखा। मेरे महू में कोरोना काल में स्वाभाविक मृत्यु दर थी, जिनको मरना था वही मरे। बाकी कोरोना में भर्ती हुआ हर आदमी स्वस्थ होकर लौटा क्योंकि अस्पताल के सामने हमने एक बड़ा यज्ञ कुंड लगाकर रोज सुबह शाम आर्य समाज के साथियों के साथ मिलकर यज्ञ किया। मरीजों को कहा शीघ्र स्वस्थ हों देखिए, हम यज्ञ कर रहें हैं। आप अपने कुलदेवी देवी देवता का मंत्र जाप कीजिए और आप आश्चर्य कीजिएगा कि सकारात्मक भाव से जब उन्होंने ऐसा किया तो उन्हें बेहतर स्वास्थ्य को प्राप्त किया।

तो आप सबसे प्रार्थना करती हूँ कि भारतीय जीवन शैली वैदिक जीवन पर आधारित जीवन पद्धति को हम अपना लें। मैकाले की शिक्षा ने हमको भ्रमित किया, कच्चे मकानों को हमने गरीबी मान ली, श्रीअन्न को हमने गरीबों का प्रतीक मान लिया।

मैं धन्यवाद देती हूँ, मोदी जी के इस विराट दृष्टि को कि उन्होंने इन सब मौलिकता को फिर से भारत में लौटाने के लिये जो प्रयास किया तो जो आने वाली पीढ़ी हैं उनके इस ऋण से कभी उऋण नहीं हो पायेंगे।

बहुत-बहुत धन्यवाद, बहुत प्रणाम आप सबको बोलने का मौका दिया इसके लिये आपका धन्यवाद करती हूँ।

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

sdginterventions.org

ZERO HUNGER
Sustainable Development Goal 02

Organization Name: Deendayal Research Institute, INDIA
Name of Intervention: Nutritional Kitchen Garden

Summary

Vision to ensure that every farm family has access to healthy and diversified diet with nutritional rich proteins, nutrients and vitamins.

The problem of malnutrition, especially micronutrients deficiencies, are very common among rural households because of a lack of awareness, illiteracy, inadequate availability of vegetable and fruits and low purchasing power of the households One of the easiest ways of ensuring access to a healthy diet that contains adequate macro and micronutrients is to produce many kinds of nutritional vegetables and fruits rich in proteins, nutrients and vitamins in the home garden. This is especially important in rural areas where people have low purchasing power and distant markets. Kitchen gardening directly provides food and nutritional security by making access to food that can be harvested instantly, prepared and fed to family members, daily or whenever required. Home gardens are also becoming an increasingly important source of food and income for poor households of villages nearest to towns and cities. Kitchen garden can be grown in the spaces available at the backyard of the house or roof or it can be established with joint efforts on a common place or land. As per ICMR, every person should consume around 300 g vegetables and 140 g fresh fruits per day.

The family have good availability of vegetables, fruits and nutrient intake at the household level.

- To replicate, substitute with local vegetables and fruits.

Responsibility

Overall responsibility of motivating, planning, promoting, establishment, developing *"Nutritional Kitchen garden"* lies with "Krishi Vigyan Kendra" and *"Samaj Shilpi Dampati"* of the village

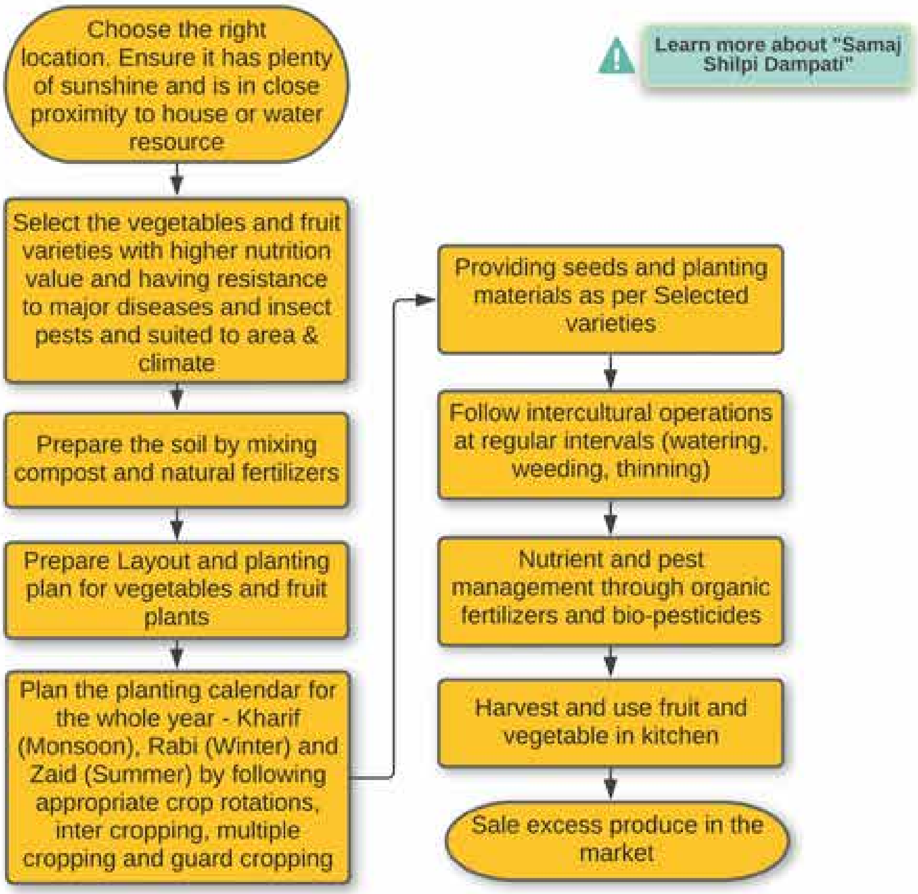

Document No.: SDGINT B 1012
Page 1 of 1

Issued on: 2 December 2021
Last issued on: NA

Document version No.: 1.0
Approved by: Vasant Pandit

2 ZERO HUNGER

END HUNGER, ACHIEVE FOOD SECURITY AND IMPROVED NUTRITION AND PROMOTE SUSTAINABLE AGRICULTURE

MILLIONS MORE ARE LIVING IN HUNGER

821 MILLION
WERE UNDERNOURISHED
IN **2017**

UP FROM

784 MILLION
IN **2015**

TWO THIRDS

OF EXTREMELY POOR EMPLOYED WORKERS WORLDWIDE ARE AGRICULTURAL WORKERS

TWO THIRDS

OF UNDERNOURISHED PEOPLE WORLDWIDE LIVE IN TWO REGIONS:

SUB-SAHARAN AFRICA

237 MILLION

SOUTHERN ASIA

277 MILLION

22% (149 MILLION)
OF CHILDREN UNDER 5 ARE **STUNTED**

5.9% (40 MILLION)
OF CHILDREN UNDER 5 ARE **OVERWEIGHT**

7.3% (49 MILLION)
OF CHILDREN UNDER 5 ARE **AFFECTED BY WASTING**

© UN Photo / Albert González Farran

A profound change of the global food and agriculture system is needed to nourish today's **800 million** hungry + the additional **2 billion** increase in global population expected by **2050**

ZERO HUNGER: WHY IT MATTERS

What's the goal here?

To end hunger, achieve food security and improved nutrition and promote sustainable agriculture.

Why?

Extreme hunger and malnutrition remains a barrier to sustainable development and creates a trap from which people cannot easily escape. Hunger and malnutrition mean less productive individuals, who are more prone to disease and thus often unable to earn more and improve their livelihoods.

There are more than 800 million people who suffer from hunger worldwide, the vast majority in developing countries.

26th February		
SDG 2	**Speaker**	**Topic**
9.30 am - 11.00 am	**What We Grow.**	
Speaker 1	Dr. Trilochan Mohapatra, Chairperson, Protection of Plant Varieties & Farmers' Rights Authority	Sustainable Agriculture and Amrit Kaal
Speaker 2	Dr Om Gupta, Former Director of Extension Services Jawaharlal Nehru, Krishi Vishwavidyalya, Jabalpur	Role of Pulses in Combating Malnutrition
Speaker 3	Dr. Amit Goswami, Senior Scientist, Horticulture, PUSA, New Delhi	Horticulture for holistic health of the nation
Moderator	Deepak Khandekar, chairperson, Tribal Cell, Governor's House, Bhopal	
11.00 am -11.30 am	Tea Break	
11.30 am - 1.00 pm	**How We Grow**	
Speaker 1	Dr. H.S. Kushwaha, Professor of Agronomy, Faculty of Agriculture, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya, Chitrakoot	Production of Nutricereals
Speaker 2	Dr. Rajender Singh Negi, Princpal Scientist, KVK Satna	Chemical Free Natural Farming
Speaker 3	Padma Shri Uma Shankar Pandey	Har Keth par Medh; Haar Med Par Ped
Moderator	Sushil Chatruvedi, Director Research, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi	
1.00 pm – 2.30 pm	Lunch	
2.30 pm -4.00 pm	**What We Eat**	
Speaker 1	Dr. S. S. Shukla, Dean, Dept. of Food Tech, Jawaharlal Nehru Krishi	Fortifying Food with Micronutrients
Speaker 2	Vasant on behalf of Pravir Krishna	Forest Food and Livelihoods from Minor forest Produce
Speaker 3	Mrs. Mamta Tripathi, Senior Scientist, Deendayal Research Institute, KVK Chitrakoot.	Kitchen Gardens
Moderator	Dr. Sabyasachi Saha, Associate Professor, RIS, New Delhi	
4.00 pm - 4.30 pm	Tea Break	
4.30 pm- 6.00 pm	Chancellors,VCs, Deans of Universities to distill message.	
27th February		
9.30 am to 12.30 pm	**Joint Session for discussion and Conclusions**	

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024

SDG 2 – ZERO HUNGER

SESSION I
WHAT WE GROW

Moderator:
Shri Deepak Khandekar, Chairman, Tribal Cell, Governor's House, Bhopal
Keynote Speakers:
Dr. Trilochan Mohapatra, Chairperson, Protection of Plant Varieties & Farmers' Rights Authority
Dr. Om Gupta, Former Director of Extension Services, JNKVV, Jabalpur
Dr. Amit Goswami, Senior Scientist, ICAR-IARI, New Delhi

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

Keynote speech by Dr. Trilochan Mahapatra on 'Sustainable Agriculture and Amrit Kaal'.

Dr. Trilochan Mohapatra (is an Indian biotechnologist, geneticist, former government secretary of the Department of Agricultural Research and Education (DARE) and former director general of the Indian Council of Agricultural Research. Known for his studies in the fields of molecular genetics and genomics, Mohapatra is an elected fellow of the National Academy of Sciences, the National Academy of Agricultural Sciences, the Indian National Science Academy and the Indian Society of Genetics and Plant Breeding. The Department of Biotechnology of the Government of India awarded him the National Bioscience Award for Career Development, one of the highest Indian science awards, for his contributions to biosciences in 2003. He is currently the Chairperson of the Protection of Plant Varieties & Farmers' Rights Authority, Ministry of Agriculture & Farmer Rights, Government of India.

वसंत जी बोले कि बहुत स्पेसिफिक चर्चा है और खास करके सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल 2 के ऊपर चर्चा करनी है और हमें जो दायित्व दिया कि बोले कि आप अमृत काल में कैसे सस्टेनेबल agriculture कर सकते हैं? और सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल 2 को ध्यान में रखते हुए क्या किया जा सकता है, उसके बारे में चर्चा करना है। हमारे देश का अमृत काल अभी चालू है और प्रधानमंत्री जी इसके बारे में विभिन्न स्तर पर बताते हैं, चर्चा भी करते हैं, और कई दिशा निर्देश भी दिए हैं। सारे मंत्रालयों को और आर्गेनाइजेशन को, संस्थान को अपना लक्ष्य तय करने के लिये यह भी निर्देश दिए हैं कि उन्हें क्या करना चाहिये। आप सब जानते हैं कि यह जो सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स में गोल नंबर 2 है वह है 'जीरो हंगर' और भुखमरी मुक्त विश्व की कल्पना। हमारे सामने लक्ष्य के रूप में रखा गया है कि हमें क्या खाना है? कैसे उगाना है? हम तीन मुद्दे के ऊपर बात करेंगे। मेरा मानना है कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स 2 जो है, वह पूरा हो सकता है। तो जब इसके बारे में बात करेंगे तो सतत कृषि के तहत हम कैसे हमारी जनसंख्या को पर्याप्त मात्रा में खाना खिलाते हुए उनको स्वस्थ रख सकते हैं। स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा तो यह खाना खिलाने का मतलब भी कुछ ज्यादा रहता नहीं है, तो इसलिये खाना खिलाना है जब खाना खायेंगे और सही खाना खायेंगे, सही मात्रा में खायेंगे तो सेहत ठीक रहेगी और सेहत ठीक रहेगी तो हमारा जो सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल है वह है स्वास्थ्य संबंधित 'हेल्थ और वैलनेस।' तो ये एक दूसरे से करीब-करीब जुड़े हुए हैं। विश्व खाद्य संगठन (FAO) की वेबसाइट पर आप जायेंगे तो देखेंगे कि कृषि को जो हर एक 17 गोल है, उस हर एक गोल के साथ जोड़ा गया है। साथ ही यह दिखाया गया है कि how agriculture is related to all the 17 goals of SDG and if you want to achieve all the 17 goals agriculture is directly or indirectly related to each one of them.

अब बिना खाना खाकर कोई सिटी तो sustain नहीं कर सकता यह करीब करीब जुड़े हुए हैं। इस सस्टेनेबल सिटी का जो परिकल्पना करते हैं तो वह खाने की व्यवस्था क्या होना चाहिये और अर्बन agriculture सिटी agriculture क्या होना चाहिये और कैसे होना चाहिये और पानी का इस्तेमाल कैसे होना चाहिये और खाद्य व्यवस्था कैसे होना चाहिये सिटी में ताकि एनवायरनमेंटल फुटप्रिंट कम हो बहुत सारी चीज हैं तो मैं विस्तार में न जाकर संक्षिप्त में दो-चार बातें बताना चाहूंगा। आप जानते हैं कि 2022-23 में हमारा खाद्य उत्पादन 329.6 मिलियन टन में पहुंचा है, जो 1950-51 में 50 मिलियन टन था अर्थात् छह गुना से ज्यादा बढ़ा है।

हमारी खाद्य सुरक्षा और उत्पादन में 'ग्रीन रिवॉल्यूशन टेक्नोलॉजी,' जो 1960 के दशक में आया था और उसके बाद नई चीजें आयीं। उसमें परिवर्तन करते हुए, नए-नए Research Innovation के जरिए और नई-नई किस्में आयीं, नई टेक्नोलॉजी आयी और अब हम यहाँ तक पहुंचे हैं कि हम खाली उत्पादन ही नहीं करते बल्कि निर्यात भी करते हैं। आप जानते हैं कोविड के दौरान हमने निर्यात किया। आज रुस-यूक्रेन युद्ध जैसे कारणों से विश्व में खाद्यान्न संकट आया है, हम दूसरों की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ अपनी 140 करोड़ जनसंख्या को पर्याप्त खिला रहे हैं। 140 करोड़ से ज्यादा जनता को खिलाना है और खिलाकर स्वस्थ रखना है अर्थात् खाली खिलाना ही नहीं है बल्कि स्वस्थ रखना है। उसके लिये क्या खिलाना है? और उसे कैसे उगाना है? कितना उगाना है? और कहाँ उगाना है? तो उगाने के साथ में बहुत सारी बातें जुड़ी हुई हैं। और जब उगाना सही होगा तब जाकर खाना भी सही होगा। आज हम

सक्षम हैं कि 'फूड सिक्योरिटी एक्ट' के तहत हम 80 करोड़ जनता को फ्री खाद्य दे पा रहे हैं। पिछले 4 साल दिए हैं और अगले 5 साल देने के लिये भी सरकार ने तय किया है। यह संभव नहीं होता अगर हमारे पास पर्याप्त मात्रा में उत्पादन नहीं होता और हम संरक्षण नहीं कर पाते, तो देना तो दूर की बातें जो भुखमरी है उसको मिटाना भी संभव नहीं होता। यह तो एक बात है कि हम लोग पर्याप्त मात्रा में उत्पादन करते हैं, उसका संरक्षण करते हैं और 80 करोड़ जनता को फ्री खाना देने के लिये सक्षम हुए हैं और साथ ही निर्यात भी कर रहे हैं। पिछले साल 2021-22 में निर्यात जो है वो 52 बिलियन यूएस डॉलर का हुआ। यह सब संभव हुआ है, लेकिन अगर यह उत्पादन हम जो कर रहे हैं और जिस हिसाब से कर रहे हैं उसमें जो 'एनोवयरमेंन्टल फुटप्रिन्ट' क्या है? एनोवयरमेंन्टल फुटप्रिन्ट के साथ-साथ जुड़ा प्रश्न है कि हमारे लिये सतत कृषि क्या है? और यह कैसे होना चाहिये? हमारी सारी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए क्या हम हमारा खाद्य उत्पादन को आधा कर सकते हैं? 330 मिलियन ton से 115 मिलियन ton करके क्या हमारे देश की जनता को खिला सकते हैं? और क्या विश्व की जो आवश्यकता है उसको दे सकते हैं? क्या यह संभव है या हमें ऐसा करना चाहिये? और आगे जो जनसंख्या बढ़ रही है इसको ध्यान में रखते हुए उत्पादन और बढ़ाने की आवश्यकता है? अगर ऐसा करना है तो कैसे करना है? तो सतत कृषि क्या है? इसके तीन पिलर आधारित होते हैं। और ये तीन स्तंभ हैं Economic Environmental and Social. जब हम कृषि की बात करते हैं या ग्लोबल लेवल पर फूड सिस्टम की बात करते हैं तो जो पहला Economic स्तंभ है। अर्थात् जो लोग उससे जुड़े हैं, चाहे Input Supply System में या चाहे Marketing System में उन्हें अगर फायदा नहीं होगा तो कृषि कौन करेगा? अर्थात् Economic Viability बहुत आवश्यक है।

यदि आप किसी किसान को परम्परागत किस्म को उगाने को कहते हैं, जिससे उसे 2-3 टन प्रति हेक्टेयर उपज मिलती है, वही वो रासायनिक पद्धति से 5-7 टन प्रति हेक्टेयर पैदा कर रहा है तो वो आपकी बात क्यों मानेगा? तो मेरा कहने का यह मतलब है कि Economic Benefit और Viability यह अगर पूरा नहीं होगा, तो हम उसे प्रेरित नहीं कर सकते। हमें Economic Viability बनाए रखना है, लेकिन उसको जब बनाए रखने के लिये सोचते हैं, तो उसके साथ-साथ सतत कृषि का दूसरा जो स्तंभ है वह है environmental security, अर्थात् हमें हमारे परिवेश की जो सेहत है उसको बर्बाद करते हुए खेती नहीं करनी है। अंधाधुंध पेस्टिसाइड या रासायनिक खाद नहीं डालना है। अर्थात् हमें पैदावार के साथ परिवेश की सेहत को ध्यान में रखना चाहिये। अभी अगर आप देखेंगे पेस्टिसाइड का इस्तेमाल हमारे देश में बहुत कम है, यह 500 ग्राम प्रति हेक्टयर भी नहीं है।

एक अनुमान के हिसाब से अगर जापान, चीन जैसे देशों में जायेंगे वह सालाना 10 किलो से ज्यादा प्रति हेक्टयर प्रयोग करते हैं। हमारा पेस्टिसाइड प्रति हेक्टयर का सालाना औसत 1 किलो भी नहीं है। लेकिन इसके प्रयोग में भारी असमानता या असंतुलन है। किसी प्रदेश या क्षेत्र या ब्लाक में अंधाधुंथ इस्तेमाल हो रहा है। जब उसकी आवश्यकता नहीं है तब भी इस्तेमाल कर देंगे। एक बार डालना है पर चार बार डाल देंगे। वहीं जहाँ नहीं हो रहा है वहाँ बिल्कुल नहीं हो रहा है। इसी तरह के खाद के प्रयोग को हमारा औसत 150 किलोग्राम भी नहीं है। कई देश हैं जिसमें यह 200-300 किलोग्राम से ज्यादा है। लेकिन हमारे कई प्रदेश हैं, कई ब्लॉक हैं, जहाँ जो है 250-300 किलोग्राम के ऊपर

इस्तेमाल हो रहा है। तो यह हमें ध्यान रखना होगा। फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के हिसाब से हमारा 85% जो फर्टिलाइजर है वो 250-300 जिलों में जाता है, बाकी 15% जो है बाकी बचे जिलों में जाता है। तो हमारे खाद का इस्तेमाल भी बहुत अनबैलेंस्ड है। North Western plane Zone में बहुत ज्यादा इस्तेमाल होता है लेकिन East Zone, Southern Zone में काफी बैलेंस फर्टिलाइजर इस्तेमाल हो रही है, तो वहीं वेस्टर्न इंडिया और नॉर्थ वेस्टर्न इंडिया और नॉर्दर्न इंडिया में बहुत अनबैलेंस फर्टिलाइजर इस्तेमाल हो रही है। तो हमें यह सुनिश्चित करना है कि कैसे फर्टिलाइजर सही ढंग से इस्तेमाल हो, ताकि हमारी खेती टिकाऊ बन सके।

इसी तरह पानी का इस्तेमाल का विषय है, आपको जानकर आश्चर्य होगा कि हम पानी भी एक्सपोर्ट करते हैं। यह कैसे कर रहे हैं, मैं बताता हूँ, जब खाद्यान्न निर्यात कर रहे होते हैं उसके साथ पानी भी चला जाता है। एक किलो चावल उत्पादन करने के लिये 3000 से 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। तो यह हमें सोचने की बात है कि कितना पानी हम एक्सपोर्ट कर रहे हैं। इसलिये आज हम पानी का जिस हिसाब से इस्तेमाल कर रहे हैं उसी हिसाब से पानी का इस्तेमाल करके हम सतत खेती नहीं कर सकते। हमारा 1950-51 में पानी का जो प्रति व्यक्ति उपलब्धता थी वह 5000 क्यूबिक मीटर थी अब घटकर 1500 क्यूबिक मीटर में पहुंच गया है।

आप सोच रहें 5000 क्यूबिक मीटर से 1500 पहुंच गया और 2050 होते तक तो 110 क्यूबिक मीटर में पहुंच जायेगा। तब सोचिये क्या होगा, पानी के लिये लड़ाई झगड़ा शुरू हो जायेगा। आज देश-देश के बीच में तो हो ही रहा है, अपने देश में भी विभिन्न प्रदेश के बीच में भी हो रही है और आगे एक प्रदेश के अंदर एक ब्लॉक और दूसरे ब्लॉक के बीच में भी झगड़ा होगा, गाँव-गाँव में भी झगड़ा होगा। जब पानी कम होगा तो पीने के लिये पानी भी नहीं होगा। आपको मैं यह बताना चाहूंगा कि हमारा 80% पानी (फ्रेश वाटर) खाली खेती सिंचाई के लिये इस्तेमाल होता है। यह हम कब तक करते रहेंगे? क्या उसको 50% कम कर सकते हैं? जितना रासायनिक खाद आज हम इस्तेमाल करते हैं क्या उसका 50% इस्तेमाल कर सकते हैं? इसके लिये नई-नई व्यवस्थायें हैं उसको हमें अपनाना होगा। हम सोचें कि 'माइक्रो इरिगेशन' से हमारे पानी की बचत होगी। हमने पॉलिसी बनाया है लेकिन पॉलिसी में जहाँ-जहाँ कमी है उसका सुधार करते हुए आगे बढ़ना था, लेकिन अभी भी हम उसको पूर्णतः अपना नहीं पाये। जैसे राजस्थान की खेती वैसे ही हो रही है, जैसे पहले होती थी, ऐसे ही गन्ने की खेती जैसे होती थी वैसे ही हो रही है। तो हम देखते हैं कि पानी का जो इस्तेमाल हो रहा है वह 'सस्टेनेबल' नहीं है। और जो हमारे फैसले हैं उसमें भी जो परिवर्तन करना चाहिये वह नहीं हो रहा है। जो विविधीकरण होना चाहिये फसलों का, वह नहीं हो रहा है। आज विविधीकरण की आवश्यकता है। पंजाब में जिस हिसाब से हम धान की खेती कर रहे हैं, वह बिल्कुल भी टिकाऊ नहीं है। तो वहाँ क्या करना है? हमें वहाँ दलहन की खेती करना चाहिये। वहाँ 'मिलेट्स' की भी खेती करना चाहिये। पहले वहाँ यही होता था। सोरघम बाजरा उगाते थे। पर अब नहीं उगा रहे हैं क्योंकि धान की खेती करने से ज्यादा फायदा मिलता है। जो मैं पहले बता रहा था कि यहाँ 'इकोनामिक बेनिफिट' की प्रधानता हो गई और जो 'एनवायरमेंटल सिक्योरिटी' है, जो हेल्थ है, वह सेकेंडरी हो गया। आज वहाँ से उनको उससे निकलना मुसीबत साबित हो रहा है। जब तक हम उसमें से निकल नहीं पायेंगे, परिवर्तन नहीं लेंगे, हमारी सतत खेती नहीं हो सकती। तो स्पष्ट है कि हमें पानी, खाद, जमीन इसका ध्यान रखना होगा।

और जिस हिसाब से देश में शोध हो रहा है जैसे बायो फर्टिलाइजर आदि के क्षेत्र में, उसे हमें सर्व सुलभ कराना होगा। यह एक उपलब्धि है, लेकिन खेत में जितना जाना चाहिये नहीं गया है, सूक्ष्म सिंचाई जैसी होनी चाहिये वैसी नहीं हो रही है, जैसे फसल का विविधीकरण होना चाहिये वैसा नहीं हुआ है। और बात अगर हम मिलेट्स की करेंगे, उसमें बहुत सारे गुण हैं, पर उसकी चर्चा करूंगा तो समय लगेगा। यह दूसरी स्तंभ है 'Environmental Security' Sustainable Agriculture का तीसरा स्तंभ है, Social Benefit Equity है।

यहाँ इस संस्थान में खड़े होकर इक्विटी की बात करना बहुत जरूरी है। आज समय नहीं है इसलिये मैं ज्यादा उसके ऊपर विश्लेषण नहीं कर रहा हूँ, लेकिन सही खाओगे नहीं, तो ठीक से सेहत कैसे बनेगा? और खाने के लिये उत्पादन करना होगा। पहले जो Food Habit और Culinary की Diversity भी और खाना बनाने में जो मजा आता था अब बनाने के लिये कोई तैयार नहीं है। घर में खाना पकाएगा कौन? समय नहीं है, तो खाओगे क्या? पिज्जा बर्गर! बच्चों की भी आदत ऐसी ही बदल गयी है। आज मिलेट्स का उपयोग इतना घटा उसके cultivation का एरिया घट गया। 1960 के दशक में 32 मिलियन हेक्टर हुआ करता था अब घटकर 15 मिलियन हेक्टर पहुंच गया। Economics का सिद्धांत है कि अगर डिमांड होगा तो सप्लाई के दिशा में लोगों की नजर जायेगी और उत्पादन बढ़ेगा। आज गेहूँ का 'डिमांड' है तो उसका उत्पादन बढ़ रहा है। तो यह सब को ध्यान में रखते हुए अगर हमें इस अमृतकाल में सतत खेती करनी है, तो हमें इन सारी चीजों को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना होगा। आज सरकार का इसके ऊपर काफी जोर है। हमें खाद्य के सह उत्पादन को बढ़ाना जरूरी है। आज फल की 'कंजप्शन' बढ़ रही है तो फलों का उत्पादन भी करना जरूरी है। अतः हॉर्टिकल्चर उत्पादन को बढ़ाना है।

अभी बहुत सारी बातें करने को है, पर समय की सीमा के कारण अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ और यह बताते हुए कि यह संभव है कि 2047 तक हम खेती में पानी का जो आज 80% इस्तेमाल कर रहे हैं। उसको हम 40% में ले आ सकते हैं। इसके लिये बहुत सारे व्यवस्था है, टेक्नोलॉजी है, जरूरत उसका इस्तेमाल करने की है। और इस संबंध में पॉलिसी, प्लानिंग और इंप्लीमेंटेशन की आवश्यकता है। तो इसके ऊपर जो चर्चा आज हो रही है वह बहुत-बहुत इंपॉर्टेंट है और ज्यादा ना बोलते हुए यहीं समाप्त करता हूँ बहुत-बहुत धन्यवाद नमस्कार।

Keynote Speech by Dr Om Gupta, on "Role of Pulses in combating malnutrition".

Dr Om Gupta, Former Director of Extension Services, Jawaharlal Nehru Krishi Vishwavidyalya, Jabalpur, did her Post Graduation in Plant Pathology from Jawaharlal Nehru Krishi Vishwavidyalaya, Jabalpur awarded Ph.D. by RDVV, Jabalpur. Served research on various posts for 37 years up to Professor and Head Plant Pathology. Selected as first lady Dean in 2014 and in 2018 as first Director Extension Services in the history of JNKVV. Extensively worked on diseases of pulses especially on chickpea.

As Director Extension Services, monitored 26 KVKs spread over 7 agroclimatic zones under the jurisdiction of JNKVV, Jabalpur, wherein 122 villages are adopted for transfer of technology.

मेरा जो विषय आज दिया गया है कि पल्सेस का, दालों का, न्यूट्रिशन में क्या क्या महत्व है? क्या रोल है? मैं अपने वक्तव्य की शुरुआत एक स्लोगन से करना चाहूंगी कि "जो खाओ वह ऊगाओ और जो ऊगाओ वह खाओ" जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्राचीन काल से ही हमारे जीवन में दालों का एक विशिष्ट स्थान है Pulses have been an integral part of Indian agriculture since time memorial by virtue of its ability to fix

atmospheric nitrogen and being rich in vegetable protein. दलहनी फसलों की जड़ों में जो ग्रंथियां होती हैं, जिनको नोड्यूल्स बोलते हैं, वह एटमॉस्फेरिक नाइट्रोजन अवशोषित करती है। इस प्रकार से मिट्टी की उर्वरकता को बढ़ाती हैं। अगर हम एक ही खेत में अनाज की फसल लगातार लेते हैं तो उसे मिट्टी की उर्वरकता घटती है। इसलिये हम किसानों को यह कहते हैं कि 'क्रॉप रोटेशन' अवश्य करें। अनाज की फसल लेने के बाद में दलहनी फसलों की खेती जरूर करें। जैसे कि जब बच्चा होता है तो उसको हम टीकाकरण करते हैं, कई प्रकार के रोगों से बचने के लिये, इस प्रकार से नोड्यूलेशन अच्छा हो, नाइट्रोजन फिक्स अच्छा हो, उसके लिये हम बीज को उपचारित करते हैं। कई प्रकार के रोगों से बचने के लिये और उसमें जो ग्रंथियां बनती हैं, नोड्यूलेशन होता है वह भी अधिक हो। बीज उपचार करने के लिये एक जो फार्मूला दिया गया है वह है 'FIR' अगर हमारे किसान भाई इसको याद रखेंगे कि हमें टीकाकरण बीज में बोने से पहले किस प्रकार से करना है? तो वह बहुत अधिक कारगर होगा अब F - 'फंगीसाइड' मतलब फफूंद नाशक औषधि I से 'इंसेंटिसाइड' और R से 'राइजोबियम' यह एक इसका सिद्धांत है, सीक्वेंस है, तो इस प्रकार से हमेशा टीकाकरण करके ही बीज की बोनी करें।

Pulses offers one of the viable options on diversification of quantum merit agriculture and management of natural resources. India has the distinction of being top producer of pulses in the world, जो कि हमारे पूरे ग्लोबल आउटपुट का 26% है। यदि पहले से तुलना करें तो जो दालों की पर कैपिटा अवेलेबिलिटी है वह पहले 61 या 63 ग्राम थी पर अब वह घट करके 32 ग्राम हो गई है। अब प्रश्न उठता है कि what are pulses? दालें क्या हैं? तो दालों में जो एनुअल लेगयुमिनस क्रॉस है, मतलब द्विदलीय, उनमें से जिसमें कि एक से 12 दाने या सीड होते हैं डिफरेंट साइज और अलग-अलग शेप के, कलर के और एक पॉड के अंदर, तो वह दालें वाली फसलें कहलाती हैं। हमारे देश में जो दालें हैं, दलहनी फसलें हैं वह मुख्यतया रबी और खरीफ इन दो भाग में बाँटी गई हैं।

अब गर्मियों में भी कल्टीवेशन होता है, जहाँ पानी की उपलब्धता होती है। रबी की अगर हम बात करें तो रबी में 'चिक पी' है, लेंटिल है मटर आदि हैं और खरीफ में मूंग एंड पिजन पि समर में जहाँ पानी की उपलब्धता है वहाँ मूंग कल्टीवेशन और उड़द कल्टीवेशन भी लेते हैं। समर में बीमारियां भी कम लगती हैं और प्रोडक्शन भी अच्छा होता है। हमारे जो दलहन संस्थान है वहाँ से कई प्रकार की बहुत अच्छी उपज देने वाली रोग रोधी जातियां विकसित की गई हैं। अलग-अलग दलहनी फसलों के लिये जो हमारे किसान भाई लगाकर बहुत अधिक उससे लाभ ले रहे हैं। दलहनी फसलों में जैसे चना है, मटर है, मसूर है, पीज है यह इसलिये इंपॉर्टेंट है क्योंकि इसमें प्रोटीन होता है और अमीनो एसिड्स है जो कि ह्यूमन और एनिमल दोनों के लिये उपयोगी है। क्योंकि They are used as food and feed. They also provide other important nutrients and play as a part of sustainable food production aimed towards food security and nutrition. यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि दालें हमारे लिये कितनी आवश्यक है। ह्यूमन हेल्थ के लिये तो आवश्यक है ही लेकिन इसके साथ-साथ जो हमारी मृदा की हेल्थ होती है, मृदा का स्वास्थ्य है, उसको भी ठीक करती हैं। Pulses are a part of healthy diet to address all forms of malnutrition. Malnutrition से जो बीमारियां होती है उसमें भी दालों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है और ऐसा कहा गया है कि It has positive effects of prevention of non-communicable

diseases, जैसे कि ओबेसिटी है, डायबिटीज है, कोरोनरी कंडीशंस एंड कैंसर या ब्रेस्ट कैंसर या प्रोस्टेट कैंसर उसको कम करने में भी सहायक है। Pulses are recommended in accepted dietary guidelines. हमारे भारत वर्ष में ही नहीं पल्सेस को रिकमेंड किया गया है इसके अलावा और भी ऐसी कंट्रीज है जहाँ पर उनके गुणवत्ता को देखते हुए रिकमेंड किया गया है, for example Health Canada's Eating Well with Canada's Food Guide. To my plate system that is USDA DEPT OF AGRICULTURE. The third one is it well played by the Food Standards Agency in UK and Nutritional Australia's Healthy Living Pyramid thus pulses are not only power feed, it's for all, an important part of vegetarian diet replacing the meat. यह जो लोग नॉन वेजिटेरियन है उसको न्यूट्रिशन के मामले में इसको रिप्लेस करती है। अगर हम प्रोटीन परसेंट की बात करते हैं तो दलहनी फसलों में 20 से 30% प्रोटीन होता है, ड्राई ग्रेंस में। अब प्रश्न आता है कि ह्यूमन न्यूट्रिशन में इनका क्या महत्व है? Due to high protein content and fiber in their structure, they are of significant importance in terms of nutrition source. It has also vitamins, minerals and amino acids composition and complementary to those of cereals if they are consumed. दालों को अनाज की फसलों के साथ कंज्यूम करते हैं तो जो ओवर ऑल क्वालिटी है प्रोटीन की वह इंप्रूव होती है। They have High Content of Fiber and relatively high amylase status and also have Nutrients, for example citric acid. They have low fat content and no cholesterol. It is rich in vitamins & minerals like iron, magnesium, potassium, phosphorus iron and vitamins like thiamine, riboflavin niacin, B6 and folate. The high iron content contributes to meeting iron requirements and health benefits of Consumption of Pulses are Reduce Risk of Obesity, Diabetes, Cardiovascular Disease. Pulses may help to Increase Satiety and Weight Loss due to the presence of Fibers, Trypsin Inhibitors and Lattice. The high amount of Insoluble Fiber found in Pulses improves Colon Health to prevent colon and reacto cancer and Nutrients and antioxidants found in pulses have anti-cancer properties. Our country uses pulses in different ways, either milled, mixed with cereal, salted, or in state and in preparation. पल्सेस को अगर हम हेल्थ डाइटरी कंपोनेंट के तौर पर देखते हैं तो इसमें हाई फाइबर कंटेंट तो है ही इसके साथ-साथ हाई प्रोटीन भी है और जो बायोएक्टिव कंपाउंड्स है वह भी काफी है, लो फैट है, कोलेस्ट्रॉल की मात्रा नहीं है और जो माइक्रोन्यूट्रिएंट्स इसमें अवेलेबल है वह आयरन पोटाश जिंक और मैग्नीशियम है इसके अलावा जैसे गेहूँ है, ग्लुटेन उसमें होता है। यह जो ग्लुटेन है वह डायबिटीज इन्फेक्शन के लिये बहुत हानिकारक होता है। तो पल्सेस ग्लुटेन फ्री होती है और इसमें low ग्लाइसेमिक इंडेक्स है। इस तरह से जो भी हमारी दालें हैं यदि डेली डाइट में हम दालों का यूज़ करते हैं, तो वह हमारे न्यूट्रिशन को इंप्रूव करती है। इसीलिए बोलते हैं की दाल रोटी खाओ, जैसा एक कहावत बहुत शुरू से चली आ रही है की दाल रोटी खाओ और प्रभु के गुण गाओ और मैं अपनी वाणी को विराम देती हूँ।

Keynote Speech by Dr. Amit Goswami on "Horticulture for Holistic Health."

Dr Amit Kumar Goswami is presently a senior scientist at the Division of Fruits and Horticultural Technology, ICAR-IARI, New Delhi.

He joined the Agricultural Research Service of ICAR in 2010 in Fruit Science. He has been serving ICAR for the last 14 years and is engaged in research, teaching and extension activities. He has been involved in developing various lines of guava and papaya, molecular genetics of fruit crops, and stress physiology. He is the pioneer breeder in developing Pusa Pratiksha and Pusa Aarushi guava hybrids from IARI.

एक ऋग्वेद की रिचा है "**विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्ये कदाचन्। स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥**" तो राजा और विद्वान में क्या अंतर होता है, राजा की अपनी टेरिटरी होती है लेकिन विद्वान की कोई टेरिटरी नहीं होती। अर्थात् राजा का अपने राज्य में ही पूजा जाता है, पर विद्वान सर्वत्र पूजे जाते हैं। अभी तक जैसे महापात्रा सर ने भी बताया कि मैं थोड़ा-सा और जोड़ूंगा। हम अन्न उत्पादन में 50 से 325 मिलियन टन तक पहुंच गये अब हमें आगे क्या करना है? लेकिन हो क्या रहा है हमारे साथ में? हम उगा तो बहुत रहे हैं, पर जैसे वसंत भइया ने भी कहा कि हमारा अन्न में पोषण की मात्रा में 20% की कमी हुई है। तो अब हमारा उत्पादन तो पर्याप्त हो गया है। पहले तो

बड़ी मात्रा में बाहर से आता था। लेकिन अब वैज्ञानिकों के द्वारा इतने अच्छे प्रयास से तथा सारे किसान भाइयों के परिश्रम से अब हम बहुत उगा रहे हैं। पर इसके साथ-साथ हमें अपने पोषण में थोड़ा सा परिवर्तन करना पड़ेगा जिससे कि हम स्वस्थ बने रहें। मैं पूसा कृषि अनुसंधान संस्थान में उद्यानिकी का वैज्ञानिक हूँ। मैं फल एवं सब्जियों की थोड़ी-सी बातें करेंगे कि यह क्यों जरूरी है? अब हमारे देश का खाद्यान्न का उत्पादन तो 350 मिलियन टन में भी पहुंच गया, तो हम खूब सारा उगा रहे हैं, पर दिक्कत क्या आ रही है कि उतने हिसाब से खा नहीं रहे। हमारा अभी भी जो थाली का रेशियो है वह असंतुलित है। अब हम खूब फल सब्जियां उत्पादन कर रहे हैं, तो हमें उसको भी अपनी थाली में जोड़ना है। उसकी जरूरत क्या है? उसके बारे में थोड़ी-सी चर्चा करेंगे। अब देखिए दो प्रकार के स्रोत होते हैं हमारे पोषण के, एक Macro Nutrient होता है एक Micro Nutrient होता है। हमारी डाइट में हमें Macro तो पूरा मिलने जा रहा है, पर Micro दूर हो रहे हैं। उसके कारण से आप देखेंगे कि गर्भवती महिलाओं को भी आयरन की गोलियां देनी पड़ती है। छोटी-छोटी बच्चियों को भी गोलियां देनी पड़ रही हैं। कई बच्चों को steroid देने पड़ रहे हैं। क्योंकि हम कहीं ना कहीं पोषण में कमी कर रहे हैं। कहीं ना कहीं से हमें अपनी डाइट में कुछ ना कुछ ऐसी चीज जोड़नी हैं, जो आसानी से उपलब्ध भी है। हम दुनिया के सबसे अच्छे Diversify देशों में से हैं। हम बहुत सारे प्रकार की फल सब्जियां उगा रहे हैं, क्योंकि जो प्रोटेक्टिव है यानि जो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले तत्व हैं, वह मूलतः फल एवं सब्जियों में उपलब्ध हैं और आसानी से उपलब्ध है, और हमारा शरीर उनको बहुत अच्छे से absorb भी कर लेती है यानि उनका ग्रहण भी कर लेती है। दवाइयों के माध्यम से हम जो Nutrient लेते हैं, उसका 99% अपना हम बाहर निकाल देते हैं। लेकिन फलों के माध्यम से, सब्जियों के माध्यम से, जो पोषण जाता है वो हमारी बॉडी Retain करती है, क्योंकि हमको भगवान ने मूलतः शाकाहारी के रूप में ही बनाया है, तो हम लोगों के लिये जो आवश्यक पोषक तत्त्व है। वह हमारे फल एवं सब्जियों में खूब लोडेड है। आजकल आप देखेंगे कि कोई कह रहा है मैं कुछ नहीं खा रहा हूँ, पर मेरा वजन बढ़ रहा है, कोई कह रहा है मैं बहुत खा रहा हूँ पर मेरे शरीर में कुछ लग नहीं रहा है। किसी को नींद नहीं आ रही है, किसी के शरीर में ऊर्जा नहीं है। उनके पास में पैसे खूब हैं, खाने के लिये बहुत कुछ है लेकिन क्या खाना है? कब खाना है, कितना खाना है, इसकी चिंता नहीं कर पा रहे। इसके कारण ये सारी बीमारियां बढ़ रही हैं। हमारे देश के कैंसर और हृदय की जो बीमारियां हैं वह दुनिया में सबसे ज्यादा तेजी से बढ़ रही हैं। इसका कारण बड़ा सिंपल है कि हमारे भोजन में कुछ कमी है। World Health Organization का एक सर्वे है, उसमें बोला है कि जो कुल मौतों में 70% लोगों की जो मृत्यु हो रही है वो सिर्फ Non Communicable बीमारियों के कारण हो रही है। यानि हम यदि थोड़ा सा स्वास्थ्य का ध्यान कर लें, सही दिनचर्या का पालन करें, तो हम उन सभी चीजों से बच सकते हैं। विटामिन सी, कोरोना के समय में हम लोगों ने किलो के हिसाब से विटामिन-सी और जिंक की गोलियां खाईं, पर इनके स्रोत के रूप में फलों और सब्जियों पर ध्यान नहीं दिया। आंवला हमारे देश का फल है, इसी तरह अमरूद का भारत सबसे बड़ा दुनिया का उत्पादक देश है और अमरूद और आंवला में ऐसे बहुत सारे पोषक तत्त्व हैं, जिनमें

रोग प्रतिरोधक क्षमता वाला गुण है और ये बहुत सारे अन्य फलों में, सब्जियों में उपलब्ध है। कोविड-19 ने हमें बहुत कुछ सिखाया है कि अगर हम थोड़ी-सी दिनचर्या में परिवर्तन करें, थोड़ा खान-पान में परिवर्तन करें, तो हम स्वस्थ रह सकते हैं। इन सबसे कोविड-19 का निदान तो संभव नहीं है, पर उससे लड़ने की क्षमता हममें ज्यादा रहेगी। इसी प्रकार अगर हम देखेंगे सिर्फ मोटापे की बात करें तो, अकेला एक मोटापा करीब 22 रोगों का जनक है। उसमें चाहे हम Arthritis की बात करें Diabetes ग्लूटेन Insomnia (नींद नहीं आना) आदमी खर्राटे ले रहा है, वह कह रहा 8 घंटे 10 घंटे सो रहा है लेकिन उसकी नींद पूरी नहीं हो रही। यह सिर्फ एक मोटापे के कारण है। ऐसी बहुत सारी और भी बीमारियाँ हैं जैसे Blood Pressure, जिनको ब्लड प्रेशर शुरू हो गया उनको Cardiovascular Disease शुरू हो गया। जिसको डायबिटीज हो गई तो उसकी इस एक बीमारी के कारण वह बहुत सारी चीज और हो जाती हैं। तो इन सब चीजों की रोकथाम कैसे संभव है। उनको मैं बताऊंगा यहाँ PPT में कुछ ऐसे तत्वों के नाम लिखे हुए हैं जिन्हें आजकल सारे डॉक्टर बताते हैं। एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन ए & सी, फोलेक एसिड जिसको आयरन भी कहते हैं। पोटेशियम, फाइबर, फाइटोकेमिकल और भी बहुत सारी चीजें, यह सारी चीज कहाँ उपलब्ध हैं? अगर समग्र रूप से कहें तो यह फल एवं सब्जियों में उपलब्ध है। कई शोधों में पाया गया है कि जो कैंसर कॉजिंग जीन है अगर हम फल एवं सब्जियों का पर्याप्त मात्रा में सेवन करें, तो उनका Activation भी कम होता है। तो यह सारी की सारी चीज हमें ध्यान में रखनी है। और जैसे हम दिख रही लिस्ट की बात करें न्यूट्रिएंट्स है वो सेकेंडरी मेटाबॉलिट्स हैं जो कि हमारे अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। भारत भूमि इतनी पुण्य भूमि है जिसमें सब कुछ उपलब्ध है। विटामिन ए की बात करें, तो अभी आम का सीजन आने वाला है, और गाजर का सीजन गया। आपके पास में पालक है, सरसों का साग है और बड़ी मात्रा में अन्य हरी पत्तेदार सब्जियाँ हैं, इन सब में पर्याप्त मात्रा में विटामिन है। विटामिन बी1, विटामिन बी2, विटामिन बी3, फोलिक एसिड आदि ये सब हमारे पास में पर्याप्त मात्रा में ऐसी बहुत सारे फल/सब्जियाँ हैं, जिनमें सब कुछ उपलब्ध हैं। लेकिन हमको क्या करना है? हमको उनको लेते रहना है। ये PPT में देखिए कितनी लंबी लिस्ट है, इसमें सब फल सब्जियों के नाम हैं जिनमें कि वे सारे तत्व उपलब्ध हैं, जो कि हम दवाइयों के रूप में ले रहे हैं। हमको सिर्फ अपने डाइट को थोड़ा-सा बदलना है। अभी हमने देखा, एक नया वायरस (Covid-19) फैल गया, बड़ी संख्या में लोग बीमार हुए और मरे भी। उसमें से जो निकल कर आया, वो थी हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत कम होती जा रही है। कहीं ना कहीं से हमारे भोजन में पोषक तत्वों की कमी हो रही है। पहले के जमाने की वह थी, जिसको हम लोग बोलते थे कि हमारी परम्परा में हमारी मां, बहनें हमारे भोजन में पोषण का पूरा ध्यान रखती थीं। जो रसोई थी, रसोई का मतलब होता है कि जहाँ सारे रस उपलब्ध हैं। जो आयुर्वेद में बीमारियों को खत्म करने हेतु निदान बताया वो सब रसोई में उपलब्ध थी। आज उसकी जगह क्या हो रहा है, पिज्जा, बर्गर और कोल्ड ड्रिंक की एक बोतल। ये हमारा आहार बन रहा है। उससे क्या हो रहा है, बच्चों में मोटापा आ रहा है, बच्चों में चिड़चिड़ापन बढ़ रहा है। आज लोगों की डाइट में फाइबर खत्म हो गया। आप श्रीनगर जायें, जहाँ पर बहुत ज्यादा मांसाहार होता है, वहाँ पर लीवर का कैंसर

बहुत बढ़ रहा है क्योंकि वह मांसाहार तो बहुत ज्यादा खा रहा है, लेकिन फाइबर साथ में ले ही नहीं रहे हैं। अमरूद हर जगह उपलब्ध हैं। मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश सबसे ज्यादा अमरूद का उत्पादन करने वाले प्रदेश हैं और सबसे ज्यादा प्रोडक्टिविटी भी इन दो राज्यों में है। अमरूद में 6% के ऊपर फाइबर है अगर एक अमरुद रोज खायें तो रामबाण औषधि है। आपके कब्ज के लिये अमरूद के जो बीज हैं उसको आयुर्वेद में कहा गया है कि ये रामबाण है। जैसे राख से बर्तन साफ हो जाते हैं ऐसे पेट के सारे विकार अमरुद साफ कर देता है। ऐसे ही बहुत सारी सब्जियां हैं जिनको हमें नियमित सीजनल फ्रूट्स के रूप में लेना है और स्वस्थ रहना है। आज समस्या सिर्फ हमारी लाइफ स्टाइल की है, हमारा मन नहीं मान रहा है कि हमें यह खाना है, हमें यह नहीं खाना है। इन सबके कारण बीमारियां हो रही हैं। उपलब्धता पूरी है हर जगह। आप देखिए बाजार में पहले सेब कब खाते थे जब घर में कोई बीमार हो जाया करता था पर अब नियमित लोगों की डाइट में आ रहा है। लेकिन आज आवश्यकता है उसको Diversif करना है। हमें ये सब कुछ करना है, इसको और आसान करते हैं, अभी तक तो मैंने आपको साइंटिफिक लैंग्वेज में बताया कि कौन-कौन से तत्व किसमें होते हैं और उससे क्या होता है। अब हम सिर्फ कलर की बात करते हैं, रंगों के बगैर जीवन अधूरा है। ऐसे ही सब्जियों में आप किसी भी कलर को इमेजिन करें। मैं यहाँ पांच कलर की बात करता हूँ जिस रंग का फल-सब्जी है, उसमें वह कंपोनेंट है जिससे हमें रोग से लड़ने की क्षमता होती है। आप टमाटर तो रोज देखते ही हैं, ऐसे ही बहुत सारे लाल फल हैं जो दिल से लेकर यूरिनरी ट्रैक्ट के इंफेक्शन तक इन सभी में लाल रंग के फल-सब्जी बहुत उपयोगी होते हैं। ये फल-सब्जियां आपके दिमाग की क्षमता को भी ठीक करती हैं, तो बच्चों के लिये रेड कलर की जो फ्रूट्स एंड वेजिटेबल है, वे बहुत अच्छे काम करती हैं। इसके साथ एक कई तरीके के कैंसर से लड़ने की क्षमता भी देता है। एक रंग हुआ, अब दूसरी बात करते हैं, जामुन, शहतूत इसके साथ-साथ आपका बैंगन और ऐसे जितने भी टाइप के फल हैं उनकी लंबी लिस्ट है, आप देखेंगे कि किस सब्जी का रंग कैसा होता है, कौन-सी सब्जी में कौन-सा रंग है। हमारे शरीर में जो यह ब्लड क्लॉट्स बनते हैं यानि जिससे कि हार्ट अटैक होता है। अगर हम अपनी डाइट में ब्लू और पर्पल कलर के फ्रूट्स एंड वेजिटेबल को शामिल करें तो उसकी भी 30 से 70% तक रिस्क कम पाया गया है। इतने अच्छे कंपाउंड इन फलों/सब्जियों के अंदर होते हैं। अब हम ग्रीन की बात करें। हम पालक खा रहे हैं, मेथी खा रहे हैं, बहुत सारे ग्रीन कलर की चीज खा रहे हैं, ये सब आपकी हड्डियों एवं दांतों को मजबूत करता है। इस कलर के जो फल सब्जियां होती हैं, वे इनके साथ-साथ आपकी आंखों के लिये बहुत अच्छी हैं। इनमें कैंसर प्रतिरोधी क्षमता भी पाई जाती है। इसके बाद सफेद रंग जो कि शांति का प्रतीक है लेकिन इसके साथ-साथ ये आपके हृदय को स्वस्थ रखता है। इसके अंदर कई ऐसे कंपाउंड होते हैं जिसमें कि अच्छा कोलेस्ट्रॉल कंपाउंड पाये जाते हैं जो कि आपकी बॉडी के अंदर हृदय से संबंधी जितनी भी बीमारी है उसे दूर रखता है। तो यह क्या करता है? ये अलग से जाकर ठीक नहीं करता, इनमें वैसे कंपाउंड है, जैसे लहसुन हुआ, अब हम सब लोग सुनते हैं कि लहसुन में कितने सारे गुण होते हैं। एक लहसुन की फांख खा लो सुबह-सुबह तो यह दिल के लिये ठीक है। तो सफेद कलर हो गया। पांचवा कलर है येलो या ऑरेंज कलर। इसका

नाम ही ऑरेंज है मौसमी है, गाजर आदि इतनी तरीके की सब्जियां/फल उपलब्ध हैं। मक्का के ऊपर कितना काम चल रहा है। जैसा अभी महापात्रा सर ने अभी बोला कि डायवर्सिफाइड सिस्टम में काम करना, और मक्का एक ऐसी फसल है जो डायवर्सिफिकेशन में सबसे अच्छी हो रही है। पानी कम लगता है, उत्पादन खूब है। मैंने पांच कलर की बात की अब आप किसी भी कलर की बात करें उसमें कुछ ना कुछ अच्छा है कुछ भी ईश्वर ने ऐसा नहीं बनाया जिसमें गुण नहीं है, तो हमको यह चीज ध्यान रखनी है कि हमको क्या खाना है, कितना खाना है और कैसे खाना है। WHO की स्टडी है साथ ही हमारी स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी स्टडी किया है कि हम सबसे कम फल एवं सब्जियां कंज्यूम कर रहे हैं। अनुमानतः कम से कम हमको डेढ़ सौ ग्राम फल खाना ही चाहिये। आप सीजनल फल लीजिए, जरूरी नहीं है कि आपको मंहगे फल खाने हैं। बेर में इतने गुण हैं कि आप विश्वास नहीं करेंगे, कटहल में इतने गुण हैं, जामुन में इतने गुण हैं, बेल अपने आप में अमृत तुल्य फल माना गया है। गर्मियों भर जिसने बेल का शरबत पी लिया वो उसको पूरे साल भर के राइबोफ्लेविन की जरूरत पूरा कर देता है। लेकिन हमें सीजनल फ्रूट्स खाने की अपनी हैबिट को थोड़ा-सा चेंज करना है। आप किसान ही उत्पादक हैं आप ही लोग बड़े शहर वालों को खिला रहे हैं और खुद की डाइट में खा नहीं रहे। आजकल गांवों में जाने पर तंबाकू चूना खिलाया, तो माना जाता है कि बढ़िया स्वागत हो गया, पर जरूरत यह है उसकी जगह एक ना एक फल खिलायें, कुछ सब्जी है तो साथ में बांध के दीजिए वो ज्यादा अच्छा रहेगा। कम से कम 300 ग्राम सब्जियां खानी है। आप दो चपाती के साथ-साथ जिस समय एक कटोरी दाल लेते हैं, दाल का हिस्सा 70% रखिये और सब्जियों का 30%। फिर चाहे आप रोटी पर जाइये या चावल पर जाइये, आप देखेंगे आपको हल्कापन महसूस होगा। आपके शरीर में एनर्जी बहुत रहेगी। इसके साथ-साथ बच्चों में बड़ी समस्या दिख रही है कि बच्चों की मेमोरी कम हो रही है, बोलने-पढ़ने में मन नहीं लगता, आंखें खराब हो रही हैं, चश्मा लग रहा है और साथ में हमने मोबाइल और पकड़ा दिया, उससे बच्चों में बड़ी समस्या हो रही है। अतः बच्चों की आंखों की क्षमता बनी रहे, मेमोरी अच्छी हो, दांत अच्छे से स्वस्थ हो, तो जो इन सबके लिये आवश्यक तत्व हैं वे सारी की सारी मिलेंगे आपको फल एवं सब्जियों में, इनको अपने भोजन में जोड़ना है। यह 'फाइव कलर कॉन्सेप्ट' लीजिये मतलब पांच कलर के फल एवं सब्जियां हमें पूरे सप्ताह में खानी है और स्वस्थ रहना है, इतना सा काम करना है। भूल जाओ विटामिन मिनरल्स सप्लीमेंटस, सिर्फ कलर याद रख लो, उससे भी बहुत कुछ हो सकता है। इन्हीं सब कारणों से अपने देसी जितने भी फल एवं सब्जियां हैं, उनकी डिमांड दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। आप किसान लोग अपनी खेती के रकबे में करीब करीब 30% इसको जोड़ें। आपको अपने स्वास्थ्य में, अपने इनकम में तथा आपकी सराउंडिंग के पर्यावरण में भी अंतर मिलेगा। ऐसे दिन प्रतिदिन आप अपने बच्चों को कुछ देकर भी जायेंगे और कहा गया है एक वृक्ष 10 पुत्र के बराबर रहता है, तो ऐसे पेड़ लगाएं जिसे पक्षी भी खायें, और घर के लोग भी खायें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Role of Horticulture in holistic Health- A way Forward to Healthy Nation

Amit Kumar Goswami
Senior Scientist
Fruits & Horticultural technology
ICAR- Indian Agricultural Research Institute
New Delhi

1

Why we need to eat well……

Eating healthy, balanced diets provide

- plenty of energy to work and enjoy themselves;
- fewer infections and other illnesses and bust-up the immunity.
- Children who eat well usually grow well.
- Women who eat well are likely to produce healthy babies.

That is why it is important to know which combinations of foods make good meals

2

Diet & Nutrition

Stuff We Need

Macronutrients:
that we need in large amounts
- Carbohydrates
- Proteins
- Lipids

Micronutrients:
that we need in small amounts
- Vitamins
- Minerals

...and, of course, **Water**

Nutrients obtained from fruits & vegetables

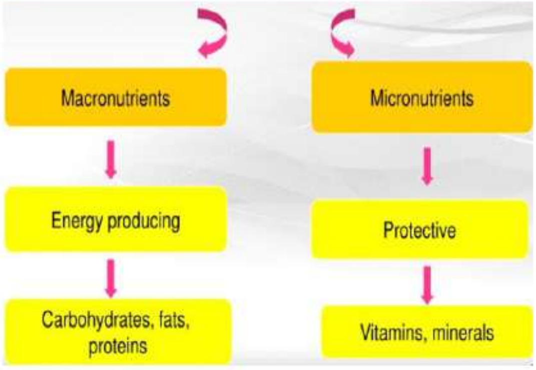

3

Human Health: Present scenario

4

Proportional mortality (% of total death, all age group, & both sex)

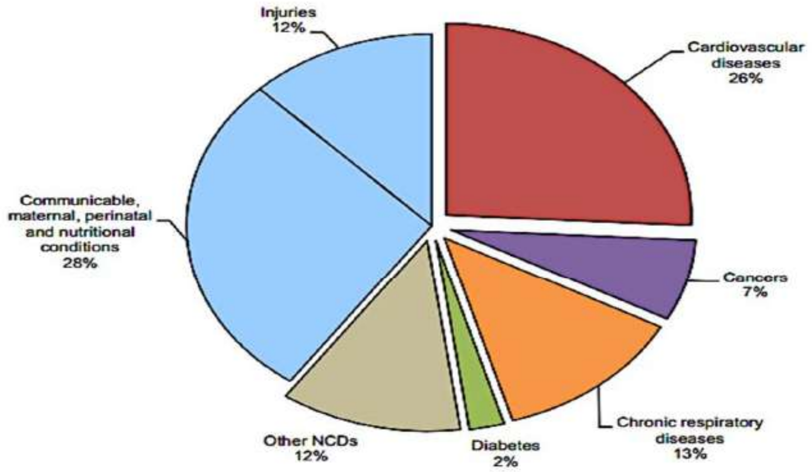

Total deaths: 41 million
NCDs are estimated to account for 71% of total deaths.

World Health Organization – Non-communicable Diseases Profiles , 2021

5

Covid-19 pandemic & Role of Fruits and Vegies

- Eating the right kinds of foods, in the right amount is very crucial for our health. Covid-19 pandemic has changed a lot in the daily lives of people. During these difficult time , it has essential to maintain healthy life style.

- While no foods or dietary supplements can prevent or cure COVID-19 infection, but healthy diets can keep our immune system strong for fighting the disease.

- Fruits and veggies : we can say they are the best natural supplements for busting our immune system, **having no side effects**

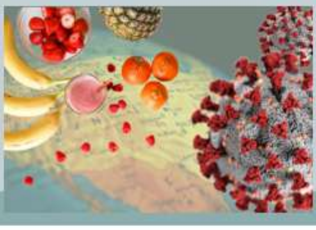

6

Why Horti produce ???

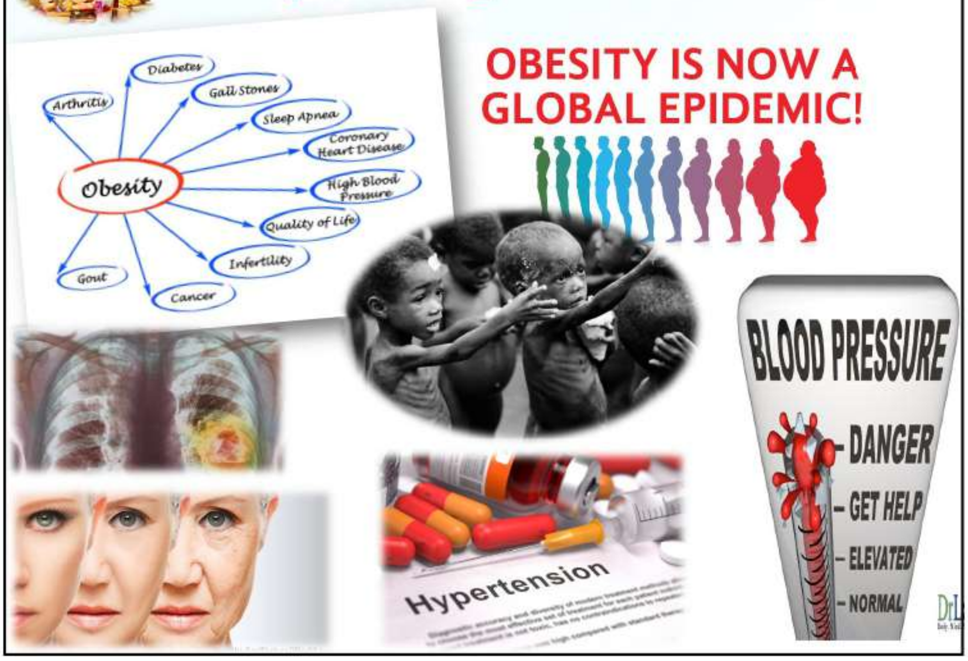

7

Why Horti produce ....???

- ❖ Rapid increase of human population together with global climate variability resulted in increased demand of plant based food and energy sources (Varshney *et al*., 2018)
- ❖ Fruits and nuts have essential role to enhance quality of humankind life since a diet based on cereal grains, root and tuber crops, and legumes is generally lacked a wide range of products such as fiber, vitamin, provitamins or other micronutrients and compounds exist in fruit and nut species (Heslop-Harrison, 2005)
- ❖ Fruits are one the major sources of micronutrients (e.g. vitamins and minerals), phytonutrients (e.g. antioxidants) and dietary fibers that are essential for human health (Klee, 2010)
- ❖ Owing to their commercial value and source of many processed food or secondary products, fruits play a key role in the economy of many developing countries

8

"Prevention is better than cure"

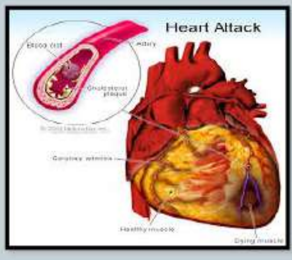

9

Variety of Protective Components in Fruits and Vegetables

- Antioxidants
- Vitamins A & C
- Folate
- Potassium
- Fiber
- Flavonoids
- Phytochemicals
- No fat, saturated fat, trans fats, or cholesterol
- Low in sodium and calories

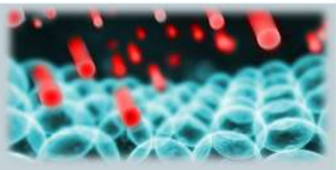

10

Nutrient and health benefits of fruits & veggies

- Fruits & veggies are an important source of many nutrients such as Potassium, folate, vitamin A, C, and dietary fibre
- Diets rich in potassium may help to maintain healthy blood pressure
- Dietary fiber helps to reduce blood cholesterol and also lower the risk of heart disease
- Fibre is also important for proper bowel function. It helps to reduce constipation and diverticulosis. Fibre rich diet provide a feeling of fullness with fewer calories
- Folate helps in red blood cells (RBC) formation.
- Vit A keeps eyes and skin healthy and helps to protect against infections
- Vit. C helps heal cuts and wounds and keep teeth and gums healthy. Vit. C also aids in iron absorption

11

Nutrient and health benefits cont..

- Their contribution as a group is estimated at 91% of vitamin C, 48% of vitamin A, 27% of vitamin B6, 17% of thiamine, and 15% of niacin in the our diet.
- Fruits and vegetables also supply **16% of magnesium, 19% of iron, and 9% of the calories.**
- Legume vegetables, potatoes, and tree nuts (such as almond, filbert, pecan, pistachio, and walnut) contribute about 5% of the per capita availability of proteins in the diet, and their proteins are of high quality as to their content of essential amino acids.
- Other important nutrients supplied by fruits and vegetables include folacin, riboflavin, zinc, calcium, potassium, and phosphorus.
- Although antioxidant capacity varies greatly among fruits and vegetables it is better to consume a variety of commodities rather than limiting consumption to a few with the highest antioxidant capacity.
- There is increasing evidence that consumption of whole foods is better than isolated food components (such as dietary supplements and nutraceuticals).
- For example, increased consumption of **carotenoid-rich fruits and vegetables** is more effective than carotenoid supplements in **increasing LDL oxidation resistance, lowering DNA damage, and inducing higher repair activity in humans**

12

Proposed Phyto-chemical Mechanisms to reduce disease risk

New experimental studies have increasingly emerged demonstrating multiple effects of fruits and vegetables **and their phytochemicals on disease-related molecular processes, signaling pathways, and cellular markers.**
For example, mechanisms by which dietary phytochemicals may reduce risk of cardiovascular disease include:

- Potent antioxidants prevent free radical oxidation
- Boost cancer-fighting enzymes by inhibiting phase 1 enzymes (*which convert harmless substance into carcinogens*) and Phase 2 enzymes (*that can attach carcinogens and facilitate speedy extraction) and induce apoptosis (cell suicide) of oncogenes*
- Block unwanted blood clotting
- Prevent inflammation (i.e. chronic inflammation thought to play a role in some cancers, heart disease, and strokes)
- Induction of expression of hepatic LDL receptors
- **Modulation of cholesterol synthesis**
- Regulation of blood pressure, lipid profiles, prostanoid synthesis, and nitric oxide production
- Inhibition of cholesterol absorption
- Reduction of platelet aggregation and
- Lowering serum C-reactive protein and other inflammatory markers

13

Plant derived bioactive compounds, mechanism of action & health benefits

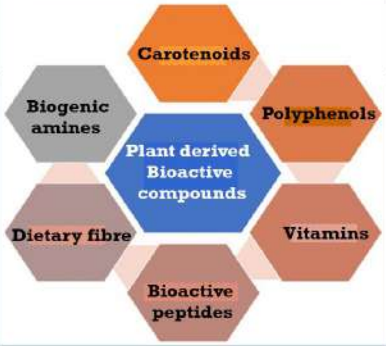

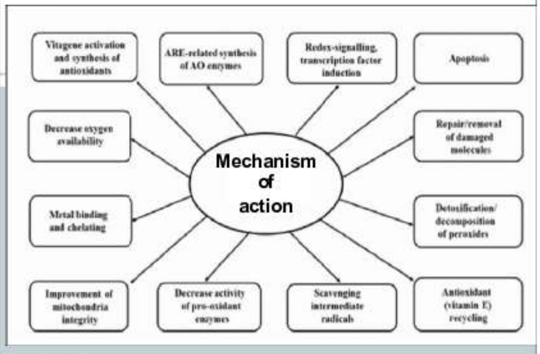

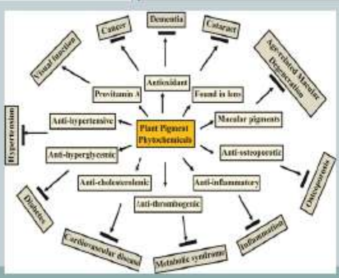

14

Fruits and Veggies: Source of essential nutrients

Components	Fruits	Vegetables
Vitamin A (Retinol)	Mango, Persimmon, Apricot, Passion fruit, Papaya, raspberry, Loquat, Date palm, Jackfruit	Carrot, amaranthus, palak, spinach, fenugreek, mustard leaf, drumstick leaf, partulaca, cowpea leaves, broccoli, kale, muskmelon, winter squash
Vitamin B1 (Thiamin)	Cashew nut, walnut, almond, apricot, banana, apple, plum	Palak, pea, ripe tomato, chilli, muskmelon, garlic, leek, tannia, asparagus, artichokke, agathi
Vitamin B2 (Riboflavin)	Bael, litchi, papaya, pineapple, pomegranate	Palak, chilli, capsicum, cauliflower, broccoli, brussels sprout, garlic lettuce, salery, okra, winged bean, asparagus, partulaca, parsley
Vitamin B3 (Niacin)	Apricot (Dried), bael, cherimoya, custard apple, mango	Palak, amaranthus, bitter gourd, pointed gourd, bottle gourd, pumpkin, chilli, radish lettuce, carrot, pea, cowpea, okra, sweet potato, spinach, methi
Folic acid	Avocado, peach, grapes, guava, plum	All green leafy vegetables, palak, lettuce, cabbage, spinach, french bean
Vitamin C (Ascorbic acid)	Barbados cherry, aonla, guava, orange, lemon, lime, grapefruit, strawberry, cape gooseberry, pineapple, ber	Chilli, capsicum, cabbage drumstic leaf, broccoli, kale, parsley, cauliflower,
Vitamin E (Tocopherol)	Almond, avocado,	Spinach, kale

15

Minerals	Fruits	Vegetables
Calcium	Litchi, dry karonda, aonla, guava, orange	Curry leaf, hyacinth bean, amaranthus, palak, spinach, methi, onion, chow-chow
Iron	Dry karonda date, walnut, green mango, green banana	Amaranthus, palak, spinach, partulaca, methi, lettuce, watermelon,
Phosphorus	Cashew nut walnut, litchi, wood apple	Pea, lima bean, carrot, broccoli, brussels sprout, cowpea, artichoke
Potassium	Banana,	Parsnip, potato
Iodine	Jamun, banana	Tomato, capsicum, carrot, onion, garlic, beet root, agathi
Sodium		Green onion, chinese cabbage
Protein	Cashew nut, almond, walnut	Pea, cowpea, lima bean, brad bean, mustard, pumpkin, pointed gourd drumstick, celery, garlic, brussel's spout
Fat	Walnut, almond, cashew nut, avocado	Bengal gram leaf, small bitter gourd, chilli, brinjal, brussels sprout, snake gourd, pointed gourd, lettuce, pink radish, sweet corn hyacinth bean, cluster bean, spinach, globe artichoke
Carbohydrate	Dry apricot, date fig, dry karonda, banana, bael, custard apple, cashew nut, jamun, jack fruit	Tapioca, potato, sweet potato, elephant foot yam, taro, garlic, pea, onion, bitter gourd, brussels sprout, carrot
Antioxidants	Blueberry, blackberry, strawberry, plum	Garlic, kale, spinach, brussel sprouts, broccoli floret

16

Secondary Metabolites in Horti Crops

Fruit Crops	Secondary Metabolites	Reference
Avocado (Persea americana)	Lutein, zeaxanthin, α-carotene and β-carotene	(Lu et al., 2005)
	Persenone A and B	(Kim et al., 2000)
	Phytosterol, sitosterol & Vitamins B, C and E	(Duester, 2001)
Apple (Malus × domestica)	5-O-caffeoylquinic acid & caffeic acid	(Bandoniene et al., 2000)
	Anthocyanin, cyanidin-3-O-galactoside	(Wu and Prior, 2005)
Pear (*Pyrus communis*)	5-O-caffeoylquinic acid, 4-O-p-coumaroylquinic acid, procyanidins and quercetin glycosides.	(Spanos and Wrolstad 1992)
Peach (*Prunus persica*)	cyanidin-3-O-glucoside, cyanidin-3-orutinoside, quercetin-3-O-glucoside	(Clifford, 2003).
Cherry (*Prunus avium*)	cyanidin-3-Orutinoside, cyanidin-3-O-glucoside and peonidin-3-rutinoside	(Wu and Prior, 2005)
Plum (*Prunus domestica*)	cyanidin-3-O-glucoside and cyanidin-3-O-rutinoside	(Gu et al., 2004)

17

Secondary Metabolites in fruit Cont..

Fruit Crops	Secondary Metabolites	Reference
Citrus (Citrus spp.)	Naringenin-7-O-rutinoside (narirutin), hesperetin-7-O-rutinoside (hesperidin) β-cryptoxanthin	(Risch and Herrmann 1988) (Pan et al., 2002)
	Limonoids, limonin-17-O-glucoside	(Hasegawa et al., 2000)
Pineapple (Ananas comosus)	Glyceryl esters of caffeic and p-coumaric acids	(Takata and Scheuer 1976)
	Bromelain	(Wen et al., 1999)
Mango (*Mangifera indica*)	Cyanidin-3-O-galactoside. quercetin-3-O-glucoside, xanthone C-glucoside, mangiferin	(Schieber et al., 2003)
Fig (*Ficus indica*)	Sitosterol	(Rubnov et al., 2001)
Grape (*Vitis vinifera*)	delphinidin-3-O-glucoside Resvertrol	(Burns et al., 2001)
Bananas and plantains	Lutein, α-carotene and β-carotene catecholamine dopamine	(Van den Berg et al., 2000)

18

Phytochemicals in Fruits and Vegetables

Pigment class	Main subgroups	Examples
Carotenoids	Carotenes, lycopene and xanthophylls	Carrot, tomato, water melon, Pepper, Leafy vegetables
Flavonoids	Anthocyanins; flavonols	Eggplant, red Cabbage, onion
Betalains	β-cyanins and β-xanthins	Beet, Swiss Chard
Chlorophylls	a and b	Any green plants

19

Fruit and Vegetable consumption based on age and income group in India

THE TIMES OF INDIA

Production high, but Indians eating less fruits and veggies

NEW DELHI: India may be among the highest fruit and vegetable producing countries, but Indians are lacking in adequate intake of these horticultural produce.

Though availability is an issue due to barriers in supply chain, the lower intake of fruits and vegetables is largely determined by dietary choice of individuals in India which is skewed towards cereals. Ironically, in a largely vegetarian country, fruits and vegetables account for only 9% of the total calorie intake in the country.

The trend in consumption pattern, however, varies from region to region with people living in south Indian cities consuming more fruits and vegetables as compared to those in the north.

These findings are part of the India's Phytonutrient Report, brought out on Thursday by the Delhi-based think-tank Indian Council for Research on International Economic Relations (ICRIER). It is based on a survey done across five cities – National Capital Region (Delhi, Gurgaon and Noida), Mumbai, Chennai, Hyderabad and Kolkata – covering 1,001 individuals drawn from upper and middle income groups.

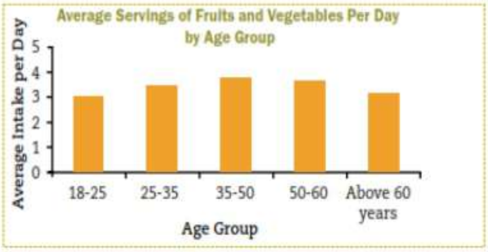

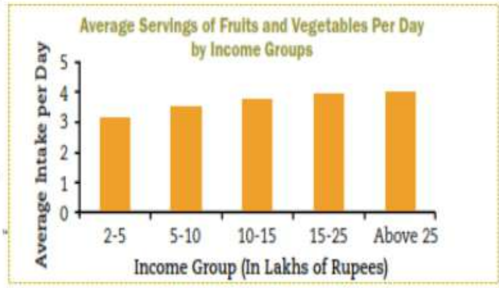

Mukherjee *et al.*, 2019

20

Reasons for not being able to meet WHO recommendation of fruit and vegetable in India

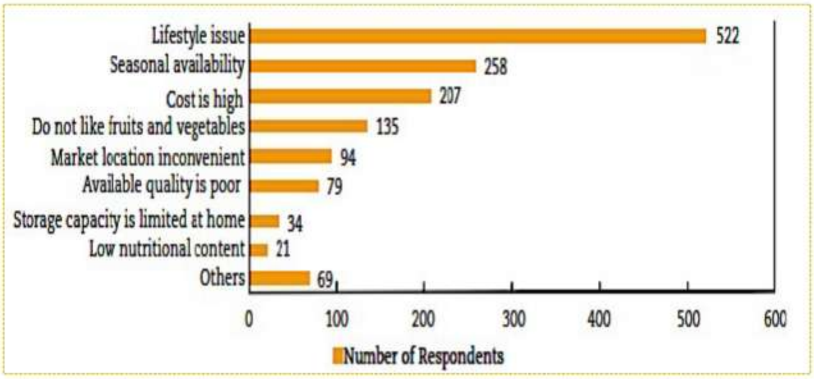

India's Phytonutrient Report, (2020)

21

Lets talk about COLOR!

- In **addition** to our daily 3-5 servings of fruits and veggies…it is also highly **recommended** that we eat a **variety** of COLORS too.

- Why?
  - **Brightly** colored fruits and vegetables have the highest doses of **phytochemicals** – which help to prevent chronic illnesses and cancer!
  - Each color boasts of its **own** benefits, and that's why it's important to select a **variety of colors** when choosing the produce to eat.

22

Red

Red fruits/veggies promote heart and urinary tract health, memory function and a lower risk of some cancers.

Fruits: red apples, cherries, cranberries, red grapes, pink/red grapefruit, red pears, pomegranates, raspberries, strawberries, watermelon

Vegetables: beets, red peppers, radishes, radicchio, red onions, red potatoes, rhubarb, tomatoes

23

Blue/Purple

These fruits/veggies reduce the risk of heart disease, help prevent formation of blood clots, and are good for memory function and healthy aging.

Fruits: blackberries, blueberries, black currants, dried plums, purple figs, purple grapes, plums and raisins

Vegetables: purple asparagus, purple cabbage, eggplant, purple peppers, purple-fleshed potatoes

24

Green

Green fruits/veggies help to promote strong bones and teeth, vision health and may lower the risk of some types of cancer.

Fruits: avocados, green apples, green grapes, honeydew, kiwifruit, limes, green pears

Vegetables: artichokes, arugula, asparagus, broccoli, brussels sprouts, cabbage, green beans, celery, cucumbers, leeks, lettuce, green onions, peas, green peppers, spinach, watercress, zucchini

25

White

White fruits/veggies (also tan and brown) help promote heart health and help lower cholesterol levels that are already healthy.

Fruits: bananas, brown pears, dates, white nectarines, white peaches

Vegetables: cauliflower, garlic, ginger, jicama, mushrooms, onions, parsnips, white-fleshed potatoes, turnips, white corn

26

Yellow/Orange

These fruits/veggies are beneficial for heart and vision health, a healthy immune system and a lower risk of some cancers.

<u>Fruits:</u> yellow apples, apricots, cantaloupe, grapefruit, lemons, mangoes, nectarines, oranges, papayas, peaches, yellow pears, pineapples, tangerines

<u>Vegetables:</u> butternut squash, carrots, yellow peppers, pumpkin, rutabagas, sweet corn, sweet potatoes, yellow tomatoes, yellow winter squash

27

Indian Agricultural Research Institute, New Delhi

My Plate for the Day

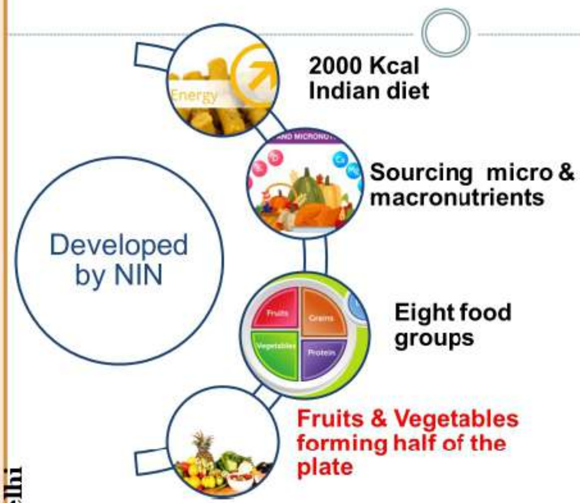

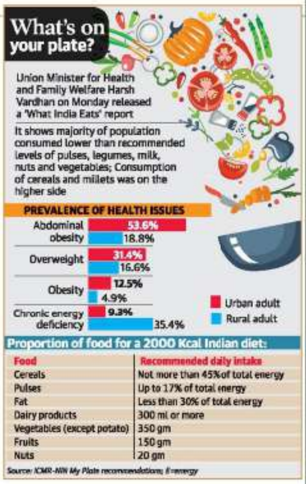

What's on your plate?

Union Minister for Health and Family Welfare Harsh Vardhan on Monday released a 'What India Eats' report

It shows majority of population consumed lower than recommended levels of pulses, legumes, milk, nuts and vegetables; Consumption of cereals and millets was on the higher side

PREVALENCE OF HEALTH ISSUES

	Urban adult	Rural adult
Abdominal obesity	53.6%	18.8%
Overweight	31.4%	16.6%
Obesity	12.5%	4.9%
Chronic energy deficiency	9.3%	35.4%

Proportion of food for a 2000 Kcal Indian diet:

Food	Recommended daily intake
Cereals	Not more than 45% of total energy
Pulses	Up to 17% of total energy
Fat	Less than 30% of total energy
Dairy products	300 ml or more
Vegetables (except potato)	350 gm
Fruits	150 gm
Nuts	20 gm

Source: ICMR-NIN My Plate recommendations; E=energy

Source: The Hindu

28

5 Colors
of Phytonutrients
Red Benefits
Phytonutrients:
lycopene, ellagic acid, quercetin, hesperidin, anthocyanidins
Supports prostate, urinary tract and DNA health. Protects against cancer and heart diseases
Blue Benefits
Phytonutrients:
resveratol, anthocyanidins, phenolics, flavanoids
Good for heart, brain, bones, arteries and cognitive health. Fights cancer and support healthy aging
Green Benefits
Phytonutrients:
lutein/zeaxanthin, isoflavones, EGCG, isothiocyanates, sulphoraphane
Supports eye health, arterial function, lung health, liver function and cells health. Helps wound healing and gum health
White Benefits
Phytonutrients:
EGCG, allicin, quercetin, indoles, glucosinolates
Supports healthy bones, circulatory system and arterial function. Fights heart diseases and cancer
Orange Benefits
Phytonutrients:
alphaGbeta-carotene, beta-cryptoxanthin, lutein/zeaxanthin, hesperidin
Good for eye health, healthy immune function, healthy growth and development
Your goal:
Eat 2 foods from each colour group daily

29

THE CHALLENGE
Can YOU eat something from
each color...each day???
▪Use your tracking paper to record all the fruits and veggie that you eat today (Thursday) until Wednesday
▪Next week create a bar graph to see which color fruits or vegetable your diet is lacking

30

Biofortification in Fruits & Vegetables

Crop Name	Biofortified for the Nutrient(s)
Cabbage	Anthocyanin
Brinjal	β-carotene
Cauliflower)	β-carotene
Sweet potato	β-carotene
Banana	Carotenoid, Iron
Tomato	Iodine
Lettuce	Iodine
Potato	Iron, zinc
Cowpea	Iron, zinc
Beans	Iron, zinc
Lentils	Iron, zinc
Pumpkin	Pro-vitamin A, Carotenoids
Cassava	Pro-vitamin A, Carotenoids, Iron
Onion	Selenium

Bio fortification through genome editing

Crop	Trait(s)	Target gene(s)
Tomato	Anthocyanin	Anthocyanin 1 (ANT1)
	Carotenoid	Phytoene desaturase (SlPDS) & Phytochrome interacting factor (SlPIF4) Phytoene synthase (PSY1)
Potato	Starch Quality	Granule Bound Starch Synthase (GBSS)
Apple	Carotenoid	Phytoene desaturase (PDS)
	Carotenoid & Early Flowering	PDS and TFL1
Grape	Carotenoid	Phytoene desaturase (Vv-PDS)
Citrus	Carotenoid	Phytoene desaturase (Cs-PDS)
Watermelon	Carotenoid	Phytoene desaturase (C-PDS)
Kiwi fruit	Carotenoid	Phytoene desaturase (Cs-PDS)
Strawberry	Carotenoid	Phytoene desaturase (Cs-PDS)

31

Biofortification in Fruits & Vegetables

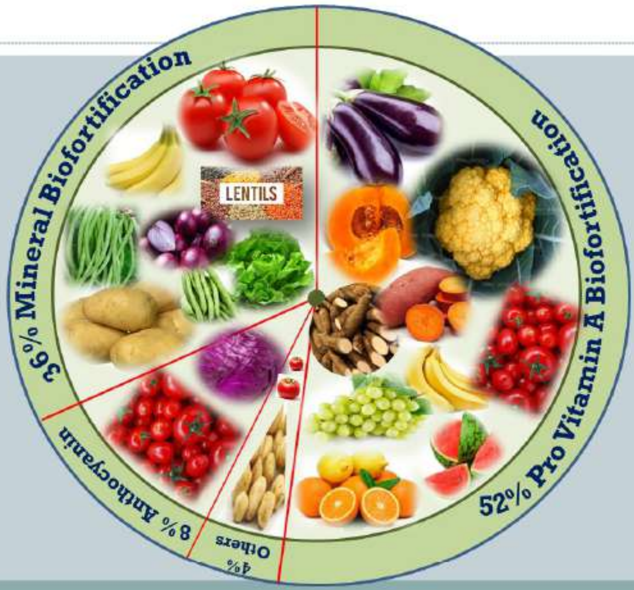

32

Deendayal Research Institute Interventions in 'What We Grow'

Dr. Rajender Singh Negi

Senior Scientist, KVK Satna, Deendayal Research Institute.

नमस्कार अभी 3 प्रेजेंटेशन हुए हैं। वक्ताओं ने बहुत अच्छे तरीके से अपनी बात रखी है। मैं सिर्फ एक बात जो नानाजी कहते थे 'लाइफ लोंग हेल्थ' के बारे में उसके विषय में बताऊंगा। अभी हम लोगों ने एक दौर ऐसा भी देखा जिसमें कोविड आया और कोविड से पूरी दुनिया में एक सोच पैदा हुई कि आखिर हम खाये क्या ताकि हमारी 'इम्यूनिटी' बढ़े। हमारा शरीर ऐसा मजबूत बने। नानाजी भी यही बात करते थे कि हमें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ानी चाहिये। तो आखिर हम क्या चीज किसानों को बताएं जिसे वे उगाए, जिससे कि हमारे शरीर की रोगरोधी क्षमता बढ़ सके। एक अनुभव जो है कोविड के दौरान मैं खुद उससे गुजरा हूँ। एक ऐसी स्थिति थी जब मेरा पूरा परिवार, मैं, मेरी पत्नी, मेरी बेटी, तीनों कोविड -19 से ग्रसित हुए। तो ऐसे समय किसी ने हमको बताया कि आप कुछ ना करिए, कहीं जाने की जरूरत नहीं आपको, आप ऐसा करिए कि नींबू लीजिए और अमरूद, जैसे अभी डॉक्टर साहब ने भी बताया, और हमने उसका सेवन किया और उसके बाद हमने देखा कि जो चीज मैं महसूस कर रहा था वह एकदम एनर्जी जैसे आये,

और हम दो-तीन दिन के अंदर बिल्कुल ठीक हो गये। और वही चीज फिर हमने सबको बताना शुरू कर दिया निश्चित तौर पर हमारे यहाँ फलों को जो 'पावर हाउस आफ न्यूट्रिएंट्स' कहा गया है, उसमें निश्चित रूप से कुछ ना कुछ ऐसी 'न्यूट्रिशन' है। और हमारे परंपरागत ज्ञान में भी जैसे खरबूजे का बीज जिसे हमारे पूर्वज मगज कहते थे; मगज का लड्डू मस्तिष्क हेतु बहुत अच्छा है। जब हमारे पूर्वज एक शब्द का प्रयोग करते थे कि मगजमारी मत कर मतलब मेरा दिमाग मत खा ठीक है। उसमें देखें तो खरबूजे के बीज में इतने सारे विटामिन पर्याप्त मात्रा में रहता है कि वो हमारे याददाश्त को बढ़ाता है। हमारा परंपरागत ज्ञान है और जो 'मॉडर्न साइंस' है उसकी एक ब्लेंडिंग की बात नानाजी करते थे। वह कहते थे कि हमको नई टेक्नोलॉजी को अडॉप्ट करना है परंतु उसमें ध्यान रखना है कि जो हमारा परंपरागत ज्ञान है वह छूट न जाये। दोनों की एक proper Blending होनी चाहिये।

जैसा नानाजी कहते थे कि छोटे-छोटे प्रयोग करने चाहिये, तो अपने बीच में ऐसे दो कृषक मौजूद हैं, जिन्होंने दलहन के ऊपर काम किया है, और दूसरा जो नानाजी कहते हैं कि आज अपने जोत का आकार कम होता जा रहा है, आज डेढ़ एकड़ का किसान है। तो नानाजी कहते थे कि डेढ़ एकड़ में कृषक किस प्रकार से खेती करें कि वह उसकी वर्ष भर की आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो, नमक के अलावा उसको बाहर से कुछ ना खरीदना पड़े और वह अपने परिवार में जो भी खर्च है उसे वह ठीक तरह से चला सके और साथ में साल में 5 से 10,000 की बचत भी कर लें। तो ऐसे ही प्रयोग का जिन्होंने अपने खेत में क्या हुआ आपके सामने समक्ष जो अपनी बात को रखेंगे। पहले मैं श्री शिवकुमार जी जिन्होंने दलहन के ऊपर बहुत अच्छा काम किया है और अपने जिले में बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है, वे अपना अनुभव आपको बताएंगे।

Shri Shiv Kumar Singh

Village Nakti, Raghuraj Nagar, Satna (M.P.)

In Kharif, he cultivates urad, moong, arhar in pulse crops, soybean in oilseed crops, sesame and wheat in grain crops in Rabi, gram in pulse crops, mustard in oilseed crops and onion in horticulture crops. Crop Production Along with this, he also does animal husbandry.

अभी सर बोल रहे थे कि एक जमाना था जब उत्पादन 50 मिलियन टन था और उसके बाद आज 320-325 मिलियन टन हो गया। मैं अपने दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र में जो सहभागी बीज उत्पादन कार्यक्रम चलता है उसके तहत बीज उत्पादन के कार्यक्रम में सहभागी हूँ। हम चार-पांच किसान मिलकर बीज उत्पादन का कार्यक्रम करते हैं। तो उस बीज उत्पादन में हम लोग धान फसलों, दलहन, तिलहन सभी का उत्पादन करते हैं। लेकिन उसमें सबसे बड़ी बात है कि हम लोग उगाते क्यों हैं? हम बात कर रहे थे अर्थ की, आज अर्थ प्रमुख है, क्योंकि हर जगह अगर पैसा ना हो तो कुछ नहीं होने वाला है। तो हमारे सामने सिर्फ यही दिमाग में रहता है कि अगर हम ज्यादा उगाएंगे, तो हम ज्यादा कमा पायेंगे। तो उस विषय पर हम लोग ज्यादा फोकस करते थे। वही रसायन वाली बात हो जाती है। 'रसायन युक्त' खेती सीखा तो हम लोगों ने आप ही से, और आज धीरे-धीरे आप ही से सीख रहे हैं कि 'रसायन मुक्त' हो जाये। तो हम लोगों ने उगाया और उसको उगाने के लिये हम लोगों को कई तरह से के.वी.के. का मार्गदर्शन मिलता रहता है, कि इस तरीके से प्रयोग करना है, तो हम लोग उसके अनुसार करते रहते हैं। लेकिन दलहन की

मैं बताऊं सर, दलहन में हम लोग अपनी देसी किस्म उगाते हैं। बहुत सारी किस्म हम लोग दलहन की किये हैं। यहाँ से जो किस्में संस्थान से मिलती हैं, दिल्ली से आती हैं। आप सब लोगों के माध्यम से हम लोगों को मिलती हैं तो हम लोगों ने उसमें एक 'टीजीटी 501' वैराइटी आई थी, उसको किया, फिर एक 'राजीव लोचन' आई, उसको किया, इस साल एक आई है 'बीडीएम 716' यह अर्ली वैरायटी है, हम लोगों ने इसको भी किया है। यह शीघ्र तैयार होने वाली वैराइटी है। इस दाल में कितने पर्सेंट है मुझे नहीं पता लेकिन हमें इसमें रेट मिल जायेगा और दूसरी फसल भी मिल जायेगी तो उसके हिसाब से तो अच्छा है, लेकिन जहाँ तक हमारी देसी किस्में हैं–जैसे 'बलौंडा' और एक अन्य जिसे 'सीकरी' टाइप में बोलते हैं, तो उस दाल को अगर आप खायेंगे तो उनमें इतना अच्छा स्वाद होता है कि परसेंटेज उपज का आईडिया नहीं, लेकिन स्वास्थ्य जबरदस्त होता है। यहाँ पर गाँव में जैसे व्यापारी लोग बोलते हैं कि वही देसी वाली दाल देना, उसको उगाये हो तो वह दे देना, वह उसकी कीमत भी देते हैं। तो मैं तो सभी किसानों से निवेदन करूंगा कि अगर आर्थिकी के हिसाब से आप उगाते हैं तो ठीक है, अच्छी बात है, उगाइये, लेकिन अपने परिवार के लिये कभी देसी भी उगाया करिये। तो वह आपके परिवार का स्वास्थ्य सुधारेगा और अगर हो सके तो इतना हो जाये कि अपने पड़ोसी के लिये भी उग जाये तो आपके साथ उसका स्वास्थ्य सुधर जाये। उससे फायदा धीरे-धीरे बढ़ेगा। दूसरी बात मैं एक और निवेदन करना चाहूंगा, क्योंकि यह जो सेशन है कि what we grow, हम लोग उगाते हैं, सत्य है कि हम ज्यादा उगाते हैं और सिर्फ इस मकसद से उगाते हैं कि हमको ज्यादा पैसा मिले, जिससे हमारा परिवार चलता रहे। लेकिन हम लोगों ने यह 'जो नैनो डीएपी' है। इसका भी अपने खेत में ट्रायल किया और उसको भी लगाया, तो बहुत बड़ा डिफरेंस नहीं आया। हमने तो DAP Urea का एक प्रयोग किया, हमने खेत के तीन हिस्से बनाये। एक हिस्से में 0% DAP डाला, दूसरे हिस्से में 50% तथा तीसरे हिस्से में 100% DAP डाला। यह प्रयोग 4 किलो चने के बीज के साथ किया। तो जो परिणाम आया कि 0% वाले में उपज 20 किलो, 50% DAP वाले में 28 किलो तथा 100% DAP वाले में उपज 40 किलो आयी। तो यहीं हम मात खा जा रहे हैं। क्योंकि जैविक तरीके से उत्पादन करने वाले को उपज कम मिलेगी। अर्थात् उसका मूल्य बढ़ेगा। पर जब बाजार में बेचा जाता है, तो उपभोक्ता सस्ता वाला खरीदता है। तो जैविक रूप से उत्पादित उपज का मूल्य ठीक नहीं मिल पाता है। यदि इस दिशा पर कुछ किया जाये कि जैविक कृषि करने वाले को उचित मूल्य मिलेगा तो किसान उसे अधिक उपजायेगा। और वह रसायन युक्त खेती छोड़ देगा। मैं एक बात कहकर अपनी बात समाप्त करता हूँ। सर जिस तरह से परिवार में बीमारी के लिये हम फेमिली डॉक्टर रखते हैं तो मैं कहूँगा कि आप एक 'फेमिली फार्मर' रख लीजिये। वह आपको इतना स्वस्थ भोज्य पदार्थ उपलब्ध करायेगा कि आपको फेमिली डॉक्टर की जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे हम जैसे कृषकों जो रसायन मुक्त खेती करना चाहते हैं, उनका काम चलने लगेगा और साथ ही सरकार का रसायन मुक्त खेती का लक्ष्य भी पूरा हो जायेगा। बहुत बहुत धन्यवाद।

Shri Inderpal Khushwa

Village Pagarkala, Majhgawan Block, Satna (M.P.)

Despite limited resources, he has made commendable and exemplary efforts in converting small unprofitable land holdings into profitable farming by adopting crop diversification and intensification and integrated farming method along with latest agricultural techniques.

मैं पहले सब्जी की खेती ज्यादा करता था। 1980 से 2010 तक जबलपुर में था, ड्राइविंग करता था और मेरे एक बच्ची थी और फिर दो बच्चे हो गये। फिर मैं परेशान हो गया, वहाँ मेरे को मिलता था केवल 6700 महीना। फिर वहाँ से मैं घर आ गया। हम लोग ने मिलकर इतनी मेहनत किया और साथ ही मैं यहाँ जुड़ गया, वहाँ तो मुझे बड़ी सफलता मिली, आज मेरे तीनों बच्चे पढ़ लिख गये। आज छोटा बालक है, वह कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियर है और वो दो बच्ची हैं दोनों टीचर हैं। एक नागौद में है और एक देवीनगर में है। तो हम लोगों ने इतनी मेहनत किया कि हमारे पास जो जमीन थी उसका हिस्सा बांट हो गया। हमारे पास डेढ़ एकड़ जमीन थी और उस जमीन में हमने इतनी मेहनत किया कि उससे हमारा अच्छे से भरण-पोषण हुआ। अभी हमने केले की खेती ज्यादा की है 300 पेड़ लगा है। जैसे जमीन घटती गई और परिवार बढ़ते गया तो हमको उसी हिसाब से खेती करना चाहिये जिसमें हमारा पूरा परिवार उसमें भरपूर पोषण करें। तो

हम अब ज्यादा केला, लहसुन, अदरक, धनिया, मिर्च आदि मतलब मसाले वाली फसलें ज्यादा किया। और जैसे खेत की मेड़ पर हमने अमला, करौंदा, मुनगा लगाया और हम आज बहुत खुश हैं। हमको बहुत सीख मिली है, हम अच्छा उत्पादन लेते हैं। बाजार से हमको कुछ नहीं लेना पड़ता, केवल हमको नमक और शक्कर लेनी पड़ती है और जितनी सारी अन्य चीज हैं उड़द है, मूंग है, दाल है और सब्जी वगैरह साथ ही चावल-गेहूँ अपनी जरूरत का जितना है सब हो जाता है। अपना सब खर्च करने के बाद साल में 2 लाख - 2.50 लाख रुपए बचा लेता हूँ।

Vasant Pandit added:

नानाजी यह खेती में बहुत काम किया था तो वह मेरा पिताजी के साथ 1978 में जापान गये थे क्योंकि उनको लगा कि जापान में 1.5 एकड़ या दो एकड़ का फॉर्म होता है, और वो लोग उससे काफी पैसा बनाते हैं। तो उस समय पिताजी नानाजी को लेकर जापान गये थे। नानाजी ने दो हफ्ता एक जापानी फार्मर के घर में उसके साथ रहे थे और वहाँ उन्होंने देखा कि वह खेती कैसे करते हैं। और वह सब देखकर फिर जब उन्होंने राजनीति छोड़ी और गोंडा से काम शुरू किया था। तब से उन्होंने इस मॉडल को evalve करना शुरू किया था कि यह 1.5 एकड़ का मॉडल भारत में हम कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं? लगभग 15 साल लगा नानाजी को। वह सब साइंटिस्ट के साथ और यह अपने सब कार्यकर्ता और अन्य लोगों के साथ बैठे और एक मॉडल खड़ा किया कि कैसे भारत का किसान 1.5 एकड़ से लाभ कमा सकता है। उसे केवल दुकान से नमक खरीदना है बाकी कुछ नहीं खरीदना। परिवार की जरूरत का सब उसके खेत में उगाना। छह लोगों का परिवार, पति, पत्नी, माता-पिता और दो बच्चों को डेढ़ एकड़ के खेत में कैसे जी सकते हैं? तो उस मॉडल पर हम लोगों ने यहाँ 2002 से चालू किया था। आज ये मॉडल, बहुत सारे किसान अपना रहे हैं और उसका अन्य जगह प्रसार भी हो रहा है।

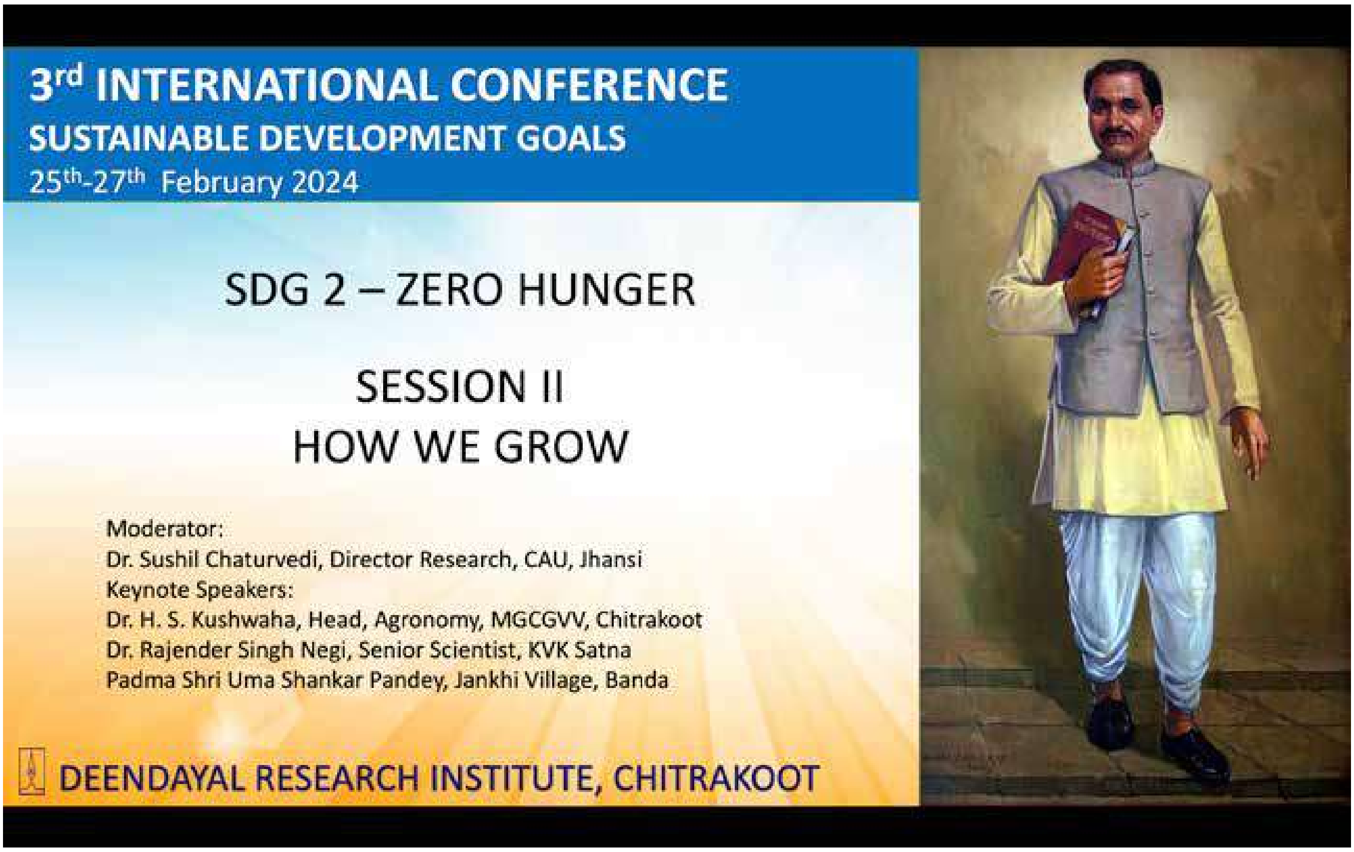
3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024
SDG 2 – ZERO HUNGER
SESSION II
HOW WE GROW
Moderator:
Dr. Sushil Chaturvedi, Director Research, CAU, Jhansi
Keynote Speakers:
Dr. H. S. Kushwaha, Head, Agronomy, MGCGVV, Chitrakoot
Dr. Rajender Singh Negi, Senior Scientist, KVK Satna
Padma Shri Uma Shankar Pandey, Jankhi Village, Banda
DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

Keynote Speech by Dr. H.S. Kushwaha on "Production of Nutricereals"

Dr. H.S. Kushwaha is Professor and Head, Agronomy at the Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalya. He has been with the University for over 21 years and has authored over 126 publications.

मिलेट प्रोडक्शन इन इंडिया। मिलेट में अगर देखा जाये तो 2 मिलेट है और बाकी 7 स्मॉल मिलेट है। मिलेट या स्मॉल मिलेट यह हमारी 'ग्रासी फैमिली' की है, जिसे घास की फैमिली कहते हैं, और घास की फैमिली को ग्रो करने में अगर नेचर में देखा जाये, तो अगर वह लग गई तो बहुत अच्छी तरह से ग्रो होती है उसमें weeds को दबा देती है। तो हम ग्रासी फैमिली में देखें तो धान भी है, गेहूँ भी है, जौ है और मक्का है। तो जो हम मिलेट और स्मॉल मिलेट की बात करते हैं तो अंतर क्या है? सभी का जो सीड है वह कार्बोहाइड्रेट रिच है। लेकिन मिलेट्स और स्मॉल मिलेट में कार्बोहाइड्रेट रिच के अलावा इनमें मिनरल बहुत अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। साथ में विटामिन्स भी बहुत ज्यादा पाये जाते हैं। इसीलिए पहले कहा जाता था कि बाजरे की रोटी पचा पाओगे कि नहीं? क्योंकि इनमें न्यूट्रिएंट है, मिनरल्स है, जो इतने रिच हैं कि सभी लोग डाइजेस्ट नहीं कर पाते थे। स्मॉल मिलेट का मतलब है, जिनके दाने का आकार बहुत छोटा है। मिलेट्स में 'सोरघम' जिसे हम ज्वार कहते हैं और दूसरा बाजरा, ये मिलेट्स में आते हैं। तो अगर हम ज्वार

और बाजरा की बात करते हैं, तो जो हमारी स्मॉल मिलिट्स हैं, जिनके दाने का साइज बहुत छोटा है उनकी न्यूट्रिटिव वैल्यू बहुत अधिक है और इसके साथ-साथ इनमें मिनरल, विटामिन और प्रोटीन भी हैं। इसमें खास बात यह है कि इनमें इंसेक्ट, पेस्ट और डिजीज की प्रॉब्लम भी कम आती है। फिंगर मिलेट है जिसे हम रागी या मडुवा भी कहते हैं। दूसरी है फॉक्सटेल मिलेट, जिसे हम काकुन बोलते हैं या इटालियन मिलेट, छोटे दाने की है। तीसरी है प्रोसो मिलेट जिसे हम चीना मिलेट भी बोलते हैं। चौथी है कोदो, पाँचवीं है लिटिल मिलेट जिसे कुटकी और लास्ट में Barnyard millet है जिससे सावां बोलते हैं। तो अगर देखा जाये तो इनमें भारत में सबसे ज्यादा प्रोडक्शन किस चीज की है? यह है अगर स्मॉल मिलेट में देखा जाये तो रागी का है। रागी का एरिया की दृष्टि से 50% तथा उत्पादन की दृष्टि से 65% हिस्सा है। बाकी अन्य स्मॉल मिलेट से। तो अब हम अगर एक-एक की बात करें तो सबसे पहले तो सोरघम हम लोगों ने इसे वर्ष 2023 में 'मिलेट ऑफ द ईयर' घोषित किया, तो उसके कारण से हम लोगों ने उसे लगवाया। जबकि हम जानते हैं कि पहले हम लोगों के गाँवों में बहुत अधिक मात्रा में ज्वार और बाजरे की खेती होती थी, लेकिन वह धीरे-धीरे कहाँ खो गई? यह जितनी भी मिलिट्स है यह स्मॉल मिलेट्स है, जहाँ की सॉइल 'फर्टाइल' नहीं है, वहाँ पर शिफ्ट हो गई। फर्टाइल सॉइल में इनकी जगह हम गेहूँ और धान उपजाने लगे। तो हमें अब दो-तीन चीजों से देखना है कि हमारी जहाँ पर प्रोडक्शन अधिक होती थी, वहाँ यह शिफ्ट हो चुकी है और वह शिफ्ट हो करके जहाँ पर हमारी मृदा की उर्वरता बहुत कम है वहाँ पर इनको लिया जा रहा है। साथ में हमें जानना चाहिये कि ये क्लाइमेटिक कंडीशन को सहन कर लेती हैं। तीसरी चीज अगर इन मिलिट्स को देखें तो इन मिलिट्स को चिड़िया बहुत ज्यादा पसंद करती हैं। तो अगर हम उत्पादन करते हैं तो उत्पादन करने के लिये हमको फार्मर्स का एक कलेक्टिव ग्रुप होना चाहिये या काफी फार्मर्स करें ताकि नुकसान कम होता है। अभी इस वर्ष हमने एक्सपेरिमेंट करवाये थे बाजरे में और सोरघम में। तो बाजरे में सबसे बड़ी दिक्कत आई कि बाजरे को चिड़िया बहुत पसंद करती हैं। एक जगह खाती है उड़ करके फिर दूसरी जगह बैठ जाती है, तो अगर अधिक लोग मिलकर के उगायेंगे तो निश्चित रूप से इसका प्रोडक्शन अच्छा मिलेगा। और जब ज्वार और बाजरे की बात आती है तो हमने टेस्ट किया कि जो पहले हम यह कहते थे कि प्रोडक्शन कम है और हमें लाभ नहीं मिलता है, तो हम यह बताना चाहते हैं कि अब ज्वार और बाजरा का उत्पादन कम नहीं है। ज्वार बाजरे का उत्पादन 40-50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो रहा है। लेकिन आपको प्रोडक्शन के साथ-साथ यह भी देखना है कि हमें लाभ मिल रहा कि नहीं। हमें इसके उत्पादन में इनपुट्स कम देना होता है और इनमें आपका आउटपुट ज्यादा है। और आजकल सीड की भी डिमांड बहुत हो गई है। सीड के साथ-साथ उनका खाने के लिये जो उत्पादन होता है, उनका जो रेट है, वह बहुत अच्छा है। अगर आपका गेहूँ 20-22 रुपए किलो में बिकेगा तो ज्वार-बाजरा 30-35 रुपए किलो में बिकेगा। डेढ़ से दो गुना प्राइस उसमें मिलता है। तो अगर आप देखें तो आपकी लागत कम और उपज एवं लाभ अधिक है। सबसे बड़ी बात इसमें बहुत ज्यादा केयर करने की भी जरूरत नहीं पड़ती है। तो अगर हम ज्वार बाजरे में करें, तो हमको ध्यान देना होगा। जितनी भी मिलेट्स और स्मॉल मिलेट्स हैं वे खरीफ में लगाई जाती हैं। कुछ इनमें से सेंट्रल इंडिया और साउथ इंडिया में रबी में लगाई जाती है। इसमें खाद और बीज की भी जरूर कम पड़ती है और अगर हम ऑर्गेनिक स्रोतों से या बीजामृत एवं जीवामृत डलवायें तो उसे बहुत कम जरूरत पड़ती है। उसके अलावा अन्य

महत्वपूर्ण बात कि हमें Recomanded Seed ही प्रयोग करना चाहिये और उसे सही जगह से खरीदना चाहिये। अगर रखा हुआ सीड मिल गया तो जर्मिनेशन नहीं होगा और अगर बहुत संख्या कम है तो आपको उत्पादन नहीं मिलेगा। दूसरी चीज है कि हम किसान भाई छिड़क विधि से बुवाई करते हैं। तो छिड़काव से नहीं करना बल्कि हमको लाइन से Sowing करना है। और 20-25 से.मी. की दूरी रखनी चाहिये। इसके लिये ये तो आप जो गेहूँ वाली सीड ड्रिल उसे प्रयोग करें, उसके लिये आपको साढ़े 22 सेंटीमीटर की दूरी रखनी है। इसका कारण यह है कि हर एक पौधे के लिये एक निश्चित स्पेस चाहिये चाहे न्यूट्रीएंट के लिये, चाहे लाइट के लिये, चाहे वाटर के लिये। उनके लिये हमने पंक्ति से पंक्ति की दूरी मेंटेन कर दी है तो निश्चित रूप से आधी समस्या हमारी कम हो गई। इससे पौधों को एक निश्चित स्पेस मिलेगा। एक अन्य समस्या है हम खरपतवार। क्योंकि अगर हम रेनी सीजन में फसल ले रहे हैं तो खरपतवार की समस्यायें आती हैं। तो ज्वार और बाजरे में तो हमें बुवाई के 24 घंटे के अंदर एट्राजिन Pre emergency में डालना है। लेकिन अगर जो किसान भाई इसे नहीं डाल सकता वह हाथ से खरवतवार निकाल सकता है। तो ज्वार बाजरे क्योंकि स्पेसिंग 45 सेंटीमीटर से डेढ़ फीट की है तो उसमें खरपतवार की प्रॉब्लम ज्यादा आयेगी और उस खरपतवार को दूर करने के लिये हमें प्रयास करने ही होंगे, क्योंकि खरपतवार पौधों का हक, चाहे पोषक तत्व का हो, चाहे लाइट का हो, चाहे आपका पानी का हो, उसको मारते हैं। तो आपको ज्वार बाजरा में निश्चित रूप से खरपतवार नियंत्रण करना पड़ेगा। लेकिन जहाँ तक स्माल मिलेट की बात है, तो स्माल मिलेट्स में ऐसे फार्मर्स जो बहुत छोटा फार्मर है और वह छोटे फार्मर्स आपको खरपतवार नासी उपयोग नहीं करते हैं तो मैं उनसे कहूंगा कि उन्हें स्पेसिंग अधिकतम 22.5 या 25 सेंटीमीटर रखना है। तो हम अगर उनकी स्पेसिंग कम रखते हैं तो खरपतवार भी उगेंगे लेकिन उनको निकाल देंगे और दूसरी चीज यह है कि इनमें आपस में भी कंपटीशन होता है। पौधे अगर ग्रो कर गये तो वह आपके नीचे जो दूसरे खरपतवार है उनको नष्ट कर देंगे। तीसरी चीज यह खरपतवार के अलावा पोषक तत्वों की जरूरत भी है, तो पोषक तत्व अगर हम डालते हैं तो वह कब डालना है? अगर खरीफ सीजन में ले रहे हैं तो नाइट्रोजन का 1/3 भाग और फास्फोरस या ऑउर पोटाश का पूरी मात्रा बुआई के समय। बीज और खाद अलग अलग जाये ऐसे फरती सईद ड्रिल से देना चाहिये। और हमारे पास सिंचाई का साधन नहीं है तो ज्वार में 50 से 60 kg, ज्वार में और बाजरे में भी 100 kg नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा 40 kg और पोटेशियम 30 kg देना है लेकिन अगर रेनफॉल कंडीशन है, सूखा है और हमारे पास सिंचाई का साधन नहीं है तो हमको उसी के अनुसार से पौधों को एडजस्ट करना है। लेकिन तब ही हमको यह ध्यान देना है कि हमको इनकी मात्रा पौधे के नजदीक देना है। जिससे कि हमारा जो भी पोषक तत्व है वह पूरी तरह से उपयोग हो पाये। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि जो हम डीएपी डालते हैं या फास्फोरस डालते हैं या नाइट्रोजन डालते हैं या पोटेशियम डालते हैं उसका कितने भाग पौधे use कर पाते हैं? तो मैं यह बताना चाहता हूँ कि जितनी भी नाइट्रोजन हम डालते हैं अगर 100 kg डाला तो पौधे 50 kg उपयोग कर पाते हैं। इसी तरह फास्फोरस 15 से 20 kg। तो मेरा कहने का मतलब है कि अगर हम इन मिलेट्स को उगा रहे हैं, तो निश्चित रूप से उनका उत्पादन अधिक होगा। अब स्मॉल मिलेट्स में रागी का प्रोडक्शन अधिक होता है। लेकिन इन सब स्मॉल मिलेट्स में आपको 20 से 30 kg नाइट्रोजन अर्थात् बहुत कम नाइट्रोजन डालने की जरूरत पड़ती है। और यदि नाइट्रोजन ना डालें तो भी आपके

पास गोबर की खाद है तो उससे काम चल जायेगा। लेकिन बुवाई आप समय से पूर्ण करें साथ में आपको अगर पौध संरक्षण की जरूरत पड़े, तो बीज के लिये जीवामृत है और बाकी आपका नीमास्त्र या आग्नेयास्त्र को प्रयोग भी किया जाता है, जो दीमक के लिये बहुत अच्छा कारगर है। हमने पाया कि केमिकल से उपचार किया बीज उतना अच्छा कारगर नहीं हुआ जितना आग्नेयास्त्र ने दीमक को कंट्रोल किया। तो निश्चित रूप से हम अगर रागी या चीना या सावां का उत्पादन करें तो हमने पाया है कि रागी का 30 से 35 क्विंटल प्रति एकड़ और बाकी का स्माल मिलेट्स का 15 से 20 क्विंटल उपज प्राप्त होती है।

अंततः यदि हम मूल्य प्रति एकड़ लाभ की दृष्टि से देखें, तो निश्चित रूप से इनसे अच्छा लाभ मिलता है। इनके उत्पादन में लागत अन्य Normal Crops की तुलना में कम लगती है तथा लाभ अधिक होता है। साथ ही मिलेट्स की न्यूट्रीशनल वैल्यू बहुत अधिक है, इनमें विटामिन्स, मिनरल्स तथा फाइबर सभी पर्याप्त मात्रा में होता है।

आज यदि यहाँ जो आस-पास के क्षेत्रों के किसान आये हैं, उनसे मैं आग्रह करूंगा कि वे हमारे विश्वविद्यालय के संकाय में आयेंगे तो उन्हें पूर्ण तकनीकि ज्ञान प्रदान किया जायेगा।

अंत में मैं कहूंगा कि आज की पोषकीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मिलेट्स का उत्पादन और उपयोग बढ़ाने की आवश्यकता है और इस Nutri Cereals की मांग को पूरा करने के लिये हमें Cultural Advance Techniques को अपनाना पड़ेगा। इससे हम अपनी जनसंख्या की पोषकीय आवश्यकताओं को तो पूरा करेंगे ही साथ ही किसान भाईयों को भी पर्याप्त लाभ मिलेगा।

Millets Production in India

By
Prof. H. S. Kushwaha
FACULTY OF AGRICULTURE
MAHATMA GANDHI CHITRAKOOT GRAMODAYA VISHWAVIDYALAYA,
CHITRAKOOT, SATNA (M.P.) 485 334

Millets and Small Millets

1. Sorghum
2. Pearl Millet
3. Finger Millet (Ragi)
4. Foxtail/ Italian Millet (Kakun)
5. Kodo Millet
6. Little millet (Kutki)
7. Proso Millet (Cheena)
8. Barnyard Millet (Sawan)
9. Brown, Top Millet (Korale)

Nutritional Profile of Millets

Millet	Protein (%)	Carbohydrates (g)	Fat (g)	Minerals (g)	Fibre (g)	Calcium (mg)	Phosphorous (mg)	Iron (mg)	Energy (Kcals)	Thiamine (mg)	Niacin (mg)
Little Millet	7.7	67	4.7	1.7	7.6	17	220	9.3	329	0.3	3.2
Barnyard Millet	6.2	65.5	4.8	3.7	13.6	22	280	18.6	300	0.33	4.2
Proso Millet	12.5	70.4	1.1	1.9	5.2	8	206	2.9	354	0.41	4.5
Kodo Millet	8.3	65.9	1.4	2.6	5.2	35	188	1.7	353	0.15	2
Foxtail Millet	12.3	60.2	4.3	4	6.7	31	290	2.8	351	0.59	3.2
Brown top Millet	8.9	71.3	1.9	3.9	8.2	28	276	7.7	338	0.38	-
Pearl Millet	11.8	67	4.8	2.2	2.3	42	240	11	363	0.42	4.3

WWW.millets.wordpress.com

Conclusion

- For fulfill the need of nutri-rich cereal/ Millet of increasing population, the millets production should be enhanced by use of cultural & Agronomic practices.

Keynote Speech by Dr Rajender Singh Negi on "Safe and Nutritious Food – Chemical Free Natural Farming".

Dr. Rajender Singh Negi, Senior Scientist, Krishi Vigyan Kendra, Satna, has 28 Years of experience in the KVK system in planning, programme development, co-ordination and execution of extension education program, applied research, wasteland Horticulture, Orchard management, Protective Cultivation of cut flowers and high valued vegetables, high tech nursery production and management, organic production of vegetables and spices, climate resilient agriculture.

श्रद्धेय नानाजी को नमन करते हुए बताना चाहता हूँ कि नानाजी खेती के बारे में हमेशा बात करते थे। वे अपने वैज्ञानिकों को प्रेरित करते हुये कहते थे कि ऐसी खेती होनी चाहिये जो कि पर्यावरण को भी नुकसान ना करें और हमारे लिये सुरक्षित हो। आज जो हम बात कर रहे हैं SDG 2 में 'सेफ एंड न्यूट्रिशस फूड' की और वह पौष्टिक उत्पादन हमको मिल सके तो ये कोई ऐसी बात नहीं जो कठिन है। प्राकृतिक खेती यह बहुत नया शब्द नहीं है। आदिकाल से ही हम लोगों ने अपनी भारतीय कृषि में गौ वंश आधारित उत्पादों का प्रयोग किया है चाहे वह गौमूत्र का उपयोग हो या गाय का गोबर की बात। ऋग्वेद में भी गाय का महत्वपूर्ण स्थान था। उसको विश्व की माता कहा गया है और विश्व का पालन करने वाली के रूप में एक गाय को देखा गया है।

पर समयांतर में हमारी भारतीय कृषि में निरंतर परिवर्तन दृष्टिगोचर हुये हैं और उसका कारण था कि हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या, उसके भरण-पोषण के लिये जो एक दवाब था कि हमको अधिक उत्पादन लेना था और उस अधिक उत्पादन लेने के लिये हमको रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करना पड़ा और साथ ही रासायनिक कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग करना पड़ा।

फसल चक्र में ऐसी फसलों का प्रयोग हुआ जो ज्यादा मात्रा में हमारी जमीन से पानी खींचती थी और उसका यह असर हुआ कि हमारी जमीन की उर्वरा शक्ति भी कम हो गई। और साथ ही आज हम बहुत सारी बीमारियां देख रहे हैं। अर्थात् मानव स्वास्थ्य पर उसका एक दुष्प्रभाव हमको देखने को मिल रहा है। अतः आज आवश्यकता महसूस कर रहे हैं, एक ऐसी खेती की, जो कि सुरक्षित हो तथा जो हमको पौष्टिक आहार उत्पादित कर दे सके।

नानाजी जो कहते थे कि हमको प्रयोग करना है, ऐसे छोटे-छोटे प्रयोग जो खेती के लिये लाभकारी हो तथा जो किसानों को आसानी से समझ में आ सके। वो मैं आपके सामने रखने का प्रयास करूँगा। नानाजी का इसमें विजन क्या था? प्राकृतिक खेती के बारे में नानाजी बहुत पहले से बात करते थे। नानाजी का कहना था कि खेती ऐसी होनी चाहिये जो कृषकों को आत्मनिर्भर बना सके और जो प्रकृति संमत हो। आज हम जो जमीन के अंदर मित्र कीटों अथवा लाभकारी कीटाणुओं को बढ़ाने और जो विद्यमान है उनको बनाये रखने की बात करते हैं, तो नानाजी बहुत पहले ही इस बात को कहते थे। आज हम देख रहे हैं कि किसान लागत बढ़ने से परेशान है। दूसरी ओर थाली से स्वाद गायब होता जा रहा है। नानाजी का कहना था कि हमें ऐसी खेती करनी चाहिये जो लाभकारी हो और उत्पादन का स्वाद भी बना रहे। देसी गाय को नानाजी बहुत पसंद करते थे क्योंकि उनका मानना था कि हमारी कृषि का आधार ही गोवंश है। हमको किस प्रकार से खेती को बढ़ाना है? उस संबंध में वे कहते थे कि प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रबंधन अर्थात् जल, जंगल, जमीन, जानवर उसमें नानाजी कहते कि इनके बारे में हर एक मानव को जानकारी होनी चाहिये। जिम्मेदारी से काम लें और उनकी जवाबदेही तय हो। इसी तरह दूसरा जो हमारा पर्यावरण और जैव विविधत में जो आज हम क्राप डाइवर्सिटी या बायोडाइर्सिटी की बात करते हैं। तो नानाजी का उसके बारे में कहना था कि खेती में जैव विविधता, फूड डाइवर्सिटी देखनी चाहिए। नानाजी का कहना था कि खेती ऐसी हो जो किसान की आर्थिक स्थिति को सुधारे।

इस विषय पर चर्चा की, अभी आवश्यकता क्यों पड़ी? क्योंकि हमारी जलवायु में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है, दूसरा जो हमारा सतना जिला है और उसका मझगवां वाला क्षेत्र है वहाँ पर सिंचाई के साधन नहीं है, उथली जमीन है, खराब मिटटी है, साथ ही जिस प्रकार से जलवायु परिवर्तन हम देख रहे हैं कि पिछले 20 साल में मानसून लगातार पीछे को खिसकता जा रहा है। जहाँ जून में मानसून आ जाता था अब जुलाई में आ रहा है और साथ ही यहाँ से जाने का मानसून का समय है वह भी थोड़ा-सा खिसक गया है। हमारा जो 'लेंथ ऑफ ग्रोइंग पीरियड' अर्थात् हमारा जो खरीफ फसलों के उगाने का समय है वह भी कम होता जा रहा है। अतः

आज आवश्यकता है कि ऐसी खेती को बढ़ावा दें जिससे जल धारण क्षमता सुधरे। तो सतना जिले के लिये प्राकृतिक खेती बढ़ाने के लिये एक अनुकूलता हम देख रहे हैं।

प्राकृतिक खेती में जो पांच घटक हैं इसमें उसमें पहली आवश्यकता होती है। वायु और वाष्प दोनों की समान मात्रा में होना चाहिये। चूंकि यह जीवाणु आधारित खेती है, तो जीवाणु तभी मिल पायेंगे, जब उनमें अनुकूल वातावरण हो। Mulching इनके लिये अनुकूल वातावरण बनाता है। Mulching के लिये पतवाल में गोबर, गोमूत्र, बेसन आदि मिलाकर तैयार करते हैं। यह प्राकृतिक मित्र सूक्ष्म जीवों तथा केंचुआ आदि के लिये अनुकूल वातावरण बनाते हैं। अब प्रश्न आता है फसल सुरक्षा का, तो इसके लिये गोमूत्र आधारित नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र तथा आग्नेयास्त्र का प्रयोग करते हैं। इसके अलावा मैं एक और अपने यहाँ प्रचलित प्रथा जिसे अब अमिशात्व माना जाता है, का उल्लेख करूंगा। वह है, अन्नप्रथा अथवा आड़ग प्रथा। इसके तहत हमारे जो खाली खेत होते थे उसमें अपने गोवंश का प्रवास कराया जाता था, ताकि उसका गौ-मूत्र, गोबर, खूर की मिट्टी में मिल जाये। हमने अपने प्रयोग में देखा कि इस प्रकार का गौ प्रवाास जब खेत में 7 दिन के लिये किया गया तो तिल की फसल पर उसका गुणात्मक प्रभाव हुआ। न केवल फलियों की संख्या बढ़ी दूसरा बीज का आकार भी बढ़ा पाया गया, कुल मिलाकर उत्पादन में भी 5% से भी अधिक की वृद्धि दृष्टिगोचर हुई। तो इस प्रयोग से स्पष्ट हुआ कि जिस गाय को हम अनुपयोगी कृषि के लिये समझते हैं, वो हमारे लाभ को बढ़ा सकती है। इसी तरह का प्रयोग गेहूं पर भी किया गया। इसी प्रकार के परम्परागत तरीके हमें अन्य प्रदेशों में दिखते हैं। एक अन्य परम्परागत ज्ञान जैविक कृषि के विषय में उपयोगी पाया गया। हमारी ज्ञान परंपरा में कहा जाता है कि घाटी माता कृष्ण पक्ष में सांस लेती है और शुक्ल पक्ष में अपनी सांस छोड़ती है। हमने इसका प्रयोग धान के खेती पर करके देखा। जैसे धान की खेती में जमीन से जुड़े हुये जो काम वो कृष्ण पक्ष में करें तथा जमीन से ऊपर वाले काम शुक्ल पक्ष में करें। उसका एक निश्चित रूप से जो परिणाम आया वो आश्चर्यजनक था, धान की उपज में एक एकड़ में दो क्विंटल तक की वृद्धि हुई। इससे 4000 रुपये तक का फायदा बढ़ जाता है। तो कहने का मतलब है कि बिना रासायन उर्वरक का प्रयोग के भी यदि हम खेती करें तो हमें उपज में लाभ मिलेगा ही।

इसके अलावा हमें इन पांच तत्वों का एकल प्रभाव तथा एकीकृत (combined) प्रभाव का भी अध्ययन किया। जैसे हमने हल्दी की फसल में जीवामृत तथा पलाश की पत्तियों की मल्चिंग का प्रयोग किया। इसमें पहले ट्रायल में जीवामृत का प्रभाव तथा दूसरे ट्रायल में जीवामृत के साथ पलाश की पत्तियों की Mulching का प्रयोग किया। हमने पाया कि हल्दी की जो राइजोम गांठ है, उसका आकार बड़ा हुआ। जहाँ हम संस्थान में एंटी से रासायनिक खेती से तुलना का प्रश्न है, तो रासायनिक विधि की तुलना में हमारी हल्दी 25 दिन से तैयार हुई तथा उपज भी बढ़ी। इसी प्रकार आलू की फसल में मात्र पलाश पत्तियां के प्रयोग से उत्पादन में बढ़ोत्तरी देखी गई। प्राकृतिक खेती का सबसे अच्छा परिणाम हमको मिला है। वह दलहनी फसलों पर दूसरा अपनी कंद वाली

फसलों (ट्यूबर्स) हो या बाल वाली फसलें जैसे आलू, प्याज पर ज्यादा देखने को मिला है। तो इसमें भी आलू की फसल में हमने दो प्रकार के प्रयोग किए। एक पलाख की पत्तियों और दूसरा उड़ की पत्तियों की Mulching. उसमें फफूंद नाशक, जीवाणु नाशक तथा विषाणु नाशक गुण होते हैं, पलाश की पत्तियों की Mulching से 16% तक हमारे उत्पादन में वृद्धि देखी गई है, साथी ही आलू के ट्यूबर्स का आकार भी बड़ा आया। वहीं उड़द की भूसी की Mulching के अंतर्गत भी देखा गया कि उत्पादन में वृद्धि हुई। ऐसे अन्य प्रयोग हुये हैं। हमारे यहाँ एक एकड़, डेढ़ एकड़ का किसान है, तो नानाजी हमेशा इन छोटे-छोटे किसानों में प्रयोग करने की बात करते थे। अब हम बंद गोभी में प्राकृतिक खेती की बात करते हैं, इसमें हम HVC Mulching की बात करेंगे। इसमें हमने मटर एवं मेथी की इंटर क्रॉपिंग के प्रयोग किये। बड़े अच्छे परिणाम मिले। जो लागत रासायनिक खेती में बढ़ जाती है। वह अगर हम इसको इंटर क्रॉपिंग के रूप में ले जाते हैं, तो बंद गोभी के साथ आपको मेथी अथवा मटर मिलती है। और लगभग 23000 रुपये की अतिरिक्त आमदनी होती है और मेथी के साथ इंटर क्रॉपिंग करने से मिट्टी की स्थिति में सुधार होता है। गोभी के साइज में भी उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। इसी तरह गेहूँ में जीवाणु खाद का प्रयोग हम लोगों ने अलग-अलग कंसंट्रेशन में किया। जो हम जीवामृत की बात कर रहे हैं तो वहाँ पर जीवामृत की पंचगव्य और गोमूत्र के साथ प्रयोग किया।

किसान कई बार यह समझते हैं कि इसका कोई प्रभाव नहीं आता है क्योंकि वह यह सोचते हैं कि एक बार जिस प्रकार से हमने रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कर दिया और फिर उसकी जरूरत नहीं होती। इसी तरह जैविक खाद भी यहाँ मैं यह कहना चाहूंगा कि जैविक खाद को हम पहले बुआई के समय डालें तथा उसके बाद 15-15 दिन के अंतराल पर ठीक उसी तरह जिस प्रकार से हम चाय पीते हैं, तो चाय के साथ में बिस्किट ले लेते हैं उसी प्रकार से जब भी आप खेत में हल्का सा पानी देते हैं उसके साथ में जीवामृत का प्रयोग करें और साथ में उसका छिड़काव करें, तो आपको निश्चित तौर पर अच्छे परिणाम मिलते हैं। दाने भी भारी आ रहे हैं और उनमें चमक भी होती है। इसी तरह के धान की फसल में रस चूसने वाले कीट जैसे ही वह मिलकिंग स्टेज पर आती है तो उसमें कीट का प्रभाव देखने को मिला है, तो यहाँ पर हमने प्रयोग किया और देखा कि कहाँ तक इसमें कीट नियंत्रण हो पाता है, तो मैं बताना चाहूँगा कि इसमें शत् प्रतिशत नियंत्रण होता है। यहाँ जरूर यह देखने वाली बात है कि हम रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग तब करते हैं जब हम फसल पर कीट देखते हैं, पर जैविक कृषि में हमें जैविक खाद का निरंतर अंतराल पर प्रयोग करना होगा? क्योंकि उससे नुकसान तो होने वाला नहीं है। तो यदि उसको 15 दिन के अंतराल पर आप इनका अगर छिड़काव करेंगे तो हम यह देखते हैं कि प्रभावी कीट नियंत्रण होगा। आपका नीमास्त्र से वह 70% तक कीट नियंत्रण हुआ है। इस तरह उड़द में तो परिणाम बहुत अच्छे मिल रहे हैं, क्योंकि यह दलहनी फसल है उसमें सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ जाती है। इस तरह हम लोगों ने छोटे-छोटे प्रयोग करके हर फसल में देखा। चाहे उड़द हो, चाहे मूंग हो, सबमें अच्छे परिणाम मिले। हमें यह भी देखना है इसकी कितनी मात्रा डालें, 4% या पांच परसेंट छिड़काव करने की आवश्यकता है। 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करेंगे तो इसके परिणाम सुखद होते है।

अब रासायनिक खेती और जैविक खेती का टमाटर में तुलनात्मक अध्ययन देखें। फल की गुणवत्ता देखिए, फल का जो कलर है वह डेवलपमेंट अच्छा हुआ और साथ में अगर आप देखेंगे लागत में जो एक एकड़ में हम देखें तो लगभग 6000 की बचत होती है। और जो प्रति एकड़ में आय की 8% की कमी दिख रही है, वह उत्पादन के शुरूआत में कमी देखने को मिली हैं। उसी प्रकार से आलू में भी हम लोगों ने प्रयोग किया वहाँ पर भी हमको यह परिणाम देखने को मिला है। परंतु साथ में यह कहना चाहूंगा मैं कि अगर आप कुल आय व्यय विवरण देखेंगे। तो प्रति क्विंटल के हिसाब से तो जैविक खेती में लागत में कमी आती है और उत्पादन भी थोड़ा प्रतिशत कम होता है। पर जैविक खेती से धरती का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और अगर जमीन हमारी स्वस्थ होगी, माँ स्वस्थ होगी तो उससे उत्पादन होने वाला अनाज भी पौष्टिक होगा और यदि अनाज पौष्टिक होगा तभी हम स्वस्थ रह सकते हैं। अंत में सभी से आह्वान करता हूँ की आइए सब लोग प्राकृतिक खेती को आगे बढ़ाये ताकि जो हम भी स्वस्थ रहें और हमारा पर्यावरण भी स्वस्थ रहें हमारी धरती मां भी स्वस्थ रहे बहुत-बहुत धन्यवाद।

Shri Vasant Pandit added:

इसमें जो संस्थान की सोच है how we grow में यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है और सरकार तेजी से प्राकृतिक खेती और जैविक खेती की दिशा में जा रही है। इसीलिये इस चर्चा को हमने Chemical Free Natural Farming नाम दिया। यह जो नेचुरल फार्मिंग है, उसमें हम लोग कोई केमिकल नहीं मिलाते हैं। यही हम लोगों का विचार है। आज की तारीख में सरकार की नेचुरल फार्मिंग की डेफिनेशन बहुत रिस्ट्रिक्टिव है। अतः इस परिभाषा को सुस्पष्ट करना होगा। जैसे यहाँ के विषय में गाय का प्रयोग हो सकता है। पर North-East में गाय नहीं होती। वहाँ वो मिथुन, सूअर, मुर्गी पालते हैं और उसी का waste खेत में डालते हैं, तो यह भी Natural Farming है। अतः हमारा मानना है कि Natural Farming वह है, जहाँ केमिकल नहीं डाला जाता।

3RD INTERNATIONAL SDG CONFERENCE - SDG 2
अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलेन- सतत विकास के लक्ष्य -2

Safe & Nutritious Food – Chemical Free Natural Farming

सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन : रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती

Experiences of DRI on Natural Farming

डा. राजेन्द्र सिंह नेगी
दीनदयाल शोध संस्थान
कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां, सतना (म.प्र)

दीनदयाल शोध संस्थान

भाकृअनुप ICAR

Nanaji's Vision on Natural Farming
नानाजी की दृष्टि में प्राकृतिक खेती

एक ऐसी स्थायी कृषि प्रणाली जो कृषकों को आत्मनिर्भर बनाये, प्रकृति एवं भूमि में विद्यमान लाभकारी मित्र जीव/जीवाणुओं को बिना नुकसान पहुंचाये कम लागत पर पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तायुक्त एवं सुरक्षित खाद्य पदार्थ उत्पादित करे

देशी गायें भारत की अर्थव्यवस्था की आधारशिला रही हैं। गाय और कृषि एक दूसरे के अभिन्न हैं। गायों से मानव को दूध अवश्य मिलता है किन्तु कृषि का मूल आधार गोवंश ही है।

- प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रबंधन
- पर्यावरण एवं जैव विविधता का संरक्षण
- किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार करना
- किसानों के हित की खेती

Prospects and Scope of Promoting Natural Farming in Satna District
जिला सतना में रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती की संभावनाएं

- 234 ग्राम अनुसूचित जनजाति बहुल्य (परम्परागत खेती)
- 38.81% वर्षाधारित खेती
- 56.7 % भूमि कमजोर एवं उथली
- 42.15 % मानसून की अनिश्चितता के कारण खरीफ में पड़ती
- 26.83 % सिंचाई के पर्याप्त साधनों के अभाव में पड़ती
- 78.05 % सीमान्त एवं लघु कृषक
- जलवायु परिवर्तन का खेती पर अत्यधिक प्रभाव
- पशुओं के लिए हरे चारे की कमी

Five Components of Natural Farming
रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती के पांच घटक

बीजामृत	व्हापसा	जीवामृत	पलवार	फसल सुरक्षा
• गाय के ताजे गोबर, मूत्र एवं चूना से निर्मित मिश्रण का उपयोग बीज का उपचार करने के लिए किया जाता है।	• मिट्टी में केंचुओं को सक्रिय कर, जल वाष्प संघनन प्रक्रिया को सक्रिय किया जाता है।	• गोमूत्र, गोबर, दालों के आटे और गुड़ के मिश्रण का उपयोग मिटटी का उपचार करके मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाया जाता है।	• इस प्रक्रिया में मिट्टी में नमी को संरक्षित करने के लिए बायोमास मल्च का उपयोग कर पेड़ों एवं फसल के साथ कर सूक्ष्म जल्वायुविक प्रस्थिति को अनुकूल बनाया जाता है	• इस प्रक्रिया में जैविक मिश्रण का छिड़काव कीटों, बीमारियों और खरपतवारों की समस्याओं को रोकने के लिए एवं फसल की रोग एवं कीट व्याधियों से लड़ने की क्षमता में सुधार करने के लिए किया जाता है

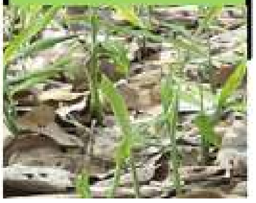

Effect of night halt of cattle (one week before sowing) on Sesame

तिल की फसल में बुवाई से एक सप्ताह पहले गोवंश का रात्रि प्रवास के प्रभाव का आंकलन

क्र.	परिक्षण बिन्दु	सामान्य	गोवंश का बुवाई से पहले खेत में रात्रि प्रवास
1	बुवाई तिथि	23.07.2021 एवं 25.07.2022	
2	जमाव प्रतिशत	88.5	97.2
3	पौधों की औसत लम्बाई (सेमी)	73.6	76.4
4	प्रति पौध फलियों की संख्या	57.2	61.5
5	प्रति फली बीज संख्या	42.6	45.3
6	उपज (कु./ एकड़)	2.53	2.82

उपज में वृद्धि -11.46 %

Agronomic practices based on Moon constellation- व्हापसा(भूमि में वायु प्रवाह)

धान की फसल में कृष्ण पक्ष एवं शुक्ल पक्ष के आधार पर सस्य क्रियाओं के प्रभाव का आंकलन

सस्य क्रियाएं	पक्ष
नर्सरी में बीज की बुवाई	कृष्ण पक्ष
खेती की तैयारी	कृष्ण पक्ष
पौध रोपाई	कृष्ण पक्ष
घन जीवामृत काउपयोग	कृष्ण पक्ष
फसल में तरल जीवामृत एवं जैव कीटनाशक छिड़काव	शुक्ल पक्ष
फसल कटाई	शुक्ल पक्ष

क्र	परीक्षण बिंदु	कृषि पंचांग के आधार	सामान्य
1	रोपाई	22 जुलाई, 22	24 जुलाई,22
2	पौधों की ऊँचाई(सेमी)	103.05	100.59
3	कल्लों की संख्या	17.2	16.5
4	बाली की लम्बाई(सेमी)	16.7	15.4
5	प्रति बाली दानों की संख्या	58.5	56.1
6	उपज (कु./एकड़)	24.6	22.39

उपज में वृद्धि (कु./एकड़)-2.21, प्रति एकड़ आय में वृद्धि- रु. 4508

सामान्य स्थिति

कृषि पंचांग के आधार पर सस्य क्रियाएं

Effect of Jeevamrit + Mulching in Turmeric

हल्दी की फसल में जीवामृत एवं पलाश की पत्तियों की मल्चिंग का प्रभाव

उपचार	पोधों की ऊँचाई (सेमी)	प्रति पौध प्राथमिक कन्द संख्या	प्रति पौध द्वितीयक कन्द संख्या	प्रति पौध कंदों का औसत वजन(ग्राम)	उपज (कु./एकड़)	मल्चिंग से उपज में वृद्धि (कु./एकड़)
टी1: जीवामृत	96.23	6.08	9.92	246.74	80.96	
टी2: जीवामृत + पलाश की पत्तियां	101.84	6.58	8.87	258.69	91.08	10.12 (12.50 %)

Effect of Mulching (Blackgram straw and Palas Leaves) on growth and yield of Potato

(आलू की फसल में पलाश की पत्तियों एवं उड़द की भूसी की मल्चिंग का प्रभाव)

उपचार	पोधों की ऊँचाई(सेमी)	प्रति पौध कन्द संख्या	कन्द का औसत वजन (ग्राम)	कन्द का औसत आकार (सेमी^{2})	उपज (कु./एकड़)	मल्चिंग से उपज में वृद्धि (कु./एकड़)
टी1: जीवामृत	38.56	9.46	240	20.544	58.83	
टी2: जीवामृत +उड़द की भूसि	39.34	9.63	255	21.84	65.67	6.84(11.63%)
टी3: जीवामृत +पलाश की पत्तियां	40.34	9.84	298	22.92	75.17	16.34(27.77%)

Effect of Live Mulching (intercropping with pea and fenugreek) on yield and income of cabbage
(बंदगोभी की फसल में मटर या मेथी की अन्तःवर्तीय खेती के प्रभाव का आंकलन

उपचार	उपज (कु./एकड़)	बंदगोभी समतुल्य उपज (कु/एकड़)	सकल आय (रु./एकड़)	शुद्ध आय (रु./एकड़)	आय:व्यय
टी1- बंदगोभी(60 सेमी X 60 सेमी)	65.24	65.24	82631	51291	2.64
टी2- बंदगोभी+ मटर (1:1)	68.75+13.55	82.11	104006	74326	3.50
टी3- बंदगोभी+ मेथी (1:1)	71.83 +15.91	87.181	95359	66259	3.28

विवरण	लागत में कमी (रु./एकड़)	आय में वृद्धि(रु./एकड़)
टी2- बंदगोभी+ मटर (1:1)	1660 (5.3%)	23035 (44.91%)
टी3- बंदगोभी+ मेथी (1:1)	2240 (7.15%)	14968 (29.18 %)

Effect of microbial formulations(jeevamrit, panchgavy and gomutra) in wheat
गेहूं की फसल में जीवाणुयुक्त खाद (जीवामृत, पंचगव्य एवं गोमूत्र) के प्रभाव का आंकलन

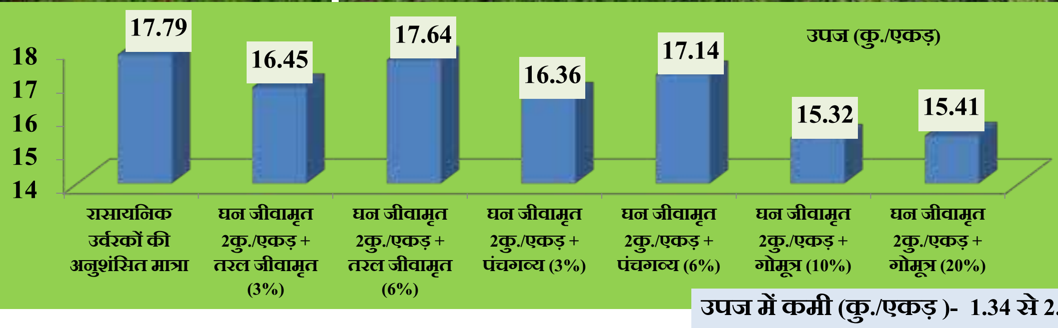

उपज में कमी (कु./एकड़)- 1.34 से 2.47

घन जीवामृत 2 कु. /एकड़ की दर से + 15 दिनों के अंतराल (30,45,60,75 और 90 दिन) के अंतराल पर गोमूत्र आधारित सूक्ष्मजीवी घोल का पर्णीय छिड़काव

Effectiveness of Biopesticide (Neemastra, Brahmastra and Agnisatra) on insect pests in Rice

धान की फसल में जैव कीटनाशी (नीमास्त्र ,ब्रम्हास्त्र एवं अग्नियास्त्र) के प्रभाव का आंकलन

उपचार	पौधे की उंचाई (सेमी)	कल्लो की संख्या प्रति पौधा	कीट नियंत्रण (%)	उपज कु/एकड़	उपज में वृद्धि (%)
कोई छिड़काव नहीं	95.4	17.4	-	14.82	
नीमास्त्र -3 %	96.5	17.7	54.65	15.86	7.02
नीमास्त्र -6%	99.2	18.6	67.57	16.83	13.56
ब्रम्हास्त्र-3 %	98.5	17.2	55.62	16.05	8.30
ब्रम्हास्त्र-6%	99.3	17.9	61.97	16.39	10.59
अग्नियास्त्र-3%	98.9	17.4	60.27	16.11	8.70
अग्नियास्त्र-6%	100.5	18.3	66.84	16.54	11.61

प्रयोग विधि ; प्रथम छिड़काव पौध रोपाई के 30 दिन की फसल अवस्था एवं उसके बाद 15 -15 दिनों के अन्तराल पर दो पर्णीय छिड़काव किया

प्रभाव;

✓ प्रभावी कीट नियंत्रण नीमास्त्र - 6%; - 67.57 %

✓ उपज में वृद्धि ; - 2.01 कु./ एकड़ (13.56 %)

Effect of microbial formulations (jeevamrit, panchgavy and gomutra) in Blackgram

उड़द की फसल में जीवाणुयुक्त खाद (जीवामृत, पंचगव्य एवं गोमूत्र) के प्रभाव का आंकलन

उपचार	फल्लियों की संख्या /पौधा	दानो की संख्या / फल्ली	उपज कु/एकड़	उपज में कमी (%)
रासायनिक उर्वरक का प्रयोग	29.5	6.45	4.55	
घन जीवामृत + पंचगव्य -3%	20.2	5.10	3.36	(-) 26.15
घन जीवामृत + पंचगव्य-6%	21.6	5.35	3.84	(-) 15.60
घन जीवामृत + गौमूत्र -10 %	24.3	4.67	4.06	(-) 10.77
घन जीवामृत + गौमूत्र -20 %	22.32	4.92	4.25	(-) 6.59
घन जीवामृत + तरल जीवामृत-3%	25.13	6.05	3.95	(-)13.19
घन जीवामृत + तरल जीवामृत-6%	27.2	6.12	4.25	(-) 6.59

प्रयोग विधि ; घन जीवामृत 200 किलोग्राम प्रति एकड़ बुवाई के पूर्व एवं बुवाई के 15 , 30 एवं 45 दिनों की फसल अवस्था पर पर्णीय छिड़काव

अतिरिक्त लाभ;

✓ प्रभावी परिणाम- घन जीवामृत(200 किलो) + तरल जीवामृत(6%)

✓ उत्पादन लागत में कमी ; - Rs. 2380 प्रति एकड़

✓ उपज में कमी (-) 6.59 %

Effectiveness of Biopesticide (Neemastra, Brahmastra and Agnisatra) on insect pests in Greengram

मूंग की फसल में जैव कीटनाशी (नीमास्त्र ,ब्रम्हास्त्र एवं अग्नियास्त्र) के प्रभाव का आंकलन

उपचार	स्वस्थ फल्लियों की संख्या /पौधा	स्वस्थ दानो की संख्या / फल्ली	कीट नियंत्रण (%)	उपज कु/एकड़
कोई उपचार नहीं	24.8	9.3		3.82
नीमास्त्र -3 %	28.5	10.7	54.60	4.05
नीमास्त्र -6%	30.6	11.3	58.58	4.67
ब्रम्हास्त्र-3 %	27.2	10.6	52.92	4.22
ब्रम्हास्त्र-6%	25.7	9.1	55.96	4.17
अग्नियास्त्र-3%	22.8	8.3	58.72	3.65
अग्नियास्त्र-6%	26.2	10.1	51.93	4.12

प्रयोग विधि ; प्रथम छिड़काव फसल बुवाई के 25 दिन की फसल अवस्था एवं उसके बाद 15 -15 दिनों के अन्तराल पर दो पर्णीय छिड़काव किया.

अतिरिक्त लाभ;

✓प्रभावी कीट नियंत्रण नीमास्त्र - 6%; - 8.56 %

✓अतिरिक्त उपज ; - 0.85 कु. प्रति एकड़

✓उत्पादन लागत में कमी ; - Rs. 650 प्रति एकड़

Effectiveness of Biopesticide (Neemastra, Brahmastra and Agnisatra) on insect pests in Mustard

सरसों की फसल में जैव कीटनाशी (नीमास्त्र ,ब्रम्हास्त्र एवं अग्नियास्त्र) के प्रभाव का आंकलन

उपचार	फल्लियों की संख्या /पौधा	औसत कीटों की संख्या छिड़काव के पहले /पौधे	औसत कीटों की संख्या छिड़काव के बाद में /पौधे	कीट नियंत्रण (%)	उपज कु/एकड़
रासायनिक दवाई	215	26.5	16.2	38.87	4.05
नीमास्त्र -3 %	323	23.8	13.4	43.70	3.26
नीमास्त्र -6%	369	24.5	12.6	48.57	4.10
ब्रम्हास्त्र-3 %	357	21.7	11.9	45.16	4.01
ब्रम्हास्त्र-3%	448	23.4	13.2	43.59	3.13
अग्नियास्त्र-3%	392	26.2	14.6	44.27	3.85
अग्नियास्त्र-6 %	363	22.7	12.3	45.81	4.02

प्रयोग विधि ; प्रथम छिड़काव प्रति टहनी 5 से अधिक कीटों की संख्या होने पर पहला छिड़काव एवं 10 दिन के अन्तराल पर दूसरा छिड़काव किया

अतिरिक्त लाभ;

✓प्रभावी कीट नियंत्रण नीमास्त्र - 6%; - 9.7%

✓अतिरिक्त उपज ; - .05 कु.प्रति एकड़ (1.23 %)

✓उत्पादन लागत में कमी ; - Rs. 850 प्रति एकड़

✓ उपज में वृद्धि - 1.23 %

Comparative study of Chemical v/s Natural farming in Tomato
टमाटर की प्राकृतिक खेती एवं रासायनिक खेती का तुलनात्मक अध्यन

परीक्षण बिंदु	रासायनिक खेती पद्धति	प्राकृतिक खेती पद्धति
पौधों की ऊँचाई (सेमी)	72.45	64.66
प्रति गुच्छा फूलों की संख्या	5.75	5.48
फलों की प्रथम तुड़ाई	77.06	75.71
फल का औसत वजन (ग्राम)	88.57	87.15
औसत उपज / पौध	3.54	3.25
औसत उपज / एकड़	127.58	114.41
सकल आय(रु./एकड़)	108443	97249
शुद्ध आय (रु./एकड़)	68213	62604
आय : व्यय	2.81	2.70

उपज में कमी (कु./एकड़)- 13.17
उपज में कमी - 10.32 %
प्रति एकड़ लागत में बचत- रु. 5585
प्रति एकड़ आय में कमी – रु. 5610
प्रति एकड़ आय में कमी – 8.22 %
प्रति कु. उत्पादन लागत में कमी रु. 12.52

Comparative study of Chemical v/s Natural farming in Tomato
आलू की प्राकृतिक खेती एवं रासायनिक खेती का तुलनात्मक अध्यन

परीक्षण बिंदु	रसायनिक खेती पद्धति	प्राकृतिक खेती पद्धति
पौधों की ऊँचाई (सेमी)	37.57	40.58
प्रति पौध कन्द संख्या	9.65	9.81
कन्द का औसत आकार(सेमी2)	25.33	26.04
कन्द का औसत वजन(ग्राम)	340.80	357.40
उपज (कु./एकड़)	63.36	52.48
उत्पादन लागत (रु./एकड़)	36920	31350
सकल आय(रु./एकड़)	79200	65600
शुद्ध आय (रु./एकड़)	42280	34250
आय : व्यय	2.15	2.09

उपज में कमी (कु./एकड़) - 10.88
प्रति एकड़ लागत में बचत - रु. 5570
प्रति एकड़ आय में कमी – रु. 8030
प्रति कु. उत्पादन लागत में कमी रु. 14.67

Economics of crop production Chemical v/s Natural Farming
रसायनिक खेती बनाम प्राकृतिक खेती(प्रति/एकड़)

फसल	लागत (रू.में)		उपज(कु.)		सकल आय (रू. में)		शुद्ध आय (रू. में)		आय:व्यय अनुपात	
	प्राकृतिक	रासायनिक	प्राकृतिक	रासायनिक	प्राकृतिक	रासायनिक	प्राकृतिक	रासायनिक	प्राकृतिक	रासायनिक
धान	11640	16090	15.38	18.4	33575	40167	21935	24077	2.88	2.50
गेहूँ	9360	13340	15.45	17.79	32831	37804	23471	24464	3.51	2.83
अरहर	8405	12150	3.25	3.64	22750	25480	14345	13330	2.71	2.10
उड़द	5965	9235	3.24	4.1	27728	35088	21763	25853	4.65	3.80
तिल	6600	10730	2.7	2.4	23315	20724	16715	9994	3.53	1.93
सरसों	7040	10360	4.16	5.1	22672	27795	15632	17435	3.22	2.68
बन्दगोभी	29680	31340	109.48	86.98	104006	82631	74326	51291	3.50	2.64
आलू	31350	36920	52.48	63.36	65600	79200	34250	42280	2.09	2.15
प्याज	28900	33860	76.83	87.84	96038	88355	67138	54495	3.32	2.61
टमाटर	34645	40230	114.41	127.58	97249	108443	62604	68213	2.81	2.70
हल्दी	28945	34365	79.85	93.5	119775	140250	90830	105885	4.14	4.08

Production cost (Rupees / Quintal) in Chemical and Natural Farming
उत्पादन लागत रासायनिक खेती बनाम प्राकृतिकखेती(रूपये/ कु.)

फसल	रासायनिक कृषि पद्धति	प्राकृतिक कृषि पद्धति	लागत में कमी प्रति कु.
धान	874	757	118
गेहूँ	750	606	144
अरहर	3338	2586	752
उड़द	2252	1841	411
तिल	4471	2444	2026
सरसों	2031	1692	339
बन्दगोभी	286	271	15
आलू	597	583	15
प्याज	441	376	65
टमाटर	315	303	13
हल्दी	368	362	5

Activities/ Programme organized for promoting Natural farming
रासायन मुक्त प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने हेतु केन्द्र द्वारा की गई गतिविधियाँ एवं प्रमुख कार्यक्रम

गतिविधि/ कार्यक्रम	कार्यक्रम संख्या / क्षेत्र (एकड़)	कृषक संख्या
➢ कृषक प्रक्षेत्र	05	50
➢ प्रदर्शन कार्यक्रम	12 एकड़	74
➢ कृषक प्रशिक्षण	23	318
➢ विधि प्रदर्शन	23	1321
➢ कृषक संगोष्ठी	34	2378
➢ जागरूकता कार्यक्रम		
जिला स्तर	01	251
विकासखण्ड स्तर	07	1082
पंचायत स्तर	26	652
➢ राष्ट्रीय कार्यशाला	01	165
➢ जीवाणु खाद तैयार करने हेतु प्रयोगशाला की स्थापना	01	-
➢ प्राकृतिक खेती पर अभिनव प्रयोग एवं अवलोकन	14	3762

रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती - गतिविधियाँ एवं प्रमुख कार्यक्रम

कृषक संगोष्ठी

जीवाणु खाद तैयार करने हेतु प्रयोगशाला

कृषक प्रशिक्षण

विधि प्रदर्शन

कृषक प्रक्षेत्र

National Workshop on Chemical free Natural Farming
राष्ट्रीय कार्यशाला " रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती " फ़रवरी 26- 27 , 2022
संख्या - 165

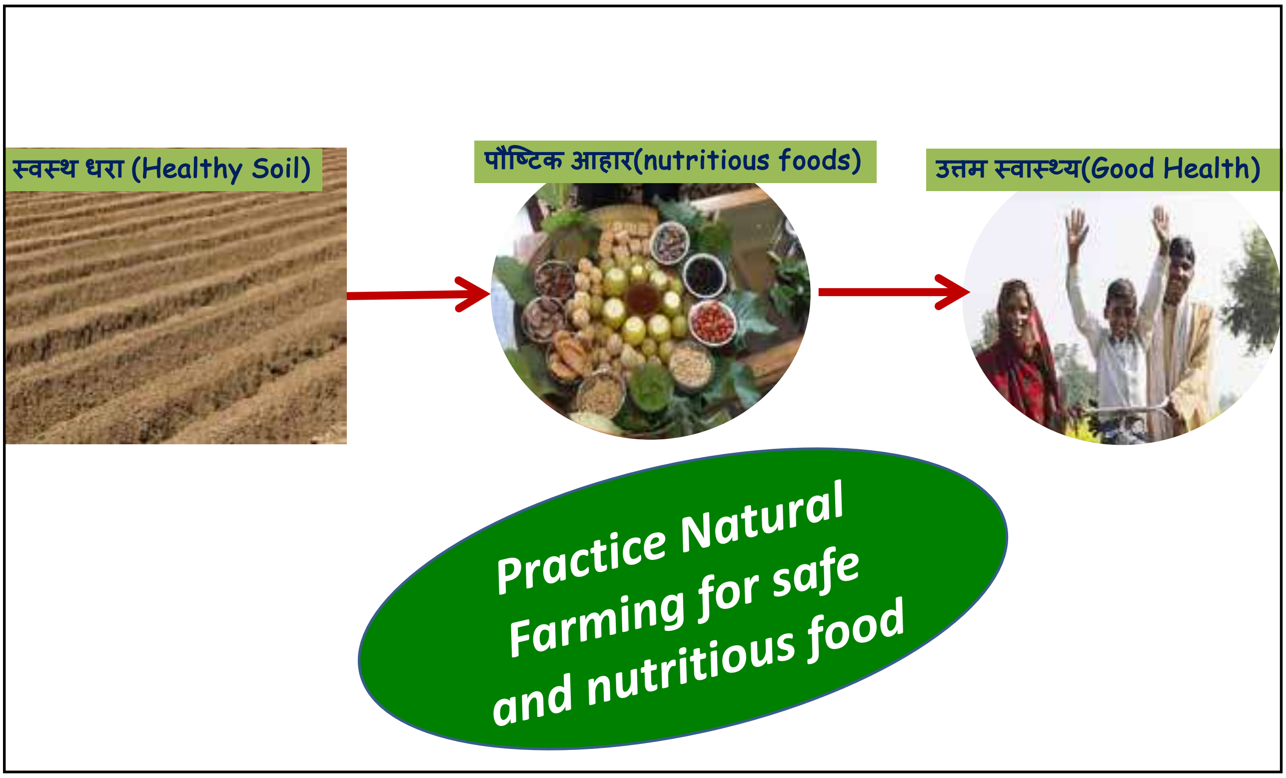
स्वस्थ धरा (Healthy Soil)
पौष्टिक आहार(nutritious foods)
उत्तम स्वास्थ्य(Good Health)
Practice Natural Farming for safe and nutritious food

Keynote Speech by Padma Shri Uma Shankar Pandey on “‘Har Khet Mei Med, Med Par Ped.”

Padma Shri Uma Shankar Pandey is a Social Worker from Jankhi Village in Banda District and is known for his work and contributions to groundwater conservation. He launched the ‘Khet mein Med, Med Par Ped (Trees on weirs in farms)’ campaign in 2005, to conserve water by constructing bunds in the fields. He was awarded the Padma Shri by the Indian Government in 2023 for his contributions to social work. He has been associated with Nanaji and the Institute for over 25 years.

पूज्य नानाजी को नमन

गंगा और यमुना के देश में पानी संकट की बड़ी बात है। इस वर्ष में सी-20 के तहत ‘पर्यावरणीय अनुकूल जीवन’ और ‘जलवायु परिवर्तन’ विषय लाये गये हैं। दोनों विषय पानी और मिट्टी के हैं। वैज्ञानिक विधि कहती है कि पानी मिट्टी को नहीं चाहिये, पौधे को चाहिये। पर्यावरण कहता है कि पानी मिट्टी को भी

चाहिये और पेड़ को भी चाहिये। पूज्य नानाजी के आशीर्वाद से हमने दो-तीन प्रयोग किये। आज पूरे देश में मेड बंदी विधि भले मेरे नाम से जानी जाती हो लेकिन यह पुरखों की विधि है और खासकर यह ऐसी विधि है जिसमें कोई तकनीक नहीं लगती। अपना फावड़ा उठाइए, अपनी डलिया उठाइए और अपने खेत पर जाइए, 20 गोलाउआ मिट्टी रखकर अपने घर चले जाइये। बुजुर्ग भी कर सकते हैं, बच्चे भी कर सकते हैं, महिलाएं भी कर सकती हैं। बहुत बड़े खेत की जरूरत नहीं है और ना बड़े खेत बचे हैं। हमारे देश में औसत आधा हेक्टर जमीन एक व्यक्ति के हिस्से में है, इसलिये एक बीघे, दो बीघे, ढाई बीघा का किसान भी किसान है जो भारत की परिभाषा है किसानी की मैं मानता हूँ कि व्यक्ति का जीवन जल से शुरू होता है और जल में खत्म हो जाता है।

इस भवन में जो हम बैठे हैं इसमें निर्माण में सीमेंट भी लगा है, बालू भी लगी है, ईंटा भी लगा है, लोहा भी लगा है, लेकिन अगर पानी नहीं होता तो बनता क्या? नहीं बनता था। इसलिये बेजान को भी पानी जोड़ता है। हमारे पूर्वज जोड़ने की बेजोड़ तकनीक जानते थे। जिसमें पहाड़ के ऊपर कुआं बनाते थे, तालाब बनाते थे। आज के वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण बाँध का है, जो 100 बरस में खत्म लेकिन हजार सालों में पुरखों की तालाब नहीं टूटे, पहाड़ के कुएं नहीं टूटे। आखिर वह कौन सी तकनीक थी? ट्यूबवेल 50 साल में खत्म हो जाता है और हैंडपंप 15 साल में खत्म। माने उसको दूसरे स्थान पर शिफ्ट करिये या पाइप बदलें। ऐसा क्यों हो गया? दुनिया का कोई वैज्ञानिक बादल नहीं बना पाता, बादल ला नहीं पाता, बादल वापस नहीं कर पाता, बादल को दो भागों में नहीं बांट पाता। लेकिन हमारे जो ऋषि थे, वो बादल को बनाते थे, बादल को बुलाते थे। महाराज कालिदास का मेघदूत पढ़ा होगा आपने वे बादल को बुलाते थे। आपके तानसेन जी ऐसी तकनीक जानते थे जो मेघ राग के माध्यम से बादल के पानी को बरसाते थे, दीपक राग के माध्यम से दीपक को जलाते थे, यह विधियां हमारे यहाँ थीं।

इस देश में पांच जल योद्धा पैदा हुए–पहले महाराज भगीरथ, जो गंगा लेकर आये। दूसरे माता अनुसूइया जो मंदाकिनी लेकर आईं। तीसरे जल योद्धा महाराज भोज जिन्होंने 65000 हेक्टर में 65 बावड़ी को जोड़कर भारत की सबसे बड़ी सामुदायिक झील बनाई। इसके बाद महारानी दुर्गावती जिन्होंने गोंडवाना में समुदाय के आधार पर हजारों तालाब बनाये और पांचवी जल योद्धा महारानी अहिल्याबाई होल्कर जिन्होंने हर तीर्थ स्थल में भारत के जल संरक्षण संसाधन बनाये अब प्रश्न यह उठता है कि जब व्यक्ति पैदा होता तो पानी से नहाया, जब अंतिम संस्कार होगा तो पानी से होगा हमारे पूर्वज चारों धाम जाते हैं यात्रा में तो क्या लाते हैं, जल लाते हैं।

हम श्रीमद्भागवत पुराण सुनते हैं, तो सबसे पहले क्या निकालते हैं, कलश यात्रा निकालते हैं। सर दर्द हो, भयंकर गर्म हो तो क्या करते हैं, पानी की पट्टी लगाते हैं। पेट दर्द कर रहा हो, तो क्या करते हैं? गुनगुना पानी पी लें। आंखें खराब हो जाती मतलब पानी खत्म तो आदमी अंधा। सब्जी में सबसे अधिक टमाटर में

पानी होता है, पौधे से फल लगाकर मानव के हृदय में पानी, दिमाग में पानी, पानी से नमक, पानी से शक्कर, पानी से बिजली, पानी से अमृत अर्थात् सब कुछ पानी से निकला है। बूंद की जो महिमा है, वह अपरम्पार है। यह काया, माया, छाया, यह क्या है? बूंद का प्रभाव है। यह तालाब में ऊपर से गिरती है, तो एक बूंद होती है लेकिन यह बूंद इकट्ठी होती है तो कहीं तालाब भरती हैं, कहीं कुआं भरती हैं, कहीं नदियां भरती हैं और कहीं समुद्र बनती हैं। हम सबको जो पुरखों ने पानी के जोड़ने के उपाय बताए हैं, वह बगैर सरकार की सहायता के आप कर सकते हैं। जैसा आप जानते हैं कि पूज्य नानाजी का आशीर्वाद हमको मिला। जो कुछ आज हम हैं वो पूज्य नानाजी के आशीर्वाद से हैं। इसलिये जब अभय भैया या वसंत दादा मुझे बुलाते हैं, मैं चला आता हूँ। संस्थान पानी पर काम कर रहा है, इस बात की मुझे प्रसन्नता है। अभी हम 8 दिन पहले इसी विषय पर पूरे बुंदेलखंड की NGO में बैठे थे, संवाद किये थे, परसों लखनऊ में वर्ल्ड बैंक के साथ एक बड़ा कार्यक्रम था, पूरे देश भर के लोग आये थे और पद्म श्री के रूप में, मैं भी आमंत्रित था। तो यहाँ तो आना ही था यह हमारा घर है। बाहर हम जाते हैं, पूरे देश भर के विश्वविद्यालय में बताते हैं। तमाम सारे स्थानों पर वक्ता के रूप में पहुंचते हैं, पर यह हमारा परिवार है। यहाँ सीखा है, यह हमारी गुरु परंपरा का स्थान है तो मैं आपसे दो चार-छः बातें जरूर करूँगा। पानी सरकार का मुद्दा नहीं, समाज का मुद्दा है और पानी हमें खुद रोकना है।

पूज्य नानाजी कहते थे–'घर का पानी घर में, गाँव का पानी गाँव में, खेत का पानी खेत में, जंगल का पानी जंगल में, नदी का पानी नदी में', यहाँ बहुत सारे विद्वान बैठे हैं, जो मुझसे अधिक जानते हैं, मुझसे ज्यादा उनका अनुभव है, पर किसान से बड़ा कोई वैज्ञानिक नहीं है। मेरे पिताजी किसान थे, बाबा किसान थे और हम लोग एक प्रतिशत परिवार ही रहा है।

SDG पर यह जो संस्थान द्वारा काम हो रहा है, तो इस नाते मैं मानता हूँ कि वसंत भैया की इच्छा यह थी कि समाधान खोजे जायें और समस्या जहाँ वहीं समाधान खोजा जाये। तो यह जो पिछले तीन वर्षों से एक प्रयास किया जा रहा है संयुक्त राष्ट्र संघ की सतत विकास की प्रक्रिया को लेकर SDG गोल के रूप में वसंत भैया हम सबको यहाँ बिठाते हैं। उनका उद्देश्य है कि उसके पीछे कुछ परिवर्तन हो। जैसे हमारा 80% पानी अगर खेती में लगता है तो उसको हम 40% कैसे कर सकते हैं। एक बात और है, हमारी दुनिया में जो जनसंख्या है वह 18% है और पीने योग्य पानी हमारे पास तीन परसेंट है। एक आदमी को जीवन में पानी कितना लगता है? पीने के लिये मात्र 80 हजार से 90 हजार लीटर लगता है। अर्थात् प्रतिदिन दो से ढाई लीटर पानी लगता है, और आदमी अपने जीवन में प्रतिदिन बर्बाद कितना करता है, पांच सौ लीटर नहाने-धोने में, कपड़ा धोने में, पशु के लिये। हम उसको 'मीठे पानी को' कैसे कम कर सकते हैं? पहले अमृत बरसता था पर अब वर्तमान में तेजाब बरसने लगी है। नमक का जो क्षेत्र था वो समुद्र के 40 किलोमीटर के इलाके में था। अब नमक का एरिया कितना बढ़ गया, अब 300 किलोमीटर के एरिया में

नमक आ गया है। द्वारिका से कोरंगा होकर के आप जाइए तो उसका एरिया बढ़ रहा है। तेजाब बरसने लगी है यह शुभ संकेत नहीं है।

दक्षिण अफ्रीका का Capetown एक अच्छा खूबसूरत शहर पानी न होने कारण खत्म हो गया। और वह Capetown हम सभी के लिये एक संकेत है। हमारे यहाँ का चेन्नई भी है, दिल्ली भी है। वह दिल्ली जो कभी बुंदेलखंड में मालगाड़ी से पानी भेजती थी, वह आज स्वयं संकट में है। हमें बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि पूज्य नानाजी का जो आशीर्वाद बुंदेलखंड में पानी को लेकर हुआ, उससे बुंदेलखण्ड में बड़ा परिवर्तन आया। मैं तो यह मानता हूँ कि नानाजी छठवें जल योद्धा है। जिन्होंने हम जैसे तमाम कार्यकर्ता तैयार किये और उसे बुंदेलखंड में जहाँ पर मालगाड़ी से पानी लाने की प्रक्रिया शुरू की गई थी, उसी बुंदेलखंड के चित्रकूट मंडल ने वर्ष 2023 में उत्तर प्रदेश सरकार को सर्वाधिक गेहूँ बेचा है। यह बड़ी बात है, वहाँ पर जहाँ बांदा से मालगाड़ी से या सवारी गाड़ी से मानिकपुर पानी जाता था, अब गेहूँ बेचा जा रहा है, यह बड़ी उपलब्धि है। कृषि विज्ञान केंद्र गनीवां का सहयोग माने या भारत सरकार का माने या वैज्ञानिकों का माने या किसानों का माने, 25 लाख क्विंटल धान 5 साल में राजापुर में सरकार को बेचा है। यह भी बड़ी उपलब्धि है।

हम सभी जानते हैं और समझते हैं कि हम सबको काम क्या करना है, हमारे छोटे छोटे खेत हैं। अब देखें कि नदियाँ कैसे सूख गई, नदियों का संबंध तो भगवान के साथ था, शंकर जी का नाम गंगाधर है। भगवान प्रभु राम की सारी यात्रा नदियों के समीप रही और सभी सभ्यताओं का जन्म नदी के किनारे हुआ। हम सब जानते हैं कि माता लक्ष्मी के पति विष्णु भगवान पानी में रहते हैं। कृष्ण भगवान का नाम कालिंदी में जुड़ा है। तो राम भगवान, कृष्ण भगवान, शिव जी, ब्रह्मा जी, विष्णु जी सबका पानी में वास है। पानी पवित्र करता है, पानी से बड़ा कोई मंत्र नहीं है। क्योंकि समय की मर्यादा होती है, तो मैं अपनी बात बीच में समाप्त करूंगा। यहाँ मैं विशेषज्ञ के रूप में नहीं, आपके बीच का छोटा-सा कार्यकर्ता के रूप में आया हूँ। तो मैं जो आपके सामने कह रहा था बुंदेलखंड में आप सब ने जो प्रयास किये हैं, उसे सबके प्रयासों से बड़ा परिवर्तन आया है। पुराने समय से यहाँ बुंदेलखंड में दुख में तालाब बनते थे, सुख में तालाब बनते थे, उत्सव में तालाब बनते थे। यह पानी बचाने का ज्ञान यहाँ परम्परा से है। जितना ज्ञान सामान्य किसान को है, उतना शायद वैज्ञानिक को न हो, क्योंकि किसान को व्यवहारिक ज्ञान होता है।

किसान के पास अपना अनुभव है। यह जो हमारे हिन्दी कैलेण्डर के महीने हैं, बड़े महत्वपूर्ण माह है। अप्रैल मई जून यह पानी बचाने के महीने हैं। अप्रैल मई जून और जुलाई इसमें अगर हमने पानी बचा लिये तो साल भर की जरूरत पूरी हो जायेगा। एक मिशन हम लोग भी करने जा रहे हैं पानी का पहला दुनिया का विश्वविद्यालय बना रहे हैं। यह बड़ा अनूठा प्रयोग है। हमें आगे की युवा पीढ़ी को, जिसे पानी की चिंता है, उसे sensitize करना है। हमने अपने अपने जीवन काल में कुआं देखा था, हमने रहट चलते हुए देखा है, मिट्टी के भी रहट देखा है फिर लोहे का रहट भी देखा है और तालाब भरे हुये देखे हैं, पर नई पीढ़ी शायद

यह नहीं देख पाये। पानी का उचित प्रयोग बहुत जरूरी है, मेरी मां कहती थी 100 ग्राम पानी में नहाओगे कि एक क्विंटल पानी में नहाओगे, लेकिन 100 ग्राम पानी में नहाओगे तो बहुत बढ़िया नहा लोगे। तो मैं पूछता था वे, कैसे, तो वे बताती थी कि तालाब में जो डूब के चले आओ कितना पानी लगेगा। बस 100 ग्राम लगेगा और अगर बटन दबाकर नहाओगे तो जब तक साबुन लगाओगे तब तक 300 लीटर पानी भर जायेगा। क्या तकनीकी पुरखों के पास थी, वह कुएं जिनका पानी पीकर के हम बड़े हुये, जो हमें अमृत पिलाये हैं, वे आज रो रहे हैं गाँव में। उसमें पानी नहीं है। पानी बनाया नहीं जा सकता, केवल बचाया जा सकता है। पेड़ बनाया नहीं जा सकता, पेड़ लगाया जा सकता है। तो यही काम हम कर रहे हैं। हमें जीवन चुनाव नहीं लड़ना है राजनीति नहीं करनी है कोई पुरस्कार के लिये आवेदन नहीं करना है कोई हमारी एनजीओ नहीं है, कोई संस्था नहीं है, कोई कार्यालय नहीं है। एक रुपये का अनुदान नहीं है, किसान का बेटा हूँ, खेती होती है मेरे घर में। काहे को किसी और काम में पड़ूं। मेरी जिम्मेदारी है कि मेरे गाँव का पानी न जाने पाये। मेरी जिम्मेदारी है कि मैं अपने लिये सब्जी पैदा करूँ। मेरी जिम्मेदारी के अपने लिये भोजन पैदा करूँ। अगर मेरी जिम्मेदारी है तो सब की जिम्मेदारी है। भारत गाँव का देश है, हमारे यहाँ सब कुछ था। आज आप देखिए कितना कठिन दौर गुजर रहा है। पानी है, तभी कृषि है। पानी है तब सब कुछ है। इस सृष्टि में यदि पानी को छोड़ देंगे, तो कुछ भी नहीं बचेगा। हमारे पुरखों की जो ट्रेडीशनल वॉटर कंजर्वेशन Technique थी, उसका कोई जोड़ नहीं है। इस गंगा और यमुना के देश में दूध नहीं बिकता था, दही नहीं बिकता था, लेकिन आज आप जाइए किसी गाँव में जाइए ना दूध मिलेगा, ना मट्ठा मिलेगा, ना दही मिलेगी। हजार बोतल पानी की मिलेगी। हो सकता है कि मेरी बात गलत हो मेरे गाँव की तो स्थिति मैंने नजदीक से देखा है कि बोतल घर-गाँव में बिक रहा है। क्या गरीब पानी खरीद पायेगा? हिम्मत कर खरीद के पी भी लेगा तो खेत तो खाली पड़े रहेंगे। और दुनिया की कोई फैक्ट्री इस देश में 140 करोड़ आदमी के लिये भोजन नहीं दे पायेगी गेहूँ तो खेत में ही होगा। चावल तो खेत में ही होगा, सब्जी तो खेत में ही होगी तो पानी का संरक्षण परम आवश्यक है। और जो हमारे पुरखों की जो जल जोड़ने के तरीके थे, वह सामुदायिक थे। तालाब बनाने को अनुदान नहीं मिलता था, कुआं बनाने हेतु कोई अनुदान नहीं था, पेड़ लगाने के लिये कोई अनुदान नहीं था। ये सामूहिक संपत्ति थी, सब की संपत्ति थी, गाँव भर की संपत्ति थी। सारा गांव इनकी चिंता करता था। तो आज पुनः हम सबको मिलकर के यह प्रयास करना है। कभी अवसर रहेगा तो विस्तार से अपनी बात रखूंगा। कामतानाथ जी की भूमि चित्रकूट धाम है और दीनदयाल शोध संस्थान हम लोगों के लिये मार्गदर्शक है, बुंदेलखंड के लिये मार्गदर्शक हैं। भगवान राम के बाद एक महापुरुष का यहाँ आगमन हुआ वो नानाजी थे। वह देश के पहले ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें ग्रामीण विकास के लिये, सेवा के लिये भारतरत्न मिला, पद्म विभूषण मिला। इसलिये मैं मानता हूँ कि नानाजी के लिये हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि यह चित्रकूट ग्रामीण विकास एवं विशेष रूप से जल संरक्षण पर देश को एक दिशा दे। पानी पर रहीम ने कहा था कि –

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

इसी भूमि पर तुलसी बाबा ने कहा था–

'क्षिति जल पावक गगन समीरा। पांच तत्व से बना शरीरा।।'

इसी भूमि पर कबीर ने कहा था–

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जात।

एक दिन छिप जायेगा, ज्यों तारा प्रभात।।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आप सबका स्वागत करता हूँ, वंदन करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ। जल के लिये फिर मिलेंगे और जल के लिये चल, आप सब चलिए जल के लिये। हम एक बड़ा प्रयोग कर रहे हैं, दुनिया का पहला पानी का विश्वविद्यालय बनाने की योजना है और अभय भैया एवं दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से हम इसे आकार देंगे और हम आने वाले मई-जून के बीच में पानी के 500 पहरेदार एक साथ बैठना चाहते हैं, आप भी आइए। जो पानी बचाएगें वो धनवान होंगे, क्योंकि लक्ष्मी के पति पानी में रहते हैं। मेरी मां कहती जिस घर में 10 मन पानी होता है पूरा घर पानीदार होता है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

Deendayal Research Institute Interventions in 'How We Grow'

Shri Narendra Pratap Singh

Farmer, Village Amha, Majhgawan, Satna (M.P.)

His is a commendable effort and example to make agriculture profitable through the adoption of crop diversification and to inspire other farmers in the area to adopt this type of agricultural method through their successful experiences.

सबसे पहले पूज्य नानाजी के चरणों में प्रणाम करते हुए आज के इस कार्यक्रम में पधारे सभी महानुभावों का मैं हार्दिक स्वागत वंदन एवं अभिनंदन करता हूँ। मैं चित्रकूट क्षेत्र के गुप्त गोदावरी क्षेत्र का रहने वाला हूँ। सबसे ज्यादा तो हमारे एरिया में जो खेती होती है, मुझे लगता है 50% एरिया में प्राकृतिक खेती ही होती है। शेष एरिया जो बचा है तो उसमें कुछ रसायन का प्रयोग होता है। जिसमें हमारे यहाँ किसान केवल धान और गेहूँ में ही करते हैं। 50% एरिया जो हमारे यहाँ का है उसमें ज्वार का एरिया ज्यादा है। ज्वार में हमारे यहाँ किसान तीन Variety करते हैं जो तीनों वैरायटी देसी हैं। देसी में एक वैरायटी है जो खाने के लिये प्रयोग की जाती है और दूसरी एक सफेद ज्वार का प्रयोग करते हैं। सफेद ज्वार में एक एक दाना वाली ज्वार होती है और दूसरी दो दाने वाली। एक दाने वाली ज्वार जो होती है, हमारे यहाँ वह पूरे क्षेत्र में होती है। इसका किसान सबसे ज्यादा उत्पादन करते हैं। इसका उत्पादन मुझे लगता है 30 से 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के दर से होती है। और शेष जो उसका डंठल प्रयोग किया जाता है वह चारे के लिये प्रयोग होता है। ज्वार का रेट हमारे यहाँ जो प्रोसेसिंग करके भेजते हैं तो उसका रेट हमें इस साल जो मिला सफेद ज्वार का एक दाना वाली का 4500 से लगाकर 7000 क्विंटल तक मिला। बाहर के व्यापारी आकर गाँव-गाँव से खरीद कर ले गये हैं। अभी कुछ

किसानों ने ज्वार रख रखी है। उसका रेट वह चाह रहे हैं कि 9000 से 10000 क्विंटल तक जायेगी, व्यक्तिगत तौर पर हमने भी बोया था, तो हमारे पास 15 से 20 क्विंटल हुई थी हमने कुछ ज्वार बेच दिया था। 10 से 15 क्विंटल शेष अभी भी रखी है, उसको चाह रहे हैं कि बाद में बेचेंगे शायद और रेट बढ़ जाये। इसके अलावा हमारे यहाँ थोड़ी मात्रा में कुछ कोदो का भी होता है, सावा, काकून, मोटे अनाज इस एरिया में होते हैं और हमारे कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों का आना-जाना भी रहता है। शेष दीनदयाल परिवार की ओर से हम यह चाह रहे हैं कि हमारे क्षेत्र में कोई प्रोसेसिंग यूनिट हो जाये ज्वार के विषय में तो इसका रेट हमें और मिलने लगेगा और धन्यवाद।

Shri Deependra Jaiswal

Village Hirondi, Majhgawan, Satna (M.P.)

Despite limited resources, you established yourself as an ideal self-reliant and successful farmer by doing natural farming based on cow rearing in difficult circumstances. Your efforts towards family self-reliance are commendable and exemplary.

आप सबको नमस्कार हम अपने गाँव में जैविक खेती करते हैं। 7 एकड़ में हम 3 वर्ष से खुद करते हैं। हम KVK द्वारा प्रशिक्षण लिये हैं। 3 वर्ष हो गया नेगी सर ने हमको प्रशिक्षण दिए हैं। हमने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से 40 से 45 महिलाओं को भी जैविक खेती के बारे में प्रेरित किये हैं। वह अपने घर में अपने लिये सब्जी के उत्पादन भी करते हैं और साथ में खेती भी करते हैं। जैविक तरीके से अच्छा उत्पादन भी ले रहे हैं लेकिन अभी रेट अच्छा नहीं मिल रहा है। जैविक खेती में जो भी उत्पादन होता है। उसका सही ढंग से रेट नहीं मिल रहा है बस समस्या केवल यही है। सहयोग हमारा अच्छा रहता है, KVK का फुल सपोर्ट भी रहता है। जितनी महिलायें रहती है सबको प्रशिक्षण मिल जाता है, समय-समय से। आज परिवर्तन ये हुआ कि लागत में बहुत अंतर हुआ है। पहले रासायनिक विधि से बहुत-बहुत लागत लगती थी और उत्पादन भी उतना नहीं होता था। आज जैविक तरीके से खेती करने में लागत तो हल्की ज्यादा नहीं लग रही है लेकिन उत्पादन ज्यादा होता है, और खेत भी अच्छे हैं, पहले से वह अच्छे रहते हैं। उसमें पानी ज्यादा नहीं लगता है, नमी रही होती है पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचता है। हमने बहुत अंतर पाया रासायनिक विधि की तुलना में जैविक विधि से हमने उससे ज्यादा उत्पादन पाया है। हमने पिछले वर्ष में 48 क्विंटल धान उगाई थी। गोबर में जीव अमृत दोनों बनाते हैं। धन्यवाद।

Shri Sushil Chatruvedi, Session Moderator, What We Grow.

Shri Sushil Chatruvedi, is Director Research, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi. In Sushil ji long career, he has served in a variety of post, including that of Acting Vice Chancellor of the Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi. His speciality is in 'Genetics & Plant Breeding'.

आज बहुत ही अच्छी चर्चा हुई। मैं नेचुरल फार्मिंग के बारे में एक बात अवश्य कहूंगा कि हम लोग जब किसी की प्रशंसा करते हैं तो हम लोगों को hype क्रिएट नहीं करना चाहिये। आज मैं किसी से बात कर रहा था, बहुत अच्छी बात किसी ने कही कि जब हम भगवान राम की प्रशंसा करते हैं, तो वे वास्तव में हैं भी प्रशंसा के योग्य, लेकिन हम रावण में भी इतनी खूबियां देखने लगते हैं कि भगवान राम भी पीछे हो जाते हैं। ऐसे ही जो भगवान राम में कमियां खोजने लगते हैं तो इतनी कमियां खोज देते हैं कि लगता है कि कहीं कुछ गलत ही कर रहे हैं। ऐसा ही हमारी जो है प्राकृतिक खेती की बात है इसमें भी हमें अपने व्यवहार में थोड़ा संतुलन लाने की आवश्यकता है। क्योंकि हमारा उद्देश्य क्या है? हमारा उद्देश्य है कि हमें अपने लालच को रोकना है यानि कि जिसका जो भाग है उसको वह मिलना चाहिये। हम खेती करते हैं, प्राकृतिक खेती जब होती थी तब क्या था कि किसी में लालच नहीं था, एक हद तक लालच को हम नियंत्रित

किये थे। हमारा अधिकार है अन्न पर क्योंकि हम किसान हैं, हमने अपने खेत को जोता है, बोया है, तो जो अन्न उत्पादन हो रहा है उसमें मेरा अधिकार है। जानवरों का जिनका हमने सहयोग लिया है, उनका अधिकार भूसे पर है। अर्थात् थोड़ा 10% अन्न पर उनका भी अधिकार है। तीसरा अधिकार था भूमि का है तो जो हमारे फसल के अवशेष थे वह हम भूमि में दोबारा उसे खेत में मिलाते थे। जो 'बायो वेस्ट' जिसकी हम बात करते हैं चाहे वह मानव जनित हो चाहे वह पशु जनित हो इसको भी दोबारा उसी खेत में ले जाते थे ताकि खेत की उर्वरा शक्ति और उसका जो स्ट्रक्चर था वह जैसा था बना रहता था। और यह सतत प्रक्रिया चलती थी, हमें कभी रसायन की आवश्यकता नहीं पड़ी। जब मानव का लालच बढ़ा तो हमने खेत में चाहे वह परती की बात करें, चाहे जो फसल के अवशेष, उनको हमने जलाना शुरू कर दिया। जब जलाना शुरू कर दिया तो आज परिणाम है कि हम दोबारा जहर मुक्त खेती की बात कर रहे हैं, प्राकृतिक खेती की बात कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती सफल होगी, इसमें कोई शंका की बात नहीं है। प्राकृतिक खेती सफल होगी, बिल्कुल सफल होगी केवल उसमें दो तीन चीज करने की जरूरत है। इनमें से कुछ वैज्ञानिकों को करने की जरूरत है और कुछ सरकार को करने की जरूरत है तथा कुछ किसान भाइयों को करने की जरूरत है। अभी तक कल मैं बात कर रहा था एक सज्जन से कि मैं सुबह मंदाकिनी में नहीं नहा सकता हूँ क्योंकि गीजर के पानी से नहाने की आदत है, दिवाली के दिन से गीजर स्टार्ट हो गया और जो बसंत पंचमी आई तब तक चलाया इस बार ठंड अधिक रही तो शिवरात्रि तक चलेगा। अगर मुझे 5:00 बजे मंदाकिनी में नहला देंगे तो पक्का है मैं बीमार हो जाऊंगा। यही हमारी नेचुरल फार्मिंग का है, अचानक से हम किसी खेत में नेचुरल फार्मिंग शुरू कर देते हैं और एक साल बाद कहते हैं भाई यह तो बेकार है, बेकार का सौदा है। इसमें कोई लाभ नहीं है, ऐसा बिल्कुल नहीं, इसमें कम से कम 2 से 3 वर्ष का समय या चार से पांच फसल चक्र की बात करें, सी टू सी मतलब पांच फसलें अगर आप ले लेंगे तो नेचुरल फार्मिंग के लिये वह खेत ठीक होगा। अब उसमें जरूरत क्या है जो अभी आपने कहा कि हम चाहे वह गोबर की खाद की बात करें, चाहे हम गोमूत्र की बात करें, चाहे गाय के गोबर की बात करें और चाहे गाय को बैठाने की बात करें, यह सारी प्रक्रियाएं उसी में शामिल हैं। अगर हम यह करेंगे तो खेत की कंडीशनिंग जिसको हम कहते हैं। Acclimatization यह एक प्रक्रिया है कि हम उसके अनुकूल खेत को ढाल रहे हैं। तो कम से कम पांच समय फसलें उसमें लेनी है तब यह इसके लायक होगा। अगर पांच फसलों के अवशेष आपने उससे मिलाये हैं पांच फसलों के समग्र का जो समय मिला उसमें पर्याप्त मात्रा में जो गायें रखी है। गाय का इस कृषि में बड़ा महत्व है। पर आज पूरे गाँव में चले जायेंगे तो उतनी मात्रा या भैंस नहीं हैं। इस कृषि में गाय के गोबर की या भैंस के गोबर की बेस्ट है उनकी आवश्यकता बढ़ेगी। इसके अलावा हम वैज्ञानिकों को यह करने की बिल्कुल आवश्यकता है कि हम देसी प्रजातियों को बढ़ावा दें। हमारी देसी प्रजातियां अच्छा काम करती थी। क्योंकि वे यहाँ के Agro climatic condition के अनुकूल हैं। एक पैरेलल सेशन अभी चल रहा है जिसमें हमारे डॉक्टर त्रिलोचन महापात्रा जो अभी पौध संरक्षण एवं कृषक अधिकार अधिकरण के अध्यक्ष हैं। वे बता रहे हैं कि कैसे पौधों की प्रजातियों का संरक्षण किया जाता है। आज अगर हम उन सुरक्षित प्रजातियों को दोबारा लेकर नेचुरल फार्मिंग के जो हमारे प्लॉट्स बना रहे हैं, उनमें अगर हम उनका इवैल्यूएशन करेंगे तो कोई कारण नहीं कि हम कुछ ऐसी प्रजातियों को चिन्हित कर सकेंगे, जो नेचुरल फार्मिंग के लिये उपयुक्त होगी। लेकिन जिन प्रजातियों को

विकास ही हमने रसायन दे के किया है, तो स्वाभाविक रूप से उनकी खेती जब नेचुरल तरीके से करेंगे तो उपज कम होगी। इसलिये आज वैज्ञानिकों के लिये आवश्यकता है कि जब हम Organic या Natural Farming की बात करें तो उसके लिये जो सही प्रजातियां हैं उनको हम विकसित करें। और जो आज के दिन करने की आवश्यकता है कि जो पहले से ही प्रजातियां विकसित है उनको केवल एक साल अथवा दो साल की इंतजार करें, उनकी परफॉर्मेंस देखें कि नेचुरल फार्मिंग की कंडीशन में कौन सी प्रजातियां अच्छी होगी। अभी नेगी जी ने बहुत बढ़िया प्रेजेंटेशन किया। मैं उसमें एक चीज देख रहा था कि जहाँ-जहाँ legumes की बात आई, दलहनी फसलों की बात आई, चाहे वह मेथी की बात कही हो, चाहे उड़द की बात कही हो, चाहे मूंग की बात कही हो, तो जहाँ भी दलहनी फसलों का समावेश किया गया, Natural Farming के रिजल्ट अच्छे आये। क्योंकि इनकी जो जड़े हैं वह अंदर तक जाती है। तो स्वाभाविक रूप से जब भी हम Natural Farming की बात करेंगे। तो बिना दलहनी फसलों के हम अपनी बात पूरी नहीं कर सकते हैं। दलहनी फसलें भी लगभग डेढ़ दर्जन हैं, अगर हम इनका समावेश करेंगे तो Natural Farming चलेगा। अब रही श्री अन्न की बात तो मैं कहूँगा कि श्री अन्न पहले भी थे, आज भी है और आगे भी रहेंगे। गरीब की थाली का भोजन जब अमीर की थाली में पहुंचने लगेगा तो इसकी Importance अपने आप बढ़ जायेगी। केवल डर से लोग काम करते हैं। आज सुबह मुझे किसी ने पूछा कि गेहूं के लिये बहुत एक बात चल रही है कि हम यह गेहूँ क्यों खा रहे हैं? यूरोप में लोग परेशान हैं, भारत में एक लाख में से एक व्यक्ति ऐसा है जिसको ग्लूटेन से एलर्जी होती है। हम गेहूँ में जौ मिलाकर खाते थे। गेहूँ के आटा में क्या करते थे, गेहूँ जौ और चना तीनों मिलकर पिसाई करते थे और यह आटा खाते थे। कभी कोई समस्या नहीं थी। तो श्री अन्य की आगे भी जो महत्व है, अभी कोई चर्चा कर रहा था कि सरकार का कार्यक्रम है एक साल चलेगा, अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष है एक साल 6 महीने और चलेगा फिर उसके बाद खत्म हो जायेगा। पर ऐसा नहीं है, यह चलेगा क्योंकि अब इसका बड़ा उपभोक्ता बाजार बन गया है, अतः श्री अन्न की खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। वसंत भाई का धन्यवाद जिन्होंने मुझे आज आप सबके साथ बोलने का मौका दिया अपनी बात साझा करने का मौका दिया। आपसे बहुत कुछ सीखने को मिला, और जो आज मैंने सीखी स्वाभाविक रूप से मैं अपने विश्वविद्यालय में जाकर, जो हमारे छात्र हैं उनके साथ संवाद करूंगा और उनके बारे में वहाँ भी चर्चा करूंगा। इसी के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ आप सभी का धन्यवाद। सभी को प्रणाम।

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

sdginterventions.org

2 ZERO HUNGER

ZERO HUNGER

Sustainable Development Goal 02

Organization Name: Deendayal Research Institute, INDIA

Name of Intervention: Increasing Production & Productivity of Fruits to Meet Dietary Requirement

Beneficiaries: Marginal Farmers, Rural households

Summary

The purpose of this intervention is to ensure that every farm household in the project region has access to nutritionally rich fresh fruits. The vision is to step up fruit production till the country becomes self-sufficient in the production of affordable fresh fruits while ensuring profits to growers.

Fruits are a rich source of vitamins and micro-nutrients. Unfortunately, according to Indian Council of Medical Research (ICMR), the consumption of fruits in India is a mere 43 kg/capita/year as compared to developed countries like the United States where it is 202 kg/capita/year. The daily per capita consumption of fruits looks more abysmal at 120g/day. Much of the reason for low intake of fruits is due to very poor fruit production for an agrarian country the size of India. Poor availability of fruits also results in high pricing that makes it beyond the reach of an average Indian.

It is against this backdrop, that the Institute has taken up the intervention of encouraging fruit plantations in village wastelands and community lands to achieve nutritional security through self-sufficiency in fruit production. It entails raising awareness among farmers to take up fruit production and marketing in a scientific and professional manner.

Responsibility

The overall responsibility of facilitating and executing the intervention, to grow fruit plantations to meet dietary requirements as also ring in additional income for growers lies with the DRI-appointed *Krishi gyan doot* (KGD) and the district *Krishi Vigyan Kendra*.

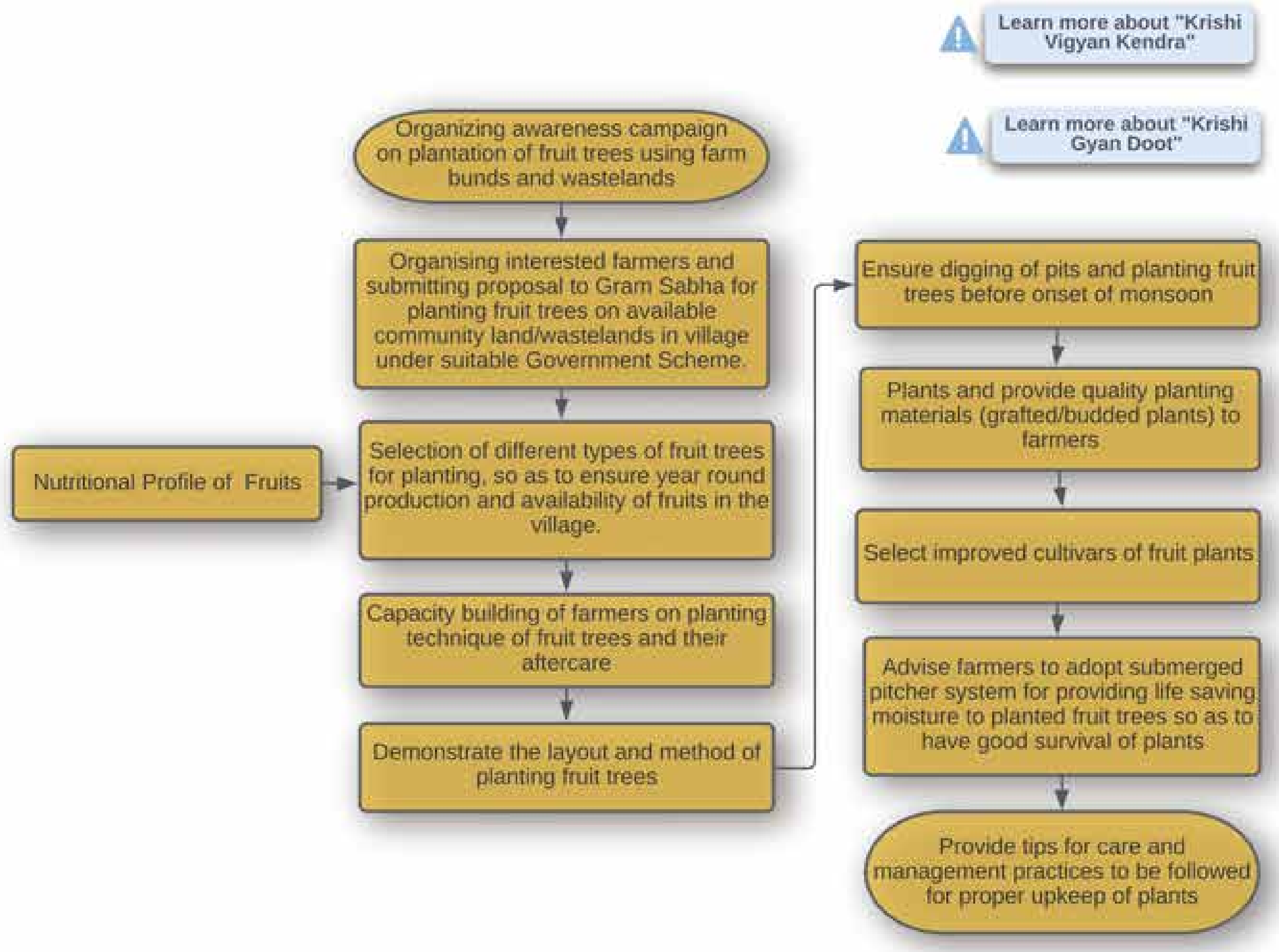

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024

SDG 2 – ZERO HUNGER

SESSION III
WHAT WE EAT

Moderator:
Dr. Sabyasachi Saha, Associate Professor, RIS, New Delhi
Keynote Speakers:
Dr. S. S. Shukla, Dean, Department of Food Technology, JNKVV, Jabalpur
Dr. Mamta Trapathi, Senior Scientist, KVK Chitrakoot.

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

Session Moderator
Dr. Sabyasachi Saha, 'What We Eat."

Dr. Sabyasachi Saha is an Assistant Professor at Research and Information System for Developing Countries (RIS), New Delhi, and full-time Consultant at RIS since 2013-14. He specializes in innovation economics, trade and technology, international trade, technology and development policy.

पहले तो मैं वसंत जी को धन्यवाद कहूंगा उनके वजह से मैं यहाँ पर आ पाया। यह 3rd SDG के संदर्भ में जो Meeting चित्रकूट में हो रही है उसमें जो सीखने को मिला उससे मैं बहुत खुश हूँ और आज सुबह से भी जितनी चर्चा हुई है कि जमीन और आसमान का जो difference है वह मिटाना है तथा Policy and Gross Roots Connectivity बनानी है, क्योंकि Practical Insights नहीं रहेगा तो हमारा policy making अधूरी रह जाती है। Policy making के समय Mass numbers हमारे सामने रहते हैं चाहे वह resources की हो चाहे वह citizens की Numbers हो अथवा Population number हो पर जमीनी हकीकत क्या है? यह भी उसका हिस्सा होना चाहिये। एक छोटा से छोटा intervention क्या difference ला सकता है एक community के लिए, एक region के लिये यह बहुत महत्वपूर्ण है। जो आज सुबह से जितनी भी चर्चा हुई है यहाँ पर खास करके बुंदेलखंड के

region के संदर्भ में क्योंकि यहाँ की भूमि की कुछ विशेषताएं हैं और कृषि की भी विशेषताएं हैं। जो यहाँ water availability है उसकी भी विशेषताएं हैं। आज बहुत ही जानकार लोग हमारे बीच में हैं जो कि इस विषय पर सुबह से चर्चा कर रहे हैं। अभी का जो 3rd session है, इससे पहले हमने खाद्य पर बात किया कि कैसे Farming होना चाहिये और उसके कई आयाम हमने देखे हैं। अभी विषय है What is stakeholder group of food जैसे consumer है। तो यह और खाद्य जो हमें जमीन से मिलता है। हमें उसके बाद उसकी value chain बहुत लंबी है। इसमें कहीं-कहीं modernization आ गया है, लेकिन modernization के चलते बहुत तरह की problems भी हमको देखने को मिल रहे हैं। और जो traditional practice है वह हम धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं, लेकिन दीनदयाल शोध संस्थान की जो contribution है कि हम वह traditional practice और Modern Practice (Modernization of Agriculture) दोनों का balance कैसे हम कर सकते हैं इसके ऊपर हमें ध्यान देने की जरूरत है। SDG के संदर्भ में कुछ बातें मैं आखिर में बोलूंगा लेकिन पहले आज का जो विषय है, उस पर अपनी बात रखूँगा। इसका आधार यही होगा कि हमारा जो खाद्य के ऊपर जो सोच है, वह कैसा है, अभी कैसा है, और उसको आगे चलकर उसमें कुछ बदलाव लाने की जरूरत है कि नहीं? उसको Nutrition हम कैसे दें? क्योंकि शुरू से तो हमने Nutrition पर Focus किये हैं लेकिन ऐसा देखा जा रहा है कि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता गिरती जा रही है, यह वैज्ञानिक आधार पर भी दिखता है। अभी यह सब सारी चीज देखते हुए कि हमारी जो भोजन की थाली है, हमारा जो खाने का Option अथवा choice है, उसके ऊपर हमारा कितना control है। अभी गाँव में लोग क्या कहते हैं और शहर में क्या कहते हैं उसमें भारी अंतर है। तो अभी जैसे मेरे भी बचपन में मेरे घर पर गायें हुआ करती थी तो दूध हमारे घर पर उपलब्ध होता था, लेकिन हम अभी तो पैकेट का दूध प्रयोग करते हैं। बाकी फिर भी processed food उतना अभी भी India में नहीं चल पा रहा है। अभी भी समय है कि हम जो unsustainable food practices है उसे बाहर निकाल कर हम कुछ कर सकते हैं क्योंकि consumption of packaged food अभी भी बहुत ही सीमित है।

यह ऊपर के आय के लोग हैं उनमें सीमित है। अभी भी ज्यादातर भारतीय घरों में जो traditional खाना है, वह ही बनता है, और इस शैली को हम follow करते हैं, लेकिन थोड़ा हमें जानकारी नहीं होती है कि उस Diet को कैसे हम Balance कर सकते हैं। उसके बारे में भी अगर हम थोड़ी बातचीत करें तो और अच्छा रहेगा। अभी मैं आपको थोड़ा Consumption Expenditure Survey के बारे में बताना चाहूँगा। उसमें देखा जा रहा है कि हम अपने Consumption में diversification की ओर जा रहे हैं। चाहे वह rural area में हो या urban area में। यह अच्छी बात है, क्योंकि यदि हमारी Purchasing Power थोड़ी भी बढ़ती है। तो हमारी भोजन की थाली में diversification भी होता है। तो यह देखा गया है कि परिवर्तन हो रहे हैं। शहर में तो हो ही रहा था अब गाँवों में भी हो रहा है। आज सुबह से हमने कई तरह की चीजों पर बात की है जो agricultural produce है। जैसे हमने श्री अन्न की बात की है, उनका उत्पादन बढ़ रहा है। यहाँ तक कि जिन horticultural fruits को हम आयात करते थे, उन्हें अपने यहाँ पैदा कर रहे हैं। खासकर के Northeast में हम देखें तो ड्रेगन फ्रूट, कीवी, अनानास आदि सभी का उत्पादन बढ़ रहा है। तो अभी की स्थिति में इसका काफी positive असर पड़ रहा है।

Keynote Address by Dr. S. S. Shukla on “Fortifying Food with Micronutrients

Dr. S.S. Shukla is Professor and Head Department of Food Science and Technology, Jawaharlal Nehru Agricultural University, Jabalpur में Basic Food Technology और थोड़ा-सा Nutrition में भी दखल रखता हूं। थोड़ा बहुत Process Food Development तथा New Technology Development में मैं काम कर रहा हूँ। हम लोग कैसे अपने Natural Raw Materials और Natural Resources का विभिन्न खाद्यान्नों में उपयोग कर सकते हैं इस विषय पर मैं थोड़ी-सी चर्चा करूंगा। मैं अपनी बात यहाँ शुरू करता हूँ हमारे देश की समृद्धि और प्रगति प्रसंस्करण (processing) पर ही मिलती है। किसान कितना उत्पादन करता है, उसको उसके मेहनत का Remunerative Price उचित रूप से मिले इस सबके लिये हमको काम करना है। हमारे सभी वैज्ञानिक एवं सरकार इसी दिशा में लगे हुए हैं, क्योंकि हरित क्रांति हुई, पीली क्रांति हुई, श्वेत क्रांति हुई, सब तरह की क्रांति हो गई अब सिर्फ एक क्रांति होगी जो कि processing की क्रांति होगी पर processing से ही देश की तरक्की है यह ब्रह्म वाक्य हमको नोट कर लेना है। हमें अपने किसानों का जो उत्पादन है उसके सही उपयोग, सही processing की जानकारी देकर विभिन्न खाद्य उत्पादन में हम कैसे इसको शामिल कर सकते हैं, कैसे इससे processed

food बना सकते हैं? इस विषय में हमें लोगों को समय पर ज्ञान देना चाहिये। Sustainable Development Goals में जिसकी हम लोग बात कर रहे हैं, Zero Hunger की, थोड़ा इसके बारे में चर्चा करता हूँ कि भारत एवं विश्व के अन्य देशों के Nutritional Status में क्या अंतर है? आज की तारीख में हिंदुस्तान में जो पोषण का status है वह क्या है? विदेशों की तुलना में हमारे यहाँ malnutrition की समस्या बहुत गहराई से है। सुदूर ग्रामीण अंचलों में आज भी हमारे आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश में और हमारे मध्य प्रदेश में बहुत ज्यादा कुपोषण की समस्या है, और विटामिन की भी बड़ी कमी है, रक्ताल्पता की समस्या है। लेकिन हम इसको कैसे दूर करें, इस पर हमको सोचना है। पोषण की कमी और इससे संबंधित होने वाली बीमारियों से पीड़ित बच्चे बहुत ज्यादा तादाद में पाये जाते हैं, और हमेशा सरकार समय-समय पर प्रयत्न करती रहती है कि पोषण को बढ़ाया जाये। हमें इस स्थिति को आगे बढ़ने से रोकना है और हम सभी को पौष्टिक खाद्यान्न दें, लेकिन पौष्टिक खाद्यान्न कैसे दें, यह महत्वपूर्ण विषय है। तो उसके बारे में भी हम चर्चा करेंगे। 2017 की वैश्विक पोषण रिपोर्ट बताती है कि stunting height (बौने) वाले बच्चे करीब 48.4% हैं। anemia से संबंधित मामलों में बच्चों का प्रतिशत 41.9% है। लगभग विटामिन-ए की कमी वाली संख्या का 31.4% बच्चे हैं। साथ ही बड़ी संख्या में महिलायें भी इससे पीड़ित हैं। ये आंकड़े बताते हैं कि बड़ी गंभीर समस्या है, और उनके लिये हमें काम करना चाहिये। अब Nutrition requirement के बारे में हम थोड़ा बात कर लें। Nutrition requirement की आवश्यकता infant और young children में सबसे ज्यादा होती है, और यदि हम उनके लिये काम करेंगे तो उनके nutritional status को सुधारा जा सकता है। इसी तरह Older adults में विशिष्ट diet की जरूरत होती है। तो इस पोषण की जरूरतों को कैसे पूरा किया जाये, तो हमारे माननीय प्रधानमंत्रीजी ने एक मार्गदर्शन दिया। कि श्री अन्न, Kodo, Kutki, रागी, Sama, Jowar, Bajra को diet में शामिल करो। श्री अन्न दो प्रकार के होते हैं, जब हम इन्हें अपनी diet का हिस्सा बनाते हैं, तो हमारी Nutrition Requirement पूरी होती है, फिर चाहे वो old group के लोग हों या युवा पीढ़ी अथवा गर्भवती महिलायें, सभी की पोषण आवश्यकतायें पूरी होती हैं। इसके लिये हमको इन्हें प्रतिदिन की diet में अपनाना है। यदि हम एक श्री अन्न को लें, जैसे आज हमने रागी ले लिया, कल हम कोदो का चावल खायें, परसों कुटकी की खीर आधारित भोजन करें। फिर उसके बाद हम अपने कभी ज्वार की रोटी खायें और बाजरे की रोटी भी खायें। अर्थात् हमें एक श्री अन्न प्रतिदिन लेना है। यदि हम इस तरह से भोजन में अपनाते हैं, तो निश्चित रूप से हमें हमारे Nutrients मिलते हैं। जहाँ हमें रागी से लगभग 350 mg Calcium मिलता है, पर 50gm phosphorus और 11 mg आयरन है। अब आप देखिए ये कितना रिच है। रागी की सभी वैराइटीज में 10% प्रोटीन है, विशेष रूप से सफेद रागी में। रागी का मतलब मडुआ है। यह सभी के लिये अत्यंत उपयोगी है। अब इसका प्रयोग कैसे करें?

अपने रागी को पीस के उसका घोल बनाकर उसको पेय बनाकर पीयें। देखिए osteoporosis की समस्या खत्म हो जायेगी। हड्डियों को इतना calcium मिलेगा। आपको calcium की गोली खाकर भी नहीं मिलेगा।

गोली की बजाय आप calcium rich food खायेंगे तो वह आपके शरीर में सीधा absorbed हो जायेगा। यह आपके शरीर को लाभ देगा, इसमें प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, फास्फोरस तथा फाइबर के साथ-साथ विटामिन भी मिलेगा। रागी wonderful material है। आप उसका लड्डू बनाकर खायें, आप उसकी रोटी बनाकर खायें, आप उसका सत्तू बनाकर खायें, आप उसको 20% Barley में मिलाकर खायें।

रागी का multigrain आटा बहुत पौष्टिक होता है आप उसकी जो चपाती खाते हैं तो आपको दिनभर बहुत अच्छा लगेगा। आप रागी की इडली बनाएं, रागी का हलवा बनाकर खायें। रागी का हलवा तो एक बहुत बढ़िया quality का product है। अपने दैनिक जीवन में Millets को शामिल करना ही पड़ेगा। रागी के तो बहुत सारे व्यंजन बनते हैं। व्यंजन के अलावा Processed Food में रागी पास्ता बनवाएं। रागी का पास्ता बहुत बढ़िया product है। मैदा का पास्ता तो बनता ही है। रागी का पास्ता भी बनता है। जो उद्यमी इसका संयंत्र लगाना चाहते हैं, तो लगभग 10 लाख रुपये में बहुत अच्छा संयंत्र लग जायेगा। आप पास्ता के साथ-साथ Vermicelli तथा Momos भी बना सकते हैं। इसके product की एक बड़ी range है, हमारे विभाग का यहाँ स्टाल लगा है, वहाँ आप देख सकते हैं।

अब बात आई दूसरी जो हमारे मध्य प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण श्री अन्न है, वह है कोदो। पर बड़े दुःख की बात है कि हमारे किसान को उसका उचित मूल्य नहीं मिलता। किसान को 25 रुपये प्रति किलो का भाव मिलता है, उपभोक्ता तक पहुँचते-पहुँचते वह 80 से 100 रुपये प्रति किलो हो जाता है। उसमें भाड़ा भी शामिल हो जाता है।

कोदो का चावल बहुत अच्छा होता है, पर उसकी दराई में 60% recovery निकलती है। हमारे यहाँ जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्याल में हमने ऐसी तकनीक विकसित की है कि हमारे यहाँ 70% 80% तक हम recovery निकालते हैं। इसमें Milling मशीन की भी बड़ी भूमिका होती है। मेरे व्यक्तिगत अनुभव में Perfura की मशीन सबसे अच्छी है। वैसे तो कोई कहेगा कि कोदो की, दराई चक्की से भी हो सकती है। लेकिन इसमें economic viability नहीं है।

आप अपनी diet में अपना कोदो का चावल बनायें। कोदो का चावल बनाकर उसको grind करके उसको different product में इस्तेमाल करें। इसी तरह ज्वार का चावल बनाएं, ज्वार का पास्ता बनाएं। इसी तरह sorghum का है उसका flax बनाएं। यह सब product हमारे जो जवाहरलाल नेहरू का स्टाल लगा हुआ है। उसमें आप देख सकते हैं। तो यदि हम श्री अन्न को अपने दैनिक जीवन में अपनायें, तो आपको सारे nutrition की requirement पूरी होगी। यहाँ मैं एक खास बात बताना चाहता हूँ कि श्री अन्न में प्रोटीन की मात्रा बहुत अधिक होती है उसमें Gluten नहीं होता है और यह Gluten आपको नुकसान पहुंचाता है। मैदा भी खायें लेकिन हमें यह बात सोचनी है कि शाकंभरी देवी ने सब कुछ दिया है संसार को खाने के लिये, पर हमको क्या खाना है? कब खाना है, कैसे खाना है, कहाँ खाना है, क्यों खाना है, यह निर्णय हमें ही लेना है।

ठीक है यदि हमारे यहाँ Gluten की समस्या नहीं है, मुश्किल से 1% को ग्लूटेन की समस्या होती है। ग्लूटेन से कंधों में दर्द होता है, इससे Allergies होती है। हमारा पेट फूलता है और हमें दर्द हो जाता है। हम Gluten को पचा नहीं पाये लेकिन और हम दोष देते हैं कि सब मैदा बेकार होता है और मैदा को आप तेल या घी में मिक्स करके खायेंगे तो मैदा तो एक उम्र के बाद आपको digest होगा ही। नहीं आप सूखी रोटी खाइये, कभी आपको problem नहीं होगी। आप घी लगाकर घी में डुबो के रोटी खायेंगे तो घी और मैदा जो है शरीर में जाने के बाद डाइजेशन देर से करता है। पाचन तो आपकी tolerate करने की ताकत पर निर्भर है। तो हमें क्या खाना है, कब खाना है, कैसे खाना है यह निर्णय हमें लेना है। आज जो यह हमारे traditional food थे, वे लौट के फिर से आये हैं, इसलिये मेरी सभी से गुजारिश है जो खायें सोच कर खायें और Gluten से कोई Problem नहीं है, 20 mg प्रति kg यदि Gluten है तो वह Gluten free diet कहलायेगी।

हमारा भाग्य अच्छा है कि हमें श्री अन्न में ग्लूटेन नहीं मिलता, तो यदि किसी को इससे समस्या है तो उसके लिये श्री अन्न सर्वोत्तम आहार है। SDG में बहुत महत्वपूर्ण है कि कैसी diet लेनी चाहिये, उस विषय पर मुझे श्री अन्न का विषय रखने को मिला, इसके लिये धन्यवाद।

Nutritional Fortification: Addressing Dietary Deficiencies in India

Dr. S. S. Shukla,
Professor & Head,
Department of Food Science & Technology,
Jawaharlal Nehru Krishi Vishwa Vidyalaya, Jabalpur

1

Nutritional Status in India and Abroad

- Malnutrition remains a significant public health concern globally, affecting millions.
- India faces a substantial burden of malnutrition, with deficiencies in iron, vitamin A, and iodine being prevalent.
- Micronutrient deficiencies contribute to various health issues, including anemia, stunting, and impaired cognitive development.

2

Unveiling the Nutritional Landscape of India (GNR 2017)

The Global Nutrition Report 2017 highlighted the concerning prevalence of:

- Stunting (48.4%)
- Wasting (15.5%)
- Anemia (41.9%) among women of reproductive age
- Vitamin A deficiency (31.4%) among preschool children

3

Nutritional Requirements of Individuals in India

- **Infants and young children:** Require essential nutrients for optimal growth and development, including iron, vitamin D, and calcium.
- **Women:** Particularly during pregnancy and lactation, have increased needs for iron, folic acid, and calcium.
- **Adolescents:** Experience rapid physical and cognitive development, necessitating adequate intake of iron, calcium, and vitamins A, B12, and D.
- **Adults:** Need a balanced diet rich in essential nutrients to maintain overall health and prevent chronic diseases.
- **Older adults:** May face challenges in nutrient absorption and require adjustments in their dietary intake to ensure they meet their specific needs.

4

Recommended Dietary Allowance (RDA)

Recommended Dietary Allowance (RDA)

	Weight kg	Weight lb	Height cm	Height inch	Energy	Protein	Vitamin A	Vitamin D	Vitamin E	Vitamin K	Vitamin C	Thiamin	Riboflavin	Niacin	Vitamin B6	Folate	Vitamin B12	Calcium	Phosphorous	Magnesium	Iron	Zinc	Iodine	Selenium
Males																								
11-14	45	99	157	62	2500	45	1000	10	10	45	50	1.3	1.5	17	1.7	150	2.0	1200	1200	270	12	15	150	40
15-18	66	145	176	69	3000	59	1000	10	10	65	60	1.5	1.8	20	2.0	200	2.0	1200	1200	400	12	15	150	50
19-24	72	160	177	70	2900	58	1000	10	10	70	60	1.5	1.7	19	2.0	200	2.0	1200	1200	350	10	15	150	70
25-50	79	174	176	70	2900	63	1000	5	10	80	60	1.5	1.7	19	2.0	200	2.0	800	800	350	10	15	150	70
51+	77	170	173	68	2300	63	1000	5	10	80	60	1.2	1.4	15	2.0	200	2.0	800	800	350	10	15	150	70
Females																								
11-14	46	101	157	62	2200	46	800	10	8	45	50	1.1	1.3	15	1.4	150	2.0	1200	1200	280	15	12	150	45
15-18	55	120	163	64	2200	44	800	10	8	55	60	1.1	1.3	15	1.5	180	2.0	1200	1200	300	15	12	150	50
19-24	58	128	164	65	2200	46	800	10	8	60	60	1.1	1.3	15	1.6	180	2.0	1200	1200	280	15	12	150	55
25-50	63	138	163	64	2200	50	800	5	8	65	60	1.1	1.3	15	1.6	180	2.0	800	800	280	15	12	150	55
51+	65	143	160	63	1900	50	800	5	8	65	60	1.0	1.2	13	1.6	180	2.0	800	800	280	10	12	150	55
Pregnant					+300	60	800	10	10	65	70	1.5	1.6	17	2.2	400	2.2	1200	1200	320	30	15	175	65
Lactating																								
1st 6 mo.					+500	65	1300	10	12	65	95	1.6	1.8	20	2.1	280	2.6	1200	1200	355	15	19	200	75
2nd 6 mo.					+500	62	1200	10	11	65	90	1.6	1.7	20	2.1	260	2.6	1200	1200	340	15	16	200	75

5

Millets: Nature's Powerhouse for Combating Deficiencies

- **Millets:** A group of small-seeded cereal grains traditionally grown in arid regions.
- **Rich in:** Protein, dietary fiber, essential minerals (iron, calcium, magnesium, phosphorus), and B vitamins.
- **Gluten-free:** Suitable for individuals with celiac disease or gluten sensitivity.
- **Climate-resilient:** Thrive in harsh conditions, making them a sustainable crop choice.

Minor Millets:

- Finger millet
- Kodo millet
- Foxtail millet
- Little millet
- Barnyard millet
- Proso millet

6

Unveiling the Nutritional Power of Diverse Millets

Nutrient	Pearl millet	Finger millet	Kodo millet	Foxtail millet	Little millet	Barnyard millet	Proso millet
Protein (g/100g)	11.6	7.3	8.3	8.3	6.9	8.1	11
Fiber (g/100g)	8.3	3.6	7.5	3.3	10.6	4.1	2
Iron (mg/100g)	8	4.4	6.9	3.7	8	3.1	3.9
Calcium (mg/100g)	301	344	276	341	301	54	70
Magnesium (mg/100g)	170	160	120	173	140	130	160

7

Enhancing the Nutritional Profile of Millets through Fortification

- Millet fortification involves adding essential vitamins and minerals to further enhance their nutritional value.
- This process addresses micronutrient deficiencies prevalent in populations relying heavily on millets as a staple food.
- Commonly added nutrients include:
  - Iron
  - Vitamin A
  - Vitamin B12
  - Zinc

8

Integrating Fortified Millets into Daily Meals

- Fortified millets can be incorporated into various dishes, promoting their consumption and maximizing their nutritional benefits.
- Examples of fortified millet-based food products:
  - Flours
  - Ready-to-eat breakfast cereals
  - Bakery products
  - Extruded snacks

9

Championing Change: Implementing Fortification Programs in India

- **Government initiatives:**
  - The National Iron Fortification Programme (NIFP)
  - Rice Fortification Programme
  - Public-private partnerships
- **Challenges:**
  - Ensuring program reach and sustainability
  - Consumer awareness and acceptance
  - Monitoring and evaluation

10

Advantages of Fortification

- **Reduced micronutrient deficiencies:** Fortification directly addresses deficiencies, leading to improved public health outcomes.
- **Cost-effective intervention:** Offers a scalable and sustainable approach to improve dietary quality.
- **Improved cognitive development:** Adequate micronutrient intake, particularly in children, fosters better cognitive function and learning potential.
- **Enhanced productivity:** Improved health translates to increased workforce productivity and economic growth.

11

Fortification: A Promising Path Towards a Healthier Future

- **Millets and fortification:** Offer a potent combination to address malnutrition and promote dietary diversity.
- **Collaborative efforts:** Combining government initiatives, industry involvement, and public awareness campaigns are crucial for success.
- **Sustainable future:** Investing in fortification paves the way for a healthier and more productive future for generations to come.

12

Keynote Speech by
Dr. Mamta Tripathi on 'Kitchen Gardens'.

Dr. Mamta Tripathi, Home Scientist, Krishi Vigyan Kendra, Chitrakoot, has worked with the Institute since and was directly involved in the efforts of the Institute on nutrition during our Self Reliance Campaign. Its thrust was the Kitchen Garden. The then Director of the National Botanical Research Institute in Lucknow, Dr. P. Pushpagadhan helped in designing the Kitchen Gardens.

सभी को राम-राम Zero Hunger in SDG Goal इस विषय पर बात हो रही है और इस दिशा में गृह वाटिका हर घर में हो, कोई घर छूटने न पाये ऐसा दीनदयाल शोध संस्थान ने एक बीड़ा उठाया है। गृह वाटिका क्यों करेंगे, क्योंकि यह एक ऐसा साधन है, जिससे आपको एक अच्छे स्वास्थ्य हेतु आवश्यक vitamins, minerals सभी मिल सकता है। यही एक उत्तम साधन है हमारे स्वयं, परिवार एवं गाँव के उत्तम स्वास्थ्य के लिये, अब बात आती है नानाजी का जो संकल्प था हम अपने लिये नहीं अपनों के लिये हैं अपने वे हैं जो पीड़ित एवं उपेक्षित है उनका कहना था कि समाज जीवन के सभी पहलुओं पर सामाजिकता अनुकूलता के आधार पर

समाज की सहभागिता एवं सहयोग के द्वारा काम करना है। दीनदयाल शोध संस्थान में हमारे समाज शिल्पी दंपति जो बहनें हैं तथा आरोग्यधाम की जो हमारी पूरी टीम है वह ग्रामीणों का स्वास्थ्य अच्छा रहे उसके लिये हम सब मिलकर के काम करते हैं। अब गृह वाटिका की रचना कैसी हो? तो उन सभी बहनों से हमारा निवेदन होता है कि गृह वाटिका हेतु अपने घर के पीछे 100-200 वर्ग मीटर की जगह में स्थापित की जा सकती है। हम उनको बताते हैं कि इससे आपको वर्ष भर हरी ताजी सब्जियां, कंद मिलेगा। हम उन्हें बताते हैं कि वे स्थानीय रूप से उपलब्ध फल के वृक्ष जैसे बेर, सहजन, नींबू, आंवला, पपीता भी इनके साथ लगायें। इनमें पौष्टिकता भी पर्याप्त होती है, और पानी की भी कम जरूरत होती है। और हमें पूरे वर्ष का ऐसा फसल चक्र बनायें कि वर्ष भर हमें सब्जियों और फल की उपलब्धता बनी रहे। गृह वाटिका का चयन ऐसी जगह हम करते हैं जहाँ पर रसोई घर का पानी जाता हो। रसोई घर का पानी ज्यादातर गाँव में पूरे सड़क पर बिखरा रहता है, लेकिन हमारे स्वावलंबन केंद्रों में हम उन महिलाओं को बताते हैं कि आपकी रसोई घर का जो भी पानी है, एक बाल्टी, दो बाल्टी जो भी है, वह पानी आपके गृह वाटिका में पहुंचे। आपको अलग से सिंचाई करने की जरूरत ना पड़े। गृह वाटिका में हम नाली की सुविधा इस तरीके से करते हैं कि पानी हर क्यारियों में बराबर जाये तथा सब्जियों का जो चयन ऐसे करते हैं कि एक तो वो हमारे परिवार की पसंद वाली सब्जी हो और दूसरा वह स्वास्थ्य वर्धक भी हो। पालक, मेथी और चुकंदर यह भी जो कुछ भाजी जो गाँव के स्तर पर होती हैं ऐसी सब्जियों को लगायें। बथुआ बड़ा महत्वपूर्ण है, यह बहुत सारा खेतों में अपने आप हो जाता है, तो हम महिलाओं को कहते हैं कि वे सब्जी में बथुआ जरूर मिलायें। इसमें आयरन अधिक मात्रा में होता है। इसके अलावा हम कंद वाली भी सब्जियां लगाते हैं जैसे बीट है, चुकंदर, गाजर आदि, अब गाजर में भी बहुत सारी वैरायटी ऐसी आई है। अब गृह वाटिका का रेखांकन है इस प्रकार से करना चाहिये कि जो सूर्य के प्रकाश की दिशा है उसी तरफ हमारे जो पेड़ लगाने हैं। वे ऐसी दिशा में लगें जो हमारी सब्जियों पर छाया ना दे। एक किनारे पर अगर हम लगाएंगे तो जिस तरफ सूर्य का प्रकाश आता है वह हमारी सब्जियों पर ना पड़े। अब ऐसे हम सब्जियों का चयन करने के बाद फलदार पौधों का चयन करेंगे। जो फलदार पौधे बहुत ज्यादा ना बढ़े। जैसे आम का भी अगर वृक्ष लगाना है तो हमारी जो कलम वाली पौध हैं। वह बहुत ज्यादा बढ़ते नहीं हैं, इन्हें किनारे की साइड में लगाते हैं। इसी तरह उसकी 'पूसा नन्हां' प्रजाति पपीता है, जो बहुत छोटे पर ही फल देता है, इसी तरह सहजन के पेड़ हैं, हम उन्हें गृह वाटिका में लगाते हैं। अभी हमने बात की कि गृह वाटिका के स्थान का चयन सब्जियों एवं फलों का चयन और उसका रेखांकन कैसा हो? अब बात करेंगे भूमि की तैयारी की।

तो अगर भूमि एकदम कीचड़ है, गीला है, तो उसमें हमारी सब्जियां नहीं आयेगी। हमें उसके लिये जमीन को भुरभुरी करना होगा। उसमें हमें गोबर की खाद, केचुआ खाद डालना होगा। और हमें सबसे ज्यादा ध्यान देना है कि हमें इस गृह वाटिका में किनारे पर थोड़ा सा गड्ढा खोदकर के रखना है, जो Compost के लिये

काम करेगा। जब हम चारों तरफ से निराई करते हैं, घास निकालते हैं, उसके सारे खरपतवार जो होते हैं, वह उस गड्ढे में डालेंगे। और यदि एक गाय है, तो उसका गोबर भी उसमें डालेंगे और डालने के बाद उसमें थोड़ा पानी जायेगा और हम अगर 100 gm भी केचुआ उसमें डाल देंगे तो हमको हर तीसरे महीने केचुआ खाद मिलती रहेगी। यह खाद हमारी सब्जियों के लिये एकदम perfect होगी और इस तरह एक परिवार के लिये पर्याप्त सब्जी उत्पादन हो जाता है। आज जब हम बाजार से सब्जियाँ लाते हैं तो मंहगी होने के कारण हम उनका कम उपयोग करते हैं। एक सामान्य स्वस्थ व्यक्ति को दिन में 100 ग्राम हरी सब्जी, 100 ग्राम कंद मूल वाली सब्जी और 100 ग्राम फल चाहिये। तो वो बाजार से खरीदते हैं, मंहगा होने के कारण सही मात्रा में नहीं खा पाते। लेकिन जब हमारे गृह वाटिका होती है तो हम यह सारी सब्जियां हम किलो और 2 किलो खा लेते हैं। अब बात गृह वाटिका के प्रबंधन की है। हम बहनों को बताते हैं कि आप अपनी नर्सरी खुद डालें जैसे हम जो देशी बीज देते हैं। हमें उनको सलाह देते हैं कि वे एक फल परिपक्व होने दें और उससे उत्पन्न बीज को अगले साल उपयोग करें और अपने रिश्तेदारों को भी दें। इसी तरह अपनी स्वयं की नर्सरी में टमाटर, बैंगन, मिर्च, सहजन के बीज तैयार कर लें। अब नर्सरी बनाने में कुछ लोग क्या करते हैं कि बीज को ही सीधा लगा देते हैं और कुछ नर्सरी खुद घर में बनाते हैं, अपनी नर्सरी डालते हैं। वह पौधे तैयार करते हैं, तो पौधे कैसे तैयार करते हैं? अब जैसे खरीफ में तैयार करते हैं तो क्या होता है कि जब खुले में हम लगाते हैं तो बारिश हुई और तेज बारिश में हमारे पौधे सब गल जाते हैं तो ऐसे में हम अपनी बहनों को बताते हैं कि आप जो मटका रहता है वह जून के बाद खाली हो जाता है, उस मटके को आधा काट दीजिए और उसमें आप अच्छी मिट्टी ला करके उसमें डालिए और उसमें बीजरोपित करिए और जैसे तेज बारिश हो रही हो तो आप घर के अंदर रख लीजिए। ऐसे दो-चार मटके में या टब में, किसी भी टूटी अनुपयोगी चीज का हम प्रयोग कर सकते हैं।

हमने गृह वाटिका में कई प्रयोग किये। गर्भवती महिलाओं, किशोरियों में आयरन, कैल्शियम आदि की कमी को दूर करने के लिये, रागी और श्री अन्न को उपजाया गया। यहाँ रागी का उत्पादन भी अच्छा होता है और उसकी fermenting भी आसान है। तो हमने गर्भवती महिलाओं, किशोरियों में पोषण की समस्या दूर करने के लिये Roasted Grains जैसे बाजरा, रागी, चना, पोहा का प्रयोग किया। इन सबका Roast कर उसका लड्डू बनाया और हमने तीस से भी अधिक महिलाओं पर प्रयोग कर देखा कि जिनका हीमोग्लोबिन 6.5 था व तीन महीने में 12.7 हो गया। सहजन के पाउडर के बड़े आश्चर्यकारक परिणाम मिले। महिलाओं, बच्चियों को जो चूड़ा या नमकीन देते थे, उसमें सहजन पाउडर मिला देने से उनका हीमोग्लोबिन बहुत तेजी से बढ़ा। अतः जैसा आप प्रजेन्टेशन में देख रहे हैं कि गृह वाटिका रेखांकन में हमने चौलाई, बथुआ, पालक, मेथी ये लगाई है और इसमें सुनिश्चित होता है कि हर दिन 100 ग्राम सब्जी मिले। इसी तरह अपने Anemia Awareness Programme में हम श्री अन्न के विषय में बताते हैं। इसके लिये हमारे समाज शिल्पी दंपति के साथ गाँव-

गाँव में जाकर स्कूलों में हम लोगों ने कैंप लिये हैं। हम पोषण वाटिका से पोषण थाली की भी बात करते हैं कि जो पोषण वाटिका है वह हमारी थाली में भी आना चाहिये, इसकी भी बात हम ग्रामीण महिलाओं से करते हैं और बहुत सारी महिलाओं को यह थाली कैसे बनानी है, क्या बनानी है, उस पर भी चर्चा होती है। जब किचन गार्डन करते हैं तो उसके बाद Post Harvest Technology की बात भी बहुत जरूरी है क्योंकि जब हमारे पास सब्जियां ज्यादा हो जाये तो उसके बाद हमें Post Harvest Technology का उपयोग करना चाहिये, अर्थात् उत्पादन का आधिक्य होने पर हम उसका Value addition कर मिक्स अचार बना लें। गाँव में गर्भवती महिलाओं को हम लोग गर्भवती शिशु संस्कार करवाते हैं। इसमें गांव की सभी महिलायें एकत्रित होकर गर्भवती महिला से हवन-पूजन करवाया जाता है और गर्भ के दौरान उसे क्या खाना है, क्या सावधानियाँ रखनी है, कौन-कौन से टीके लगवाने हैं, उसकी पूरी जानकारी दी जाती है। कुपोषण के निदान हेतु भुने हुए ज्वार बाजरा उपयोग करें, हरी ताजी सब्जियों का उपयोग करें, मौसमी फलों का उपयोग करें। हमारे गाँव में महुआ का लाटा, महुआ का लड्डू यह बराबर प्रयोग होता है और उसके उत्पाद बनाने के लिये महिलाओं को सिखाया जाता है।

Interventions by Speakers and Deendayal Research Institute volunteers on 'What We Eat'

Dr. Suresh Sarvarkar

Head, Keshav Srushtee Gram Swasthya Vikas Yojna on the work in Palghat.

Thank you Vasant ji and Deendayal Research Institute for giving me opportunity. Third time I'm coming and every time you gave me opportunity and every time I have to tell something New Show Last time. I talked about my health digital locket now this time I'll talk about Madhav Shankar Kendra जैसे हमने एक बच्चों का कार्यक्रम लिया है, जिसे हम माधव संस्कार केंद्र बोलते हैं। हर एक गाँव में माधव संस्कार केंद्र है, उसमें 30 बच्चे आते हैं हमने 30 गाँव की Study किया। हमने इन केन्द्रों पर आज कल बच्चों के Health के बारे में gradation देना, star देने का प्रयास किया। इसको Star Health Gradation बोलते हैं। जैसे बच्चे की हाइट नॉर्मल रही तो उसको 4 marks, weight normal रहा तो 4 marks और

hemoglobin normal रहा तो 4 marks। इस तरह हम हर एक बच्चे को 20 marks देते हैं और उसकी testing करते हैं। 6 महीने पहले हमने 1000 बच्चों की testing किया था। उसमें यह देखा गया कि हजार में से किसी भी बच्चे को 20 marks नहीं मिले। तो इसका मतलब यह हो गया कि सब कुपोषित और अनियमित थे। इसमें बाद में हमने उनको वहाँ के हिसाब से WHO द्वारा Presented minimum diversified diet के हिसाब से बताये गये ingredients की जिसमें जो 7 थे चार तरह की मिठाई बनाई, और वह मिठाई बच्चों को सुबह दो मिठाई और शाम को दो मिठाई, ऐसे दिन में दो-दो बार, ऐसे दो महीने खिलाया और उसके बाद में हमने उनका marking किया, तो यद्यपि सभी बच्चे अभी तक Normal नहीं हुये मगर उनके marks 10 marks से 12 marks ऐसे कर के आये। hemoglobin सबका बढ़ गया। इसके आधार पर हमने बच्चों को star देना शुरू किया तो जिसका स्कोर अच्छा होता है उसे 4 स्टार, खराब वाले को 1 स्टार अथवा दो स्टार। अब बच्चे और उसके माता-पिता पूछते हैं कि उन्हें कम स्टार क्यों मिले, तो हम उनको समझाते हैं, और बताते हैं कि क्या कमी है, और बताते हैं कि यह मिठाई तो हमेशा के लिये नहीं दे सकते। इसलिये अभी 4 महीने से हमने parents की training चालू किया है, हम उनको उन ingredients की recipe भी बता रहे हैं जो मिठाई में थे। मिठाई में क्या नचनी गेहूं, देशी घी आदि। शुरू में बच्चों ने खाने में आना-कानी की, पर बाद में उन्हें आदत पड़ गई और अब वे मांग कर खाने लगे हैं। तो अभी 4 महीने का हमारा program जो चालू है उसमें माता-पिता को यह मार्कस देना है। हमने उनको बोला है कि अभी बच्चों की exam हो गया। अब तुम्हारी परीक्षा है। बच्चों को 20 में से मार्कस मिले। अभी माँ को कितने मार्कस मिलते हैं? तो यह awareness और Education of parents का हो गया। तो यह एक तरीका है, जिससे हम Sustainable Result पाने का प्रयास कर रहे हैं। तो अभी parents जिन्होंने अच्छा Perform किया उनको हम award देंगे, उनका Celebrations करेंगे। फिर बच्चों को और 2 महीने यह मिठाई खिलायेंगे। ऐसा ही हमारा 2 साल का program है, जिसमें ऐसा देखना है कि पूरे के पूरे हजार बच्चे यह anemia और कुपोषण से मुक्त हो जाये। इसका result बहुत अच्छा है, Community Participation अच्छा है। और community से ज्यादा भी हमको Iskcon जैसे लोग भी मिल गये, जो हमको मिठाई बना कर दे देते हैं। तो वह एक अच्छा हो गया, क्योंकि बच्चों को खाना खिलाना थोड़ा रिस्की रहता है, Food poisoning etc. का डर रहता है और पूरा program चौपट हो सकता है तो इसलिये यह अच्छी संस्था हमारे साथ जुड़ी है, इनके पास पूरा Licensing है फिर बनाने की process भी बहुत अच्छी तरह से है। इसके अलावा मैं एक अनुभव आपसे शेयर करना चाहता हूँ–मैं हमारे एक pediatrician friend से discuss कर रहा था, तो वह बोले डॉक्टर साहब आप यह मिठाई तो खिला रहे हैं इससे कुपोषण दूर नहीं होगा क्योंकि अभी यह शहर (पालघर) मुंबई के नजदीक है तो पूरी जो पश्चिम की खाद्य संस्कृति है, वह गाँव में आ गई है। गाँव में Chinese stall चालू हो गये हैं। हर स्कूल के बगल में Chinese Food Stall चालू हो गये हैं, यहाँ आपको Vapors,

Chocolates, Cakes जैसी खाद्य सामग्री मिलेगी। पहले किसान घर को सेव आदि लेकर जाते थे, अब केक लेकर जाते हैं। तो अभी यह अपना पूरा food system बिगड़ रहा है। अपने को अभी निर्णय लेना होगा, अन्यथा देर हो जायेगी। बच्चों का दोनों तरफ से कुपोषण हो रहा है, बच्चे Vapors खाते हैं और Vapors खाने के बाद खाना नहीं खाते, और यह माता-पिता के लिये भी बहुत आसान है, 5 मिनिट में आसानी से बनने वाला नूडल्स बना लेते हैं और वह फिर कुपोषण बढ़ाते जाते हैं। तो यह कुपोषण बढ़ रहा है। एक तरफ से उनका पूरा खाना नहीं होता वह खाली चावल और थोड़ा दाल का पानी अचार इतना ही खाना खाते हैं। दूध और अंडा आदि या तो होता ही नहीं, यदि होता है तो वह बेच दिया जाता है। अतः आज आवश्यकता है कि इस परिस्थिति में बदलाव लायें। खाद्य एवं संस्कृति को रोक लगाना है और बच्चों में balance diet को बढ़ाना है। धन्यवाद।

Smt. Pallavi Vyas

Pallavi and Sanjay Vyas of Shanta Farms, Indore who on the inspiration of our Hon Minister of Rural Development and a Champion of Moringa, have worked on Moringa.

नमस्कार प्रणाम। नानाजी देशमुख के कारण ही इस program में हम लोग यहाँ उपस्थित हैं और इतना बड़ा है जो शोध संस्थान है उसमें मैं अपने आपको पाकर बहुत गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। सभी बौद्धिक वर्ग के लोगों के साथ काफी अच्छा लग रहा है। सुबह से मैंने सभी सत्रों में सहभाग किया। जिसमें हमें पता लगा कि 'क्या हमें उगाना चाहिये' और 'क्या हमें खाना चाहिये।' मैं भी by default इस system का पार्ट बनी हूँ। पहले मैं मेरा थोड़ा परिचय देना चाहती हूँ। मेरा नाम पल्लवी व्यास है और 'Shanta Farm' के माध्यम से मैंने मेरी यात्रा शुरूआत की। मेरी mother in law थी Shanta, उनकी मृत्यु cancer से होने के बाद, हमने सोचा कि कहीं ना कहीं हमें Pesticide and chemical free में कुछ करना चाहिये। हमने dairy farming की शुरूआत की। आरंभ में 6 गाय से और आज हमारा 200 गायों का फॉर्म हो गया। गायों के Production पर काम करते हुए हमें माननीय गिरिराज सिंहजी ने सुझाव दिया था कि आप Moringa पर कम करें। तो हमने Shanta Farms में एक project के रूप में जब गायों को Moringa खिलाया तो पाया

कि Moringa बहुत उपयोगी है। Moringa अथवा सहजन जो कि भारत का एक पेड़ है। यह 300 बीमारियों का एकमात्र इलाज है। इन सब चीजों की जानकारी पर हमने जब गायों पर काम किया तब हमें ऐसा लगा कि हमें इस पर और काम करना चाहिये। उस समय जब covid काल था हम बस्तियों में लोगों को सैनिटाइजर और खाने-पीने का सामान देने जाते थे तब हमने देखा कि कुपोषण की समस्या भारत में बहुत ज्यादा है, बस्तियों में जो बच्चा 5 साल का है वह 3 साल का नजर आ रहा है, तो हमने उसे Moringa पाउडर जब खिलाया तो वाकई में जैसा दीदी ने भी बताया कि Moringa पाउडर के परिणाम हमें काफी आये। पर इसमें एक बड़ी समस्या है कि Moringa का Bitter Taste होता है और वह हमने शुरू से नहीं खाया है, इसलिये हम उसे खा नहीं पाते, जैसे हम हल्दी ऐसे फांक सकते हैं, पर Moringa को हमें लोगों को देने में Problem आई थी। Moringa बच्चे और महिलाओं विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं और उन महिलाओं जो hormonal परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं, उनके लिये बहुत उपयोगी है। अतः Moringa को खाने से स्वादिष्ट बनाने के लिये हमने इसके product development पर काम किया और मोरबेटा बनाया।

इसके वितरण हेतु हमने Shanta Social Welfare Society भी बनाई। सबको वितरण कैसे करें, तो हमने जिला प्रशासन से सम्पर्क किया। हमने आंगनवाड़ी, महिला बाल विकास केंद्र पर जाकर हमने 10-20 बच्चों के project लिये और उन्हें जब हमने यह मोरबेटा दिया तो उसका जो परिणाम पाया कि 10 gm सुबह और 10 gm शाम को 3 महीने की अवधि में देने पर बच्चा अति कुपोषित से सामान्य श्रेणी में आ गया। तो फिर हमने अपने इस product मोरबेटा का भारत सरकार से पेटेंट भी लिया। यह थोड़ी कठिन प्रक्रिया थी पर हम इसमें सफल हुये। आज यहाँ रागी पर, श्री अन्न पर, बात हुई, पर मैं कहना चाहती हूँ कि Moringa एक ऐसा Super Food है जो बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, सभी के लिये उपयोगी है। इसमें anti aging, anti cholesterol, anti sugar, anti-inflammatory गुण है। हमने Moringa का पशुओं के स्वास्थ्य पर भी प्रयोग किया, जो बहुत ही अच्छा था। अतः Moringa एक बहुत ही उपयोगी वृक्ष है।

हम Moringa के साथ एक स्वास्थ्य मिशन पर काम कर रहे हैं, इससे संबंधित एक वीडियो आपके सम्मुख प्रस्तुत है, हम एक Social Economic Model को बनाने पर काम कर रहे हैं, हमारा मानना है कि स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ राष्ट्र का संकेत है। मैं आह्वान करूंगी कि हर घर में Moringa लगाया जाये, इस हेतु Awareness कैंप चलाया जाये। यहाँ उपस्थित आप सभी लोग policy Makers इसका Mass Scale पर लेकर जाये। इस कांफ्रेस की थीम है 'Life Society' तो इसमें सामाजिक संस्थान और Social Entrepreneurs की क्या भूमिका है, उस पर हमें और चर्चा करनी चाहिये कि हम policy के तहत ऐसा क्या कर सकते हैं ताकि इस तरह के Social entrepreneurship को हम बढ़ावा दे सकें। उनका market access बढ़े, और इनके जो लाभ हैं, वह सभी तक पहुंचे।

Mr. Vasant Pandit:

मैं एक मिनट में बताऊंगा कि समाज शिल्पी दंपति क्या है? नानाजी कभी हम लोगों को गाँव में काम करने के लिये बोलते थे, तो नानाजी ने सोचा कि जब हम गाँव में काम करते हैं, तो जिसे गाँव में काम करना है, वह गाँव वालों के बीच में ही बैठे और रहे, उनकी समस्याओं को समझे तो ही काम होगा। तो नानाजी ने यह Concept शुरू किया था। समाज शिल्पी दंपति, वह ग्रेजुएट कपल है जो गाँव में रहते हैं और गाँव की समस्या लेकर फिर वह आगे बढ़ते हैं और उसका जो Solutions निकालते हैं, जो यह पूरा संस्थान आप चित्रकूट में देख रहे हैं, ये सारे भवन देख रहे हैं। यह पूरा सिस्टम इन लोगों को सपोर्ट करने के लिये है। हम सब लोग इन लोगों का सपोर्ट system है। जो भी काम हम लोग गाँव में करते हैं समाज शिल्पी दंपति के माध्यम से करते हैं वह हमारा Catalyst of Change होता है। समाज शिल्पी दम्पति हमारे ग्रामीण विकास कार्यालय की धुरी हैं। छाया जी बहुत सालों से अपने यहाँ समाज शिल्पी दंपति हैं, उन्होंने बहुत काम किया है। वे अब हमारे साथ अपना अनुभव साझा करेंगी।

Smt. Chhaya Chaturvedi

Smt. Chhaya Chaturvedi is a Samaj Shilpi Dampati of Deendayal Research Institute in Village Bhargawan, Majhgawan Block, Satna District on the malnutrition experiment they had conducted.

सभी से राम राम। मेरा नाम छाया चतुर्वेदी है हम समाज शिल्पी दंपति के रूप में काम कर रहे हैं। मैं आप लोगों को यह बताना चाहती हूँ, कुपोषण में हम लोगों ने क्या काम किया और इसमें कृषि विज्ञान केंद्र से कितना अच्छा सहयोग रहा। तो हम लोगों का एक छोटा सा गाँव भरगवां है। भरगवां में हम प्रत्येक परिवार में बैठे और जो वास्तविक नानाजी की सोच थी कि जो समाज के अंतिम पंक्ति के लोग हैं उनका विकास कैसा हो तो हम लोग door to door संपर्क करके और अपनी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सुनीता गौतम से संपर्क करके चिन्हित परिवार के कितने बच्चे कुपोषित हैं, और कुपोषण का कारण क्या है, इसमें क्या उपाय कर सकते हैं। तो अपने

राजेंद्र सिंह नेगी डॉक्टर साहब पहुंचे और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता से कहा कि वहाँ कितने बच्चे कुपोषित है और उनका कारण क्या है, उन्हें चिन्हित करें। तो ऐसे गंभीर कुपोषित तो 3 बच्चे मिले मध्य कुपोषित 15 बच्चे मिले। तो बोले कि इसमें क्या काम कर सकते हैं, अपने यहाँ लोबिया यानि बरबटी बहुतायत में मिलती है, तो महिलाओं को बताया कि इसको खिलाने से इसमें क्या फायदा है। फिर आंगनवाड़ी के सहयोग से और वहाँ की आशा के सहयोग से गाँव के जो बच्चे कुपोषित थे, उनके माता को बुलाकर उन्होंने बताया कि 40 gm कृषि विज्ञान केंद्र से लोबिया ले आये और 40-40 gm सभी बच्चों को प्रतिदिन सुबह दीजिए और उसका रिजल्ट निकलेगा। बच्चे यदि नमक से खायें तो नमक से दीजिए, गुड़ से खायें तो गुड़ से दीजिए। इन बच्चों पर सतत नजर रखी गई कि वे प्रतिदिन खा रहे हैं या नहीं। तो ऐसे आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के सहयोग से गांव में घर-घर संपर्क किया। 40 gm प्रतिदिन के दर से बच्चों को ऐसे ढाई महीने खिलाया गया उसके बाद फिर उसकी जांच करवाई गई तो ऐसा पता चला कि वह जो बच्चे कुपोषित थे, वह सामान्य हो गये। तो परिणाम निकला कि लोबिया या बरबरी इसमें बहुत उपयोगी है। आज जिस गाँव में रहती हूँ सिर्फ एक बच्चा कुपोषित है। जय हिंद जय भारत

Smt. Sakuntala Singh

Smt. Shakuntala Singh from Village Bhargawan, Majhgawan Block, Satna District on the forest foods that they make and eat.

मेरा नाम शकुंतला सिंह है जंगलों से जो महुआ इकट्ठा करते थे वहाँ से लेकर घरों में उसकी सुखाई करके और फिर उसकी सफाई करते थे। लकड़ी की मौगरी से कूटने के बाद मिट्टी के घड़े में चला कर बढ़िया पका के उसको लाटा भी बना लेते थे, भूरकुण्डा भी बनाते थे और जैसे हमारे दादा-दादी सभी को पहले खिलाते थे, उसी तरह बच्चों को उसी को बनाकर खिलाते हैं।

Shri Atul Jain, General Secretary, Deendayal Research Institute

आप सबको नमस्कार आज का जो subject वसंत भैया ने दिया, वसंत भैया ने बताया What we eat इस पर एक बात हम छोटी सी करें तो मैं 5-7 मिनट में अपनी बात को खत्म करना चाहूंगा। एक कहावत है कि 'जैसे खाओ अन्न वैसे होवे मन' और इसको अंग्रेजी में अगर हम कहें तो व्हाट वी ईट ऐसा बोलते हैं देश की सभी भाषाओं में अभी जैसे वसंत भैया कह रहे थे कि हम बहुत घूमे तो 26 States में हम लोगों की टीम गई। चित्रकूट में भी दोनों तरफ खूब आना जाना हुआ अपने समाज शिल्पी दंपतियों के माध्यम से हमने खूब काम किया। हम लोगों ने basically काम किया कि nutrition culture पर जो भाई साहब अभी बता रहे थे कि food और nutrition में बहुत अंतर है, सचमुच में बहुत बड़ा अंतर है। हम लोगों ने भी उस चीज को देखा और महसूस किया, और हम लोगों ने एक कोशिश की थी कि हम cultural practices का मतलब यह है कि भोजन के इर्द-गिर्द किस तरीके की Practice होती है? क्या-क्या हम लोग व्यवहार करते हैं, कैसे करते हैं, उसमें बहुत-बहुत interesting चीज निकल कर आयी, मैं उन सबकी तो बात यहाँ नहीं करूँगा। उसकी Atlas बनी है। आज अच्छी खबर है कि Hindi Atlas is already in print and English Atlas will be going in next two hours. वह भी हो जायेगा तो हम लोगों को परसों

तक उसको रिलीज भी होने वाली है। बहुत बड़ी Atlas है, बहुत बड़ा पोर्टल उसका रहेगा। उनमें हमने करीब करीब 6,000 Practice देश भर में ऐसी एकत्रित की है, जहाँ के माध्यम से पोषण कैसे मिलता है। गीतों के माध्यम से, हमारे लोकगीतों के माध्यम से, हमारी लोक संस्कृति के माध्यम से, हमारे तीज त्योहारों के माध्यम से, हमारे social custom से, सामाजिक रीति रिवाज है उनके माध्यम से किस तरीके से पोषण हमको अपने आप मिलता चला जाता है हमको कई बार पता भी नहीं लगता है कि हम कैसे पोषण ग्रहण कर रहे हैं। बहुत interesting example मिले लेकिन जो विषय आज का एक particular था कि What we eat हम क्या खाते हैं? उसमें एक बहुत सुंदर example आया एक यहाँ चित्रकूट का था, एक शेखावटी राजस्थान में वहाँ पर लोग गट्टे की सब्जी खाते हैं, शायद सब लोगों ने नाम सुना होगा गट्टे बेसन के बनते हैं। अब बेसन के गट्टे की सब्जी का nutrition से कैसे संबंध है और खाने पर प्रकृति का कैसे असर पड़ता है वो देखेंगे। राजस्थान का वह जो इलाका है वहाँ पर बहुत हट्टे कट्टे लोग होते हैं। अच्छे-अच्छे 6.50 फीट-फीट के राजपूत, जाट और ये लोग जो गट्टे की सब्जी खाते हैं उसमें होता है लहसुन प्याज जब तड़का मसाला, घी, तेल सब कुछ होता है। तो ये क्यों होता है? हम लोगों ने उसके पीछे की तह में जाना शुरू किया। सन् 1776 से 1800 के Records मिले तो पता लगा कि उन्होंने गट्टे की सब्जी में ऐसा क्यों खाते हैं तो जानकारी हुई कि ये लोग 24 घंटे लड़ाई की मुद्रा में रहते थे, मार्शल कौम थी, तो उनको हमेशा ऐसा होना चाहिये कि बस अब हो जाये तो हम किसी से भी भिड़ जायेंगे, उनको मुगलों से लड़ना था, बाद में अंग्रेजों से लड़ना था, तो वह खूब अच्छे से लड़े और दूसरी तरफ थे। माहेश्वरी जो वहाँ का बनिया वर्ण था और जो वहाँ के ब्राह्मण थे, वह लोग गट्टे की सब्जी को थोड़ा-सा हल्का कर लेते थे। उसमें तेज मसालों से बचते थे और उसको नहीं खाते थे क्योंकि उनको दिमागी काम करना होता था। तो उनके दिमाग में तामसिक प्रवृत्तियां ना हो इसलिये वह अलग तरीके से गट्टे की सब्जी को बनाते थे। उसको छाछ में उसकी ग्रेवी बना कर खाते थे। वह होती थी मन को शांत रखने के लिये दिमाग को हमेशा अलर्ट रखने के लिये। अर्थात् दिमाग का काम, धर्म-कर्म का काम, सात्विक प्रवृत्ति वाले इस तरह से बनवाते थे। इस उदाहरण के माध्यम से मैं जो यह कहना चाहता हूँ कि हमारी प्रकृति, हमारी जैव विविधता, हवा-पानी, हमारी Climate Conditions किस तरह से हमारे खान-पान को प्रभावित करती है, वह सब हमारे को हमारे लोक विज्ञान में बहुत खूब सुंदर तरीके से कही गई हैं। उसमें एक जो सबसे interesting बात है और उसे मैं आखिर में कहता हूँ, वह है कि सबसे बढ़िया जो पोषण हम लोगों ने देखा पूरे देश भर में, वह पोषण था, प्रसाद के माध्यम से मंदिरों, गुरुद्वारों हर जगह के प्रसाद के माध्यम से किस तरीके से पोषण हमारे पूर्वजों ने हम लोगों के लिये ensure किया। वो पोषण था। एक और लोक परम्परा है आप लोगों को अजीब लगेगा, बहुत सारे लोग कहेंगे ऐसा नहीं हो सकता है लेकिन सुबह उठते ही सबसे पहली चीज मीठा खाना, खाली पेट मीठा खाने से जिस तरीके के Enzyme बनते हैं, जो हमारा बॉडी में insulin बनता है वह हमारे दिन भर के लिये किस तरीके से हमको शुगर से लड़ने की ताकत देता था। आप अभी गाँव में जाकर देखिए कभी भी दावतें होती हैं सबसे पहले खूब सारी मिठाई, खूब सारे लड्डू खिला दिए जायेंगे फिर जब भी थोड़ी भूख रह जाये तो बस साग पूड़ी खिला दिया और फिर छुट्टी, इसके अलावा कुछ नहीं होता था। पर ये परम्परायें बदली बाद में धीरे-धीरे एक दूसरे से फिर होड़ हुई कि हमको ज्यादा खिलाना है। अंग्रेज आये उन्होंने dessert हमको खिलाना शुरू किया और भोजन के बाद में हम लोगों को मीठा खिलाना शुरू किया आज उसकी हम समस्याएं देख रहे हैं। तो

हमने इसका बस एक जो निष्कर्ष निकालें कि हमको अपने देश के, अपना जो हमारा DNA है, उसके हिसाब से हमें अपना आहार व्यवहार सब तय करना चाहिये। दूसरों का थोपा हुआ नहीं। हम अपने यहाँ इर्द-गिर्द देखें, हमको क्या मिलता है? हम लोगों को यहाँ चित्रकूट में ही 'तेली' का इतना सुंदर उदाहरण देखने को मिला, जिसको अंग्रेज लोगों ने covid के दौरान colostrum कह कर 50-50 रुपये के capsule के रूप में बेचे वह अपने घरों में जब बछड़ा या बछिया जन्म लेते हैं, तो फ्री में बाँटा-खिलाया जाता है। इस तरीके की हमारी सांस्कृतिक values, हमारे लोक ज्ञान, लोक-विज्ञान, इन चीजों को हम लोग समझने का एक प्रयास करें तो हम लोग यह SDG Goals को बहुत आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। और सिर्फ इसी को नहीं बाकी भी जो 17 SDG's हैं, हमारे लोक संस्कारों में, हमारे लोकविज्ञान में, हमारे लोक व्यवहार में, खूब अच्छे से छुपे हुए हैं। बस हमको उनको ढूंढने की जरूरत है। हम अपने पूर्वजों पर, अपने गाँव वासियों पर पूरा भरोसा रखें आसानी से हम इनका हल ढूंढ लेंगे। Thank You.

4 QUALITY EDUCATION

ENSURE INCLUSIVE AND EQUITABLE QUALITY EDUCATION AND PROMOTE LIFELONG LEARNING OPPORTUNITIES FOR ALL

617 MILLION

CHILDREN AND ADOLESCENTS LACK MINIMUM PROFICIENCY IN READING AND MATHEMATICS

750 MILLION

ADULTS STILL REMAIN ILLITERATE

TWO THIRDS OF THEM ARE WOMEN

MORE THAN HALF

OF THE SCHOOLS IN SUB-SAHARAN AFRICA

DO NOT HAVE ACCESS TO

- BASIC DRINKING WATER
- HANDWASHING FACILITIES
- THE INTERNET
- COMPUTERS

1 OUT OF 5 CHILDREN

BETWEEN 6 AND 17 YEARS

ARE NOT

ATTENDING SCHOOL

IN CENTRAL ASIA, 27% MORE GIRLS THAN BOYS OF PRIMARY SCHOOL AGE ARE NOT ATTENDING SCHOOL

©UNICEF/NYHQ2015-1710/El Baba

4 QUALITY EDUCATION

QUALITY EDUCATION: WHY IT MATTERS

What is the goal here?

Ensure inclusive and quality education for all and promote lifelong learning.

Why does education matter?

Education enables upward socioeconomic mobility and is a key to escaping poverty. Education is also essential to achieving many other Sustainable Development Goals (SDGs).

When people are able to get quality education they can break from the cycle of poverty. Education helps to reduce inequalities and to reach gender equality. In fact, one extra year of education is associated with a reduction of the Gini coefficient by 1.4 percentage points.

Education empowers people everywhere to live more healthy and sustainable lives. Education is also crucial to fostering tolerance between people and contributes to more peaceful societies.

262 million children and adolescents remain out of school. 617 million lack minimum proficiency in reading and mathematics

26th February		
SDG 4	Speaker	Topic
9.30 am - 11.00 am	**Where We Learn**	
Speaker 1	Shri Priyank Kanoongo, Chairperson, National Commission for the Protection of Child Rights, New Delhi	Ensuring Right to Quality Education - role for Religious Schools
Speaker 2	Archarya Sanjeev Sharma, Advisor, Hemchandracharya Sabarmati Sanskrit Gurukulam, Gandhinagar	Gurukul Education
Speaker 3	Dr. Seshadri Chari, Member, Governing Council, RIS, New Delhi	Role of Universities in Education For All
	Amitabh Vashistha, General Manager, Deendayal Research Institute, New Delhi	
11.00 am -11.30 am	Tea Break	
11.30 am - 1.00 pm	**How We Learn**	
Speaker 1	Professor Ashish Pandey, Professor and Head of Department of Water Resources Development and Management, IIT Roorkee.	Skill and not theory as focus of Education in IIT, Rourkee
Speaker 2	Shri Tejinder Singh Sandhu, Advisor, Kalinga Institute of Social Sciences, Bhubaneswar	Understanding Disparities in Education
Speaker 3	Dr. Ravikant Pathak, Founder, Water University	Becoming Human is all about Education
Moderator	Prof. R. Sudarshan, Dean, Jindal School of Government and Public Policy	
1.00 pm – 2.30 pm	Lunch Break	
2.30 pm -4.00 pm	**What We Learn**	
Speaker 1	Shri Gopal Bhai, Akhil Bharati Samaj Seva Sansthan	Sanskar
Speaker 2	Anil Valsangkar, Consultant, NSDC	Skill India
Speaker 3	Dr. Bharat Mishra, Vice Chancellor, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University, Chitrakoot	Nanaji's thoughts on What we Learn as implemented in the University
Moderator	Dr. Prabha Shankar Shukla, Vice Chancellor, North East Hills University, Shillong	
4.00 pm - 4.30 pm	Tea Break	
4.30 pm- 6.00 pm	**Joint Session for Discussion and Conclusions**	

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

25th-27th February 2024

SDG 4 – QUALITY EDUCATION

SESSION I
WHERE WE LEARN

Moderator:
Shri Amitabh Vashistha, General Manager, Deendayal Research Institute
Keynote Speakers:
Shri Priyank Kanoongo, Chairperson, National Commission for the Protection of Child Rights, New Delhi
Acharya Sanjeev Sharma, Education Advisor, Topovan Sanskar Pith, Gandhinagar
Dr. Seshadri Chari, Member, Governing Council, RIS, New Delhi

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

Keynote Speech by Shri Priyank Kanoongo on "Ensuring Right to Quality Education - Role for Religious Schools".

Shri Priyank Kanoongo, Chairperson, National Commission for Protection of Child Rights, Government of India, New Delhi, served as Member, National Commission for Protection of Child Rights under the Ministry of Women and Child Development from November 2015 to November 16, 2018 and handled the Education Division of the Commission. Appointed as Chairperson from November 17, 2018 and re-appointed on October 17, 2021.

In order to achieve the mandate of the National Council for Teacher Education (NCTE), closely monitored the effective implementation of Right to Education, JJ Act, POCSO Act, Child Labour (Prohibition and Regulation) Amendment Act, 1986 etc.

Shri Kanoongo, actively engages in various consultations with stakeholders at national and regional level and also undertakes various studies and special investigations in the field of child rights.

जो आज का topic है, उसमें संशोधन से शुरू करूंगा। अगर religious schools कहेंगे तो यह विषय के साथ बेईमानी होगी। स्कूल, स्कूल होता है। Religious Institution होता है। School define है शिक्षा का अधिकार कानून की धारा 2N में, और उसके Beyond जो कुछ भी है वह कम से कम वह जगह नहीं जहाँ बच्चों को होना चाहिये और पढ़ाई के लिहाज से तो ये मान कर कतइ ही नहीं होना चाहिये कि बच्चे पढ़ रहे हैं। भारत के संविधान में सन 2002 में अनुच्छेद 21 में 86वें संशोधन के माध्यम से बच्चों को संवैधानिक मूल अधिकार के रूप में शिक्षा का अधिकार दिया गया। ये संवैधानिक मूल अधिकार जीवन के अधिकार के साथ जोड़ा गया। ये अधिकार आर्टिकल 15 में हो सकता था जहाँ कहा गया कि बच्चों और औरतों के लिये सरकारें कानून बनाएंगी यह 13वें में हो सकता था। 28 में हो सकता था, लेकिन इसको Right to life के साथ जोड़ना significantly importance बताता है। यह भारत की प्राथमिकता बताता है कि भारत में बच्चों के लिये शिक्षा उनकी dignified life के साथ जोड़ा हुआ विषय है कि एक व्यक्ति को एक सम्मानजनक जीवन जीना है तो शिक्षा के बिना ये संभव नहीं। बाबा साहब अम्बेडकर कहा करते थे कि शिक्षा शेरनी का दूध है और जो इसको पियेगा वो दहाड़ेगा। लेकिन पिछले दो दशकों में लगभग जो देश के साथ हुआ मैं वो आपके समक्ष रखना चाहूँगा। 2002 के संवैधानिक संशोधन को implement करने के लिये 2010 में जो कानून लागू हुआ वो शिक्षा का अधिकार कानून कहलाता है, 2009 में ये बना था। 2012 में तत्कालीन सरकार इस कानून में पहला संशोधन लेके आई, वो पहला संशोधन ये था कि primarily religious education देने वाले संस्थान इसके दायरे के बाहर हो गये, जिसमें मदरसा, गुमपा और minority Christian schools शामिल थे। इसके बाद जो हुआ 2014 में सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ का एक फैसला आया और उसमें कहा गया कि article 29 और article 30 के परिपेक्ष में जो भी संस्थान minority education institute का दर्जा रखते हैं, वो सभी शिक्षा का अधिकार कानून के दायरे के बाहर हो जायेंगे। अब सवाल यहाँ यह है कि संविधान के अलग-अलग अनुच्छेदों की व्याख्या इस तरीके से की जा सकती है कि बच्चों के मूल अधिकार उसमें छुप जायें। Article 20 और article 30 जिस पर बातें बहुत हुई लेकिन देश में इन पर बहस कभी नहीं हुई। क्या किसी community को अपने धर्म की शिक्षा देने या अपने धर्म का प्रचार करने का अधिकार, बच्चों के जीवन अधिकार के ऊपर हो सकता है? इस पर चर्चा नहीं हुई लेकिन article 29 और article 30 के इन implementations को करने के लिये जिस संवैधानिक संशोधन पर सदन में भी सबसे कम चर्चा हुई उसके बारे में मैं आपके समक्ष बात रखना चाहूँगा। 2002 में संवैधानिक संशोधन हुआ 2010 में उसको implement करने के लिये कानून बना 2006 में एक और संवैधानिक संशोधन हुआ जिस पर parliament में भी सबसे कम चर्चा हुई जिसे 93rd Amendment Act कहते हैं। अनुच्छेद 15 (5) में जब ये लिखा गया कि सरकार private educational institutions में reservation impose कर सकती है। तब वहाँ पर ये जोड़ दिया गया कि अनुच्छेद 29 और 30 के अंतर्गत जो minority education institute हैं वो इससे exempt रहेंगे। इस exemption का क्या परिणाम हुआ? इस exemption का ये परिणाम हुआ कि 2014 वाला जो फैसला आया Supreme Court का उसने ये कहा कि 93rd Amendment Act की रोशनाई में हम वो सारे institutes को right to education act के दायरे के बाहर करते हैं जो किसी ना किसी रूप में minority education institute का status रखती हैं। अब minority education institute होने के लिहाज से देश में बच्चों की पढ़ाई के निमित्त जो संस्थान है वो religious trust के missionary schools हैं, वो मदरसाज हैं, वो बुद्धिस्ट गुमपाज हैं, वो सिख संगत के चलने वाले कुछ गुरुद्वारों में चलने वाले कुछ विद्यालय हैं, कुछ वैदिक पाठशालायें लेकिन इस सबमें जो सबसे बड़ा नंबर है, सबसे बड़ी संख्या है जहाँ बच्चे सबसे बड़ी संख्या में

है; वो मदरसाज है और इन मदरसों पर हम लोगों ने पिछले लगभग 300 साल में कभी कोई बात नहीं की। और यकीन मानिये इन में जो बच्चे पढ़ रहे है, उनसे ज्यादा deprived बच्चे कोई भी नहीं। अब कानून का अगर एक ही प्रावधान दो अलग-अलग हिस्सों में बच्चों को बाँट देता है, तो एक बच्चे वो है जो मिशनरी स्कूल्स में पढ़ रहे हैं, जो देश के इलीट क्लास के बच्चों को कैटर करने का काम कर रहे है। हर छोटे मझोले शहर के जो सबसे पैसे वाले सबसे बड़े लोग, उच्च पदस्थ अधिकारी होते हैं उनके बच्चे वो मिशनरी स्कूल्स में पढ़ रहे होते हैं और देश भर के मदरसों में देश के सबसे गरीब मुसलमान का बच्चा पढ़ रहा होता है। वास्तव में जो लोग मदरसे की चलाने वाली समितियों से भी जुड़े हैं उनके बच्चे भी दूसरे स्कूल में पढ़ने जाते हैं। जिनमें पढ़ने वाले बच्चों की संख्या 1 करोड़ 10 लाख है। जब जब हमने सरकारों से सवाल जवाब किये तो सारे राज्य सरकारों ने हमसे झूठ बोला। मैं आपको बड़ी जिम्मेदारी से बता सकता हूँ। 2016 से जब आयोग ने इस पर काम करना प्रारंभ किया तो हमको साढ़े 4 साल लग गये रिपोर्ट को तैयार करने में, 17 प्रिंसिपल सेक्रेटरी को हम को समन करना पड़ा डेटा लेने के लिये। इस देश में मदरसे तीन तरीके के हैं, एक है रिकॉग्नाइज्ड मदरसा, अन रिकॉग्नाइज्ड मदरसा और अनमैप्ड मदरसा। recognised मदरसा वो है जिसमें उसका खुद का यू डाइस कोड होता है। आप सब शिक्षा जगत से जुड़े हुए लोग है, आप सब जानते होंगे। जिसने सरकार से ग्रांट ली या सरकार से मान्यता ली और सबसे बड़ा छल जो है, इन यू डाइज़ वाले मदरसों के नाम पर देश में किया गया। यह जो recognised मदरसे हैं, उत्तर प्रदेश में, मध्य प्रदेश में, उत्तराखंड में, पश्चिम बंगाल में, बिहार में, झारखंड में, देश के हर राज्य में जहाँ recognised मदरसों की परंपरा है। ऐसे मदरसे देश के सभी राज्यों में जहाँ ऐसे सरकार के खजाने द्वारा फंडेड मदरसों की व्यवस्था है। उन सब में हिंदू बच्चे हमको इन मदरसों में पढ़ते हुए मिले। हर एक राज्य में अब हिंदू बच्चों का तो मदरसे में कोई काम नहीं क्योंकि जो मुस्लिम कम्युनिटी है, वो इन recognized मदरसों को उन institutions की तरह तरजीह ही नहीं देती जहाँ वो बच्चों को दीनी लिहाज से पढ़ने भेजे। दीनी लिहाज से पढ़ने जाने के लिये जो मदरसे हैं। वो आज भी unmapped है, unrecognized है। आपको इसके इतिहास में झांक कर देखना पड़ेगा। भारत में मदरसा education की शुरूआत जो है वो मुहम्मद गोरी के जमाने में हुई। आज के तारीख में मदरसों में जो education है वो औरंगजेब के जमाने में बनाया हुआ जो syllabus था, सन 1690 के आसपास औरंगजेब मौलाना निजामउद्दीन को परशिया से लेके आया था और उसने जो syllabus बनाया उसे दर्शे निजामिया कहते है। आज देश के सभी मदरसे चाहे recognized हो चाहे unrecognized हो। उन सबका जो basic fundamental religious syllabus है वो दर्शे निजामिया ही है। इस देश में पूरी की पूरी मुस्लिम कम्युनिटी को दिशा देने के लिये मदरसा एजुकेशन सिस्टम की तामीर 1866 में की गई। जो latest सिस्टम है, लोग देखते हैं उसको भी आज तक किसी ने पलट के नहीं देखा और जो syllabus है उसको 300 सालों में किसी ने पलट के नहीं देखा। मैं आपको फर्स्ट हैंड experience से बता सकता हूँ की वाकई इन मदरसों में पढ़ाया जाता है की पृथ्वी चपटी है। वाकई ये पढ़ाया जाता है की सूरज पृथ्वी के इर्द गिर्द घूमता है। आप में से जिनके बच्चे या grand children स्कूलों में पढ़ते होंगे उनकी पिटाई पिछले 15-20 साल से बंद है। क्या ऐसा है corporal punishment को शिक्षा का अधिकार कानून आने के बाद बंद कर दिया गया भारत में ये मदरसे बोलते हैं कि कोई teacher एक वक्त में बच्चे को तीन थप्पड़ मार सकता है। ये जायज है बच्चा चाहे तो कयामत के रोज इसका बदला ले सकता है। हमने किस तरीके की pathetic situations में अपने बच्चों को डाला हुआ है। वो भी केवल इसलिये कि कुछ लोगों की religious education institute के नाम पे रोजी रोटी चलती रहे। जब 1866 में दारुल उलूम देवबंद बनाया गया तो उसके आईन में उसके constitution में लिखा गया कि हम मौलाना वली उल्ला देहल्वी के बनाये हुए principles के आधार पे काम करेंगे। आज भी यह

देश का सबसे बड़ा इंस्टिट्यूशन है। जिसके साये में बांगला देश, पाकिस्तान और भारत में हजारों मदरसे चल रहे हैं और करोड़ों बच्चे पढ़ रहे हैं। वो वली उल्ला देहल्वी के principles पे काम कर रहा है। जरा खोज के देखियेगा पढ़ियेगा वली उल्ला देहल्वी कौन था? वली उल्ला देहल्वी वो शक्स था जिसने अहमद शाह अब्दाली को खत लिख के 'गजवाय हिंद' के लिये भारत में बुलाया था। उस व्यक्ति के principles के आधार पे देश में सबसे ज्यादा संख्या में मदरसे आज भी चलाये जा रहे हैं। अभी पिछले हफ्ते की बात है हमको एक शिकायत मिली कि दारूल उलूम देवबंद में जो अलग-अलग departments हैं जैसे आप लोग VCs हैं आप professors हैं। आपके अलग-अलग departments होते हैं। वहाँ भी एक अलग department है दारूल इफ्ता जो फतवे ज़ारी करने का काम करता है उन्होंने एक फतवा जारी किया। गजवाय हिंद का उल्लेख किस हदीस में कहाँ आता है nutshell में बात यह थी कि जो गजवाय हिंद के दौरान मारा जायेगा वो सर्वोच्च कोटी का शहीद कहलायेगा। वो जन्नती होगा, उसको जन्नत में जगह मिलेगी। क्या भारत के बच्चों को या बांगलादेश के बच्चों को या पाकिस्तान के बच्चों आज भी पढ़ाया जाना चाहिये? और यह जहर कितना असर करता है इसका एक उदाहरण और मैं आपको देना चाहूंगा। आफिया सिद्दीकी एक औरत है। आफिया सिद्दीकी पाकिस्तानी थी, एमआईटी यूएसए में डॉक्टरेट करके निकली साइंटिस्ट थी और आफिया सिद्दीकी को लेडी तालिबान के नाम से अमेरिका में प्रतिष्ठा मिली। उसको अमेरिकन सरकार ने 86 years का एंप्रिजमेंट दिया है। आफिया सिद्दीकी बड़े गर्व से ये बताती है कि वो देवबंदी विचारधारा से प्रभावित थी। तालिबान के बारे में आप सब लोग जानते होंगे। तालिबान ने जब पहली दफा अफगानिस्तान पे कब्ज़ा किया एक निर्वाचित सरकार को हटाया गया तब तालिबानियों ने बड़े फक्र के साथ कहा था कि हां हम देवबंदी हैं और उसके बाद देवबंद ने एक professional course शुरू किया 1866 से लेकर के आज तक देवबंद वाले जो है केवल एक professional course चलाते हैं और ये professional course जो है वो mass communication और media का है कि हम किसी भी प्रकार अपना perception लोगों की नजर में बनाए रखे कि हम बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। आपकी कही हुई एक बात, जब आप टीचर होते हैं, जब आप लोगों को राह दिखाने का काम करते हैं, बहुत गहरा असर करती है। अब हम दुनिया के परिप्रेक्ष्य को देखें हम एक बार अगर यह मान भी लेते हैं कि दीनी तालीम के लिहाज से जो institution चल रहा है वो हो सकता है कि Islamic education के लिहाज से बहुत उन्नत प्रकार का काम कर रहा हो तो ये भी सच नहीं है।

हम सब जानते हैं कि सऊदी अरेबिया में, इस्लाम जहाँ से निकला और पूरी दुनिया में प्रसारित हुआ, वहाँ के Education System में और भारत के मदरसा Education System में क्या फर्क है केवल एक बानगी यह और आपको बताऊंगा। 1930 में सऊदी अरेबिया में सभी बच्चों के लिये औपचारिक शिक्षा की शुरूआत हुई।

1945 में किंग अब्दूल अजीज बिन अब्दूल रहमानअल सऊद ने एक बड़ा कार्यक्रम शुरू किया और 1951 आते-आते वहाँ पे 226 formal school बनाये गये और उस वक्त तक वहाँ पे लगभग 30,000 बच्चे स्कूलों में दाखिल किये गये। तब भारत में क्या हो रहा था। तब भारत में दारुल अलूम देवबंद अपने आईन में ये लिख रहा था कि हम कभी सरकार से कोई इमदाद नहीं लेंगे। तब दारुल अलूम देवबंद अपने प्रिंसिपल्स में ये लिख रहा था कि अगर कोई सरकार भले ही मुसल्मानों द्वारा चलाई जा रही हो लेकिन अगर इसलामित तौर तरीके से नहीं चलाई जा रही तो वो सरकार ठीक सरकार नहीं है। उस वक्त सऊदी अरेबिया में 1964 में लड़कियों के लिये पहला स्कूल बना दिया गया था। जब दारुल अलूम देवबंद क्या लिख रहा था कि अगर स्कूल में लड़कियों के साथ लड़के पढ़ रहे हैं तो लड़कियों

को वहाँ से निकाल लो। तब दारुल अलूम देवबंद बता रहा था बच्चों को कि अगर लड़कियों के स्कूल में male teachers हैं तो लड़कियों का वहाँ पढ़ना हराम है। ये सब facts हैं ये सब record पे हैं।

1990 तक पूरे साउदी में गर्ल्स स्कूल का नेटवर्क बिछाया जा चुका था और विश्वविद्यालय तक की कुल पढ़ाई में लड़के और लड़कियों का अनुपात वहाँ बराबर है। आपको जानकर हैरानी होगी लेकिन सऊदी अरेबिया में people teacher ratio दुनिया के सबसे अच्छे पीटीआर में से एक है। एक के ऊपर 12.5। एक टीचर के ऊपर साढ़े बारह बच्चे मात्र वहाँ पर हैं। ऐसा नहीं है कि वहाँ पर इस्लामिक studies नहीं पढ़ाई जाती। वहाँ fundamental education के साथ mandatory इस्लामिक studies दी जाती है, respective of your religion लेकिन एक फर्क है। फर्क इस बात का है अभी हाली में 2014-15 की घटना है जब पूरी दुनिया की जो equal rights वाली कमिनिटीज हैं खासतोर पर LGBT कमिनिटीज हैं। उन्होंने आपत्ति जताई कि भाई आपकी Islamic के कोर्स में जो LGBT कमिनिटीज हैं उनके बारे में आपत्तिजनक बाते हैं। दुनिया भर के लोगों ने उनको ही बताया कि आपके जो कोर्स हैं, उनमें औरतों के बारे में कुछ बातें आपत्तिजनक हैं। उन्होंने अपने कोर्सेस को बदला, टोन डाउन किया, वक्त के साथ चले। उसके उलटे भारत में क्या हो रहा है जुलाई 2023 में हमने पूरी देश के मदरसों में दारुलूम देवबंद द्वारा prescribe की गई एक बुक पढ़ाने के लिये मना किया। हमको उन लोगों ने बताया कि हमने वो बुक हटा दी है। वो बुक थी बाहिष्टी जेवर, google करियेगा कभी बाहिष्टी जेवर जो है वो मौलाना अश्रफ अली थानवी द्वारा लिखी गई ये किताब है जो legitimize करती है minors के साथ sexual abuse करना। वो आपको तोर तरीके सिखाती है कि minors के साथ अगर आपने physical relationship establish किया है तो आपको किन-किन कायदों का पालन करना है। हम ये कर रहे हैं और दुनिया कहाँ जा रही है अकेला साउदी ऐसा नहीं है। UAE में भी प्राथमिक कक्षाओं में अरबी Islamic studies के साथ-साथ Mathematics, Science, English सभी कुछ mandatory है तो भारत में ऐसा क्या है जिसके कारण हम अपने एक करोड दस लाख बच्चों को अभी तक fundamental education से महरूम रखे गये हैं। यह सवाल आप लोगों के बीच में छोड़के जा रहा हूँ। उम्मीद करता हूँ कि हमको यहाँ से उसका कुछ जवाब मिलेगा। Thank you so much.

Keynote Speech by Archarya Sanjeev Sharma on "Gurukul Education".

Archarya Sanjeev Sharma, Education Advisor, Topovan Sanskar Pith, a Gurukul in Gandhinagar District, Gujarat has over 30 years of experience in the field of education and has worked in a diverse range of Institutions and locations. The English Medium School and the Gurukul run by the Trust in the same campus, extends a unique blend of Religion, Culture and Nationality.

सभी को जय श्री राम प्रणाम। बहुत गुणिजन और विद्वान सभा को प्रणाम करते हुए मैं सीधा अपने विषय के उपर आता हूँ। जैसा की मेरे परिचय में कहा गया कि मैं गर्भ संस्कार से लेके IAS, IPS ओफिसर को मैं कॉलेज शिक्षा में पढ़ाता रहा। 25 साल लगातार प्राइमरी से लेके Higher Education के सारे आयामों को देखकर तथा corporate trading के आयामों को देखकर और United Nations के साथ काम करने के बाद यह एहसास हुआ कि ये भारत की शिक्षा का विकल्प नहीं हो सकते। तो भारत की शिक्षा है क्या? और ये प्रश्न मेरे मन में क्यों उठा? मुझे पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से economics department से गोल्ड मेडल मिला। जहाँ कभी डॉक्टर मनमोहन सिंह पढ़ा करते थे और पढ़ाया करते थे। 1994 में मेरा पहली बार चित्रकूट आना हुआ जब मैंने sustainable development के ऊपर अपनी PhD करना शुरू किया और पूरे भारत में sustainable development के ऊपर कौन-कौन से प्रयोग हो रहे हैं तो उन प्रयोग को देखने के लिये मैं यहाँ आया था। उसके बाद से जो यात्रा हुई कि शिक्षा के जो सामाजिक

संदर्भ हैं, पर्यावरण के संदर्भ हैं, सांस्कृतिक संदर्भ हैं और उन सारे के सारे संदर्भ को देखते हुए एक शिक्षा का विकल्प क्या हो? धार्मिक शिक्षा का भी मॉडल है। गुरुकुल समस्त समाज का आधार है। पूर्ण शिक्षा का मॉडल है इस प्रश्न को समझने के लिये पहले हमें थोड़ा-सा पीछे जाना पड़ेगा कि अगर हम recorded इतिहास देखते हैं। फर्स्ट एडी से अभी तक का, 2024 तक का भारत के रिकॉर्डेड इतिहास में जब तक अंग्रेज भारत नहीं आये थे, भारत दुनिया की सर्वश्रेष्ठ अर्थव्यवस्था है। समस्त दुनिया की 15% population भारत में विराजमान लगभग हमेशा रही है। आज भी है और पूरी दुनिया का 24% से 26% जो GDP है, वो भारत में था और भारत का हर एक गाँव स्वावलम्बी है।

अंग्रेज शोधकर्ताओ का अध्ययन और उनकी रिपोर्ट जो धरमपाल जी द्वारा संकलित 'Beautiful Tree' में दर्ज है। अंग्रेजों के भारत में आने से पहले तक भारत की total जो साक्षरता दर थी, जिसमें सभी समाज के सभी वर्ग शामिल थे। बच्चे भी, minority भी सभी वर्ग शामिल है, कहीं भी 71% से 73% से कम एजुकेशन नहीं थी। ये कौन सी व्यवस्था थी, जिसमें हर एक नागरिक के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, धर्म और पर्यावरण की एक संतुलित व्यवस्था सभी के लिये उपलब्ध थी। जहाँ बेरोजगारी नहीं थी। जहाँ कोई अनाथ नहीं था। जहाँ कोई Old age home की या children home की जरूरत नहीं थी, ऐसी कौन सी व्यवस्था थी? वह सामाजिक व्यवस्था थी वो कोई धार्मिक या अध्यात्मिक व्यवस्था नहीं। धर्म और अध्यात्मिकता सामाजिक व्यवस्था के छोटे हिस्से थे। इस व्यवस्था को समझने के लिये तो हमें सबसे पहले भारत में समाज की क्या परिकल्पना है? उसको समझना होगा। क्योंकि आज जब भी हम शिक्षा की बात करते हैं, हम सरकार की बात करते हैं, चाहे वो UN system से बात करें, चाहे UNICEF से बात करें, चाहे Save the children से बात करें या धार्मिक शिक्षा की बात करें या हम सरकारी शिक्षा की बात करें या हम बाजार की शिक्षा की बात करें convent school, business school, IIIMS, यूनिवर्सिटीज, इनकी बात करें इन सब में सामाजिक परिवेश का बड़ा असर पड़ता है। अतः आज मैं बात करना चाहता हूं, सामाजिक शिक्षा की क्योंकि बाजार और सरकार समाज के छोटे से 2 अंग हैं, जो लगातार बदलते रहते हैं, परन्तु समाज एक चिर स्थाई सनातन है।

अगर मैं भारत की सामजिक व्यवस्था की बात करूँ तो भारत में समाज की परिभाषा है, जहाँ चार मुख्य वर्ण एक साथ रहते थे, 18 वर्ण या जातियां एक साथ रहती थी, जहाँ छतीस बिरादरी एक साथ रहती थी और जहाँ 72 कलाओं के जानकार एक साथ एक गाँव में, एक समाज में संतुलन के साथ सौहार्द के साथ रहते थे। ऐसी कम से कम छोटी से छोटी ईकाई समाज कहलाता है। चार वर्ण जिसमें ज्ञान, सुरक्षा, उत्पादन व्यापार और सेवा की जिम्मेवारी स्वीकारने वाले ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय और शूद्र इकट्ठे रहते थे। 18 जातियां इकठ्ठी रहती थी जहाँ 36 बिरादरी जिनके पास 72 कलाओं के जानकार लोग होते थे। जहाँ हर एक व्यक्ति कम से कम दो कलाओं को जानता था। ऐसे लोग एक इकट्ठे मिलके रहते थे उसको समाज कहते थे। और इस प्रकार का समाज जहाँ हर एक व्यक्ति के पास कम से कम दो कलायें हैं और जब वे मिलके उत्पादन करते हैं तो वो उस उत्पादन का जो वितरण हो, वो वस्तु विनिमय से कर लेते थे। जहाँ सभी की सारी जरूरतें पूरी हो जाती थीं। परन्तु अगर गाँव में एक भी व्यक्ति कम होता था, अगर मोची नहीं है, अगर लोहार नहीं है, अगर तेली नहीं है, अगर बढ़ई नहीं है तो हम क्या करते थे, उसके बिना समाज पूरा नहीं होता था, तो हम बाजू के

पड़ोसी समाज से जाके उसको आदरतापूर्वक, गाजे बाजे के साथ लिवा लाते थे और उसको समाज में स्थापित करते थे और पूरा समाज उनकी जिम्मेवारी स्वीकार करता था। उनका रहन सहन, पोषण और उनकी समाजिक धार्मिक जो सारी के सारी परंपरायें उनको सुनिश्चित करता था। ऐसी भारत की व्यवस्था थी।

अब अगर मैं आज SDG के context से शिक्षा और हंगर के साथ साथ 17 के 17 जो SDG गोल हैं, क्या उन 17 गोल की जो प्राप्ति है। उस भारत में पूरी होती थी या नहीं? वो कौन सी व्यवस्था थी जिससे भारत की GDP लगातार लगभग 1800 साल विश्व की कुल GDP का 24% से अधिक रही। क्योंकि अगर हम आज से कुछ 50 साल पीछे भी जाये तो देखेंगे कि भारत का कोई गाँव ऐसा नहीं था, कोई परिवार ऐसा नहीं था जो अपने गाँव की सारी जरूरतें पूरी करके एक से दो साल का अन्न संचय नहीं करता था, मसाले संचय नहीं करता था, दवाएं संचित नहीं करता था। और ऐसा ही कोश प्रत्येक परिवार में भी होता था। अपनी जरूरतों के बाद उस सर्पलस को हम आगे व्यापार व्यवस्था के द्वारा शहर को देते थे, राज्य को देते थे, देश को देते थे और पूरी दुनिया में भी एक्सपोर्ट करते थे तब भारत का भी जो एक्सपोर्ट था, वो पूरे ब्रिटिश साम्राज्य से ज्यादा था। भारत एक्सपोर्ट से नेट अर्न कर रहे थे। भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था था। 1947 में हम GDP के 0.3% के ऊपर थे। पिछले 70 वर्षों में हम 3% के ऊपर आये हैं। हम अंग्रेजी राज में 24% से 0.3% तक गिरें और फिर पिछले 70 साल में हम विकसित करते हुए 3% तक आ पाये हैं। तो शिक्षा क्यों? कहाँ? कैसे? इस विषय को पढ़ने के लिये मैं थोड़ा सा आपको चित्रण करता हूँ कि गुरुकुल और ग्रामीण शिक्षा कैसी होती थी? भारत में जब शिक्षा आरंभ कार्यक्रम होता था तो वह सभी के लिये होता था। उसमें गुरु हर एक बालक को बिठा के उसका शिक्षा आरंभ कर देता था उसके कान में एक मंत्र बोलता था–

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

अर्थात् तू पूर्ण था, पूर्ण है, पूर्ण रहेगा और तेरी पूर्णता में अगर पूर्णता का समावेश किया जाये तो भी पूर्ण रहेगा। कुछ निकाल दिया जाये तो भी पूर्ण ही रहेगा। इस पूर्णता की पूर्ण अभिव्यक्ति तुम हो। अर्थात् अपने जीवन में निरंतर सुख प्राप्ति की जो व्यवस्था है, जिसको अपने में, परिवार में, समाज में जीने हेतु लाना है। वह भारतीय शिक्षण व्यवस्था का मूल उद्देश्य है। यही गुरुकुल व्यवस्था की मूल व्यवस्था है। इस शिक्षा को लेने के लिये यह भी कहा गया कि मानव अकेला जीव है धरती पर जिसको सीखने की जरूरत है। क्योंकि सभी जानवर तो पहले से ही अपनी जीने का जो अंदाज है, वह लेकर आते हैं। मानव के पास कोई निश्चित complete जीने का programme नहीं होता, उसको सीखना पड़ता है और सीखना किसको है, कैसे सीखना है? व्यवस्था में अकेला कोई सीख नहीं सकता। व्यवस्था में सीखना है तो व्यवस्था में क्या सीखना है कि मेरे अंदर क्या व्यवस्था है। शरीर के रूप में, मन के रूप में, बुद्धि के रूप में और आत्मा के रूप में, जो शरीर है, ये बड़ा होता है, मन, बुद्धि, आत्मा अपने आप में पूर्ण है। उसमें जागृति की अपेक्षा है, अपने आप में तो वो पूर्ण है, परंतु अपने अंदर की जागृति के लिये हमें जो बाहर का पर्यावरण है, उसका अस्तित्व जैसा है उसको वैसा जानना पड़ेगा। अस्तित्व को पूरा प्राकृतिक रूप से कैसा जानना है? तो प्राकृतिक रूप में भारतीय प्रतिमान है। कहा गया कि प्रकृति अपने आप में पूर्ण है उसको सुधारना नहीं है, उसको बदलना नहीं है, वह जैसी है उसको वैसा जानना है। और दूसरा जो कहा गया है कि प्रकृति पर्याप्त है। 100 करोड़ लोगों के लिये भी, 500 करोड़ लोगों के लिये भी और 1000 करोड़ लोगों के लिये भी प्रकृति में पर्याप्त साधन उपलब्ध है। हमको इन सभी साधनों का प्रकृति के हर

एक जीव के लिये आहार-विहार, सुरक्षा संवर्धन और समन्वय के साथ इसका सदुपयोग करना है। इसलिये हर एक बच्चे को पहले यह जानना है कि मेरी जानने की जरूरत क्या है? और मुझे कितना जानना है? जब यह स्पष्ट हो जायेगा तो कैसे जानना है? वह अपने आप स्पष्ट होता चला जायेगा। इसके लिये तीन व्यवस्था भारत में रही। शिक्षा में पहली व्यवस्था रही पाठशाला, दूसरी व्यवस्था रही गुरुकुल तब तीसरी व्यवस्था विद्यापीठ से। पाठशाला का जो भारतीय संदर्भ यह रहा कि एक बरस से आठ बरस का जो बच्चा है उसका अन्नमय और प्राणमय कोश अभी विकसित हो रहा है तो उसको उसके सभी जो पंच कोश हैं उनका ज्ञान देने के लिये उसको पहले आठ साल तक कोई अक्षर ज्ञान ना दिया जाये। उसको अपने परिवार में अपने संगी साथियों के साथ अपने समाज में अपनी प्रकृति के साथ क्रिया के द्वारा, अनुकरण के द्वारा, अनुसरण के द्वारा सिखाया जाये तो वो पाठशाला रहती थी। अब गुरुकुल परिवार के इर्द गिर्द, मंदिर के इर्द गिर्द, पूजा स्थानों के इर्द,गिर्द और समाजिक संस्थानों के इर्द गिर्द भारत के हर पूजा स्थान में आरध्य स्थान के साथ कोई ना कोई गुरुकुल व्यवस्था जुड़ी रही है। धर्मपाल जी कहते हैं कि भारत में लगभग 7,50,000 गुरुकुल थे। अगर गाँव आज 6,50,000 से कम है तो उस समय 7,50,000 कैसे हो गये। वो इसलिये हो गये एक गाँव में कई बार 3,4,5 से लेके 10,10 गुरुकुल भी रहे हैं। जब बच्चे को भाषा, उसकी समस्त इंद्रियों का ज्ञान, समस्त पर्यावरण का ज्ञान और जो समाज का मूल्य सिंचन है वो परिवार और समाज में होता है। जब वो हो गया तो अब किस बच्चे की क्या प्रतिभा है, उसको आगे निखारने के लिये शिक्षा का दूसरा मापदंड है, कि पुरानी पीढ़ियों ने जो भी ज्ञान अर्जित किया है, सर्जित किया है उस ज्ञान को जानना है, समझना है, अपने जीवन में उतारना है और आगे समाज को बढ़ाने के लिये उसको तैयार करना है। दुनिया में जितना लिखित सिलेबस भारत में उपलब्ध है वो दुनिया में और कहीं उपलब्ध नहीं है। चाहे वेद हो, उपनिषद हो, रामायण हो, महाभारत हो, ब्राह्मण ग्रंथों या उसके अलावा 72 कलाओं के ग्रंथ भारत में उपलब्ध हैं। इन ग्रंथों को पढ़ना, समझना और अपने जीवन में आत्मसात करने की व्यवस्था करना गुरुकुल का काम था। गुरुकुल का पहला उद्देश्य था कि हर बच्चा अपने धार्मिक और समाजिक सभी ज्ञान को अर्जित कर सके और अपने जीवन में उतार सके। गुरुकुल में क्या होता था? अक्षर ज्ञान शुरू होता है और अक्षर ज्ञान में सबसे पहले उसको उच्चारण का ज्ञान दिया जाता था। शिक्षा modern education और शिक्षा में बहुत अंतर है क्योंकि शिक्षा का भारतीय अर्थ है उच्चारण शब्द ज्ञान आरंभ में तो उच्चारण भाषा बच्चा अपने समाज से सीख लेता है।

परन्तु उसके पास अपने परिवार की, अपने गाँव की, अपने पर्यावरण का जो उच्चारण है वो भी साथ में लेके आता था। उसका उच्चारण correct नहीं होता। अगर हम देखते हैं कि पूरी दुनिया की व्यवस्था के सभी स्कूल व्यवस्था में आठ विषयों से ज्यादा सभी बच्चे थक जाते हैं। उनको tuition की ज़रूरत पड़ती है, उनको cramming की ज़रूरत पड़ती है, उनको audio-visual की ज़रूरत पड़ती है पर फिर भी वो पहुंच नहीं पाते। पूरी दुनिया का result यह है कि 1-5% बच्चे first division में होते हैं। 20-25% second division में होते हैं ठीक है, 30% बच्चे third division में होते हैं और भी 50% तक फेल हो जाते हैं, तो सरकारों को यह प्रावधान करना पड़ा किसी को fail ही नहीं करना। और modern syllabus की परिभाषा है अल्पतम (कम से कम इतना तो) आना ही चाहिये और modern syllabus की maximum परिभाषा है कि विद्यार्थी को कम से कम market में व्यवसाय के लिये तैयार करना, इससे आगे वो जाता नहीं है, जीवन यापन से आगे जाता नहीं है। परन्तु भारत में syllabus की परिभाषा है,

कैसे जीना है, खुद के साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ और प्रकृति के साथ। यह भारत का syllabus था और यह curriculum था, यह syllabus नहीं था। यह गुरुकुल से शुरू होता है पर कभी खत्म नहीं होता। इसके लिये भारत में शिक्षा के बाद हम उनको छंद में सिखाते थे। छंद का मतलब है, क्योंकि हमारा सारा साहित्य छंद में है, कविता में है, पद्य में है, उसको याद रखना आसान है। इसलिये एक वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, पंच वेदी तक यहाँ पर हैं, यानि वो इतना वांगमय याद कर सकते थे, उसका उच्चारण कर सकते थे। जब आपने sufficient मात्रा में जो साहित्य है, वो याद कर लिया, तो अब उनके पीछे विज्ञान पक्ष क्या है, भाषा पक्ष क्या है, उसकी गहराई में उतरने के लिये अब आपको दिया जाता था व्याकरण। और व्याकरण अगर पूरी हो गई, उसके बाद आप उतरेंगे आयुर्वेद में, अब आप उतरेंगे ज्योतिष में, भारत में ज्योतिष का मतलब भूगोल भी है, वैदिक गणित भी है, पर्यावरण भी है, medical science भी है, psychology भी है। ये सभी विषय उसके अंदर समाविष्ट थे। उसके बाद उसको आयुर्वेद का शिक्षा ज्ञान दिया जाता था उसके बाद कल्प और निरुक्त यानि भाषा विज्ञान की शिक्षा है। जिन लोगों को ये सारे के सारे पांच विद्यायें यानि वेदांग आ गये उसका वेद में जो प्रवेश संभव हो पाता था। इसके बिना वेद में प्रवेश होना संभव नहीं था। इसके लिये तैयार करना गुरुकुलम व्यवस्था का काम था। और जिन्होंने वेद में प्रवेश ले लिया उसको आगे लेके जाना वो थी, विद्यापीठ। तो दुनिया की जो श्रेष्ठम विद्यापीठ हैं जिसको हम आज University कहते हैं। वो भारत में स्थापित हुई, सबसे पुरानी, सबसे बड़ी और सबसे विशिष्ट थी।

अब ये सारी की सारी व्यवस्था पहले मुगल काल में टूटती हैं और धीरे धीरे उन पर अंतिम प्रहार जो किया है वो English में college शिक्षा ने किया है। इस सब को तोड़ दिया।

अगर हमें फिर से भारतीय शिक्षा को प्रतिस्थापित करना है तो हमें शिक्षा को नये अर्थों में अर्थात् सामाजिक अर्थों में फिर से देखना पड़ेगा। उसको देखने के लिये एक छोटा-सा मैं आपके सामने example पेश करता हूँ। आप देखें कि उसको कैसे किया जा सकता है और इसमें क्या हम SDG की sustainable development के 17 के 17 goal को पूरे कर पायेंगे या नहीं ये भी हम देख सकते हैं। आज भारत में 6,50,000 गाँव हैं। हर एक गाँव में कम से कम 2-3 मंदिर हैं। पूजा जिस धर्म के भी हैं, जिस संप्रदाय के भी हैं अगर उनके साथ एक पाठशाला को जोड़ा जाये तो एक गाँव में average population 4,000 हैं, वहाँ 1200 बच्चे होते हैं। उन 1200 बच्चों को शिक्षित करने के लिये भारतीय दृष्टि से जायेंगे तो हमें एक नियम का पालन करना पड़ेगा। वो नियम है शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, धर्म और पर्यावरण ये पाँच मुख्य विषय हैं, जिनका बाजारीकरण नहीं हो सकता, इनका सरकारीकरण नहीं हो सकता, कैसे? क्योंकि शिक्षक को, वैद्य को, पंच को, धर्म गुरु को, भिक्षु को पगार नहीं देनी। ये वो लोग हैं जो समाज की जिम्मेदारी स्वीकार करेंगे और समाज उनकी जिम्मेदारी स्वीकार करेगा। तो अगर हमें अपने बारह सौ बच्चों को एक गाँव में शिक्षित करना है तो उनको शिक्षा देने के लिये पर्याप्त मात्रा में लोग आज भी हरेक गाँव में उपलब्ध हैं। जरूरत है उनकी जिम्मेदारी समाज उठाये। उनको बाजार और सरकार के हवाले ना करे। अगला विषय गाँव को समस्त न्याय उपलब्ध करवाना और स्वास्थ्य उपलब्ध करवाना है। हमें गाँव के हर एक बच्चे को स्वस्थ रखना है। तो कितने वैद्यों की जरूरत है? एक गाँव के लिये maximum 2 और वो गाँव में आज भी उपलब्ध है। तीसरा अगर गाँव को सर्व सुलभ न्याय उपलब्ध करवाना है, तो भारत की पंच परमेश्वर की प्रथा में जायें। जहाँ पंच के लिये पगार नहीं है केवल सम्मान और

पारितोषिक है, तो कितने पंचों को वकीलों और judges की जरूरत है। पंच परमेश्वर में, एक से पांच। अगर गाँव को धर्म निष्ट रखना है, समाज निष्ट रखना है तो कितने धर्म गुरू की जरूरत है एक, और उसकी व्यवस्था आज भी हर गाँव में उपलब्ध है। जरूरत है हमें सरकार और बाजार से बाहर निकल के समाज की, शिक्षा की और आज की दुनिया में जीने के लिये हमें बच्चों को कुशल बनाना है। इन सबके लिये सरकार ने कुशलता के लिये vocational training के लिये असंख्य प्रयोग किये और सारे के सारे प्रयोग फेल हो रहे हैं। 72 कलायें भारत में दी जाती थी तो 72 कलायें को जानने वाले गाँव में होते थे, तो लोग उनके पास अपनी अपनी अनुकूलता के अनुसार, अपने अपने वंश के अनुसार, अपनी-अपनी परंपरा के अनुसार और अपनी-अपनी दिलचस्पी के मुताबिक उनके साथ रहते थे और कलायें सीख जाते थे। इस तरीके से हर एक गाँव शिक्षा में, स्वास्थ्य में, न्याय में, धर्म में, पर्यावरण में, उत्पादन में, वितरण में स्वावलम्बी हो सकता था। पूरी दुनिया नहीं हो सकती पर भारत आज भी हो सकता है क्योंकि आज भी 50% भारत स्वावलम्बी भी है। जरूरत है थोड़ा रुकने की, थोड़ा पीछे मुड़ने की और देखने की कि हम क्या थे? हमारा क्या-क्या बचा हुआ है और क्या-क्या बचाने लायक है। भारत के पास complete south का decentralized living, harmonious living का nature के साथ living का, जल, जंगल, जमीन और जानवर को सुरक्षित रखने का पूरा प्रतिमान उपलब्ध है। अगर आज जितना भी हमारा पर्यावरण का चैलेंज है तो हर गाँव में जल, जंगल, जमीन, जानवर ये चार का संकट असल में जन का संकट है। हम अधूरा जान रहे हैं शिक्षा के कारण। इसलिये अधूरा जी रहे हैं, तो पूरा जानेंगे तो पूरा जीयेंगे। अगर पूरा गाँव इकट्ठा हो जाये तो पूरे गाँव के जितने साधन, जल के साधन हैं, कितना पानी बरसता है, कितना पानी बहता है, कितना पानी रुकता है और कितना जमीन में उतरता है, उसका संशोधन किया जा सकता है। और गाँव अगर लग जाये, तो कितने साल लगेंगे गाँव को जल में पुनः संतुलित होने में और स्वावलम्बी भी होने में, Maximum तीन साल। अगर पूरा गाँव इकठा हो जाये और बाजार और सरकार थोड़ी देर के लिये बाहर हो जाये, कितना समय लगेगा एक गाँव में जितने जंगल चाहिये, जितनी variety के पेड़ पौधे चाहिये उनको फिर से लगाने में और बसाने में maximum सात साल। अगर पूरा गाँव इकठा हो जाये तो जितने किस्म के जानवर चाहिये, जितनी संख्या में चाहिये और जितनी गुणवत्ता में चाहिये उनको फिर से पैदा करने में कितना समय लगेगा maximum 10 साल। और अगर गाँव इकठा हो जाये तो जो हमारी भूमि जिसको हमने जहर डाल-डाल के बाजार के अनुकूल बनाया है। उसको हमने जहरीला किया है उसे फिर से शुद्ध करना है तो कितना समय लगेगा maximum 3 साल। परन्तु वो करने से पहले हमें गाँव की शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, धर्म, पर्यावरण इन सब को सामाजिकता के angle में देखना पड़ेगा। उसको बाजार और सरकार से बाहर करना पड़ेगा। शिक्षक की, वैद्य की, पंच परमेश्मर की और गुरु की प्रतिष्ठा फिर से करनी पड़ेगी। उसको करने का एक ही तरीका है, इनको व्यापार से मुक्त करना पड़ेगा। अगर ये आज कर लें तो सात साल में भारत विश्व गुरु फिर से बन जायेगा। आपको 5 trillion या 50 trillion की अर्थव्यवस्था की जरूरत नहीं पड़ेगी हर एक जीव के लिये आहार, विहार, सुरक्षा, संवर्धन और समन्वय उपलब्ध करने का, उसको स्थापित करने का भारतीय प्रतिमान उपलब्ध है। और उसको देने के लिये गुरुकुलम व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमें जरूरत है रुकने की, थोड़ा पीछे मुड़कर देखने की, क्योंकि इसके संस्कार हमारे ग्रंथों में हमारी संस्कृति में, हमारे इतिहास में और हमारे जीवन में आज भी है। बस इतना ही। धन्यवाद।

Keynote Speech by Dr. Seshadri Chari on "Role of Universities in Education For All."

Dr. Seshadri Chari, Member, Governing Council, RIS and Member, Managing Council, Mumbai University is an alumnus of Mumbai Vidyapeeth (then it was Bombay University). He did his B. Com, LLB, and MA from here. He is the Governor's nominee in the Managing Council of Mumbai University.

He is the member of the Governing Council of Research & Information Systems (RIS) an autonomous institution under the Ministry of External Affairs.

He is presently the Chairman, China Study Centre, MAHE, Manipal and Centre for Indo-Pacific Studies. He is also the member of the Planning & Monitoring Board of Manipal University (MAHE).

He is also Professor Emeritus at Savitribai Phule Pune University and Ministry of Defence Chair in the Department of Defense & Strategic Studies, and Secretary General of Forum for Integrated National Security (FINS), Director (International Affairs) at

the Institute of National Security Studies, Research Director at the Chronicle Society of India for Education & Academic Research (CSIEAR).

SDG 4 जो 'क्वालिटी एजुकेशन' इस विषय से संबंध है उस पर हम चर्चा कर रहे हैं. SDG 4 को 'एजुकेशन फॉर ऑल' यह एक जनरल विषय के नाते बताते हैं, परंतु उसका जो structured शब्द प्रयोग है वह है Encourage Inclusive and Equitable Quality Education and Promote Lifelong Learning Opportunities for All. ऐसा कहा है अब इसमें देखिए, One Is 'Inclusive and Equitable Education' i.e. Education Begins Inclusive and Equitable and the adjective in that is quality education and then that "Education starts promoting lifelong learning opportunities." तो यह समाज के holistic development के दृष्टिकोण से यह SDG बना है। अब अगर हम इस पद्धति को देखें तो इसमें दुनिया भर में जितने भी educational institution हैं, खास करके higher educational institution, क्या वह काम कर पा रहे हैं? अभी वास्तव में नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये भारत में हम जिसको universal education कहते हैं, वह education for all ऐसा एक general शब्द प्रयोग कर कहते हैं। अब इसमें सबसे बड़ी जो एक कमी है SDG 4 में है अब ऐसा कुछ बहुत सोच-विचार करके एक कमी को लाया गया ऐसा नहीं है ऐसे यह अनेक जो SDG से उसमें यह कमी है जैसे हेल्थ फॉर ऑल ऐसा कहा गया है हेल्थ फॉर all।

हाउसिंग फॉर ऑल अब। housing for all का मतलब क्या है। Housing शब्द जो है उसको define नहीं किया है। अब इसका मतलब क्या होता है कि अमेरिका में जो घर है वह 5 multi storey building है, वह भी house है और गाँव में मिट्टी से बना हुआ घर है, वह भी हाउस है। तो इसका मतलब क्या होता है, अब House का मतलब क्या है, Roof above your head यह house है? या A room with air conditioner, यह house है? या one room for every member in the family यह house है? A house का मतलब क्या है, यह कहीं define नहीं किया है। अब इसको परिभाषित करना देश और समाज विशेष पर छोड़ दिया है। इसलिये जब GDP का calculation होता है, तो कितने लोग हैं, जिनको आजकल की परिभाषा में हम कच्चा मकान और पक्का मकान कहते हैं। अब पक्का मकान है, कच्चा मकान है, यह मकान है कि नहीं? गाँव में जो लोग रहते हैं वो किस में रहते हैं, पक्के मकान में रहते हैं कि कच्चे मकान में रहते हैं। तो एक दृष्टि से देखा जाये तो इसमें commercial angle भी अपने आप आ जाता है। अब cement companies का अगर आप पूछेंगे कि पक्का मकान और कच्चा मकान में फर्क क्या है तो वह यह कहेगा कि जिस मकान में cement और steel का उपयोग किया गया है वह पक्का मकान है, क्योंकि उसको अपना cement बेचना है steel बेचना है। इसलिये cement companies के आधार पर जितने भी गाँव में मिट्टी के घर हैं; वह घर ही नहीं हैं, और इस प्रकार कि cement companies का, steel companies का अगर हम सभी companies data करेंगे, और उनको बोलेंगे कि आप भारत का survey करिए, कि housing for all, भारत में कितना है, तो तुरंत गिनती शुरू करेंगे। Cement के मकान इतने हैं, 20% लोगों के पास Cement के मकान हैं, तो मतलब भारत में housing for all किया या नहीं? तो उस दृष्टि से जब भारत के गाँव में रहने वाले कोई भी व्यक्ति के पास मकान नहीं है तो क्या लोग सड़क पर रह रहे हैं? यह कहाँ रह रहे हैं? वह कैसे रह रहे हैं तो

यह एक परिणाम आयेगा। इसलिये definition बहुत जरूरी होता है। एक और दूसरा definition एक inclusive definition होता है। यह दुनिया भर कर सभी लोगों के लिये आगे पड़े इस प्रकार का definition इस point to point अगर If it isn't point we should accept की इसका definition नहीं है। Every country is free to develop its own definition और उसमें थोड़ी बहुत sincerity रखकर हम कहेंगे कि भी यह education for all का मतलब क्या है? Education for all का मतलब जिन्होंने अंग्रेजी education पाई है, क्या वही educated है, बाकी सब uneducated है। आखिर uneducated व्यक्ति का मतलब क्या है? एक कहानी बताता हूँ–तो एक लड़का था जो एक शहर में बचपन से नौकरी करता था। आते-जाते वह एक बूढ़ी महिला से सब्जी खरीदता था। फिर पांच-छः साल हो गये हैं। उसकी शादी हुई और वह अपनी पत्नी के साथ सब्जी खरीदने आया तो बूढ़ी महिला समझ गई कि इसकी शादी हो गई। बहुत खुशी से उसने आशीर्वाद दिया और कहा कि अपनी पत्नी के साथ तुम आये हो पहली बार, तो अच्छी बात है। आज जितनी सब्जी चाहिये वह खरीद लो पैसे नहीं देना। अब वह बूढ़ी महिला अशिक्षित थी। जब उसकी पत्नी ने सब्जी रखी, तो बुढ़िया ने कहा कि वह पढ़ी-लिखी है। तो आदमी ने पूछा कि आपको कैसे पता चला है कि पढ़ी-लिखी है। मैंने तो कहा ही नहीं कि बहू पढ़ी-लिखी है। इस पर बुढ़िया ने कहा कि मैं समझ गयी कि वो पढ़ी-लिखी है, क्योंकि उसने टमाटर खरीदे पहले और थैली में डाल दिया और उसके ऊपर उसने सूरन खरीदे और वह उस थैली में डाल दिया, इसी से समझ गयी कि पढ़ी लिखी है यानि शिक्षण किया है लेकिन व्यवहार ज्ञान नहीं है। तो शिक्षण (Education) किस को कहें? व्यवहार ज्ञान को कहें, या B.A., B.Com, B.Sc को कहें। यह definition में तय करना पड़ेगा। इसलिये जब हम education for all या universal education कहते हैं अथवा SDG 4 की बात करते हैं, तो यह ध्यान में लाना पड़ेगा। यह अभी जो गुरुकुल की बात हुई, तो अगर हम समझ लिये गुरुकुल की पद्धति को और आज हम अगर देश में अपनाते हैं और उसको यशस्वी दृष्टि से हम चलाते भी हैं, तो उसका परिणाम क्या होगा? उसका परिणाम यह होगा कि यह जो SDG की बात कर रही है। "Ensure inclusive and equitable quality education", तो गुणवत्तायुक्त शिक्षा इस प्रकार की पद्धति में संभव हो जायेगी। इसलिये जो primary education है, उसका दायित्व राज्य करें, अर्थात् primary education की व्यवस्था सरकार करे। जहाँ लोग रहते हैं, जहाँ बच्चे हैं, वहाँ primary education होना ही चाहिये। इतना सरकार सुनिश्चित करें। सरकार Facilitator बने। सरकार का यह काम नहीं है कि आप primary education में क्या पढ़ाएंगे, कौन पढ़ाएगा, कितना पढ़ाएगा, शिक्षक को पगार कितना होगा, बच्चे कितने पैसे देंगे, यह समाज तय करे। लेकिन facilitate करने का काम सरकार करे। इसके बाद बात आती है Higher Education की, तो अब Higher Education की शुरूआत कहाँ होती है? Higher Education की शुरूआत अभी हमने तय किया कि बारहवीं के बाद जब बच्चा College में जाता है, तो College से शुरूआत होती है। आजकल उसमें भी काफी experiment हुआ है, 10+2+3+4+5 पता नहीं क्या चल रहा है।

घर में दो बच्चे हैं, जो बड़ा लड़का है, वो कहता है। मैं school में जा रहा हूँ, छोटा लड़का कहता है, मैं college में जा रहा हूँ। तो मैंने बड़े लड़के को कहा कि कोई बात नहीं है, कोई अच्छे से पढ़ता है, कोई अच्छे नहीं पढ़ते हैं। तो बच्चा वाला मैं जिस स्कूल में पढ़ता हूँ उसमें 12th स्टैंडर्ड के बाद भी है, 10+2+3 है, इसलिये मैं उसी स्कूल में पढ़

रहा हूँ, और जो छोटा भाई है जिस स्कूल में जाता था उसमें 10+2 के बाद कुछ नहीं है, इसलिये वो कॉलेज में जा रहा है, बस ये इतना ही फर्क है। तो ये ऐसी पद्धतियां है, अलग-अलग पद्धतियां है, उसमें एक standardization लाना चाहिये। लाना चाहिये कि नहीं लाना चाहिये, वो अलग बात है, पर उस पर चर्चा हो सकती है। लेकिन मेरा मानना है कि Higher Education निजी क्षेत्र (Private Sector) का उत्तरदायित्व होना चाहिये। तो ये भारत के गुरुकुल क्या थे? यह private sector तो ही था। और गुरुकुल में सरकार का, जैसे अभी बताया गया कि सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। गुरुकुल में सरकार का हस्तक्षेप इसको लेकर इस देश में पिछले हजार वर्षों में क्या हुआ? चाणक्य ने सबसे पहला विरोध क्या था। किस बात पर, मगध के सम्राट नंद ने कहा कि शिक्षक भिखारी होता है। मैं शिक्षक को पैसे दूंगा, अगर राजा पैसा नहीं देता तो शिक्षक क्या करेगा? इसीलिए जितने गुरुकुल है उसमें क्या शिक्षण दिया जाता है, यह मैं तय करूंगा अर्थात् राजा तय करेगा। चाणक्य ने कहा नहीं यह राजा नहीं तय करेगा। उस पर संघर्ष हुआ और संघर्ष होके साम्राज्य बदल गया। यह है शिक्षक की कैपेसिटी। यह गुरुकुल की कैपेसिटी है। यह ही होनी चाहिये। सरकार नहीं तय कर सकती है कि शिक्षण क्या होना चाहिये। और इस बात को हमसे ज्यादा अगर किसी ने समझा तो वह ब्रिटिश लोगों ने समझा। 1881-1882 में उन्होंने commission बनाया। Hunter Commission ने गुरुकुल पर बड़ा अध्ययन किया और recommendation दिये। गुरुकुल के बारे में जितना Hunter Commission ने study किया है उतना इस देश में शायद आज की जो सरकार है उन्होंने भी नहीं किया होगा। उन्होंने सब गुरुकुल का study किया और कहा कि 'This is the best form of education policy.' इसलिये commission का recommendation है कि 'Primary education should always be in the government sector and higher education should be privatized.' फिर 1947 में जब हमें आजादी मिली उसके बाद थोड़ा बहुत इसमें परिवर्तन किया। स्वतंत्रता के बाद डॉक्टर राधाकृष्णन कमेटी की स्थापना हुई और उसके बाद काफी प्रयोग हुआ उसमें दो बातों का आग्रह किया गया एक यह था कि शिक्षण जो है वह प्राइवेट सेक्टर में होना चाहिये। हमने federal structure अपनाया तो union government के पास कुछ विषय थे जैसे Foreign policy, Defence, Taxation, ये union government के विषय हैं। नोट छापना यह union government का विषय है, और state government अपना नोट नहीं छाप सकती है। लेकिन Law & Order आदि ये state subjects हैं। और कुछ subjects ऐसे हैं, जो Concurrent है तो ऐसा तय हुआ कि उन पर दोनों सरकार नियम बना सकती हैं। तो Education आज अभी Concurrent List में है यानि केंद्र सरकार भी education के बारे में विचार करें। तो overall education policy केंद्र सरकार तय करें और state government जो है, उनका भी education का अपनी policy हो सकती है। State government के बोर्ड कर सकते हैं। यह सारा अपने आप में अलग विषय है। पर इसका मतलब यह हुआ कि भारतीय संविधान निर्माताओं ने तय किया कि Education should be made available to everybody through all sources. यह एक विषय हुआ। अब दूसरा विषय निकला कि education को पैसा कितना देना चाहिये? और कौन देगा? तो education ऐसा sector जिसके लिये budgetary provision होता है। GDP का इतना पैसा education को देय है यह सरकार तय करती है। और यह कितना होना चाहिये इसे बढ़ते रहना चाहिये कि नहीं? आदर्श रूप से माना जाता है कि शिक्षा पर व्यय GDP

का 6% होना चाहिये, पर अब तक 3% से ज्यादा कभी नहीं हुआ है। और एक अन्य विषय है। enrolment के बारे में, gross enrolment ratio कितना होना चाहिये? तो अभी जो gross enrolment ratio है, वह 26.3 परसेंट है। वास्तव में यह तय हुआ था कि by the end of 2,000 यह 40% होना चाहिये, लेकिन पिछले 76 सालों में दुर्भाग्यवश यह 26.3% से ऊपर नहीं गया। यह HRD report के आधार पर है। इसमें male-female ratio भी देखना चाहिये, female ratio अभी भी थोड़ा कम है पर ज्यादा कम नहीं है। Very surprisingly male 19%, female 18% इतना है। मतलब 1% का फर्क है। अपने आप में यह बहुत अच्छी बात है। यह gross enrolment ratio कैसे बढ़ सकता है, इन सभी विषयों को भारत जैसे देश में SDG 4 को achieve करने के संदर्भ में देखना होगा। आने वाले 7-8 सालों में हम कर सकते हैं। अभी अगर हम NEP 2020 को देखेंगे तो इसमें Education for All के लिये जो road map चाहिये, वह road map उपलब्ध है। NEP 2020 के बारे में आगे एक अलग सत्र है। जिसमें इसके बारे में विस्तार में चर्चा हम करेंगे, समझ भी लेंगे। तो कुल मिलाकर education for all इसके संदर्भ में अब तक जितने commission, Kothari Commission से लेकर अब तक जितने commission बने हैं उनकी reports को हमें पढ़ें और उसके आधार पर जो कुछ अच्छी बातें हैं और कुछ बातें ऐसी है जहाँ हमने गलत किया, या पूरा नहीं किया, इसको समझ कर एक नई policy हम बना सकते हैं। और मुझे लगता है कि इसके बारे में हम practical उदाहरण तय करें। और अगर हम ये सब कर पाये तो भारत दुनिया में पहला ऐसा देश हो सकता है जिसने education for all अपना लक्ष्य पाया। इन सबके आधार पर, हमारे अपने parameters पर हम यह सिद्ध भी कर सकते हैं, ऐसा मुझे लगता है।

Shri Atul Jain, General Secretary, Deendayal Research Institute

मैं अभी चार दिन पहले मध्य प्रदेश के ही एक गाँव ग्वादरवाड़ा जोकि नरसिंहपुर जिले में है वहाँ गया। भोपाल से जिस गाड़ी में बैठा, मैंने उसके चालक से पूछा कितनी पढ़ाई की है तो उसने बताया कि मैं 12वीं कक्षा पास हूँ और उसी सांस में फिर उसने यह भी बताया कि वैसे तो मैंने सारी पढ़ाई अंग्रेजी में की लेकिन मुझे नौकरी नहीं मिली। मैं सबसे अच्छे स्कूल में पढ़ा वगैरह वगैरह उसने सारी बातें बताई। तो मुझे आश्चर्य हुआ कि आपने पढ़ाई इतनी सारी जो कि अंग्रेजी में की। सबसे अच्छे स्कूल में की और वह जिस स्कूल का नाम उन्होंने बताया वह इस क्षेत्र का सच में अच्छा विद्यालय था। अब उसको नौकरी नहीं मिलने पर थोड़ी-सी ड्राइवरी करने लगा, उसकी गाड़ी अपनी थी। तो मैंने उसको डिग्निटी ऑफ लेबर का एक सिद्धांत हिंदी में समझाया कि जो काम कर रहे हो वह अच्छा है, उसको यह क्यों मानते हो कि नौकरी नहीं मिली तो मेरा जीवन ही खराब हो गया। सेल्फ एंप्लॉयमेंट है, अच्छी बात है करो। पढ़ने का जितना पढ़ लिये उतने को

संभालो। प्रॉब्लम यह थी कि मैंने उससे कुछ चीजें जो अंग्रेजी में एक दो शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहीं, उसको वो बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था, वो 12वीं कक्षा पास था। वहाँ के अच्छे अंग्रेजी विद्यालय में पढ़ा माता-पिता के खूब पैसे भी खर्च हुए। प्रॉब्लम यह थी कि हम क्या पढ़ रहे हैं? कहाँ पढ़ रहे हैं? कैसे पढ़ रहे हैं? तीनों जो हमारे सामने सवाल इस गोष्ठी के माध्यम से खड़े हुए हैं उनके जवाब हमने इतने वर्षों में अभी तक बहुत तरीके से ढूंढने का प्रयास नहीं किया। इस दिशा में जो प्रयास हुये उसमें सबसे बड़ा प्रयास था श्रद्धेय नानाजी देशमुख का। हमने नानाजी के कृतत्व पर एक समग्र निकाला, छह खंडों का, उसमें एक खंड पूरा का पूरा शिक्षाविद नानाजी (शिक्षा शास्त्री नानाजी) पर है। उन्होंने शिक्षा के बारे में इतना विस्तार से, इतना समग्रता से, सब चीजों को उसमें समेटा है और उन्होंने उसमें तीन शिक्षा विदों का एक बहुत अच्छा जिक्र किया है जिसे आप सब लोगों के सामने रखना चाहता हूँ, क्योंकि आप शिक्षा के क्षेत्र से आये हैं, उस पर काम कर रहे हैं और एक इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में हम लोग सब बैठे हैं। हम लोगों को उसमें गुरुकुल भी शामिल है। उन्होंने गांधी जी का नाम स्वाभाविक तौर पर लिया फिर उन्होंने देश के संदर्भ में एक नाम लिया गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का। नानाजी ने कहा कि शिक्षा पद्धति और शांति निकेतन की शिक्षा पद्धति खास तौर पर हमारे देश के लिये किस तरीके से महत्त्वपूर्ण थी। तीसरा उन्होंने कहा, जो हम लोगों को बहुत महत्त्वपूर्ण लगा और जिस पर हमने पिछले वर्षों में खूब काम भी किया, वह था डेनमार्क के एक शिक्षाविद ग्रंट विक क्रिश्चन। क्रिश्चन जो पढ़ाई कराते थे उनकी पद्धति भी लगभग गुरुकुल जैसी थी। पूरी की पूरी भावना गुरुकुल जैसी थी। और जो उसका नीतिगत सिद्धांत था वह था 'फोक एजुकेशन' हमारी शिक्षा कैसी हो तो नानाजी ने जैसे चित्रकूट में हमारे सामने बहुत से प्रयोग किये, उन प्रयोगों में क्या था, नन्हीं दुनिया आकाश के नीचे बैठो सब कुछ देखो, समझो प्रकृति के साथ संवाद करो, प्रकृति को समझने की कोशिश करो, उसी से सीखो, समाज से सीखो, समाज के संस्कारों से सीखो, अपने लोगों से सीखो, अपने माता-पिता से सीखो, अपने मित्रों और उनके परिवारों से सीखो। सब कुछ सीखो, यह सीख जो थी हमने जब से उसको सिर्फ किताबों तक समेटना शुरू करा तो हमारे सामने ये सारी तरीके की डिस्टॉर्शन खड़ी हो गई। हम लोगों को कहीं ना कहीं लोक ज्ञान, लोक विज्ञान, इन सब चीजों को देखकर उनके साथ बढ़ना पड़ेगा। कल इंडियन एक्सप्रेस की एक वीकली मैगजीन जो आती है, उसमें एक बहुत सुंदर एक चित्रण था; एक लोक देवता का, लोक देवी के नाम से। उसको यहाँ मैं इसलिये जिक्र कर रहा हूँ कि उसमें उनको हिंदू भी उसी तरीके से मानते हैं जिस तरीके से उनको मुसलमान मानते हैं। वह उस जंगल की रक्षक के रूप में मानी जाती हैं और रक्षा करने की जो सीख है, अब हम उसको औपचारिक शिक्षा में तो गिनेंगे नहीं, क्योंकि अगर उन्होंने वहाँ के जंगल की रक्षा कर ली उनकी स्वयं की सीख से, लेकिन वो जीरो कक्षा पास हैं, तो हमारे स्टैंडर्ड्स के हिसाब से तो एजुकेटेड नहीं हैं। अब हम ऐसी स्थिति में एजुकेशन की परिभाषा को बदलेंगे?

या हम इस चीज पर विचार करेंगे कि एजुकेशन सचमुच में क्या है? कैसी है? वह लोगों ने जो जंगल बचाए, वहाँ के लोगों ने बिना फॉर्मल एजुकेशन के। क्या हम उसको एजुकेशन मानेंगे कि नहीं मानेंगे? ऐसे सवालों के जवाब हम लोगों को इस तरीके के सेमिनार्स में। और SDG गोल्स की जब हम बात करने वाले हों, तो 'सस्टेनेबिलिटी' के जितने भी सिद्धांत हैं। इस बारे में पिछले करीब आठ वर्षों से (2016 से) जबसे हम इन पर काम कर रहे हैं, तो उसमें एक चीज आई कि दीनदयाल शोध संस्थान जिस फिलोसोफी पर काम करता है, 'एकात्म मानववाद' पर, उसमें जो अपने 17 SDG Goals हैं, वो सारे गोल्स उसमें बहुत अच्छी तरीके से रिफ्लेक्ट होते हैं। इनके अलावा भी उसमें बहुत से गोल आते हैं। तो हमको अपनी चीजों पर, अपने लोगों पर, अपने संस्कारों पर, अपनी प्रकृति पर, अपने नेचुरल रिसोर्सेस पर, जिनके साथ हम एक 'इमोशनल बॉन्डिंग' बनाकर काम कर सकते हैं। उनसे सीखने की आवश्यकता है, हमें अपने पशु पक्षियों के व्यवहार से भी सीखने की आवश्यकता है। बहुत लोग उस पर काम करते हैं। तो मुझे बस कुछ इसी तरीके की बातें आप सब लोगों के सामने रखनी थी। बहुत बहुत धन्यवाद...

Interventions by Speakers and Deendayal Research Institute volunteers on 'What We Learn.

Shri Vidyasagar Patel, Director, Saraswati Gyan Sagar School, Village Pausalha, Panchayat Paldev, Majhgawan, Satna (M.P.). Apart from running the school singlehandedly, he actively participates in Social Service activities.

आप सभी को नमन करते हुए हमारे हृदय में विराजित परम आदरणीय नानाजी को नमन करते हुए आज मैं एक सपना जैसे देख रहा हूँ कि मुझे ऐसे मंच पर आने का मौका मिला है। मैं यह बताना चाहता हूँ कि मैं एक छोटा-सा विद्यालय संचालित कर रहा हूँ। पालदेव ग्राम पंचायत के पास पौषलाह में, और उसमें शिक्षा, दीक्षा, संस्कार युक्त शिक्षा बच्चों में दे रहा हूँ। मुझे अक्सर दीनदयाल शोध संस्थान में आने का मौका मिलता रहा है और यहाँ से मैं हमेशा छोटी-छोटी सीखों को अपने ऊपर उतार कर अपने क्षेत्र में गाँव के बच्चों और गरीब असहाय लोगों में यहाँ की छाप उतारने का प्रयास कर रहा हूँ। आज हमारे गाँव में छोटे-छोटे सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि होते हैं जो यहीं से मैंने सीखा है और यहीं की सीख मैं आज अपने गाँव में छोटे-छोटे बच्चों को

करवाने का प्रयास करता हूँ। स्वच्छता के हिसाब से मैंने अपने विद्यालय के छोटे-छोटे बच्चों को ले जा करके गाँव में उन्हें जाग्रत करने का प्रयास किया हूँ। पूरी इस प्रक्रिया में हमने देखा है कि जब तक हम स्वयं किसी चीज में अग्रसर नहीं होंगे तो मात्र अपनी शान दिखा देने से काम पूरा होने वाला नहीं है। स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करना बहुत जरूरी है। मैं विद्यालय चला जरूर रहा हूँ, विद्यालय में शिक्षक है अन्य कर्मचारी भी हैं, लेकिन यदि हमारे विद्यालय का चपरासी नहीं आया है तो वो काम हम स्वयं करते हैं, तब जा करके हम आगे बढ़ पा रहे हैं। मुझे दीनदयाल शोध संस्थान से बहुत सीखने को मिला, साथ ही समय-समय पर मा. अभयजी, अशोक पाण्डेयजी एवं राजेन्द्रजी का मार्गदर्शन भी मिलता है, जिसके साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। जय हिंद जय भारत...

Vasant Pandit:

शिक्षा में जो एक चीज सबके ध्यान में लाना है, वह शिक्षा दिया जाना बहुत जरूरी है, पर कैसी शिक्षा दी जानी है, वह सबसे महत्वपूर्ण है। आरंभिक शिक्षण घर से और परम्परा से होता है। उसका बच्चे पर जीवन पर्यंत प्रभाव होता है। शिक्षा में नैतिक शिक्षण पर बल देना होगा। दिल्ली में राष्ट्रीय जनजाति आयोग की बैठक में एक प्रतिभागी ने जनजाति क्षेत्र में चल रहे एक विद्यालय में किये प्रयोग के विषय में बताया। वहाँ स्कूल के एक कक्ष में तीन मेजों पर अलग-अलग केक रखे गये। पहली मेज पर एक बच्चा, दूसरी पर दो बच्चे तथा तीसरी मेज पर पांच बच्चे थे। बाहर से एक बच्चे को अंदर भेजा गया, तो वो बच्चा उस मेज पर गया जहाँ पांच बच्चे थे। उस बच्चे से पूछा गया कि वह उस मेज पर क्यों गया, जबकि वहाँ पर केक कम मिलेगा। तो उसने कहा कि उसे अपने दोस्तों के साथ खाना है। यहाँ वह शिक्षा है, जो हम अपनी परम्परा से सीखते हैं।

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024
SDG 4 – QUALITY EDUCATION
SESSION II
HOW WE LEARN
Moderator:
Professor R. Sudarshan, Dean, Jindal School of Government & Public Policy
Keynote Speakers:
Professor Ashish Pandey, Professor, IIT, Rourkee
Shri Tejinder Singh Sandhu, Advisor, Kalinga Institute of Social Sciences
Dr. Ravi Kant Pathak, Founder, Water University
DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

Session Moderator, Professor R. Sudarshan
How We Learn

Professor R. Sudarshan, Dean of the Jindal School of Government and Public Policy, and has had distinguished careers in the domains of research, development programming and governance.

This session has been titled, How We Learn., and that makes me this of the Sanskrit word Pranama. That is the theory of epistemology in our Nyaya Shastra, which is how do we get to know things, how do we learn. And one understanding of divinity or God or the creator is immeasurable, infinite, like the universe has no end. So, you have a name derived from that, called Aprameya. There is Pramana, and there is Prameya, the object that is looked at, something that is beyond it, is divinity. This is our general understanding of how we approach knowledge. And so, it's not divided up into different subjects like history, economics, sociology and so on, because they narrow your field of vision, and how we learn, is to figure out how to transcend these disciplines. These disciplines have led to specializations, and the more you specialize, the more you know about one little thing, you lose sight of the bigger picture. Whereas our approach, traditionally in India, the philosophical approach to how to learn has always been holistic. It has never been classified into the subjects that we now teach in schools and in universities. And even in the West it was not the case. Isaac Newton, his field of study was called natural philosophy. He was not called a mathematician, he was not called a theologist, although he did a lot of study of the Christian gospel. He was not called a physicist. He was described as a natural philosophy, was a subject. So that's the kind of holistic knowledge that we aim to aspire and we have an excellent panel to provide us with that outlook.

Keynote Address by Professor Ashish Pandey, on "Skill and not theory as focus of Education in IIT, Rourkee"

Prof. Ashish Pandey, Professor and Head of Department of Water Resources Development and Management, IIT Roorkee is Bharat Singh Chair Professor of Water Resources of the Ministry of Jal Shakti, Government of India, and Former Head of the Department of Water Resources Development and Management, IIT Roorkee. His research interests include Irrigation Water Management, Soil, and Water Conservation Engineering, Remote Sensing and GIS Applications in Water Resources, Climate Change etc. He has served as the Executive Vice President of the Indian Water Resources Society (IWRS) and Chairman, the Institution of Engineers (Roorkee Local Centre).

आईआईटी रुड़की भारत का ही नहीं बल्कि संपूर्ण एशिया का सबसे पुराना engineering संस्थान है कि इसकी स्थापना 1847 में हुई थी अगर आप लोगों को ध्यान में हो कि करीब 1830 से 32 के बीच में दो-तीन सूखे पड़े , इसके

कारण भारत वर्ष में भुखमरी की वजह से कई लोगों के मृत्यु हो गई थी, उस समय एक ब्रिटिश कर्नल थे, कर्नल कॉटले। उनके मन में एक विचार आया कि क्यों नहीं कि एक हम कैनाल बनाएं जिसका यहाँ के लोग सिंचाई में उपयोग करें, और जानते हैं कि सिंचाई जब हम करते हैं तो हमारी उत्पादकता बढ़ जाती है और फिर उन्होंने अपरगंगा केनाल बनाने का सोचा और अपरगंगा केनाल की लंबाई उस समय 525 किलोमीटर थी जब यह बनकर तैयार हुई 1854 में। 1842 में इसका प्रपोजल ब्रिटिश सरकार ने एक्सेप्ट किया और यह 10 सालों में यह केनाल बनी और जब यह केनाल का काम चल रहा था तब उन्होंने सोचा कि क्यों नहीं हम कुछ ट्रेंड मैन पावर लाये जो कि इस केनाल की देख-रेख कर सके। तो इसके लिये 1847 में ही एक सबसे पहले पॉलीटेक्निक इंस्ट्यूट खोला यह 10 लड़कों का उसमें Admission हुआ। अब 10,000 विद्यार्थी हैं। उसके बाद क्रम चलता गया और आज इस IIT रुड़की में 21 डिपार्टमेंट है जो कि विभिन्न विषयों में बी.टेक डिग्री प्रदान करते हैं और 59 विषयों में ऍम.टेक की डिग्री प्रदान करते हैं। और मुझे बहुत खुशी होती है कि आज यानि हमारे भारत में चाहे आप रेलवे में लीजिए या वाटर सेक्टर में लीजिए, किसी भी सेक्टर में जायेंगे आपको आईटी रुड़की का विद्यार्थी जरूर मिलेगा और जिस डिपार्टमेंट में मैं कार्य करता हूँ। उसकी शुरूआत 1955 में हुई थी। क्योंकि पहले हमारे भारत देश में ऐसे इंजीनियर नहीं थे जो कि डैम का निर्माण कर सकें। तो 1955 में इस डिपार्टमेंट के शुरूआत हुई और धीरे-धीरे इस डिपार्टमेंट के जो प्रोफेसर थे जैसे प्रोफेसर भारत सिंह, डॉक्टर एन खोशला वह हमारे डिपार्टमेंट के निर्माता भी थे और बाद में उड़ीसा के माननीय राज्यपाल भी रहे। उन्हें जो विभिन्न पुरस्कार मिले जैसे–पद्मभूषण मिला, पद्मश्री, भटनागर एवार्ड इत्यादि इन लोगों ने हमारे भारत देश में जितने भी हमारे मुख्य बांध हैं जैसे–भाखड़ा नंगल, टिहरी डेम, हीराकुंड डेम, इनमें इन सब लोगों का बड़ा ही अधिक कंट्रीब्यूशन था। आज के परिपेक्ष्य में अगर हम देखें क्योंकि जैसे हमारी जो NEP 2020 आई, तो वैसे तो हम लोग पहले से ही ऐसी शिक्षा दे रहे थे जो कि केवल हमारा छात्र केवल किताबी ज्ञान में न रह जाये बल्कि उसमें कुछ स्किल हो जिससे कि वह जब फील्ड में जाये तो और ज्यादा अच्छे से काम कर पाये। हमें यह बताने में बड़ी खुशी है क्योंकि अब हमारे एन ई पी में 'एग्जिट पॉलिसी' आ गई है तो कोई लड़का छोड़ता नहीं। बीच में अभी तो एक दो साल हुआ है पर लोगों के मन में ऐसा है कि अगर हम अच्छा काम करेंगे तो हमें हो सकता है कि पढ़ाई की जरूरत ना पड़े। क्योंकि ऐसे कई उदाहरण है जैसे आप सचिन तेंदुलकर को देखिए, विराट कोहली को देखिए, सब दसवीं बारहवीं पास है तो आपको कोई अच्छा काम करने के लिये कोई बहुत पढ़ाई की जरूरत नहीं होती है आप देखिए जिसने माइक्रोसाफ्ट कंपनी बनाई है वह failure है तो कि अगर आपको व्यवहारी ज्ञान है तो आप एक अच्छा व्यवसाय एडॉप्ट कर सकते हैं, और सोसाइटी को कंट्रीब्यूट कर सकते हैं। इसके साथ ही हम लोगों ने IIT रुड़की में एक सब्जेक्ट लिया जो स्पेशली सभी लड़कों को पढ़ना पड़ेगा। यह है 'कम्यूनिटी पार्टिसिपेशन', उसमें सभी लड़कों को गाँव में जाना होगा। ऐसे NEP में भी है। पानी एक ऐसी समस्या है जो कि सभी देशों में है। यह नहीं कि हमारे भारत देश में कमी है या सभी देशों में है। कहीं पर क्वालिटी का इश्यू है, कहीं पर क्वांटिटी का इश्यू है। तो जैसे आप जानते हैं कि हम लोग जहाँ जिस एरिया को

बिलॉंग करते हैं। वहाँ पे केनाल irrigration system है। केनाल irrigration में तो किसान को एक पैसे नहीं खर्च करने पड़ते हैं, पर अगर हम उसको देखे तो उसमें हमारी एफिशेंसी मात्र 30% है यानि 70% पानी बेकार हो रहा है। और जैसे पानी की गुणवत्ता में भी कमी आती है। इसकी वज़ह है कि जैसे हम लोग ये फर्टिलाइजर प्रयोग करते हैं। हम लोगों ने अपने मन में एक बात बना लिया कि फर्टिलाइजर डालेंगे तो ज्यादा ग्रोथ होगी। पर हम नहीं देखते कि हमारा इंपुट और आउटपुट बराबर है इसके अलावा हम जो अलग से जो चीज मिल गई है। जो फर्टिलाइजर से उत्पन्न हुआ, जो हम अनाज ले रहे हैं तो कई बार कैंसर को भी जन्म देता है। अगर किसी के परिवार में किसी को कैंसर हो गया तो आपने जीवन में जितना फायदा लिया था वो एक बार में ही चला गया। अब हम लोगों को पानी के बचत की बात बताते हैं। आर्गेनिक फार्मिंग के बारे में बताते हैं तो क्योंकि ultimately हमारा पढ़ाई के बाद उद्देश्य क्या है? उद्देश्य समाज की सेवा करना है, केवल खुद की नौकरी के लिये नहीं कि हमें बस salary मिले और हम बस खुश हो जायें तो ये तो एक छोटा उदाहरण है इसके अलावा जैसे कई लड़के मान लीजिये कुछ लोग कहते हैं कि हम नहीं जा पायेंगे गाँव में उनके लिये भी है कि कोई ऐसा वो project बनाएं जो कि उपयोगी हो। जैसे की आज की date में सबसे बढ़िया उदाहरण है कि कोई आप app बना दीजिये। जैसे हमारे यहाँ कुछ FPO हैं उन्होंने अपना app बनाया। सबको उन्होंने ये play store में डाल दिया उससे जिसके माध्यम से marketing कर रहे हैं। इसको क्या समान चाहिये वो आराम से दे पा रहे हैं उससे भी लड़के बढ़िया पैसा कमा रहे हैं। हमारे यहाँ second year ग्रेड के बच्चे अच्छा पैसा कमा रहे हैं। वेबसाइट बना दी उन्होंने, तो ऐसा नहीं कि वो केवल हमारे बच्चे जो कंप्यूटर पढ़ रहा वही वेबसाइट बनाएगा। civil इंजीनियरिंग का बच्चा ही बना रहा वेबसाइट, मेकेनिकल का बच्चा बना रहा वेबसाइट इनको बस एक माहौल देना होता है। यह बात है कि एक आदमी संपूर्ण नहीं होता तो जैसे हमने बताया कि हमारे आप 10,000 विद्यार्थी हैं 19 डिग्री देने वाले डिपार्टमेंट हैं, स्पेसिलिस्ट है तो उन सब के सहयोग से यह काम होता है। यह एक प्रोग्राम शुरू किया जिसमें कि जो भूमि क्षेत्र के स्कूल से बच्चों को हम लेकर आते हैं उनको अपने observatory, अपनी लाइब्रेरी observatory या हमारे जो लैब्स है वह दिखाते हैं उससे भी वह मोटिवेट होते हैं और कई लोगों को उससे मोटिवेशन मिली और हमारे बच्चे भी कई बार गाँव जाकर पढ़ाते हैं। क्योंकि हमारा जो उन्नत भारत अभियान का प्रोग्राम है तो उस पर पढ़ाने से भी बच्चों को बहुत डायरेक्शन मिलती है और बहुत अच्छे से वह देश को सर्व कर पा रहे हैं इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। धन्यवाद नमस्कार।

Keynote Speech by Tejinder Singh Sandhu, on "Understanding Disparities In Education".

Tejinder Singh Sandhu, is Advisor, Kalinga Institute of Social Sciences. Tejinder has over four decades of varied multi-country, multi-sector experience spanning the social development sector in six South-western states of Nigeria, Africa, and the Indian states in the North-east, Rajasthan, Bihar, Jharkhand and Maharashtra.

A 17 years stint with the Indian Administrative Service, Government of India focussing on governance and public affairs, especially in rural and urban

administration, including social development; and 27 years at UNICEF across sectors have imbued Tejinder with a unique perspective on developmental issues, both at the national and international level.

Currently, he advises several leading not for profit organisations, including Center for Communication and Change - India, a Johns Hopkins Communication Centre affiliate; Kalinga Institute of Social Sciences, Covid Action Collaborative.

शिक्षा क्या हो सकती है मैं उसकी बात नहीं करूंगा मेरा ज्यादा जो वक्तव्य होगा कि SDG चार को एलिमिनेट जेंडर डिस्पैरिटीज इस संदर्भ में समझें तो लड़कियों की शिक्षा और लड़कों की शिक्षा में क्या अंतर है। विशेषरूप से Access और Learning के संदर्भ में, दूसरा हमारा फोकस है कि Vocational Education का Status क्या है, विशेषरूप से Vulnerable Population People with Disabilities and Indigenous Peoples.

यह gender disparity इंडेक्स है UDIS और मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन के आंकड़ों से मुख्य बात यहाँ से निकल के आती है वह यह है कि लड़कों और लड़कियों की जो एक्सेस है स्कूल्स के प्रति वह अब लगभग एक बराबर है तो which is generally good news चाहे प्राइमरी में हो अपर प्राइमरी में जो बच्चे हैं उनकी एक्सेस के बारे में देखें तो सामान्यतः हम लगभग सभी बच्चों को स्कूल में Enroll करवा पा रहे हैं। इसी तरह जो gross enrollment ratio हायर एजुकेशन में है। जो 18 से 23 साल के बच्चे हैं, तो पुनः Broad Message disparity के संदर्भ में बहुत अच्छा है। लेकिन हमारे कितने बच्चे higher education में enrolled है और अभी वे क्या सीख रहे हैं। अभी आप slide में enrollment की स्थिति देख रहे हैं कि 14 साल से लेकर 18 साल के जो बच्चे हैं, उनका enrolment status क्या है? और जैसे-जैसे उम्र बढ़ रही है, यहाँ क्लास लेवल बढ़ रहा है तो आप देखेंगे कि एनरोल्मेंट का लेवल भी साथ-साथ कम हो रहा है। जो दूसरा चार्ट है, चार्ट-2 उसमें हम देख रहे हैं कि Age और Sex के आधार पर कितने बच्चे स्कूल में नहीं है, जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे बच्चे संस्थाओं में कम हो रहे हैं। पर एक जो अच्छी बात है, वह है कि इन आंकड़ों में gender disparity नहीं है। अब अगर देखें कि बच्चे क्यों स्कूल से बाहर हो जाते हैं? तो अगर आप बच्चियों को देखें तो यह Lack of interest जो है सिर्फ 14% है जबकि बालकों के मामले में 24% है, इसका मतलब बच्चियों के मामले में शिक्षा लेने की मांग बच्चों से अधिक है। इसके अलावा भी कुछ Factors, Family Constraints है, जैसे घर की विद्यालय से दूरी, तो देखिये दूरी के कारण 2% लड़के स्कूल नहीं जाने की बात कर रहे हैं, वहीं लड़कियों के मामले में यह संख्या 10% है। तो ये कुछ Factors हैं, जहाँ हमें invest करने की जरूरत है। यदि एक देश के रूप में शिक्षा के Assess के संदर्भ

में। अब मैं आपको एक Broad education का अगर रखूं तो आप देखेंगे कि भारत के राज्यों के संदर्भ में कुछ well performing राज्य हैं और वहीं कुछ ऐसे राज्य हैं, जहाँ बहुत कुछ किया जाना है। पर जब आप जिला स्तरीय आंकड़े देखेंगे, तो चाहे अरुणांचल, मेघालय हो या मध्य प्रदेश बहुत विचारणीय मुद्दे निकल कर आये हैं। जैसे मध्य प्रदेश के जबलपुर एवं भोपाल में स्कूल से बाहर बच्चे-बच्चियों की संख्या में 20% का फर्क है। अगर इस सर्वे पर पूर्ण विश्वास न भी किया जाये तो मैं अंतर 12-15% माना जा सकता है। पर मेरे हिसाब से 5 या 7% से ऊपर का अंतर गंभीर है। दूसरे 2 राज्य असम और पश्चिम बंगाल ऐसे हैं, जहाँ स्कूल से बाहर बच्चों में लड़कों की संख्या अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि लड़कों को मजदूरी के लिये भेजा जाता होगा। अगर हम vulnerability की बात करें और दिव्यांग बच्चों की बात करें तो हमारी जो 2011 की जनगणना थी, उसमें 2.1% बच्चे ही ऐसे कैटेगराइज किये गये थे, जो दिव्यांग हैं, जबकि ग्लोबल जितने सेंसस अवेलेबल है उसमें लगभग 10 से 12% बच्चे ऐसे होने चाहिये जिनको किसी ना किसी किस्म की disability है। तो इसमें भी जो बिंदु identify हुआ है कि इनमें सिर्फ 0.9% बच्चे ऐसे हैं जो कि विद्यालय जा रहे हैं और उनमें लड़कियाँ 42 परसेंट है। मुझे लगता है कि अगर कोई एक बड़ा संदेश जो हो सकता है कि हमें कहाँ पर अभी बहुत काम करने की आवश्यकता है तो वह है Special Needs वाले बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराना। अब मैं vocational education की बात करता हूँ। पहली बात तो यह है कि कोई खास डेटा मिलता नहीं है कि कितने बच्चे vocational education में हैं। यहाँ मैंने बहुत कोशिश की पर मुझे सफलता नहीं मिली। सिर्फ जो 2023 का सर्वे है वह यह बताता है कि उप जिलों में 5.6 परसेंट बच्चे हैं, जिनका सर्वे हुआ, जो कि किसी ना किसी तरह की vocational education प्राप्त कर रहे हैं। और उसमें भी आश्चर्य की बात यह थी कि जो बच्चे कॉलेज जा रहे हैं वहीं बच्चे vocational education में भी enrolled हैं। और यह भी पाया गया कि जो average courses हैं वो छ महीने के हैं so again अगर we are looking for employment this seems to be a sector where we need to do much more in terms of providing vocational education and linking vocational education to industry. अब तक retention rate की, again it's good news here as far as gender disparity is concerned, there is not too much of a difference, अगला विषय learning levels है। अब यहाँ स्थिति बहुत गंभीर हो जाती है कि हमने देखा कि लगभग 95-97% बच्चे स्कूल जा रहे हैं। लड़के और लड़कियों में जो enrollment के दर में कोई अंतर नहीं है लेकिन जब हम सीखने की बातें करते हैं, तब हम देख रहे हैं कि जो learning level है वो 50% से भी कम है, चाहे आप grade 3, 5, 8, 10 देख लीजिए जो उस कक्षा के बच्चे को सीखना चाहिये। अब एक और महत्वपूर्ण बात, कहा जाता है, we are a very young country हमारा demographic dividend है। उस demographic dividend की window

बहुत छोटी है। तो अगर हम बहुत जल्दी इन levels को improve नहीं करेंगे तो फिर एक stage ऐसी आयेगी जब हम उस window को miss कर जायेंगे। इसमें दो तीन points मैं और बताना चाहता था कि "Across enrolment categories, females do better than males in reading especially in the regional text and males do better in arithmetic and English reading not regional language reading" फिर यह जिस survey को मैं quote कर रहा हूँ। वह ASSER का सर्वे है। उसमें performance levels reasonable थे लेकिन जो concern का विषय यह था कि numerical applications की category कम थी। आज Digitalization का दौर है. it's perceived to be a very big opportunity और surveys generally यह बताते हैं कि बड़ी संख्या में बच्चों के पास smartphones उपलब्ध हैं। यहाँ पर disparity बहुत है। 43.7% males have access to a smartphone whereas only 19% or 19.8% females have access to a phone. इसी तरह फोन और कंप्यूटर को इस्तेमाल या प्रयोग करने में भी बड़ी विसंगति है। फोन और कंप्यूटर के प्रयोग करने में भी महिलाओं की, तो Specific question था कि आप सेफ्टी सेटिंग्स को ऑपरेट कर सकते हैं या नहीं? "Again there is differences between males and females. Again the survey also found that males like to be able to do tasks at a proficiency of 72% and females to 62%" कुल मिलाकर general levels are OK but across all tasks males, perform better than females. एक बड़ी उत्साहवर्धक फाइंडिंग थी कि a quarter of the youth जो स्कूल में नहीं है उन्होंने भी रिपोर्ट किया कि Education related Activities उन्होंने की है तो if we can target our youth through digital Education then we might be in a posion to make a quantm leap but of course it will require a lot of investment and a lot of thinking, अब में CSR की भूमिका पांच या छह कैटेगरी है जिसमें कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी के माध्यम से शिक्षा की समस्याओं पर काम हो रहा है। एक तो है एजुकेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोवाइड करने में डिजिटल डिवाइड जो मैं आपको डिजिटल लिटरेसी की बात कर रहा था बहुत सारे स्कूलों ने लैपटॉप्स कंप्यूटर्स और स्मार्टफोन दिए हैं. टीचर ट्रेनिंग चाहे वह फेस टू फेस हो या वर्चुअल हो इसमें बहुत काम हो रहा है लर्निंग गैप्स के साथ कैसे कैच अप करना है और मार्जिनलाइज और अंडर सर्व्ड कम्युनिटीज के बीच एजुकेशन कैसे बढ़ाई जाये इसमें बहुत काम हो रहा है. सीएसआर के थ्रू और अगर हम पिछले 5 साल में देखें 161 होना चाहिये 171 नहीं है। 29000 करोड़ के लगभग खर्च हुआ है तो टोटल जो बास्केट है सीएसआर की उसका 40% एजुकेशन की ओर जा रहा है So this is a significant figure and I think this is good news and I am amazed. कि यह लगभग इतना ही रहेगा। बहुत इसमें परिवर्तन होने की अब शायद गुंजाइश नहीं

है। दिस ब्रिंग्स मी टू माय लास्ट स्लाइड और जैसे उन्होंने कहा कि आई वेर मेनी हैट्स And this one of them is an advisor to Kalinga Institute। एक स्कूल है कॉलेज है और यूनिवर्सिटी इसमें तीन चार संस्थाए हैं। I am only going to talk about the School College and University. Kalinga Institute tribal बच्चों को फ्री एजुकेशन देती है, फ्री आवास खाना हेल्थ केयर और आज की तारीख में 300 बच्चे या तो भुवनेश्वर में या 10000 अन्य जो सेटेलाइट सेंटर्स हैं उनमें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और पिछले 25 साल में लगभग 40 हज़ार बच्चे ऐसे हैं जो शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं अपने तरीके की यह एक ऐसी संस्था है और एक मॉडल विकसित किया गया है जिसमें केजी टू पीजी मॉडल डेवलप किया है अब तो पोस्ट डॉक्ट्रेट प्रोग्राम भी चल रहे हैं वोकेशनल ट्रेनिंग भी होती है। The facility is a state of the art I also take this opportunity, please visit us if you would like, we would be very happy to host you, what I am trying to do is to teach our lessons especially to reach tribal children higher education level. यह एक मॉडल है जिसको हम Replicate कर सकते हैं यह तो कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज है इनकी जो दूसरी संस्था है Kalinga Institute of Information Technology is a regular university with 29 departments. और वहाँ फी पेइंग स्टूडेंट्स है उसकी जो टॉप लाइन है दैट इज बिफोर टैक्स प्रॉफिट जो कलिंगा इंस्टिट्यूट को जाता है।

UNDERSTANDING DISPARITIES IN EDUCATION

CHITRAKOOT
26 FEBRUARY 2024

1

1

SDG 4

By 2030, eliminate gender disparities in education and ensure equal access to all levels of education and vocational training for the vulnerable, including persons with disabilities, indigenous peoples and children in vulnerable situations.

2

2

GENDER PARITY INDEX IN GER

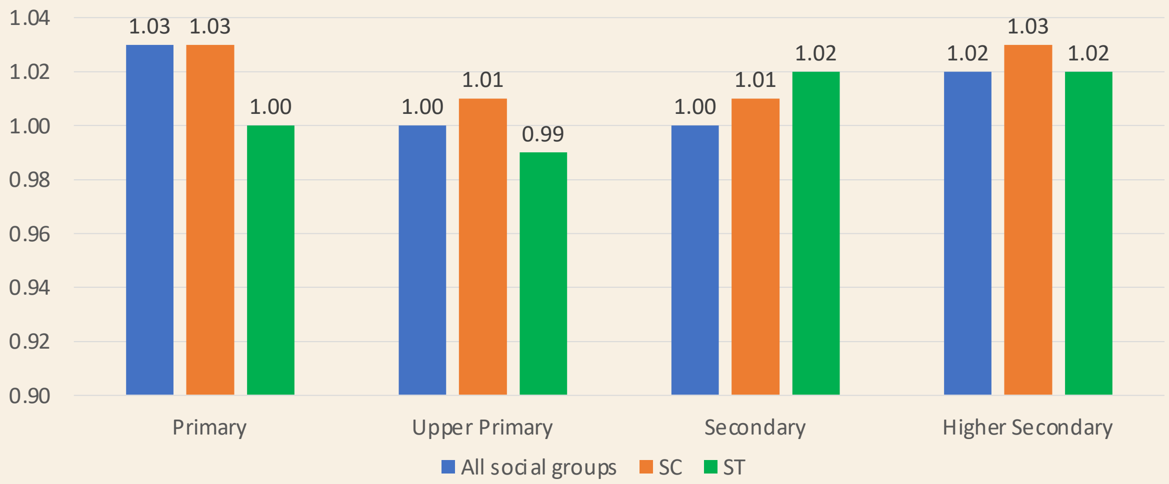

- Gender parity at the national level in access (based on GER) and across levels of education and social groups

Source : U-DISE, 2021-2022, MoE

3

3

GENDER PARITY INDEX IN GER

All India Gross Enrolment Ratio (GER) in Higher Education (18-23 Years) Based on 2011 Population

All Categories			Scheduled Caste			Scheduled Tribe		
Male	Female	Total	Male	Female	Total	Male	Female	Total
28.3	28.5	28.4	25.8	26.0	25.9	21.4	20.9	21.1

All India Gender Parity Index (GPI) in Higher Education (18-23 Years)

All Categories	SC Students	ST Students
1.01	1.01	0.98

- Gender parity at the national level in access (based on GER)

Source AISHE, MoE

4

4

YOUTH PARTICIPATION

Chart 1: % Youth currently enrolled in school or college, by age, type of institution and sex

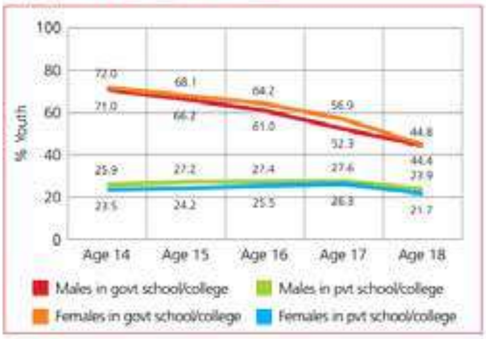

Chart 2: % Youth currently not enrolled in school or college, by age and sex

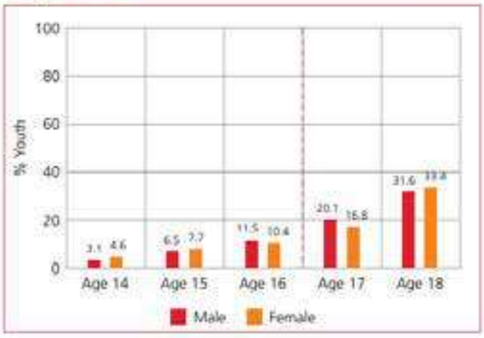

No significant difference in girls and boys participation

Table 2: Reasons for discontinuing education, by sex (%). Age group 17-18 years

Sex	% Youth who have discontinued education	Of these, % youth who gave the following reasons for discontinuing education:									
		Lack of interest	Financial constraints	Family constraints	Had failed	Pursuing vocational training	School/ college too far	Own illness	Preparing for exams	Others	No response
Male	24.4	24.2	16.9	12.9	13.4	11.9	2.1	4.3	2.9	13.1	8.2
Female	23.6	14.3	18.2	20.3	12.9	4.2	10.8	7.1	4.3	11.9	11.4
All 17-18	23.9	18.9	17.6	16.9	13.1	7.8	6.7	5.8	3.6	12.5	9.9

Youth could select more than one reason for discontinuing their education. Among males, the most cited reasons were lack of interest (24.2%) and financial constraints (16.9%). Among females, these were family constraints (20.3%) and financial constraints (18.2%).

5

Source : ASER, 2023

5

DIVYANG CHILDREN

- Proportion of *divyang* population to total population is **2.1%** , which is low as per global norms (10-12%)
- Proportion of *divyang* children to total enrolment is **0.9%** , which is low as compared to representation to the total population
- *Divyang* girls share is **42%** in total *divyang* children , which is lower than girls share in total enrolment **(48%)**

Source : U-DISE+, MoE

6

6

RETENTION RATE, 2021-22

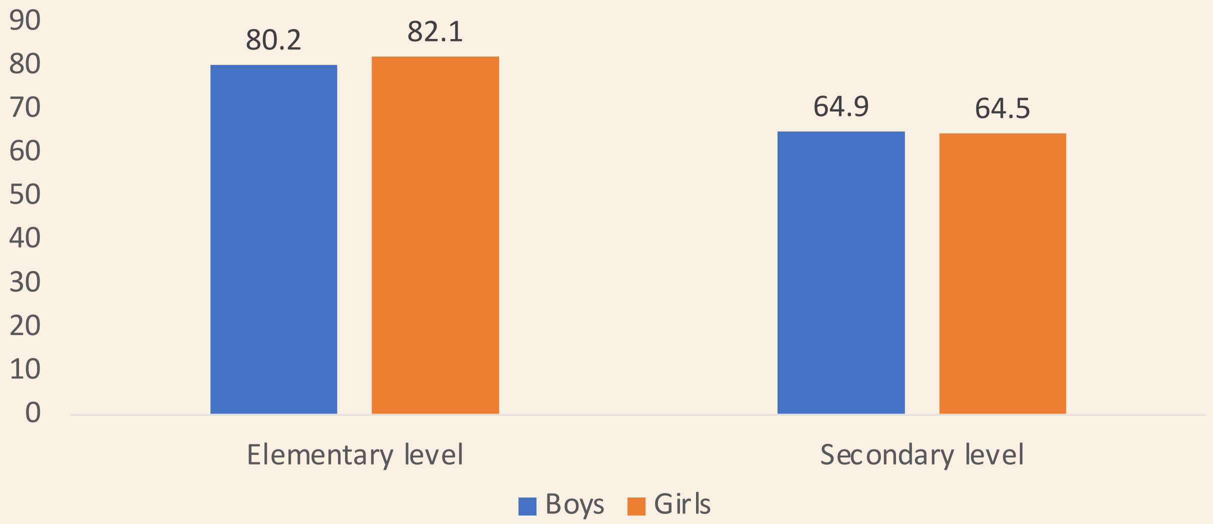

• Retention rate is almost same for boys and girls

Source : U-DISE, 2021-2022, MoE

7

7

LEARNING LEVELS : PERCENTAGE OF PROFICIENT CHILDREN, 2021

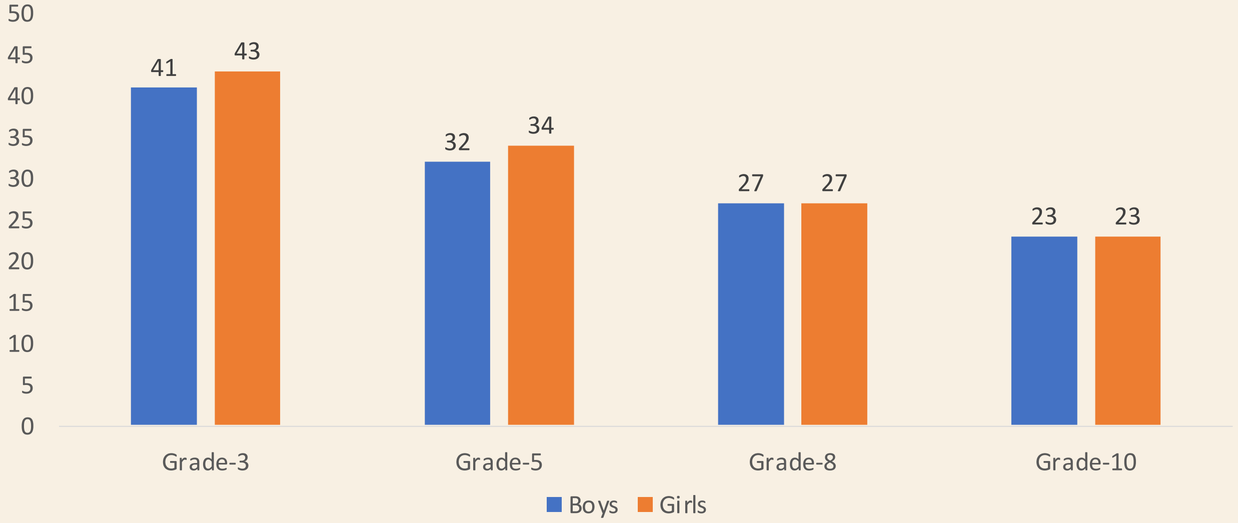

• Percentage of proficient children are is almost same for boys and girls

Source : NAS, 2021, MoE

8

8

DIGITAL LITERACY
AN OPPORTUNITY AND A CONCERN

- Close to 90% of all youth have a smartphone in the household and know how to use it. Of those who can use a smartphone, males (43.7%) are more than twice as likely to have their own smartphone than females (19.8%).
- Females are less likely to know how to use a smartphone or computer as compared to males.
- Males are more likely to know about safety setting than females.
- During the survey, slightly more than two thirds of youth could bring a smartphone to do these tasks. Males were more likely to be able to bring a smartphone (72.9%) than females (62%).
- Other tasks included finding specific videos on Youtube, sharing with friend, browsing and finding answers, setting alarms etc: **Across all tasks, males outperform females.**

A quarter of youth who are not currently enrolled also report doing education related activities on their smartphone during the reference week.

9

9

ROLE OF CSR TO SOLVE EDUCATION PROBLEMS

For long term impact, companies are focusing on

- Educational infra
- Bridging digital divide by providing tech to schools
- Training teachers
- Fixing learning gaps
- Empowering marginalized and underserved communities
- FY17-17 to FY20-21 education sector received Rs 29,918 crores

Education sector received more than 40% of total CSR budget 2018-19

Source : U-DISE+, MoE

10

10

KALINGA INSTITUTE OF SOCIAL STUDIES-BHUBANESWAR

- School, College and University is the educational wing of this initiative located at the intersection of food, education and empowerment.
- KISS provide free education, accommodation, food and healthcare to over 30,000 indigenous students currently studying at the main campus in Bhubaneswar.
- A 40,000 alumni strong.
- Serving an additional 10,000 students across satellite centers.

World's largest institute providing free education and boarding from

Kindergarten to Post-Graduation and Doctoral Programmes with vocational and extracurricular training, state-of-the-art facilities

Source : U-DISE+, MoE

11

11

Keynote Speech by Dr. Ravi Kant Pathak on "Becoming Human is all about Education".

Dr. Ravi Kant Pathak, Founder, Water University is a distinguished NRI and Professor of Air Pollution and Climate Change at the University of Gothenburg, Sweden, is a beacon of inspiration for his commitment to scientific excellence, social reform, and environmental sustainability, rooted in a "Nation First" ethos.

Dr. Ravi Kant Pathak, a distinguished NRI and Professor of Air Pollution and Climate Change at the University of Gothenburg, Sweden, is a beacon of inspiration for his commitment to scientific excellence, social reform, and environmental sustainability, rooted in a "Nation First" ethos.

आभार आत्मीय स्वजनों, अपनी बात एक छोटे से दृष्टांत से प्रारम्भ करता हूँ। एक कमरा है घना अंधेरा है वहाँ चुनौती है कि अंधेरा कैसे मिटाया जाये। लोगों ने अंधेरे को अंजुली में भरा अंजुली में बाहर ले गये छोड़के आ गये कुछ

लोगों ने कहा 'we are not efficient' तो बाल्टी उठा ली बाल्टी में अंधेरा भरा बाहर उड़ेल के आ गये। 'we need innovations' तो उन्होंने कहा कि इसमें pipe लगाओ pipe से अंधेरा खींचा जायेगा then we use pumps अंधेरा को pump करेंगे। And this is not efficient enough we need artificial intelligence in that so we can pump it throughout, लेकिन उसी अंधेरे को मिटाने के लिये एक दीया पर्याप्त है। इस दृष्टांत से मैं यह कहना चाहता हूँ कि शिक्षा में और जीवन के अधिक आयामों में, आज की आधुनिक सभ्यता कहीं इसी चक्र में फंसी हुई है। भारत के इतिहास को उठा कर देखते हैं तो पाते हैं कि यह एक प्राचीन सभ्यता है जिसमें कहा गया है कि "साविद्या या विमुक्तये" "Education that enlightens" बात यहाँ पर जब हम SDG की करते हैं तो SDG is not Indian concept, यह हमारा नहीं है। सच में इसको हमें स्वीकार करना चाहिये कि अगर हम भारत का दर्शन उठाके देखेंगे क्योंकि Sustainable Development Goals की जरूरत कभी थी ही नहीं भारत में, क्योंकि हमारे यहाँ व्यवस्थाएं वहीं से निकली थी जहाँ व्यक्ति को जो संस्कार दिया जाता था वो उसको आंतरिक विकास की ओर ले जाता था तो यह जो concept है। SDG का यह तब है कि कुछ काम करो अंधेरे को ढो और फिर उसमें innovation करो what we need today is to first define the definition of quality, इसका भाव क्या है। हम अंग्रेजों को बहुत criticize करते हैं कि वो आये उन्होंने यहाँ पर बहुत अव्यवस्था फैलाईं, लेकिन वो कहते हैं कि हमने यहाँ पर बहुत modernization किया, उनका दावा अभी भी है।

तो जैसे ही हम अपने सोच की दिशा बदलते हैं। पैगाम बदल जाते हैं। जैसे एक कतार एक दिशा में जा रही है। लोग दौड़ रहे हैं जो सबसे आगे हैं हम कहेंगे कि he is the first person he is the winner लेकिन जैसे ही हमें यह ज्ञात होता है कि the road is blocked there is a dead end और यह information जो भीड़ में जाती है तो people turn around now who become the first, who was the last Para.

शिक्षा का उद्देश्य वास्तव में व्यक्ति के अंदर आंतरिक विकास करना है यह बात मैंने बहुत जद्दोजहद, बहुत कठिनाई से सीखी। मैं उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले के एक बीहड़ के एक छोटे से गाँव से आता हूँ।

मैं पाँचवीं तक प्राइमरी की शिक्षा जो प्राप्त की वो गाँव के स्कूल में ही की। अपने गाँव में पढ़ना चाहिये कक्षा में अच्छे नंबर लाना चाहिये। इसी लक्ष्य के साथ की। दूसरी तरफ मैं इस बात को स्वीकार करूंगा कि इस पढ़ाई में मन नहीं लगता था, It was very boring thing to me. लेकिन पढ़ाई करना अच्छी बात होती है, अच्छे नंबर लाना, टॉप करना अच्छी बात होती है, तो इसने बहुत प्रेरित किया तो वो करना शुरू किया और करता गया।

मैं पहले ही प्रयास में मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित 'All-India Scholarship Examination' प्रथम बार में ही उत्तीर्ण कर लिया। भारत से उस समय 500 बच्चे चुने जाते थे हर वर्ष। यह बहुत कठिन परीक्षा होती थी, जिस तरह UPSC में Pre, Mains और Interview होता है, ठीक वैसे ही थी। वास्तव में इसे UPSC ही

संचालित करती थी, तो उसके आधार पर तो बहुत And then we were admitted into the Top Premium League Indian Public School IPS Like DUNES INDIA I was studying in Delhi College, Indore and then went to IITs तो मेरे मन में एक बहुत गहरा भाव संत्रिप्त हो गया मन में कि Science and Technology से Coming from Premier Institutes like IIT Bombay पूरी दुनिया को बदल देने का भाव बहुत पवित्र था मन में कि इससे दुनिया के प्रत्येक आंख का आंसू पोंछा जा सकता है। यह गहरा भाव मन में था कि विज्ञान और तकनीकी के माध्यम से हम दुनिया के सारे दुखों का अंत कर देंगे। जिस तरह बुद्ध राजा होके जंगल में निकल जाते हैं कि दुखों का अंत क्या है? उसी भांति मेरे कोमल मन में यह भाव बहुत स्पष्ट था कि आधुनिक युग है, विज्ञान और तकनीकि है और यह दुनिया के सारे दुख मिटा देगी।

एक दिन हम नई-नई खोजें करते जायेंगे और करते-करते जब हम तो यह बात चलते-चलते एक ऐसे विराम पे पहुँचती है जिसे मैं dead end कहता हूँ और वो जीवन में तब आया, जब मुझे ये भाव स्पष्ट अंदर से होने लगा, कि साइंस और टेकनोलोजी का ड्राइवर कौन है, तो मनुष्य है, और मनुष्य क्या है? तो पहले आप अपना तो खोजो, कि आप कौन हो, Who you are? उसने एक ऐसा जीवन में लाके खड़ा कर दिया, कि बिना तपस के कहीं आगे का मार्ग नहीं खुलता था, और मैं भगवत गीता दिखा दिया, अनाशक्ति का कंसेप्ट है, और आशक्ति और अनाशक्ति की भावना कि जब परिभाषा स्पष्ट हुई, उसका बोध हुआ, तो फिर समझ में आ गया, कि वास्तव में शिक्षा का रूप क्या होना चाहिये, हम शिक्षा के नाम पर जो अंधेरा ढो रहे हैं, क्या वह इस जगत के लोगों के दुखों का समाधान कर सकता है? क्या आपकी जो आर्थिक उन्नति है, क्या वह आपके inert emotional, आपकी बेचैनी है जो रोज की, क्या वह खतम कर पा रही है, क्या आपकी पदोन्नति, and then we reach a conclusion, कि irrespective of position, power or wealth you possess, you still suffer, आप उस दुख से, गुजरते हो, और जब ये बात स्पष्ट होती है कि, नहीं बेचैनी तो है, दुख तो है, कम कमाते थे तब दुख था, ज्यादा कमाते हैं।

तब दुःख था, पद कम था तब दुख है, आगे भी दुख है, तो दुख के समाधान के लिये शिक्षा में कोई स्थान क्यों नहीं है, तो उसका उत्तर मिलता है कि वास्तव में जो शिक्षा, पूरे जगत में, भारत को मिलाकर, सब को मिलाकर दी जा रही है। वह शिक्षा दी जा रही है, Industrial Society को रन करने के लिये and we all are forced, now चीजें reverse होने लगी, right to education has become a curse, primarily because you are forcing a child to learn forcefully, you are forcing a child, कि जाओ बैठो, पढ़ोगे नहीं तो गड़बड़ है, पढ़ा क्या रहे हो, पढ़ा आप रहे हो, कि 2 into 2 is 4, it's a route learning, you are not aligned, you are not allowing this child to grow naturally, and experience the world, so this learning is very problematic, जो वास्तव में, जिसे हम कहते हैं न, learn to unlearn is real education, अब वो कैसे अनुभव में आती है, आप सबको अनुभव में आयेगी, बैठिये जरा एक घंटे बैठिये, ध्यान लगा

कर, and tell yourself, no thought should enter, your brain, आपको विचार नहीं आना चाहिये, करिये, बड़ा कठिन काम है तो, जिसे हम सरल समझते हैं, कि जाके बैठ जायें, अरे क्या बैठे बैठे कुछ करते नहीं हो। No, it is very difficult, we are training our students to do that और वास्तव में सत्य भी यही है, कि जब आप निर्विचार होते हैं, और गहराई में उतरते हैं, तो आपको जो मिलता है, वो सत्य होता है जीवन का, और वो रास्ता बताता है आपको, कि सुख कहा है, आनंद कहा है, तो क्या हमारे बच्चों को वो अधिकार नहीं है, कि वो आनंद प्राप्त कर सकें, क्या हम मनुष्य होते हैं, हम इसके अधिकारी नहीं हैं, कि हमें आनंद मिले, तो हमारी शिक्षा में उसका स्थान है कहाँ, हम कहाँ खोए हैं कहाँ भटके हैं इन प्रश्नों को सोचना बहुत ज़रूरी है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिये मैंने बहुत सारे लोगों को सुना है। अरे हमारी जिन्दगी जैसे थी अब कट गई हमारे बच्चों का भविष्य बड़ा अच्छा हो इसलिये बच्चों को हम पढ़ाएंगे और तो बच्चों भी यही कहते हैं और यह बढ़ाएंगे क्योंकि जो बेचैनी है दिन रात की बेचैनी है उससे मुक्ति का मार्ग नहीं मिलता है क्योंकि हमने वो शिक्षा से आनंद का मार्ग जो component है वो ख़त्म ही कर दिया नहीं है। कहीं it is not there and without that component this quality education is not actually a quality education जो यह शिक्षा है वास्तव में गुणवत्ता की शिक्षा नहीं है जिसकी हम बात कर रहे हैं जो SDG में defined है। यहाँ पर एक correction की जरूरत है की "साविद्या या विमुक्तये" वाला एक phrase भारत के किसी वेद से किसी दर्शन से उठ करके SDG की परिभाषा में जाना चाहिये एक पहला जो भारत को प्रयास करना है या करना चाहिये we have to redefine this quality education की परिभाषा में **"साविद्या या विमुकतये"** जाना चाहिये and this is sufficient enough यह पर्याप्त है।

इस चौथे गोल को परिभाषित करने के लिये now what India needs, भारत को जरूरत क्या है अभी? we should not repeat the beaten paths हमारे पास already इतना है। वास्तव में भारत के पास इतना है कि अगर वो दोनों हाथों से लुटाए पूरे विश्व को तो खजाना कभी कम नहीं होगा।

ये ज्ञान का और अगर विश्व उस पर चल पड़े तो यहाँ पर SDG की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी। दुनिया अगर विकास सतत विकास की ओर अपने आप चलेगी क्योंकि जब अंदर का मौसम रंगीन होता है तब बाहर अपने आप आनंद होता है और बाहर चाहे जितना मौसम अच्छा रहे अगर अंदर का मौसम रंगीन है तो फिर वो रास नहीं आता and we are facing this pandemic of depression, anxiety and mental disorders currently because we all want to go into the lifestyle that is devoid of manual labour श्रमविहीन जीवन शैली ही हमारी शिक्षा का लक्ष्य हो गया है।

श्रमविहीन जीवन शैली ही हमारी शिक्षा का लक्ष्य हो गया है। ये component हमारे में नहीं है और जब मैं एक बड़ा अनुभव प्रयोग करने के लिये यूएस से अपना बैक पैक करके अपने गाँव पहुंचा और मैंने कहा कि गुरुकुल बनाएंगे और गुरुकुल में बच्चों को जैविक कृषि, प्राकृतिक कृषि का कार्य कराएंगे तो एक दिन मुझे धमकी दी गई कि आपने श्रम

का नियम पढ़ा यहाँ पर चाइल्ड लेवर में आपको FIR करके बंद कर दिया जायेगा। फिर होश उड़ गये हैं कि मैंने क्या हम वास्तव में आजाद हैं इन कठिन प्रश्नों को हमें पुनः भारत के संविधान के समक्ष भी रखना चाहिये कि इस बुद्धिमत्ता के आधार पर इस राष्ट्र का संविधान गढ़ा गया है जबकि हमारे मनीषी बार-बार यह कहते रहे कि अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की व्यवस्था थी जो भारत की व्यवस्था वह श्रेष्ठ थी तो इसमें कहाँ है अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष कहाँ पढ़ाया जा रहा है। We were missing completely that जो चार पुरुषार्थ थे हमारे हमारे चार आश्रम थे ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास, वानप्रस्थ 50 के बाद शुरू होता है कि आपके व्यवस्था में ही रिटाइरिंग साथ है और सारी की सारी इस जो नौकरी व्यवसाय जो शिक्षा है जो which outward journey and which is complete with inward journey जो कल बात अब प्रोफेसर नरेश सिंह ने कही वास्तव में रहे और हम गिर रहे हैं इसीलिए SDG का जन्म होता है।

मुझे खूब याद है 2006 में जब मैं एक गहरी साधना के तहत यूएस में निवास कर रहा था यूएस में कार्नेगी-मेलन में, तो मेरे मन में बहुत टीस थी कि यह जो सोसाइटी है जिस सोसाइटी में मैं रह रहा हूँ सोसाइटी नहीं है। वास्तव में देखो ये जो इंडस्ट्रियल सोसाइटी है, उसमें समाज नहीं है। आदरणीय संजीव शर्मा जी ने जो आज बात समाज की रखने की कोशिश की वो समाज असली भारतीय समाज की परिभाषा है। पश्चिम की Industrialized व्यवस्था में समाज होता नहीं है, वहाँ फैक्ट्रियाँ होती हैं, corporates होते हैं, और लोग होते हैं और पैसा होता है, consumption होता है या colonies होते हैं। और सारे शहर उसी तरफ convert हो रहे हैं। जो समाज होता था वो गाँव में होता था। जो भारत की ग्रामीण व्यवस्था थी और वहाँ पर बच्चा बच्चे को फॉर्मल जो एजुकेशन है कक्षा डिफाइन कर अभी यहाँ पर तो कक्षा की जो मान्यताएं हैं हमारे गवर्नमेंट नॉर्म्स में वो यह है कि इतने की क्लास होगी तो मान्यता मिलेगी नहीं तो नहीं मिलेगी दिस इज मोस्ट अनसाइंटिफिक रैशनल टू गिव द परमिशन टू टीच और मनीषी पेड़ों के नीचे पढ़ाते थे एक प्राकृतिक व्यवस्था में जहाँ खुला वातावरण था।

अभी स्मार्ट क्लासेस के नाम पर पता नहीं क्या ढोया जा रहा है लाइफ का जो अंधेरा ढोते हैं वो ढोया जा रहा है वी आर नॉट इन गुड स्टेट ऑफ अंडरस्टैंडिंग एजुकेशन एक्चुअली क्योंकि हमारी व्यवस्था में "सा विद्या या विमुक्तये" का जो बेस होना चाहिये वह नहीं है। तो जो आज की शिक्षा है उसका जो ड्राइवर है दैट इज फाइनेंशियल इनसिक्योरिटी इट इज ड्राइविंग अस और श्रम हीन जीवन सबको लगता है कि श्रम युक्त जीवन हैज नो डिग्निटी इसका कोई सम्मान नहीं है लेबर का कोई सम्मान नहीं है समाज में यह बहुत गहरे से बैठा हुआ है और उसका उदाहरण यह होता है कि जब 2007 में यूएसए लौटा और यह भारतीय परिधान में मैं अपने गाँव आया तो लोगों ने कहना ही शुरू कर दिया कि अरे तुमको यही करना था तो फिर आईआईटी क्यों गये थे तो इसका मतलब यह है कि हम दोनों के बीच में बड़ा भेद रखते हैं और मुझे लग रहा था कि मैं जिस यात्रा में हूँ वह ऊपर जा रही है और जगत को लग रहा था कि जो यात्रा है मेरी व नीचे जा रही है यह एक बड़ा कनफ्लिक्ट खड़ा हो रहा था उस समय और अब वह यात्रा काफी दिनों की हो गई है तो

अब थोड़ा एक सामंजस्य बना है लोगों ने स्वीकारना शुरू किया है कि जो यह हमारी यात्रा है जो उर्ध्व यात्रा है वह हमारी वास्तव में अंदर की यात्रा होनी चाहिये अंदर की समृद्धि जितने भी अंदर से समृद्ध लोग अगर भारत में उनके चित्र बाहर के चित्र लगा दिए जाये तो सादा जीवन उच्च विचार वाले बात है नानाजी का ज्वलंत उदाहरण है ही पद प्रतिष्ठा और भारत रत्न है वह इससे बड़ा और क्या चाहिये लेकिन उनका बाहरी चित्र देखेंगे तो क्योंकि वो अंदर से समृद्ध है तो अंदर से जब समृद्धि आती है तो बाहर से सरलता आ ही जाती है यह सिद्धांत है इसको समझने की जरूरत है और यह बच्चों में लागू करने की जरूरत है एक अभिनव प्रयोग हमीरपुर में चल रहा है, भारत उदय गुरुकुल के नाम से, उसके कुछ पत्रक हैं यहाँ पर, श्रीमान जी जिनको चाहिये जल्दी है, तो मैंने देखा वो बच्चे बहुत जल्दी से चले जाते हैं, जो गाँव से आये हैं, जो नदी, जिनका गाँव नदी के किनारे था, जो वातावरण में पले बढ़े थे, खट से चल जाते हैं और जिन बच्चों का पालन पोषण एक शहरी माहौल होता है, शिक्षा होती है, उनमें एक नैचुरल टेलेंट होता है, और उनके अंदर एक आत्मिक विकास की प्रक्रिया शुरू होती है, तो इस गुरुकुल का जो विशेष कार्यक्रम है, वो है आंतरिक विकास का कार्यक्रम, जिसमें ध्यान, योग, प्राणयाम, और अन्य अभिनव प्रयोग का मुख्य उद्देश्य है जो, वह उद्देश्य है कि जो शिक्षा यहाँ पर हमने "**साविद्या या विमुक्तये**" है। इसके आधार पर भारत की नई पीढ़ी को गढ़ना, और वह पीढ़ी इस राष्ट्र का नेतृत्व अपने हाथों में ले, ऐसी कल्पना के साथ हम यह चंद्रगुप्त बनाने का यहाँ प्रयास कर रहे हैं। धन्यवाद।

Interventions by Speakers and Deendayal Research Institute volunteers on How We Learn

Dr T.R Sharma, Principal Scientist, Horticulture, Directorate of Extension Services, JNKVV, Jabalpur, on what he has learnt from a farmer and replicated

सभी को प्रणाम मैं डॉक्टर T.R. शर्मा JNKVV में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ। इस संस्था से जुड़ा हुआ हूं। सर अभी जो एजुकेशन की बात चल रही है आज जो हम क्वालिटी एजुकेशन की बात कर रहे हैं, क्वालिटी को हम क्वांटिफाई कर रहे हैं। हमारी जो वर्तमान शिक्षा है, वह percent पर आधारित हो गई है। यदि बच्चे के 98% आये तो बहुत अच्छा, पर 60% आये तो वह ठीक नहीं, ऐसा माना जाता है। आज शिक्षा learning नहीं सिखा रहे। आज शहरों में बच्चे तैराकी सीखते हैं। स्विमिंग पुल में जाकर, पर गांव के बच्चे वहीं तालाब में जाकर इतने perfection से सीख जाते हैं कि बड़ी नदी को भी तैर कर निकल जाते हैं। एक और उदाहरण दूंगा, मेरे घर में मेरा नाती है, घर में मरम्मत के लिये राजमिस्त्री आया, तो उसने सीमेंट देखकर पूछा कि ये क्या है? मैंने बताया कि यह सीमेंट है, कुछ दिन बाद मेरी पत्नी बाजरे की रोटी बना रही थी, तो उसे देख कर नाती बोला कि नानी सीमेंट की रोट बना रही हैं। तात्पर्य यह है कि उसकी learning ठीक नहीं हुई कि सीमेंट क्या है और बाजरा क्या है? इसी तरह हमारी शिक्षा है, जो Percent Base पर चली गई है। learning अथवा qualify base पर नहीं है। सुधार आवश्यक है।

Smt. Vijaylaxmi Tiwari, is a Samaj Shilpi Dampati of Deendayal Research Institute in Village Singhpur, Maghagawan Block, Satna District on Neo-natal teaching they conducted in the villages.

सभी को राम राम....

मैं गर्भस्थ शिशु संस्कार के बारे में कुछ बताऊंगी। गाँव में गर्भवती माताओं को गर्भस्थ शिशु संस्कार करने के लिये पहले हम एक महिला मंडल का गठन करेंगे। जिसके माध्यम से महिलाओं को इकट्ठा करके वहाँ पर गर्भस्थ शिशु संस्कार के सभी बिंदु रखेंगे और उन सबको जानकारी देंगे। फिर गाँव में गर्भवती माताओं से संपर्क करते हैं। फिर उनके घर जाकर के उनको पूरी योजना बताते हैं कि गर्भ में पल रहे बच्चे को हमको कैसे सिखाना है? क्या करना? उनके माता-पिता, सास-ससुर से संपर्क करके उन्हें सारी जानकारी देते हैं और फिर एक गर्भस्थ शिशु संस्कार का कार्यक्रम करने की योजना बनाते हैं। इसके लिये एक दिन तय करते हैं।

उसमें हम आस-पास 10-15 महिलाओं और लड़कियों को इकठ्ठा करके वहाँ पर कार्यक्रम की योजना बनाकर कुछ पूजा पाठ करते हैं। और सास के माध्यम से गर्भवती की गोद में आंचल को भरते हैं। और इसके बाद उनको हम पूरा दैनिक दिनचर्या की पूरी जानकारी देते हैं, जैसे सुबह ब्रह्म महूर्त में जागना, प्रातः स्मरण करना, धरती माता को स्पर्श करना और अपने बड़े बुजुर्गों के साथ सब के पैर छूना। थोड़ा ध्यान करना और तुलसी माता को जल देना। सूर्य भगवान को अर्ध्य देना आदि। फिर इसी तरह संध्या काल की दिनचर्या की

जानकारी दी जाती है। उन्हें बताते हैं कि शयन कक्ष साफ-सुथरा हो और कोई देवी देवताओं की फोटो हो। उस तस्वीर पर उनका पूरा ध्यान करना और कहानी याद करके ध्यान रखना। इसी तरह खान-पान के विषय में भी जानकारी दी जाती है।

नाश्ता में अच्छी चीज हो। जैसे–चना हो, मूंग हो, मूंगफली हो, अंकुरित नाश्ता हो। दोपहर का भोजन बड़ा हो और शाम का हल्का भोजन हो और रात को दूध पियें। जैसा उनका विचार होगा, मन होगा, वैसे बच्चे अंदर पलते हैं। इन सबका बच्चे की तरक्की पर बहुत बड़ा असर पड़ता है। माँ का जैसा विचार होता है वैसा ही बच्चे का जीवन बनता है। बच्चा गर्भ काल में ही 80% सब कुछ अवचेतन में सीख लेता है। 20% चेतना बाहर आने के बाद शुरू करता है।

गर्भवती माँ से कहते हैं कि आप काम करते समय गीत गायें मतलब धीरे-धीरे, गुन-गुना कर पूरे घर का काम करें। इसी तरह हमने एक एक कर कई गर्भवती माताओं को तो सिखाया है। इसके बड़े अच्छे परिणाम मिले। एक उदाहरण है–सीमा पांडे और शांति भूषण पांडे का, उन्होंने तेरह लोगों के सामूहिक परिवार में रह करके ये सब कार्य किया। तो जब उसके बेटा पैदा हुआ, तो वह पहले से उसके जो बेटी थी, उससे पूरी तरह से अलग था। बच्चा स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट था। इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं, जहाँ गर्भस्थ शिशु संस्कार का होने वाले बच्चे और प्रसूता माँ पर बहुत सकारात्मक परिणाम पड़ा।

Shri Jitender Singh is a Samaj Shilpi Dampati of Deendayal Research Institute in Village Chinhat, Pahadi Block, Chitrakoot District how we educated villagers to remain in the village to become self-reliant and not migrate to cities.

एक घटना का जिक्र करना चाहूंगा। अपने दीनदयाल शोध संस्थान के संस्थापक स्वर्गीय नानाजी की चौदहवीं पुण्य तिथि है, उनसे संबंधित प्रसंग है। हम लोग गनीवां क्षेत्र के हैं। गाँव है, वहाँ परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय चलता है। वहाँ गर्मियों में हम लोगों का शिविर लगा हुआ था और शिक्षा के बारे में चर्चा हो रही थी। तो एक महिला का प्रश्न था नानाजी से, नानाजी गर्मियों में विद्यालय बंद रहते हैं, हम लोग गाँव में काम करते हैं और गाँव के लोग काम करने के लिये बाहर चले जाते हैं। कोई जंगल में जाकर पत्ती तोड़ता है, तो कोई कटाई करता है, तो कोई मड़ाई करता है। गाँव में लोग मिलते नहीं हैं। उनको हम कैसे प्रेरित करें। आप ही बताइये कि कहावत है '**भूखे भजन ना होय गोपाला।**' अर्थात् जब तक आपके पेट में भोजन नहीं होगा तब तक कोई आपकी शिक्षा सुनेगा ही नहीं, अगर चार पैसा उनके पास होंगे, तो आपकी बात सुनेंगे। आप जो कहेंगे वो करेंगे। तो और दूसरी एक चीज मैं और भी कहना चाहूंगा, कि कोई लड़का पढ़के IAS बना, कोई दसवीं पास हुआ बड़ा कंपनी डालता है, पहला अपने परिवार तक ही सीमित रहता है और दूसरा जो अगर छोटा मोटा भी बिजनेस करता, तो उससे दस परिवारों का भरण-पोषण होता है, तो कौन सी शिक्षा हमको लेनी चाहिये? IAS बनाने वाली या हमको व्यापार बिजनेस की तरफ लोगों को ले जाने वाली, जिससे दस लोगों को भरण पोषण हो। इस पर विचार होना चाहिये।

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024
SDG 4 – QUALITY EDUCATION
SESSION III
WHAT WE LEARN
Moderator:
Dr. Prabha Shankar Shukla, VC, Northeast Hills University
Keynote Speakers:
Shri Gopal Bhai, founder, Akhil Bharatiya Samaj Sewa Sansthan, Chitrakoot
Anil Valsangkar, Consultant, NSDC
Dr. Bharat Mishra, VC, MGCGVV, Chitrakoot
DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

Keynote Speech by Gopal Bhai (Gaya Prasad Gopal), on "Sanskar".

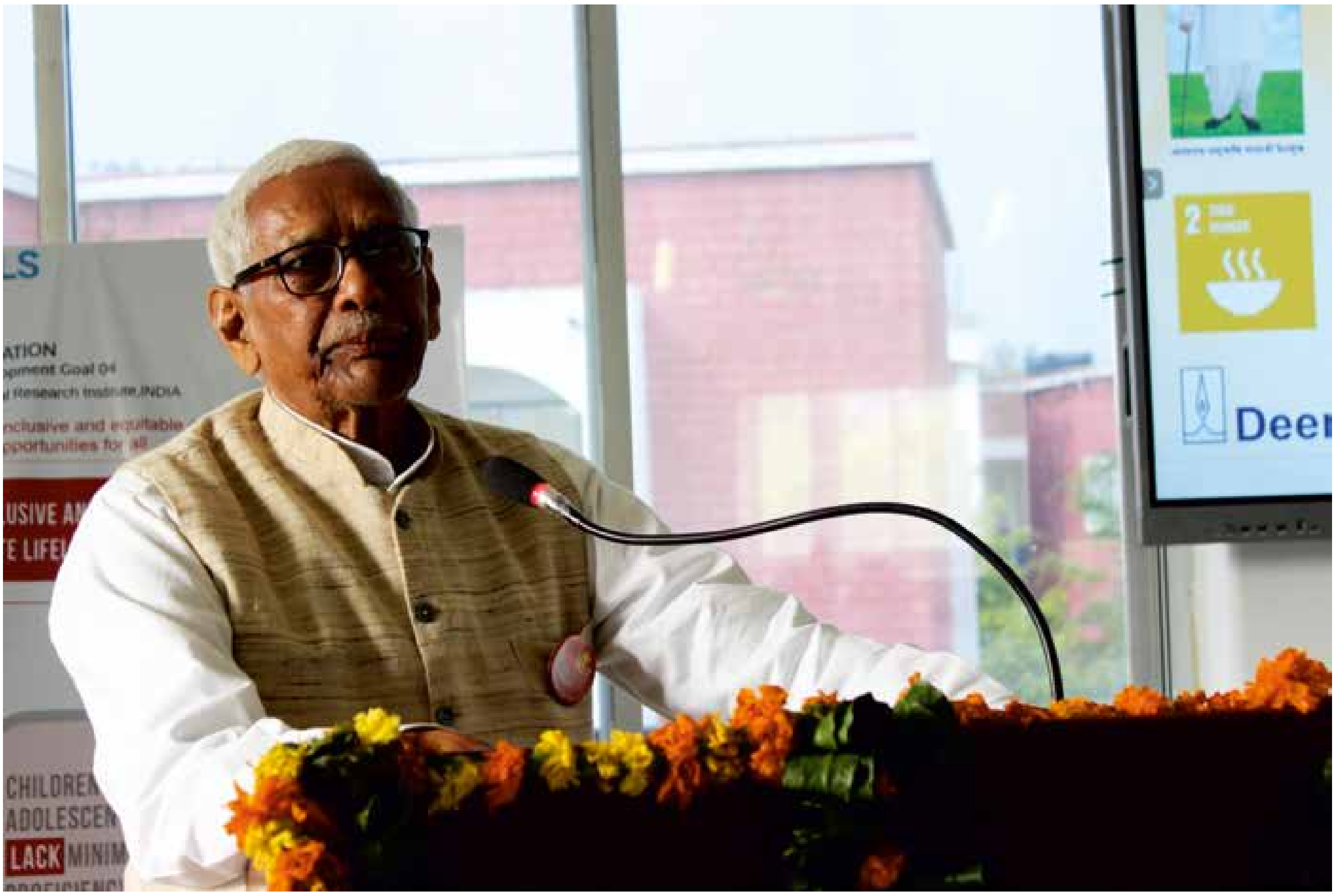

Shri Gaya Prasad Gopal, popularly known as Gopal Bhai, founded the Akhil Bharatiya Samaj Sewa Sansthan in 1978. Before establishing ABSSS, he worked in different positions and vocations till he was exposed to the stark realities and miseries of the Kols while working as a Rural Development Coordinator with the Sri Sadguru Sewa Sangh Trust, Chitrakoot chapter, from 1975 to 1985, and has dedicated his life to empowering this marginalised community.

आप सबके बीच में आने का एक अवसर मिला है और इस अवस्था में भी यह परिवार याद कर रहा है। आनंद की अनुभूति होती है। मैं एक त्रणमूल कार्यकर्ता के रूप में प्रारंभ से अब तक कार्यकर्ता रहा, शिक्षाविद नहीं। मैं अपनी बात डाक्टर रवींद्र नाथ टैगोर की कुछ पंक्तियाँ हैं, उनको रखना चाहूंगा। किस प्रकार का समाज चाहिये? कैसा देश चाहिये, कैसी धरती चाहिये, ये पंक्तियाँ आप सबके सामने अपने अर्थ को प्रकट करेंगी। फिर हमको भी समझने का अवसर

मिलेगा क्या ये हमारी अपनी यात्रा की दिशा है?

देश की माटी, देश का जल

हवा देश की, देश के फल

सरस बने प्रभु सरस बने

क्या शिक्षा में हमारी ये कामना है

देश के घर देश के घाट

देश के बन देश के वाट

सरल बने प्रभु सरल बने

सरस बने प्रभु सरस बने

और तीसरी कामना

देश के तन देश के मन

देश के घर

देश के घर देश के घर

भाई बहन विमल बने प्रभु विमल बने

सरस बने प्रभु सरल बने सरल बने प्रभु सरल बने

तीन प्रकार की कामना सरस, सरल और विमल वर्तमान संकट क्या है?

देश में, दुनिया में धीरे धीरे समरसता समाप्त हो रही है। धीरे धीरे समरसता लुप्त हो रही है और विफलता का घोर संकट सर्वत्र झेल रहे हैं। क्या इन वर्षों में इनको बढ़ना चाहिये था अथवा घटना चाहिये था? सुखद सामाजिक परिवर्तन यदि संभव है तो केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। क्या शिक्षा इस प्रकार का वातावरण दे पा रही है? यदि नहीं दे पा रही हैं, तो शायद ऐसा ही सोच करके आज गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की बात हो रही है। आप हम सब लोग देख रहे हैं कि समाजिक विसंगतियां निरंतर बढ़ रही हैं। जब मैं विसंगति शब्द का उपयोग करता हूँ तो चारों ओर सब प्रकार की विसंगतियों की ओर हम अपनी दृष्टि डाल सकते हैं। अच्छे प्रयासों की भी कमी नहीं है, साक्षरता प्रतिशत बढ़ रहा है, विद्यालयों की संख्या बढ़ रही है, विद्यालयों का जो भौतिक स्वरूप है वो भी अच्छा लग रहा है लेकिन विद्यालय के अंदर जो छात्र शक्ति है उनका ठीक विकास नहीं हो पा रहा है। प्रमुख रूप से जो गाँव के वन प्रांत के अपने विद्यालय हैं जो वहाँ की प्राथमिक शिक्षा जो है, वह शायद उस प्रकार का गुणवत्तापूर्ण वातावरण देने में अभी सफल सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। मैं स्वयं शिक्षक रहा और अपने शिक्षक जीवन के कुछ उदाहरण रखना चाहूंगा। आठवीं तक का अपना एक विद्यालय संघ की योजनानुसार था और वहाँ पर पढ़ने वाला एक छात्र अचानक आठवीं पास करने के पश्चात गायब हो जाता है, चला जाता है और कुछ सालों के बाद उसका फोन आता है और वो बोलता है, प्रसन्नतापूर्वक उसकी वाणी से उसकी प्रसन्नता प्रगट हो रही थी कि मैंने अपने मकान पर और अपनी भूमि पर कब्जा पा लिया है। मैंने पूछा, क्यों क्या

हो गया था? तो उसने कहा था जब मैं आपके यहाँ पढ़ रहा था जो जानकारियां, जो संस्कार मुझे मिल रहे थे। उसके आधार पर उसी समय मैंने संकल्प लिया था कि हम लोगों को गाँवों से हमारी जमीन छीन करके हमारा मकान छीन करके हमको भगा दिया गया था, उसे वापस लूंगा। मध्य प्रदेश की घटना है। कटनी के पास की घटना है, लेकिन गीत गाते हुए कबड्डी खेलते हुए, खोखो खेलते हुए, आप सब की चर्चाओं के आधार पर जो मुझे संस्कार मिले तो मुझे लगा कि मुझको स्वयं ही अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिये प्रयास करना चाहिये। मैं लौट करके अपने गाँव आया और एक परिवार में मैंने सेवा प्रारंभ की ट्रैक्टर सीखा और उनकी सेवा से उनका मन जीत करके मैंने कहा कि देखें मेरे खेत में अमुक का कब्जा है, हमको भगा दिया गया था, हमारे माता पिता को भगा दिया गया था, आप अनुमति दें तो मैं अपने खेत पर जा करके कब्जा प्राप्त कर लूं। चूंकि अनैतिक था कब्ज़ा करना और वो जिस समय साहस के साथ मैं और वो अपने खेत पर पहुँचते हैं, तो उसके प्रतिकार के लिये या हमें भगाने या डराने का साहस अवैध अनैतिक रीति से कब्जा करने वाले के मन में नहीं आ पाया। आज वो अपनी जमीन का मालिक है, अपने घर का मालिक है। तो इससे कल्पना कर सकते हैं कि शिक्षा में कितनी दम है।

कालांतर में चित्रकूट क्षेत्र के पठारी भाग में मानिकपुर क्षेत्र में यहाँ पर भी दास प्रथा का शिकार रहा है। यह पूरा का पूरा क्षेत्र और जिस समय आपात अवस्था में यहाँ पर गाँव गाँव जाने का अवसर मिला, वहाँ रहने का अवसर मिला, जानकारी प्राप्त हुई, तो यह लगा कि अगर हम इस प्रकार की विसंगतियों पर विजय पा सकते हैं, तो शिक्षा से ही पा सकते हैं और संस्कार केंद्रों का शुभारंभ हुआ। शिक्षा और अक्षर ज्ञान के साथ-साथ जो हमारे अपने गीत होते थे, 'देश के हैं हम रहने वाले देश का मान बढ़ाएंगे।' का अभ्यास करते थे। प्रातः काल आचार्य गण जग करके घर घर जाते थे, नारे बोलते हुए – **'यद्यपि हम बनवासी हैं फिर भी भारतवासी हैं। भूमि हमारी नाप दो जीने का अधिकार दो।'** इस प्रकार के नारे, इस प्रकार के गीत माध्यम से बालकों को जगाने से लेकर के नल के पास जाना, उनका मुँह धुलाना और नौ-दस बजे तक तैयार करके संस्कार केंद्र में लाना और फिर संस्कार केंद्र में अक्षर ज्ञान कराना, विषयवस्तु का ज्ञान कराना, विविध विधि से कराना, खेल खेल के माध्यम से कराना और फिर वापस उनको घर भेजना। घर जाते समय भी गाँवों में जगाना, गीत उनका अपना होता था, एक फेरी अपनी होती थी। वातावरण में इस प्रकार के स्थिति पैदा करना कि जो भी गीत और नारे सुन रहे हैं, उनके मन में भी स्वाभिमान का भाव पैदा हो। तो व्यक्ति के माध्यम से, छात्र के माध्यम से, शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का भी विकास, परिवार का भी विकास और गाँव का भी विकास। अगर इस प्रकार का वातावरण हम ना कर पाये होते तो 10,000 एकड़ भूमि वनवासियों की उनके अधिकार में नहीं आई होती। क्योंकि जब तक स्वयं की तैयारी नहीं होती है, तो कानून भी साथ नहीं दे पाता है, तमाम सारी व्यवस्था भी हमारे पक्ष में नहीं खड़ी हो पाती हैं। तो आज ये जो चिंतन चल रहा है 'गुणवत्ता-पूर्ण शिक्षा का' इसमें हम कई बार नैतिक शब्द का भी उपयोग करते हैं। नैतिक शिक्षा की भी बात करते हैं पर इस प्रकार के सारे गुणों को देने के लिये जिस प्रकार से विषय वस्तु चाहिये, वह अभी भी हमको प्राथमिक शिक्षा के लिये अभी उपलब्ध नहीं है। तो गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिये जब भी हम चिंतन करें तो उस प्रकार की सहज सामग्री भी सामान्य व्यक्ति के हाथ में आये, ऐसा मुझको लगता है। और इस पर भी एक विचार होना चाहिये कि केवल क्लास के अंदर की जो शिक्षा है, उसके माध्यम से हम अक्षर ज्ञान तो करा सकते हैं, विषय वस्तु का ज्ञान करा सकते हैं, लेकिन बाकी की जो इतर गतिविधियां हैं, उनको भी उतना

ही महत्व दिया जाना चाहिये। उतना ही महत्व हम लोग इस पर दें कि व्यक्ति का व्यक्ति के साथ में किस प्रकार का संबंध हो, परस्पर-पूरकता की बात पूज्य नानाजी हमेशा करते रहे। तो व्यक्ति से व्यक्ति का परस्पर पूरकता का संबंध हो, उसके लिये प्रयास हो पर साथ-साथ जो शेष प्रकृति है, शेष प्रकृति के साथ में हमारा पूरकता का भाव होना चाहिये। जब तक मानव का मानव के साथ में और शेष प्रकृति के साथ में परस्पर पूरकता का संबंध नहीं होगा, तब तक हम सरस, सरल और सहज स्थिति समाज में नहीं देख पायेंगे। आज एक क्रूरता का भाव है कि अपने जीने के लिये हम प्रकृति का जो सर्वनाश कर रहे हैं, इस प्रकार के जो भाव अंदर हैं, वो आवे ही नहीं, और उसके लिये प्रारंभ से बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करनी चाहिये। तो जो कुछ भी हम इस पूरे क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से कर पा रहे हैं। जंगल के साथ में भी शास्त्रों का संबंध है और उनको जंगल से ले करके जो लैब टू लैंड की बात आती है। हम ऐसे प्रतिष्ठानों में भी ले जाने का प्रयास करते हैं जहाँ जाने में वो डरते हैं। जहाँ प्रवेश करने में वो डरते हैं। संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिये और सारी परिस्थितियों जिनके साथ उनको कल जीना है का ज्ञान बच्चों को प्रारंभ से कराने का प्रयास किया जाना चाहिये तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इस विधि से ही आ पायेगी।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के जो माध्यम हैं, व्यक्ति के रूप में, शिक्षक के रूप में, वे कैसे हैं? उनको संस्कार किस प्रकार से प्राप्त हुए हैं? वो क्या परोस रहे हैं? ये ज्यादा महत्वपूर्ण है। तो जो शिक्षा से जुड़े हुए लोग हैं उन पर सर्वाधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। छात्र शक्ति को प्रेरित करने का जो सामर्थ्य आवश्यक है, वो उनके अंदर नहीं होता है। उस प्रकार का सामर्थ्य, संस्कार विद्या से, प्रशिक्षण विद्या से कैसे पैदा हो, इस पर ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है। केवल छात्र तक हमारा रिश्ता है, परिवार के साथ में हमारा रिश्ता नहीं बन पाता है, पर जब तक माता और पिता की तैयारी नहीं होगी, माता पिता का जब तक सहयोग प्राप्त नहीं होगा, तब तक हम अपने मिशन में भी सफल नहीं हो पायेंगे। सरस्वती शिशु मन्दिरों के माध्यम से इस प्रकार के प्रयास हो रहे हैं, पर शिक्षक आचरण जानने के प्रयासों में सफलता हमको ज्यादा नहीं मिली है। इसके प्रयास हो रहे हैं। धन्यवाद।

WORLD
SDG
FORUM

Keynote Speech by Shri Anil Valsangkar on "The work of Skill India".

Shri Anil Valsangkar is a Consultant with NSDC. He is a Sustainable Development Practitioner and besides working on Implementation for NSDC, he also works with multiple NGOs in the field of education.

दीनदयाल शोध संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद।

कौशल का अर्थ हमें किसी ने समझाया था। कुश जो घास होती है उसे हाथ को लगने न देना, हर्ट न होने देते हुए, उससे जो सामग्री बनानी है, वह बनाने की प्रैक्टिस जिसे होती है, उस आदमी को कुशल कहा जाता है। सम्माननीय गोपालजी ने अभी सरस शब्द का इस्तेमाल किया, तो SDG-4 में जिस Inclusive Equitable quality Education और Promotional opportunities, इन सभी शब्दों को स्पर्श करने का प्रयास NSDC गत कुछ सालों से कर रहा है। As an ecosystem enabler NSDC जो काम कर रहा है वह

आपके सामने रखने की कोशिश करेंगे। Skill Capital of the World, अगर देश को बनाना है तो जो कोशिश अभी हमने शुरू की है, जैसे इजरायल ने अभी अपने देश के सम्मुख एक लाख कुशल कर्मियों की आवश्यकता की जानकारी दी है और उसकी आपूर्ति भी अभी-अभी हमने शुरू की है, NSDC पीपीपी मोड में चलने वाली Section '8' Company और Not for Profit कंपनी है। NSDC खुद, या जो छात्र होते हैं उनकी राशि से, या सरकार अगर राशि देती है, जैसे प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना में सरकार ने राशि प्रदान किया है, या फिर CSR से जो राशि मिलती है उससे facilitation का काम करती है।

NSDC के पास Policy Program and Scheme है डिजिटल प्लैटफॉर्म उपलब्ध है, Industry connect है, Thought Leadership है, quality management है, skill advisory है, financing solution से capacity building की व्यवस्था है और Integration with education की भी व्यवस्था है। NSDC में Planet People and Prosperity के माध्यम से जो यह digital first का innovative platform है, अर्थात् Skill India Digital का भी आगे हम जिक्र करेंगे। Trust and Transparency Access to Skilling के प्रयोग में संख्या बढ़ती जा रही है जैसे प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना में 30 लाख कैंडिडेट्स को प्रशिक्षित करना है तो यह संख्या इसमें जुड़ जायेगी, तो 50 लाख से ज्यादा कैंडिडेट्स को NSDC आज के दिन टच कर रहा है। आज कृषि, एरोस्पेस, ट्रैवेल एंड टूरिजम, ब्यूटेंट वेलनेस आदि हर क्षेत्र के सेक्टर में skill council मौजूद हैं। वह पाठ्यक्रम तय करता है। जो स्किल गैप्स है, उसे ध्यान में रखते हुए कौन से कोर्सेस इसमें चाहिये, उन कोर्सेस की आपूर्ति करता है और उन्हें धरातल पर लाने का काम करता है। NSDC के नेटवर्क की हम बात करें तो स्कूल, यूनिवर्सिटीज, प्रधानमंत्री कौशल केंद्र जैसे सेंटर है, जहाँ पर स्किल ट्रेनिंग देना और इसको एक्सेस करना, उनकी परीक्षा लेना, ऐसा करने वाले एक्सेसर्स का एक अच्छा खासा नेटवर्क है। इसी तरह यदि हम Employers की बात करें तो 'जॉब एक्स' नाम का एक पोर्टल चलाता है, उसके माध्यम से employers को कनेक्ट करते हैं। स्किल कांसिल की बात कही हमने, तो 100% डिस्ट्रिक्ट एकोसिस्टिम में अभी वहाँ पहुंचा है। जहाँ तक Employers की बात अभी जैसे हुई है, तो NSDC ट्रेनिंग मुहैया कराना, ट्रेनिंग की ecosystem वहाँ खड़ा करने का काम करता है। यह Non-conventional पार्टनर्शिप का काम भी करता है। कंवेंशनल पार्टनर्स जो है वह हम सबको पता हैं, यूनिवर्सिटी और कॉलेज तथा धरातल पर जुड़े जो संस्थान है, उन संस्थाओं को साथ में जोड़कर काम अभी शुरू किया है। NSDC डिजिटल वास्तव में 'स्किल इंडिया डिजिटल पोर्टल' है। इससे चार लाख फार्म अभी-अभी डाउनलोड हुए हैं। हमने NSDC International अलग एंटिटी बनाई है आज के तारीख में 30 से ज्यादा देशों में 30000 से ज्यादा कैंडिडेट्स को NSDC रोजगार उपलब्ध करा चुका है। जो NEP के तहत स्कूल एवं कॉलेजों में Skill प्रशिक्षण की आवश्यकता है, उसको उपलब्ध कराने का काम NSDC academy करता

है। 'एनएसडीसी फाइनेंस' अभी सोशल इंपैक्ट फंड में भी रजिस्टर्ड है, और 150 करोड़ रुपये से ज्यादा राशि सीएसआर पार्टनर्स ने NSDC को Impact Making के लिये जो Continuous Learning की बात हम करते हैं, तो NSDC, जिन संस्थानों के साथ जुड़ा है, उनके लिये Trainer या Training Facilitator का काम करता है। उनके साथ फॉलो अप की भी एक एनएसडीसी की अच्छी व्यवस्था है। जैसे एक विषय हमने किया है देश के जनजाति क्षेत्र के सात स्टेट–उड़ीसा, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र में किया। इन सब में ग्रामीण जनजातीय उद्यमी इस नाम से एक योजना एनएसडीसी अभी चला रहा है। इस प्रयोग में ट्रेनिंग देकर मार्केट में उनको छोड़ देना, और इससे थोड़ा आगे जाते हुए रेगुलर उनके संपर्क में रहना और उनकी 'कैपेसिटी बिल्डिंग' का एक अच्छा खासा विषय कंटीन्यूअस लर्निंग के माध्यम से हो रहा है। स्किल कार्ड की जो योजना है, तो यह स्किल कार्ड जिसे हम कुंडली कहते हैं। जैसे प्रधानमंत्री जी पूछते हैं कि भाई आपके पास डिग्री है, ठीक है, लेकिन आपको आता क्या है, तो स्किल कार्ड में उसका forever documentation होता रहेगा और यह अपडेट होता रहेगा। 'असेसमेंट सर्टिफिकेशन' रूटीन प्रोसेस है। ये डिजिटली वेरीफाइड क्रेडेंशियल जो है, तो मान लीजिए व्यक्ति जनवरी में कहीं पर अप्लाई करता है और मार्च में उसका इंटरव्यू होता है तो जनवरी टू मार्च उसने जो जो स्किल्स हासिल किये है उसका भी एक रिप्लिकेशन, उसका भी एक रिप्रेजेंटेशन इसमें हो इसकी भी व्यवस्था है जिसे हम बोलते कि 'अप टू द मार्क।' दुनिया में जो चीज चल रही है, वह सब अपने उन सभी लोगों जिन्होंने कौशल हासिल किया है, उनके पास रहे, उसके एक डॉक्यूमेंटेशन की व्यवस्था इस इको सिस्टम के माध्यम से बन रही है। तो आज इस फोरम के माध्यम से हम यह भी आह्वान करना चाहते हैं कि इसमें हम सबका भी कनेक्ट होना चाहिये, हम सब ग्राउंडेड लोग हैं, कनेक्टेड लोग हैं, धरातल से जुड़े हुए हैं, तो ऐसी जो योजनायें आती हैं, उन्हें अच्छे कैंडिडेट तक पहुंचाना यह काम हम सबको करना चाहिये। भारत का स्किल इंडिया डिजिटल का एप दुनिया में टॉप 10 में है। उनमें मतलब सबसे अच्छे जो 10 एप्स हैं, उनकी अलग-अलग एग्जामिनेशन होती है अलग-अलग पैरामीटर्स है, उसके आधार पर उसे रेटिंग मिलती है। अब ये स्किल इंडिया डिजिटल की विशेषता ऐसी है कि अपना ये सेशन खत्म होने के बाद कभी भी हम उसे डाउनलोड कर सकते हैं। तो हर व्यक्ति को स्किल मिले, कभी भी स्किल मिले, इसमें ऑनलाइन, ऑफलाइन, paid और free बेस्ड हाइब्रिड मॉडल हैं मतलब हमने कोशिश की कि यदि यहाँ का पिन कोड हम एंटर करें, तो हमें यहाँ का एक प्रधानमंत्री कौशल केंद्र मिल सकता है। इसमें लर्नर भी जुड़ सकते हैं। Skill India, Digital India platform में, हम learner या Trainer के रूप में जुड़ सकते हैं। जब भी हमें समय है तब एक स्किल एक्वायर करने का तरीका 'स्किल इंडिया डिजिटल' प्लेटफॉर्म है। अभी अपने देश में एक दिक्कत है कि ऐसे बहुत सारी सुविधाएं राज्य सरकार के पास भी है, और केंद्र सरकार के पास भी है। पर उन्हें लाभ ग्राही तक पहुंचना है, तो उसके लिये एक व्यक्ति

की व्यवस्था होती है। जैसे हम देखते हैं कि रेलवे स्टेशन पर वेंडिंग मशीन लगी है, पर वेंडिंग मशीन से टिकट निकालने के लिये कोई एक व्यक्ति की आवश्यकता अपने देश में आज भी महसूस होती है। तो कौशल मित्र नाम से एक योजना NSDC ने अभी शुरू की है। उसमें हार्डवेयर मतलब उसके पास जो स्मार्टफोन है, या टैब या लैपटॉप में 'स्किल इंडिया डिजिटल' के माध्यम से व्यक्ति के पास जायेगा। और इसमें उद्यम आधार ऐसा एक पोर्टल होता है उस पर आप एक उद्यमी के रूप में रजिस्टर हो सकते हैं। ये मैंने सात राज्यों के जैसे नाम लिये उड़ीसा से लेकर राजस्थान तक इन सब स्टेट में 30 कौशल मित्र आज के दिन में प्लेस है। रोजगार एवं स्किलिंग संबंधी सवाल बहुत सारे तो जवाब ढूंढने का काम NSDC ने किया है, स्किल इंडिया डिजिटल पोर्टल, 'ग्रामीण उद्यमी' जैसे उपक्रम और 'कौशल मित्र' जैसी योजनाओं के द्वारा Skilling, Reskilling, Upskilling और Multyskilling का काम NSDC कर रहा है और इसके माध्यम से अंत्योदय की परिकल्पना धरातल पर लाने का प्रयास कर रहा है। धन्यवाद।

1

Skill India Mission

Skill India
कौशल भारत - कुशल भारत

N·S·D·C
RE IMAGINE FUTURE

Today, India not only has the potential to become the knowledge centre of the world, but the skill capital as well. Our youth have skills, values, and the necessary passion and honesty to work. This skill capital of India can become the engine of development of the world

Hon'ble Prime Minister
17th Pravasi Bharatiya Divas Convention, 9th January 2023

A Mission of the Government of India with a vision "To Make India the Skill Capital of the World"

2

2

Who we are?

3

Central Architect of Skill Ecosystem in India

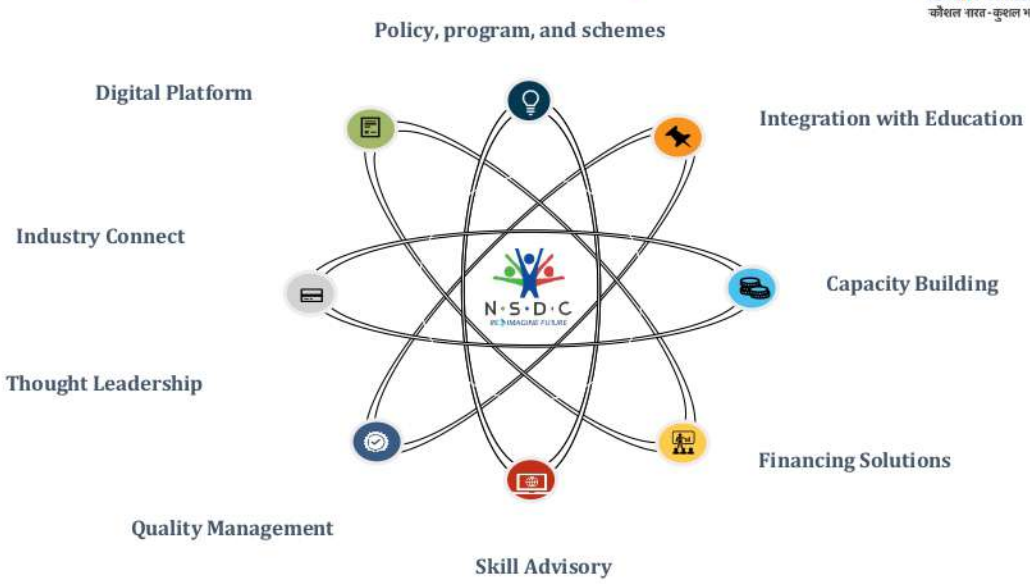

4

4

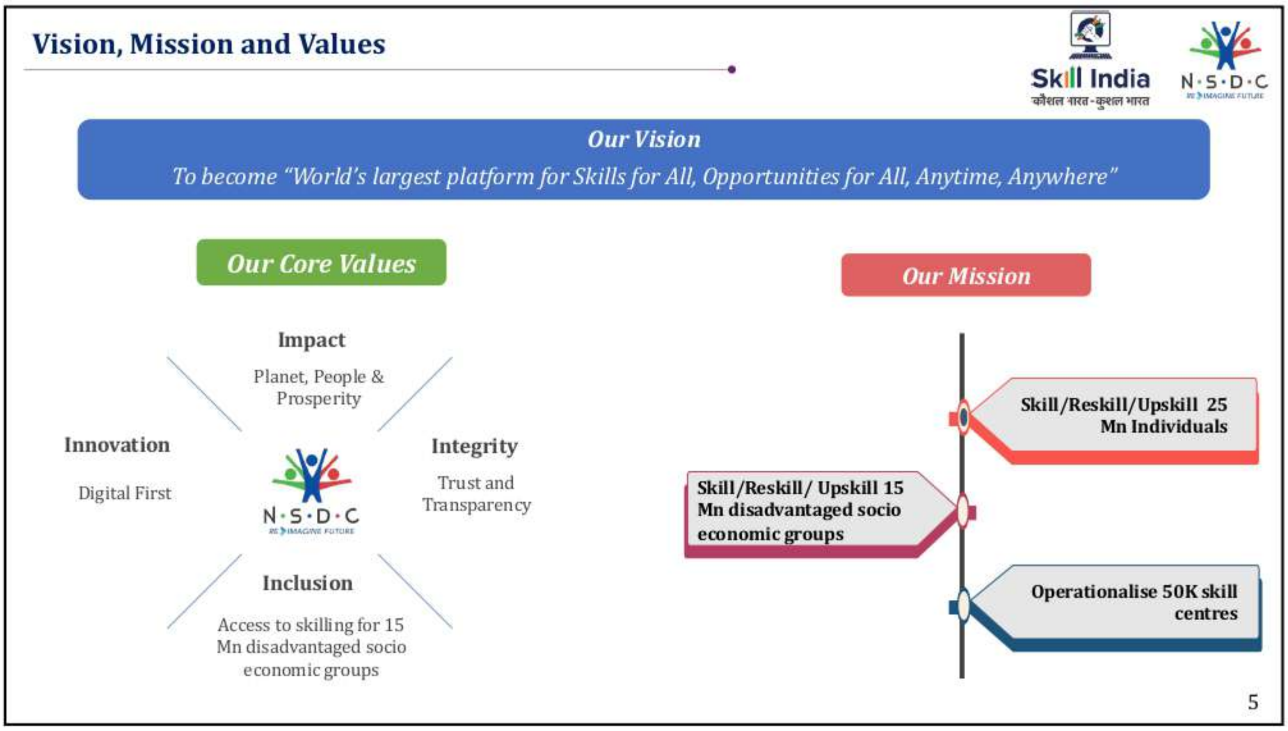
Vision, Mission and Values
Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत
N·S·D·C
Our Vision
To become "World's largest platform for Skills for All, Opportunities for All, Anytime, Anywhere"
Our Core Values
Impact
Planet, People & Prosperity
Innovation
Digital First
Integrity
Trust and Transparency
Inclusion
Access to skilling for 15 Mn disadvantaged socio economic groups
Our Mission
Skill/Reskill/Upskill 25 Mn Individuals
Skill/Reskill/ Upskill 15 Mn disadvantaged socio economic groups
Operationalise 50K skill centres
5

5

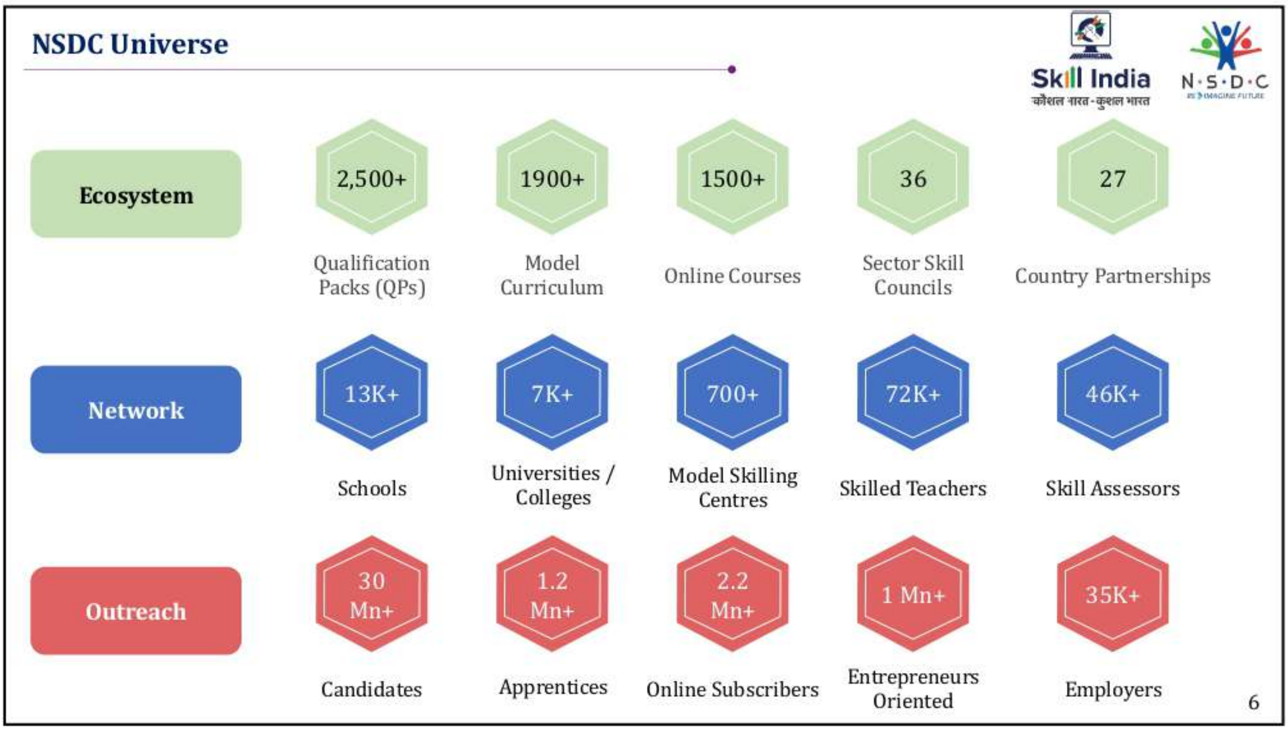
NSDC Universe
Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत
N·S·D·C
Ecosystem
2,500+
Qualification Packs (QPs)
1900+
Model Curriculum
1500+
Online Courses
36
Sector Skill Councils
27
Country Partnerships
Network
13K+
Schools
7K+
Universities / Colleges
700+
Model Skilling Centres
72K+
Skilled Teachers
46K+
Skill Assessors
Outreach
30 Mn+
Candidates
1.2 Mn+
Apprentices
2.2 Mn+
Online Subscribers
1 Mn+
Entrepreneurs Oriented
35K+
Employers
6

6

Achievements

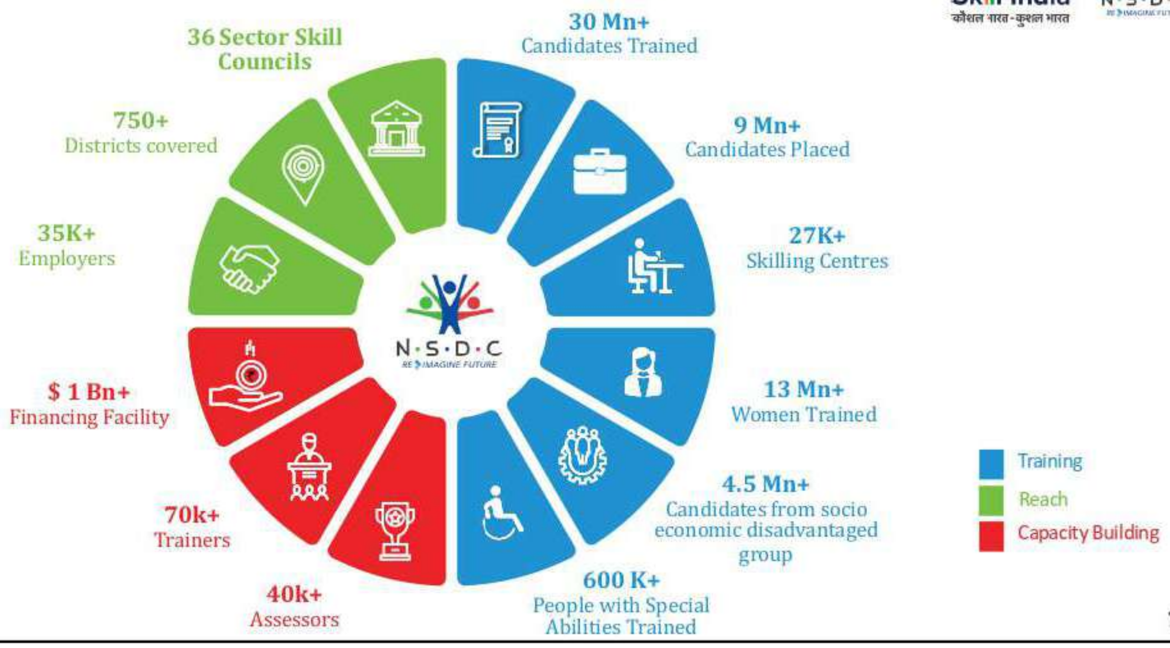

7

7

How do we do it?

- ✓ **NSDC Impact**
- ✓ NSDC Digital
- ✓ NSDC International
- ✓ NSDC Academy
- ✓ NSDC Finance

8

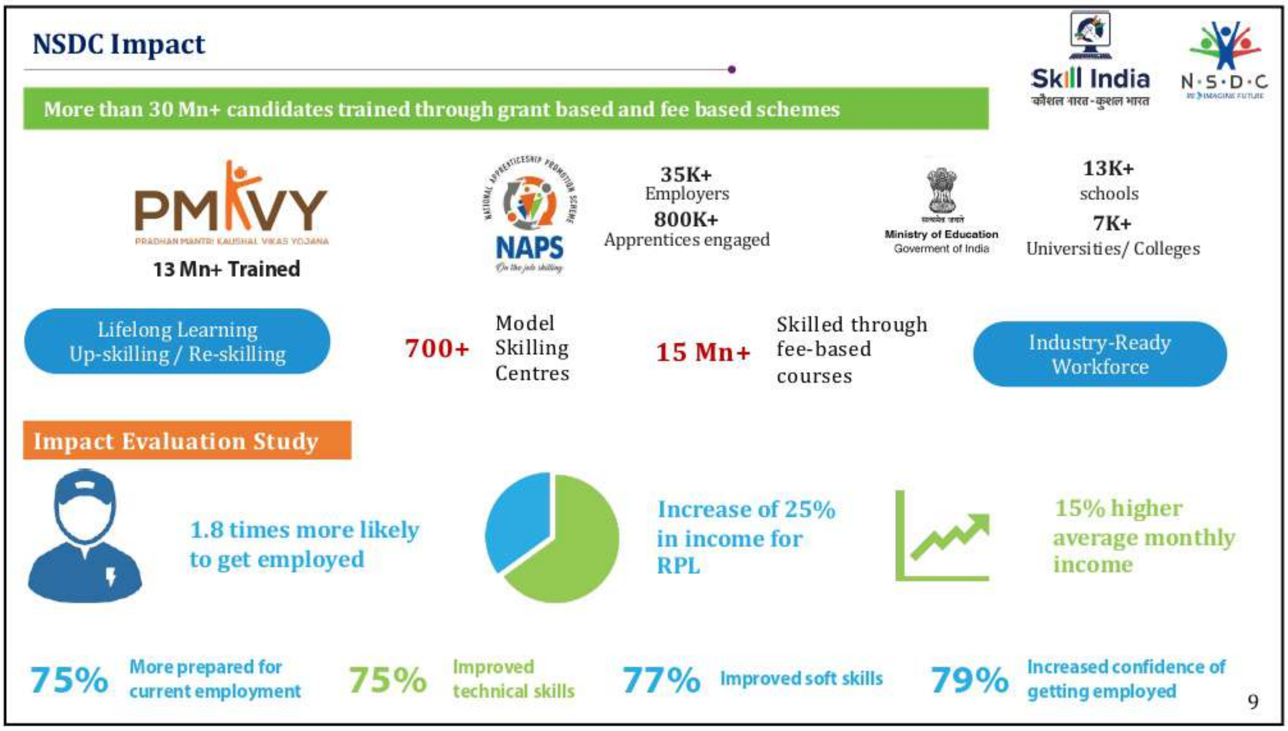
NSDC Impact
Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत
N·S·D·C
More than 30 Mn+ candidates trained through grant based and fee based schemes
PMKVY
PRADHAN MANTRI KAUSHAL VIKAS YOJANA
13 Mn+ Trained
NAPS
35K+
Employers
800K+
Apprentices engaged
Ministry of Education
Government of India
13K+
schools
7K+
Universities/ Colleges
Lifelong Learning
Up-skilling / Re-skilling
700+
Model
Skilling
Centres
15 Mn+
Skilled through
fee-based
courses
Industry-Ready
Workforce
Impact Evaluation Study
1.8 times more likely
to get employed
Increase of 25%
in income for
RPL
15% higher
average monthly
income
75% More prepared for current employment
75% Improved technical skills
77% Improved soft skills
79% Increased confidence of getting employed
9

9

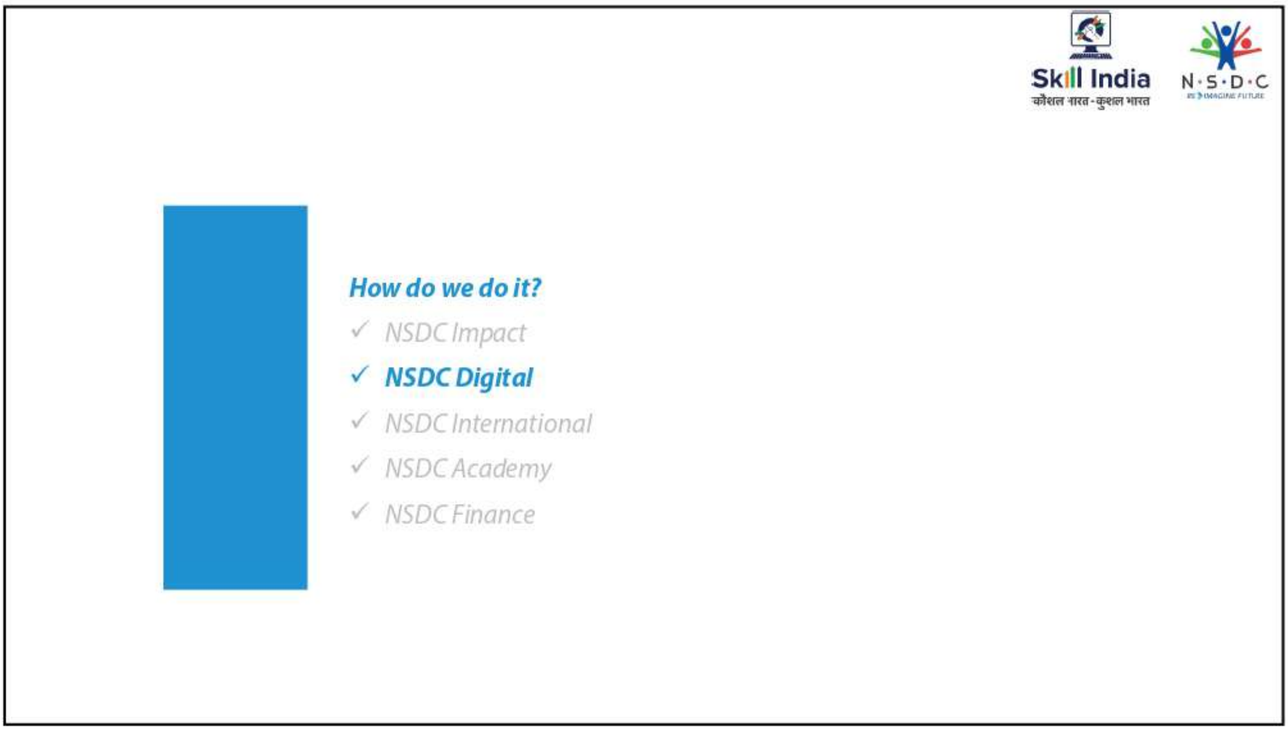
Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत
N·S·D·C
How do we do it?
✓ NSDC Impact
✓ NSDC Digital
✓ NSDC International
✓ NSDC Academy
✓ NSDC Finance

10

Skill India Digital Platform – Key Features

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत
N·S·D·C
RE-IMAGINE FUTURE

SKILL INDIA DIGITAL MAP
a. Locate – TCs, Courses
b. TPs can locate – candidates, employers

CONTINOUS LEARNING (ALUMNI)
a. Social Networking
b. Discussion Forum

DISCOVERY
a. Free Content and Services
b. Success stories
c. Discover courses, centers, employer & other

SKILL CARD
a. Digital Verified Credentials for Learners
b. Portable credentials
c. Physical skill card with QR code

DECISION TOOL
a. Training Centre Location
b. Course Fee
c. Course Duration
d. Rating of TC, Course, Trainer and Assessor
e. List of Courses
f. Course Type
g. Employment opp

ASSESSMENT & CERTIFICATION
a. Assessment on Demand
b. Assessor Rating
c. Badges, Credits

RECOMMENDATION
a. Contextualization
b. Skill Gap Analysis
c. AI and ML Based career/ learning recommendations

DIGITAL LEARNING (LMS)
a. AR/VR/XR, Multimedia learning
b. Digital Courses
c. Digital Content (Free and Paid)
d. Quiz/ Practice Questions
e. Multi-modal Delivery

SKILLING
a. Master Catalogue of Courses
b. Anytime Anywhere learning
c. Demand driven learning

JOBS/ ENTREPRENEURSHIP
a. Opportunities
b. Mentorship
c. Market Linkages

11

Technology Product Assisting International Workforce Mobility

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत
N·S·D·C
RE-IMAGINE FUTURE

NSDCI International Workforce Mobility Platform

Blockchain-powered platform that offers a secure and decentralized digital certificate infrastructure

Candidates - Candidates can use blockchain-generated digital credentials

Employers - Digitally verifiable credentials would help employers to find trusted talent solutions

Benefits

- Blockchain based certificate issuance
- Skill Pass (Digital skills wallet, accessible and shareable)
- Candidate mobility lifecycle, connectivity & directory
- Institute dashboard and analytics
- Global job posting & applicant tracking system
- 3rd party solutions, LMS and integrations

Current Impact: 7000+ Job Openings - 06 Countries - 10+ Partners

12

Digitally Verified Credentials

13

The Digitally Verified Credential Flow

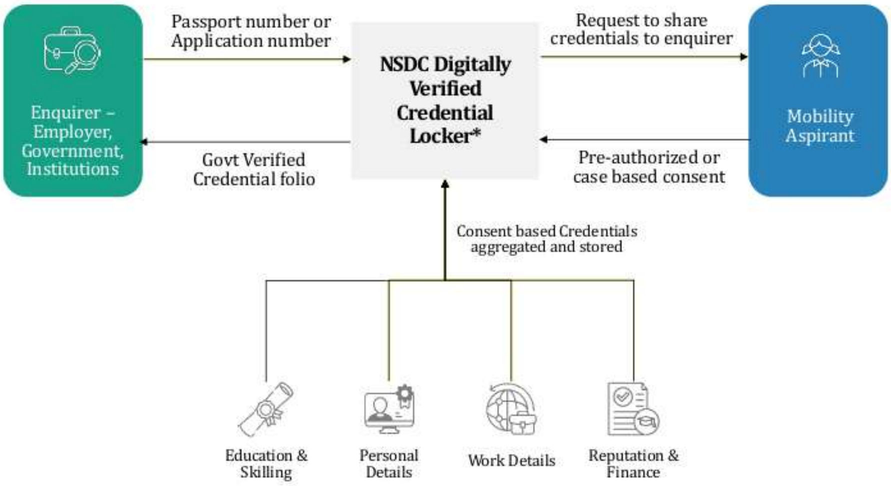

NSDC DVC Locker is connected to Government of India's "India Stack Global" components like DigiLocker, Aadhaar etc

14

Award & Recognition for Digital Innovation Products

NSDC's continued efforts have earned commendation and recognition for their impact and value in helping realise the vision of Skill India. They reflect the efforts and dedication of hundreds of individuals who work tirelessly to create global-standard skills training in the country.

S. No.	Organizer	Award Category
1.	ET Ascent Business Leader of the Year Awards 2023	Excellence in Innovation – Best Innovation product of the year
2.	ET Ascent Business Leader of the Year Awards 2023	Leaders of Tomorrow
3.	ET Ascent Business Leader of the Year Awards 2023	EduTech – Skill Development Company of the year
4.	IAMAI 17th India Digital Summit	Best Tech for Education

15

How do we do it?

- ✓ NSDC Impact
- ✓ NSDC Digital
- ✓ **NSDC International**
- ✓ NSDC Academy
- ✓ NSDC Finance

16

NSDC International: Skill India International Mission

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

N·S·D·C
RE IMAGINE FUTURE

Incorporated in Oct '21

Ongoing engagements with – GCC countries, Australia, Japan, Malaysia, Canada, Germany and Finland

1. Addressing global workforce/ skill mismatch for Overseas Governments/ Businesses to address
2. Dedicated skilling institutions for overseas Governments / Businesses
3. Skill Advisory to overseas Governments/ Businesses
4. Partnering with Global Education/ Skill Institutions for Knowledge Exchange and Capacity Building

Strategic Areas of Intervention

Labour Mobility

Capacity creation

Advisory

Demand Aggregation

Overseas Recruitment

Off-shoring Services

Staffing Services

Foreign Language Training

International Assessment & Certification

Future Skills (Industry 4.0 + Web 3.0)

Overseas Skills Institution

17

17

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

N·S·D·C
RE IMAGINE FUTURE

How do we do it?

- ✓ *NSDC Impact*
- ✓ *NSDC Digital*
- ✓ *NSDC International*
- ✓ ***NSDC Academy***
- ✓ *NSDC Finance*

18

NSDC Academy – Focussing on Future Skills and Vocationalization of Education

Skill India
कौशल भारत - कुशल भारत

N·S·D·C
RE-IMAGINE FUTURE

- Aligning Future Skills with Higher Education institutions to enhance employability of students
- Implementing National Education Policy 2020 – Vocationalization of Education.
- Continuous engagement with industry to track technology changes in industry ecosystem.
- Offering Skill/ Apprenticeship Embedded Degree Programmes.
- Re-Skilling/ Up-Skilling/ Multi-Skilling opportunities to address emerging skilling needs of workforce.
- Specialised teaching material, Expert lectures and live projects by Subject Matter Experts & Industry representatives

800+ skill providers with **50+ future skill providers**

~20 Million candidates trained

80% candidates placed

~55K trained in **Future Skills**

Future Courses

Artificial Intelligence | *Big Data Analytics* | *Blockchain* | *Cloud Computing* | *Cyber-security* | *Internet of Things* | *Web & Mobile Development* | *Virtual Reality* | *Robotic Process Automation* | *3D Printing*

19

Skill India
कौशल भारत - कुशल भारत

N·S·D·C
RE-IMAGINE FUTURE

How do we do it?

✓ *NSDC Impact*

✓ *NSDC Digital*

✓ *NSDC International*

✓ *NSDC Academy*

✓ ***NSDC Finance***

20

NSDC Finance

Impact Funding

- Skill Impact Bond - Outcome based approach
- Blended Finance/ Innovative Financing
- Combining debt, impact capital & philanthropic fund
- attracting commercial capital for innovation, scale-up and expansion

Creation of Futuristic Skill Centres

- Investing in State-of-Art Centre for Future Skills
- Revenue share model (student fee share against asset utilization)

Skilling Institutions Rating

- Continuous improvement in skill ecosystem through TP rating mechanism
- Enhanced TP performance

Skill Loans through NBFCs

- Skill loans at competitive interest rates through NSDC's Skill Loan Platform
- INR 500 Crores of Skill Loans disbursed

Viability Gap Funding

- Long term loans for Creation of Skill Infrastructure
- Focus on placement linked futuristic skills (New age technologies/ Industry 4.0 courses)

First Loss Default Guarantee

- Creating leverage through default guarantee on Entrepreneurship and Skill Loans
- Making skilling & entrepreneurship accessible

CSR and Industry Sponsorship

- Hybrid products for multiple fold impact by using CSR fund levers (guarantee, seed money and capacity building of implementing agency)
- Streamlined Processes for transparency (Integrity)
- Products and Services (Inclusion and Impact)
- Models (Innovation) in CSR

21

21

Our Thought Leadership

SkillsIP Intelligence Platform

Skills Intelligence Platform
NSDC's knowledge platform for TVET stakeholders

PMKVY Impact Evaluation | Global Skill Gap Assessment - 2018 | India Skill Gap Assessment - 2018 | Evaluation of NSDC's initiatives for sustainable skill development | Overview of Existing and Emerging Models for Skilling in India | Multiple guidelines for Govt. scheme implementation

Monthly Corporate dashboards | Predictive analytics to study factors affecting placement rates | Trainer Effectiveness in the Indian skilling ecosystem | Mapping Skills: A Roadmap for India and the UAE | Skill Development Priority Index | Multiple skill gap study India (Sector/ geography)

22

22

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

N·S·D·C
RE ▸ IMAGINE FUTURE

Adecco and NSDC Partnership

23

Adecco and NSDC Partnership – Enabling International Workforce Mobility

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

N·S·D·C
RE ▸ IMAGINE FUTURE

India's largest Skills Provider partnering Global HR & Staffing leader

N·S·D·C RE ▸ IMAGINE FUTURE — THE ADECCO GROUP

International Workforce Mobility through:

> ***Joint Training Programs***

> ***Establishing Skilling & Training hubs in India & Abroad***

> ***Placement of Skilled & Certified Indian Workforce***

Target Countries

Middle East

Bahrain, Kingdome of Saudi Arabia, Kuwait, Oman, Qatar, United Arab Emirates

Europe

Hungary, Nordic, Poland, Prague, Romania, Serbia, Slovenia

Focus Sectors

- Information Technology
- Infrastructure
- Mining
- Oil & Gas
- Logistics
- Healthcare
- Retail
- Aviation

24

Adecco and NSDC Partnership – Key Interventions

Workforce mobility facilitation – Job Openings, Job Descriptions, Interviews, Visa, Immigration & Deployment.

Engaging with Stakeholders to ensure mobility of trained, skilled and certified Indian Candidates to Destination Countries.

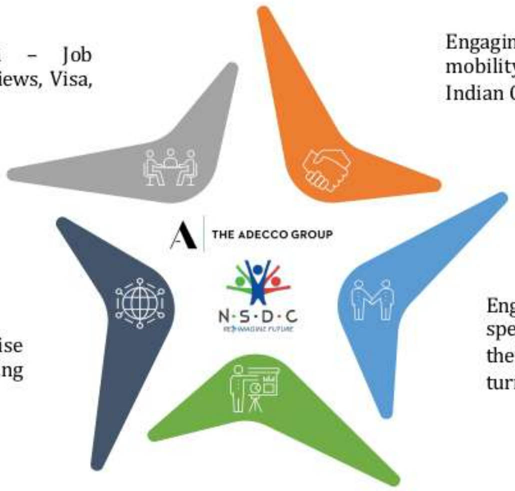

Geography-wise, Sector-wise demand aggregation/ mapping for destination countries.

Engaging with employers to understand specific demand mandates & manage their fulfilment as per the agreed turnaround time.

Designing training plans in-line with the industry/ employer's requirements.

25

THANK YOU

26

Keynote Address by Dr. Bharat Mishra on "Role of Universities in Education For All."

Dr. Bharat Mishra, Vice Chancellor, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwa Vidyalaya. Prof Mishra is a resident of Amilika village of Rewa district. He has M. Sc in Physics from Model Science College, Rewa with specialisation in Electronics. He was conferred doctorate from MGCGVV. He was founder members of starting BSc (IT) courses in University. He was also Nodal Officer of IT In-charge Director of Community College Scheme and M.P Online. He has written many books and many research scholars completed their doctorate under his guidance.

समस्त विद्वतजनों को नमस्कार!

मुझसे पूर्व प्रभाशंकर जी ने AI के बारे में थोड़ा डराया, तो मेरा मानना है कि challenges तो इस धरती पर सदैव रहते हैं। मुझे याद है जब computer इस देश में आया था या आने की स्थिति में था, तो यह कहा जा रहा था कि computer को नहीं आना चाहिये, इससे लोग बेरोजगार हो जायेंगे। लेकिन धीरे धीरे आज की स्थिति देख लीजिये computer अब हमारे दैनिक कार्य का अंग है, प्रभाशंकर जी AI की बात कर रहे थे, उसका challenge भी हम सब लोग साल्व अवश्य करेंगे। इसलिये जब इस प्रकार की गोष्ठियाँ, संगोष्ठियाँ, सेमिनार होते हैं जिनमें आने वाले भविष्य में हमारी शिक्षा संस्थानों एवं सामाजिक संस्थानों की दिशा-दशा क्या होनी चाहिये, उसका चिंतन मनन हम सब करते हैं। विश्व में भी, विश्व की दिशा आने वाले समय में क्या रहे, क्या गति रहे, उसके लिये SDG Goals निर्धारित किये थे। कल के सत्र में पता चला कि जिस दिन पं. दीनदयाल जी की जयंती थी उसी दिन इसकी घोषणा हुई थी, और 2015 में सतत विकास के लक्ष्यों का संकल्प रखा गया था, जिसे Sustainable Goals कहते हैं जिसके अंतर्गत 17 गोल और 164 टार्गेट है। जिसे सभी देशों को मिल करके 2030 तक हासिल करना है। इस संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर करने वाला अपना देश भी था। मध्य प्रदेश सरकार ने भी 2030 तक प्रादेशिक स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की रूप रेखा बनाई है। 'आत्म निर्भर' जैसे अभियानों के साथ प्रदेश मजबूती से आगे बढ़ रहा है। संदेश साफ है कि जब तक प्रादेशिक स्तर पर तय समय सीमा में लक्ष्य निर्धारित या हासिल होंगे तभी देश में भी होंगे और तभी वैश्विक स्तर पर हमको वह लक्ष्य हासिल होंगे। इसलिये सफलता प्राप्ति तक यह होने में एक सबसे पहली जो कड़ी है, निचला स्तर होता है। तो प्रयासों की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि हमको उच्च स्तर पर सफलता प्राप्त होगी।

बात आई थी 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' और मुझे बहुत अच्छा लगा ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अभी ग्रामोदय व्याख्यान माला व नानाजी स्मृति व्याख्यान माला हम आयोजित करते हैं। बात आई किसको बुलाना चाहिये? तो मुझे प्रसन्नता हुई 'गुणवत्तायुक्त शिक्षा' में यहाँ पर बोलने के लिये सबसे पहले गोपाल भाई जी खड़े हुए, जिन्होंने यथार्थ धरातल पर काम किया है। ना केवल काम किया है, बल्कि जीवन्त उदाहरण सबके समक्ष, समाज के सामने प्रस्तुत किया है। तो हम भी कहते हैं कि जब कभी ग्रामोदय व्याख्यान माला हो या नानाजी स्मृति व्याख्यान माला हो तो ऐसे ही लोगों का व्याख्यान होना चाहिये जिन्होंने यथार्थ धरातल पर काम किया है, केवल भाषण नहीं। 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' जो कि चौथे SDG गोल है, का उद्देश्य समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना है, साथ ही सभी के लिये आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना।

निश्चित रूप से गुणवत्ता की जब बात आती है, तो कई बार मन में प्रश्न आता है कि गुणवत्ता के साथ संस्कारयुक्त शिक्षा भी होनी चाहिये। आपने एक दो उदाहरण भी दिये। मैं जिस विश्वविद्यालय से हूँ हम सबको विदित है इसकी स्थापना 12 फरवरी 1991 को हुई थी। श्रद्धेय नानाजी के प्रयासों से और उनकी शिक्षा की जो परिकल्पना थी उसके आधार पर लगातार तीन दशक से विश्वविद्यालय, जो नानाजी के सपने थे, उनको साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। शिक्षा की बात आती है तो मुझे नानाजी का ही एक प्रसंग याद आता है। नानाजी की जो 6 पुस्तकें हैं, उसमें से शिक्षाविद नानाजी, तो उन्होंने एक जगह लिखा जो मुझे अच्छा लगा, यह शायद गोंडा

का प्रसंग होगा, कि नानाजी बैठे थे तभी एक व्यक्ति अंदर आता है तो नानाजी ने देखा कि वह बड़ी प्रसन्नता के साथ वो अंदर घुस रहा है, तो पूछा, क्या बात है बड़े प्रसन्न दिखाई दे रहे हो। वो बोला नानाजी पैसों का इंतजाम हो गया। तो नानाजी ने कहा कि मैंने तुमको मना किया था कि उधार पैसे लेकर के तीर्थाटन मत जाना। उसे गंगाजी जाना था वह नानाजी के पास पूछने आया होगा तो उन्होंने उससे कहा कि अगर तुम्हारे पास पैसे हो जाये तो जाना। लेकिन उधार लेकर के नहीं जाना। उसने बताया कि उसे किसी से उधार मिल गया है। तो बगल में एक पढ़ा लिखा व्यक्ति बैठा था उसने कहा तुमको पैसे लेकर उधार लेकर के गंगा जी स्नान करने की क्या जरूरत थी? तुम ट्रेन में फ्री ही चले जाते कौन पूछने वाला था। उस व्यक्ति का जवाब था कि मैं गंगाजी स्नान सपरिवार करना चाहता था, यह पुण्य का काम है और मैं चोरी करके, इस अपराध बोध लेकर के स्नान नहीं करना चाहता। तो यह दो उदाहरण हमारे सामने है कि एक कम पढ़ा लिखा रहा होगा लेकिन पैसे से टिकट लेकर उसको ज्यादा करना स्वीकार था, दूसरा पढ़ा लिखा उसको समझा रहा है कि तुमको बेटिकट यात्रा करके गंगा स्नान कर लेना चाहिये था। तो वही से शुरूआत करेंगे कि, 'Community Engagement and Institutional Social Responsibility' का जो विचार आजकल काफी चर्चा में है, लेकिन आज से तीन दशक पूर्व 'कालजयी चिंतक' **'भारत रत्न' राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख** ने इसके महत्व को रेखांकित किया था।

नानाजी ने युगानुकूल ग्रामीण सामाजिक पुनर्रचना की अवधारणा प्रस्तुत की थी और कर्तव्यों से पूर्ण दायित्वों को रेखांकित किया था। उन्होंने विकास मूलक सामाजिक गतिविधियों को जन आंदोलन बनाने की पैरवी की। सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना से सामाजिक पूंजी का विकास, उनके चिंतन का केंद्रीय तत्व था। संयोग से चित्रकूट वह क्षेत्र है, जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम अपने वनवास काल के साढ़े 11 वर्ष बिताए और 'कम्युनिटी एंगेजमेंट' का सबसे बड़ा उदारण चित्रकूट में ही उन्होंने प्रस्तुत किया था, जब उन्होंने यहाँ के वनवासी, गिरिवासी बंधुओं के साथ-साथ पशुपक्षियों का भी साथ लिया और समाज विकास की दिशा में उनको प्रेरित किया। नानाजी ने भी चित्रकूट में पहले ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना, इसी उद्देश्य से की थी। यह विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध, प्रसार और प्रशिक्षण के माध्यम से अपनी गतिविधियां संचालित करता है, और इसका बोधवाक्य है 'विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्' और लगातार तब से लेकर अब तक उसकी यात्रा अनवरत चल रही है। वसंत भईया ने जब मुझे विषय दिया तो, मैंने कहा बोलना क्या है? तो उन्होंने कहा कि चूंकि नानाजी का कार्यक्षेत्र यहाँ पर है। आज जहाँ हम बैठे हैं वह भी रामदर्शन है पूरा चित्रकूट हम देख सकते हैं। तो उस मनीषी ने जब ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना की तो वहाँ चलने वाली जो गतिविधियां हैं तो उन गतिविधियों को मैं आपके सामने प्रस्तुत करूं, यह आपके सामने है।

विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम् विश्वविद्यालय के लोगों में गेंहू की बाली है, कृषि का प्रतीक है, उगते हुए सूर्य का प्रतीक और यह यहाँ पर इंजीनियरिंग का, अभियांत्रिकी का प्रतीक है। खड़ाऊ बीच में है, त्याग का प्रतीक है। और नानाजी तो इसको बार-बार कहते ही थे कि त्याग का सबसे बड़ा उदाहरण चित्रकूट ही था। जहाँ दो भाईयों में सत्ता प्राप्ति के लिये नहीं सत्ता त्याग के लिये संघर्ष हो रहा था, तो नानाजी, ना केवल ग्रामोदय विश्वविद्यालय वरन् सभी जगह उनका मोटो था शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और समरसता और साथ में विवाद मुक्त गाँव। इस दिशा में

नानाजी का चिंतन चलता था। इसी दिशा में हम सब लोग कार्य भी कर रहे हैं। शिक्षा ग्रामोदय में है। हम सब लोग देखते होंगे। ड्रेस कोड है, छात्रों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम है जो समान्यतः सभी विश्वविद्यालय में होता है, हमारे यहाँ नवाचार का प्रकार है, वह है सामाजिक मूल्य और उत्तरदायित्व का पाठ्यक्रम जिसके अंतर्गत प्रत्येक शुक्रवार को वंदे मातरम होता है, उसके बाद श्रम साधना। उसी दिन अगर माह का आखिरी शुक्रवार होगा तो प्रार्थना सभा। फिर वृक्षारोपण, स्वास्थ्य शिविर, ग्राम प्रवास, यह विश्वविद्यालय की निरंतर चलने वाली गतिविधि है। विश्वविद्यालय के पांच संकाय है और एक डिस्टेंस एजुकेशन और सामुदायिक महाविद्यालय योजना जो 'चीफ मिनिस्टर कम्युनिटी लीडरशिप डेवलपेंट' प्रोग्राम के अंतर्गत संचालित है। विश्वविद्यालय के प्रत्येक संकाय को एक गाँव गोद लेना होता है। इस प्रकार पांच गाँव गोद लेकर के स्वास्थ्य की दिशा में काम कर रहा है। परिसर में स्वच्छता पर विशेष बल है। प्लास्टिक मुक्त परिसर है। जो SDG's की बात आ रही है तो उस दिशा में भी काम कर रहा है। नानाजी का शोध के बारे में चिंतन था कि आम जनों की वैचारिक समझदारी का भी उपयोग होना चाहिये। केवल हम अच्छा सोच रहे हैं या इसी दिशा में शोध हो और शोध के उपरांत उसको एक थीसिस के रूप में बाइंड करके रख दिया जाये, यह ना समाज के लिये कल्याण के लिये हो और ना अपने कल्याण के लिये, तो ऐसा शोध नहीं होना चाहिये। यहाँ कृषि संकाय भी है। विश्वविद्यालय द्वारा कृषकों की आय दुगनी करने के उद्देश्य से कृषि को लाभकारी करने एवं मूल्य संवर्धन एवं कौशल प्रमाणन के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन होता है। ऐसे वंचित वर्गों के प्रशिक्षण के लिये या उनका कौशल उन्नयन के लिये पूरे मध्य प्रदेश में मैपसेट के सहयोग से कौशल विकास की दिशा में कई प्रकार के कंप्यूटर प्रशिक्षण भी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित किये जाते रहे हैं।

अब सबसे महत्त्वपूर्ण जिस पर अर्थात SDG पर काम कर रहे हैं, तो मुझे ऐसा लगता है कि देश में पहली बार सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये हमने अकादमिक पाठ्यक्रम से जोड़कर और विकास खंड को एक इकाई मानकर, लक्ष्य प्राप्ति को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर नवाचार किया है। इसने SDG को प्राप्त करने का व्यवहारिक एवं प्रभावी मॉडल दिया है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत मध्य प्रदेश के सभी 10 संभाग 53 जिले और 353 ब्लॉक में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत BSW & MSW के पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। 7 दिन गाँव में जाकर के, गाँव के दिशा में भलाई में क्या काम हो सकता है या शासन की जो जन कल्याणकारी योजनाएं हैं जनता तक पहुंचाने का काम, ऐसे अनेक उदाहरण है जो पाठ्यक्रम के अंग है। सभी SDG's को इनकॉरपोरेट कर सिलेबस डिजाइन किया गया है। साथ ही साथ और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों को भी समाहित किया गया है। तो इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य क्या है? यह अनूठा कैसे है? यह जिस पाठ्यक्रम की मैं बात कर रहा था इसका हमारा खुद का मोबाइल ऐप है और सभी पुस्तकें विश्वविद्यालय के शिक्षकों के द्वारा ही रची गई है। तो इसलिये मेरा मानना है कि पूरे मध्य प्रदेश में हमारा जो पाठ्यक्रम है वह सस्टेनेबल गोल को समाहित करके बनाया गया है। इसके अनुसार एक्टिविटी पूरे मध्य प्रदेश में इस विश्वविद्यालय द्वारा संचालित की जा रही है। स्वास्थ्य शिविर में भी दीनदयाल शोध संस्थान, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट और ग्रामोदय विश्वविद्यालय प्रतिमाह, जो गोद लिये गये गाँव है, वहाँ पर हम शिविर आयोजित करते हैं, जहाँ निःशुल्क दवा का वितरण होता है। 'सिकल सेल एनीमिया' उन्मूलन का काम शहडोल में अपने प्रयासों से होता है। एक सामूहिकता का भाव माने

जितने इस गोल को प्राप्त करने के लिये तो शिक्षा और संस्कार की जब बात आती है, या गुणवत्ता पर शिक्षा की बात आती है, तो शिक्षा तो हम प्राप्त करते ही हैं, बहुत अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं और कई बार तो इतनी अच्छी शिक्षा प्राप्त करते हैं कि हमको विमान उड़ाना भी आ जाता है और उड़ते विमान से बिल्डिंग गिराना भी आता है, तो हमें तय करना है कि किस प्रकार की शिक्षा लें। तो इस प्रकार से कि मेरा विश्वास है कि आज शासकीय स्तर पर और विश्वविद्यालय स्तर पर यह प्रयास पूरी गंभीरता से हो रहा है। मुझे लगता है कि निचले स्तर पर काम करना है तो अन्य सामाजिक संगठन को साथ लेना होगा। और चित्रकूट में तो संस्थान (DRI) सतत प्रयासरत है ही। और सबसे अच्छी बात है कि इस सेमिनार के लिये चित्रकूट क्षेत्र का चुना जाना, बड़े शहरों में तो हम करते हैं। पर जैसे और एक उदाहरण जो आया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स की बात करते हैं, उसमें एनर्जी बचाने की बात होती है लेकिन जो एनर्जी बचाने की बात करते हैं वह प्राइवेट जेट हायर करके आते हैं और AC कमरे में बात होती है। अतः मुझे लगता है कि चित्रकूट वास्तव में सीखने का एक आदर्श प्रेरणा का केंद्र है, और आज यहाँ पर जो SDG पर इंटरनेशनल सेमिनार आयोजित हो रहा है, और जो चिंतन-मनन हो रहा है, उसके उपयोगी परिणाम निकलेंगे। वसंत भैया का एक अच्छा स्वभाव है कि कुछ ना कुछ उससे एक संकल्प पत्र पारित होता है, इस बार भी संकल्प पत्र पारित होगा और एक संस्था के नाते हमें जो करना है उसके लिये हैं निश्चित रूप से हमको उसमें से राह मिलेगी। अपने देश के प्रधानमंत्री जी का जो संकल्प है 'एक भारत और श्रेष्ठ भारत' के उसमें एक नया संकल्प भी हम सबको मिल गया है "विकसित भारत at 1947"। इसका रास्ता भी यहाँ हमको दिखाया गया है। तो इस प्रकार के वर्कशॉप से हमको लगता है कि हम उस संकल्प को भी सिद्धि की ओर ले जायेंगे। आज के इस अवसर पर मुझे लगता है कि कोई भी समस्या जटिल तब तक लगती है जब तक हम चित्रकूट नहीं पहुंचते। इतिहास गवाह है कि संकल्पों की, लक्ष्यों की सिद्धि का मार्ग चित्रकूट से ही निकलता है। इस संगोष्ठी की सफलता के लिये मैं प्रभु कामतानाथ जी से प्रार्थना करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद। भारत माता की जय।

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना (म.प्र.)

1

संस्थापक कुलाधिपति -भारतरत्न नानाजी देशमुख

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय **भारतरत्न नानाजी देशमुख** के शिक्षा क्षेत्र के चिंतन की परिणति है, जो म.प्र.शासन द्वारा 12 फरवरी, 1991 को विशेष अधिनियम 09, 1991 द्वारा स्थापित हुआ। ग्रामीण विश्वविद्यालय के आधार पर **ग्रामोदय विश्वविद्यालय** पहला संस्थान है।

यह विश्वविद्यालय **भारतरत्न नानाजी** के शिक्षा क्षेत्र के अभिनव परिकल्पनाओं एवं संकल्प का जीवन्त स्मारक है।

यह विश्वविद्यालय न केवल प्रदेश वरन् देश का एक मात्र 'ग्रामीण विश्वविद्यालय' है, जिसका ध्येय वाक्य है "**विश्वं ग्रामें प्रतिष्ठितम**"

मैं अपने लिए नहीं, अपनों के लिए हूं, अपने वे हैं जो पीड़ित एवं उपेक्षित है

- **विश्वविद्यालय सर्वांगीण ग्राम्य विकास के प्रमुख आयाम शिक्षा, शोध, प्रसार एवं प्रशिक्षण पर समेकित रूप में कार्य कर रहा है।**

2

विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्
तीन दशकों की गौरवशाली यात्रा में ग्रामोदय के प्रति हमारा समर्पण
❑ ग्रामीण समाज की बेहतरी हेतु वांछित मानव संसाधन निर्माण।
❑ ग्रामीण समाज में अंतिम पंक्ति के बन्धुओं की सेवा।
❑ सुन्दर और आकर्षक ग्रामीण पर्यावास की स्थापना।
❑ सतत् विकास के प्रारुपों का अनुसंधान एवं क्रियान्वयन।
❑ कृषि, उद्यानिकी एवं पशुधन का विकास।
विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्
Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya Chitrakoot

3

विश्वविद्यालय की नियमित गतिविधियां
प्रार्थना सभा
ग्राम प्रवास
श्रमदान
गतिविधियां
स्वास्थ्य शिविर
वन्देमातरम
वृक्षारोपण
विश्वविद्यालय में स्थापना काल से सामाजिक मूल्य एवं उत्तरदायित्व समग्र शिक्षा का अनिवार्य तत्व रहा है।

4

my GOV
मेरी सरकार
Ideas For The Vision
VIKSIT BHARAT @2047
❝ Today the goal of the country is
Viksit Bharat, Sashakt Bharat!
We cannot stop until this dream of a
developed India is fulfilled.❞
-Narendra Modi, Prime Minister
Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya Chitrakoot

5

दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र (DDUKK)
दीनदयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र
DEENDAYAL UPADHYAYA KAUSHAL KENDRA
पाठ्यक्रम
एम० वोक०
बी० वोक०
उच्च डिप्लोमा
डिप्लोमा
प्रमाण पत्र (कौशल विकास लघु अवधि पाठ्यक्रम)
ऐड ऑन कोर्स
परियोजनाएं-
१-राष्ट्रीय एस सी एस टी हब प्रोजेक्ट
२-ग्रामोदय आजीविका व्यवसाय एवं उद्यमिता केंद्र(LBI)
रोजगार परक पाठ्यक्रम
जैम, जैली , केचप तकनीशियन
मशरूम उत्पादन
फ्रूट पल्प प्रोसेसिंग तकनीशियन
आचार निर्माण तकनीशियन
माली सह नर्सरी उत्पादक
प्रयोगशाला विश्लेषक (मृदा एवं जल)
रिटेल सेल्स एसोसिएट्स
हर हाथ में कौशल, हर हाथ में रोजगार

6

ग्रामोदय मेला
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (सतना) म.प्र.

7

ग्रामोदय से राष्ट्रोदय
अखिल भारतीय शिक्षा समागम-29-30 जुलाई 2023
पहल
यूजीसी के अध्यक्ष प्रो एम जगदीश कुमार ने ग्रामोदय में राष्ट्रोदय स्टॉल को देखा
अखिल भारतीय शिक्षा समागम में ग्रामोदय विश्वविद्यालय की विशिष्ट पहल
यूजीसी के सचिव सहित वरिष्ठ अधिकारी भी ग्रामोदय स्टॉल पहुंचे

8

छात्र उन्मुखीकरण: 25-09-2023
ग्रामोदय के नवप्रवेशित छात्र-छात्राओं के उन्मुखीकरण का कार्यक्रम सम्पन्न
विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ संस्कार देना लक्ष्य: प्रो.भरत मिश्रा

9

Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya Chitrakoot
You reposted
National Council for Teacher Education @ncteDelhi · 18/12/23
These newly admitted #ITEP students of academic session 2023-24 from #MGCGV are reminding of the beauty that lies in rich Indian art & culture which has been emphasized broadly in the foundation phase of ITEP in line with #NEP2020 for #FLN and art integrated learning in students.
You reposted
National Council for Teacher Education @ncteDelhi · 18/12/23
Promoting folk heritage of Bharat through enchanting puppetry acts!
A delight to see the artistic talent of a group of Integrated Teacher Education Programme (#ITEP) students from Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya participating in #DelhiKalaUtsav 2023.
@mgcgv

10

सामुदायिक युवा समागम भोपाल(04-02-2023)

11

योग दिवस-21जून 2023
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना (म.प्र.)

12

ग्रामोदय महोत्सव
जैविक विज्ञान संगोष्ठी व ग्रामोदय व्याख्यान माला का उद्घाटन
शहर-आसपास
रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ग्रामोदय महोत्सव का समापन
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना (म.प्र.)

13

"हर घर तिरंगा"
हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत निकाली गयी
तिरंगा यात्रा -14-08-2023

14

15

सिकल सेल एनीमिया रोग उन्मूलन कार्यक्रम

चरण	क्र. सं.	गाँव का नाम	कुल परीक्षण	महिला	पुरुष	Total positive from solubility test	AS(carrier)	SS(Disease)
प्रथम चरण	1	टेढ़ी	37	15	22	0		
	2	अमहा	39	20	19	0		
	3	सेजवार	23	17	06	0		
	4	पालदेव	16	11	05	0		
	5	पतवनिया	20	05	15	0		
	6	मोहकमगढ़	34	20	14	0		
योग			**169**	**88**	**81**	**0**	**0**	**0**
द्वितीय चरण	1	पडमनिया खुर्द	150	102	48	6		
	2	खमरिया कला	61	38	23	4		
	3	लालपुर	64	39	25	1		
	4	कल्याणपुर	84	53	31	6		
	5	फतेहपुर	76	47	29	3		
योग			435	279	156	20	10	3
तृतीय चरण	1	गोरतरा	59	40	19	8	6	2
	2	जमुई	43	34	9	3	3	
	3	हरी	82	62	20	4	4	
	4	कचनपुर	99	78	21	8	6	
	5	धुरवार	82	58	24	6	5	
योग			365	272	93	29	24	2
कुल योग			**969**	**639**	**330**	**49**	**34**	**5**

16

म.प्र. जन अभियान परिषद के सहयोग से पाठ्यक्रम सत्र 2022-23 से नये स्वरूप में संचालन प्रारम्भ।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं उच्च शिक्षा विभाग के सभी युगान्तकारी सुसंगत प्रावधानों का समावेश।
माड्यूलर सिस्टम, कैफेटेरिया एप्रोच, क्रेडिट टांसफर, लर्निग फ्लेक्सेबिलिटी, च्वायस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम के प्रवधानों का समावेश।
चार क्वाड्रेन्ट- प्रिन्ट, आडियो-विजुअल, पीपीटी एवं प्रश्न समीक्षा में छात्रों को मोबाइल एप्प व एलएमएस के द्वारा
ikB~; Øe

17

अन्य उल्लेखनीय गतिविधियां
ग्रामोदय विश्वविद्यालय की छात्रा कु. प्रिया त्रिपाठी की बड़ी उपलब्धि
पेड़ और पानी बचाने के लिए हर संभव प्रयास करें: जल योद्धा पदमश्री उमाशंकर पांडेय
एक लाख दीपों के प्रज्वलन के साथ ग्रामोदय विवि परिवार गौरव कार्यक्रम का विशिष्ट सहभागी बना
ग्रामोदय विवि की प्रतिभा राजभवन में सम्मानित
स्थापना काल से ग्रामोदय में कौशल शिक्षा को दी जा रही है प्राथमिकता : कुलपति

18

अन्य उल्लेखनीय गतिविधियां
ग्रामोदय विश्वविद्यालय की छात्रा कु . प्रिया त्रिपाठी की बड़ी उपलब्धि
एक लाख दीपों के प्रज्वलन के साथ ग्रामोदय विवि परिवार गौरव कार्यक्रम का विशिष्ट सहभागी बना

19

धन्यवाद

20

Session Moderator
Dr. Prabha Shankar Shukla

Dr. Prabha Shankar Shukla, Vice Chancellor, North East Hills University is an eminent scientist in the field of Agriculture. Prof. Shukla specializes in Seed Science and Technology and has a track record of advancing social, economic and cultural development in various capacities. He is deeply committed to providing students with holistic education by implementing NEP 2020. He has published 42 research papers, 50 articles, 17 book chapters, and 5 books and manuals. He has also served as the resource person and editor in 7 bulletins and journals.

इस मंच के माध्यम से शिक्षा और संस्कार, तथा गुणवत्ता युक्त शिक्षा में Indian Knowledge System की बात रखूंगा। हम सभी **वसुधैव कुटुंबकम** की बात हम करते हैं, तो उस वसुधैव कुटुंबकम में विश्व परिवार के रूप में है और हम भारतीय परिवार को ज्यादा महत्व देते हैं और परिवार ही है जो बच्चे की शिक्षा की शुरुआत देता है जो पहली शिक्षा होती है वह मां से होती है। और यह जो हमारी शिक्षा सिस्टम था वह पहले मां से जुड़ी हुई थी, लेकिन अब वह टूट रही है। कैसे टूट रही है? लोरी जा रही है, और मोबाइल का गेम बच्चे के सामने आ रहा है। हम बहुत आसानी से 'एनिमेटेड पिक्चर्स' उसके सामने खोल देते हैं और बच्चा उनको देखता रहता है। और वही जब पांच साल का हो जाता है, उसको देखने के लिये वह जिद करता है तो हम रोकने के लिये उसकी पिटाई भी कर देते हैं। लेकिन हम कभी इस बात का आभास नहीं करते हैं कि गलती का प्रारंभ कहाँ से हुआ। यह सब शुरू हो चुका है हमारे परिवारों में, और इसकी वजह से उसका दुष्परिणाम भी अब सामने आना प्रारंभ हो गया है। हमारे नालेज सिस्टम में Local या Folk Knowledge होता या वह हमारा अपने गांव का था और जो दूसरा सिस्टम था, वह था 'ट्रेडिशनल साइंस' जिसको हमने आज वैज्ञानिक तरीके से कुछ चीजों को तो सिद्ध करके 'सिस्टेमिटाइज' कर दिया है, लेकिन अभी तमाम ऐसी नालेज हमारे Scriptures हमारे बुक में पड़ी है जिसको हम साइंटिफिक रूप में सिद्ध नहीं कर पाये हैं। उस पर हमें और काम करने की जरूरत है। अब हम 'होलिस्टिक एंड ह्यूमन नालेज सिस्टम' कैसे विकसित हुआ, हम इसमें बहुत ज्यादा नहीं करेंगे क्योंकि यह काफी बड़ा लेक्चर है। हम मूल चीज पर चलते हैं जिसका कि हम से सीधा संबंध है, Holistic Development Education जो है वो 'रिपोजिटारी आफ द नालेज' है। हम यह लोग जानते हैं कि रिपोर्जेट्री आफ द नालेज कहाँ-कहाँ, किस रूप में है, और आज भी हमारे पास जो सबसे अच्छा रिपोजिटारी आफ द नालेज है, तो उसका उदाहरण आने वाले समय में राम मंदिर होगा। लेकिन अगर पिछले ज्ञान से हम उसको कंपेयर करें तो हमारे पास आज भी मंदिरों का एक ऐसा बड़ा ज्ञान है जिस तक आज के सिविल इंजीनियर अभी तक नहीं पहुँच पाये। चाहे रंगा स्वामी टेंपल हो, मीनाक्षी टेंपल हो।

मैं कोणार्क मंदिर का उदाहरण दूंगा, यह इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट नमूना है। 800 वर्ष पूर्व बने इस मंदिर में सूर्य की गति की गणना भी उत्कृष्ट रचना है। इसकी दीवारों के चित्र ध्यान से देखें, तो जिराफ और ड्रैगन, उकेरे गये हैं। जो भारत में नहीं पाये जाते। तो सोचिये 800 वर्ष पूर्व ऐसा कैसे हुआ? यह इंगित करता है कि भारत के अफ्रीका और चीन से व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध थे। तो जो Knowledge Repository हमारे पास है। उसे हमने अच्छे से Promote नहीं किया। इस मंदिर के दीवारों पर बच्चे के जन्म को भी उकेरा गया है। हमने उस नालेज सिस्टम को कभी प्रमोट नहीं किया कि राम सेतु के विषय में सारे लोग जानते हैं तो इसको बहुत ज्यादा बताने की जरूरत नहीं है। और हम कल तक पुष्पक विमान और ऐसे विमानों की चर्चा अपने स्क्रिप्चर्स में करते आये हैं और ज्यादा दिन दूर नहीं है जब यह सारी चीजें आपकी मार्केट में होंगी।

यह टेक्नोलॉजी आलरेडी डेवलप हो चुकी है। मैं एक सबसे महत्वपूर्ण चीज बताना चाहता हूँ, जो हमने अपने विश्वविद्यालय में शुरू किया, वह है Idea Presentation Seminar। अक्सर विद्यार्थी खाली समय में ऐसे घूमते रहते हैं, हमने Ideation Room की कल्पना की, जहाँ विद्यार्थी जाता है, बैठता है, और उसके मन में जो भी कोई विचार Idea आता है, वो उसको चाहे white book, नोट बुक, कम्प्यूटर आदि। किसी पर लिख देता है। और 7 दिन की Idea और Thinking के बाद इन विचारों को शिक्षकों की एक screening committee के बीच रखा जाता है। जो Idea अच्छा लगता है, उस विद्यार्थी को बृहद Presentation के लिये बुलाया जाता है। Short Listed Ideas पर Heckathon होता है, और उनके आधार पर Pototype विकसित कर MSME को प्रेषित किये जाते हैं और इस तरह से विद्यार्थी के मन में आये एक विचार को full project के रूप में बदला जाता है। और हम विद्यार्थी की ऊर्जा को एक सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। इसके आधार पर नये Startups बन रहे हैं। धन्यवाद

INDIGENOUS KNOWLEDGE SYSTEM, SUSTAINABILITY AND INCLUSIVE DEVELOPMENT

PROF. PRABHA SHANKAR SHUKLA
VICE-CHANCELLOR, NEHU
SHILLONG

1

INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM

India developed its knowledge system, tested it through practice, verified and improved it over thousands of years

As a result, the Indian Knowledge System is founded on the 'wellbeing of all'

It is based on a deep understanding of human being as well as of nature and entire existence

INDIGENOUS KNOWLEDGE

- Indigenous knowledge is the local knowledge that is unique to a culture or society. Other names for it include: '**local knowledge', 'folk knowledge', 'people's knowledge', 'traditional wisdom' or 'traditional science'.**

- This knowledge is passed from **generation to generation, usually by word of mouth and cultural rituals, and has been the basis for agriculture, food preparation, health care, education, conservation and the wide range of other activities that sustain societies** in many parts of the world.

3

HOLISTIC AND HUMANE KNOWLEDGE SYSTEM

A knowledge system which ensures right understanding and clarity of living in harmony at all levels of human existence can be called a **holistic and humane knowledge system**

Many cultures and civilisations over millennia have tried to evolve such knowledge systems

The Indian culture and civilisation is one such example

How a culture, civilisation develops and is propagated generation after generation depends **on its education-sanskar, its knowledge system**

HOLISTIC EDUCATION

Human education-sanskar

↓

Humane world view, perspective

↓

Human values, human culture

↓

Skills for living in harmony

↓

Human society, human culture, civilisation

Main part of education

1. Universal
2. Rational
3. Verifiable
4. Leading to Harmony

\+

Value guided skills

HOLISTIC EDUCATION

Human education-sanskar

↓

Humane world view, perspective

↓

Human values, human culture

↓

Skills for living in harmony, with joy

↓

Human society, human culture, human civilisation

Full human potential

Graduates will be able to contribute to a human society

An equitable and just society

National development

ASPIRATIONS IN NATIONAL EDUCATION POLICY 2020

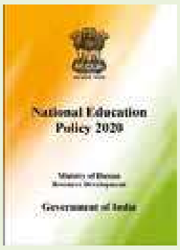

Education is fundamental for achieving

full human potential,
developing an **equitable and just society**,
and promoting **national development**

(page 3)

We have to understand the meaning of

- **Full human potential**
- **Equitable and just society**
- **National development**

Source: https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English.pdf

- Indian Knowledge System (IKS) encompass a wide range of ancient wisdom, including **traditional medicine, astrology, yoga, meditation, and more.**

- These systems have been passed down through generations and have played a significant role in shaping India's history and culture. Introducing these IKS resources in teachings will be useful to improve **self-reflection, emotional regulation, and empathy.**

- These practices help students to understand and manage their emotions effectively, leading to **better decision-making and healthier relationships**.

8

INDIA'S PROSPERITY AND ANCIENT KNOWLEDGE SYSTEM

9

In Pre-British India Temples Were Premier Educational Institutes

Education and Schools: in form of GURKULS attached to temples

Temples provided education in various subjects

- *Mathematics & Architectural Engineering*
- *Astronomy & astrology, Health & Medicine, Philosophy & literature, Music & Dance*
- *Yoga & Spirituality*
- *Warfare & Vedic Texts*

CIVIL ENGINEERING

TEMPLES ARE ONE OF THE MOST IMPORTANT ASPECTS OF INDIAN HISTORY.

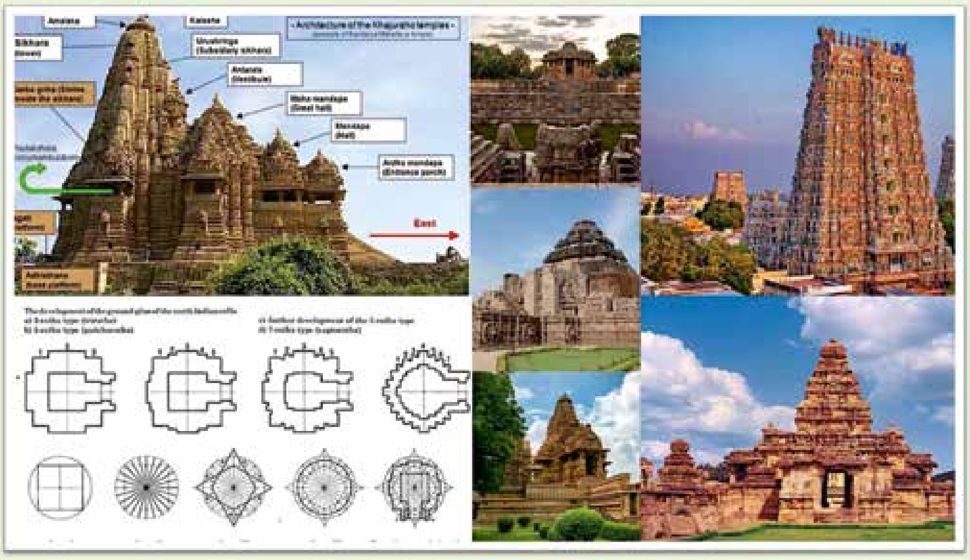

- **Not only a place of worship but also a storehouse of our culture and tradition.**
- **The architecture of the temples is also very unique and it has been said that they are one of the wonders of the world. India is home to some of the most beautiful temples which attract tourists from all over the world.**

1.The Sri Ranganathaswamy Temple, also known as Thirunagar, is located in Srirangam, Tamil Nadu. It is one of the largest Hindu temples in the world and is dedicated to Lord Vishnu.

2.The Brihadeeswarar Temple, also called Peruvudaiyar Kovil or RajaRajeswara Temple, is located in Thanjavur, Tamil Nadu. It is a UNESCO World Heritage site and is one of the largest and most famous Hindu temples in India.

3.The Meenakshi Amman Temple, also called Madura Meenakshi Temple, is located in Madurai, Tamil Nadu. It is one of the most important Hindu temples in South India and is dedicated to Goddess Meenakshi.

4.The Kailashnath Temple, also called Ellora Cave 16, is located in Aurangabad, Maharashtra. It is one of the largest rock-cut temples in the world and was built during the reign of the Rashtrakuta Dynasty.

5.The Mahabodhi Temple, also called Great Buddha Temple, is located in Bodh Gaya, Bihar. This temple also has great historical value as it is the place where Lord Buddha attained enlightenment.

6.The Konark Sun Temple, also called Black Pagoda, is located in Konark, Odisha. It is a UNESCO World Heritage site and one of the most important Hindu temples in India.

KONARK: A UNESCO WORLD HERITAGE SITE AND HAS BEEN DESCRIBED AS ONE OF THE SEVEN WONDERS OF INDIA.

THE MYSTICAL KONARK SUN TEMPLE WHEEL

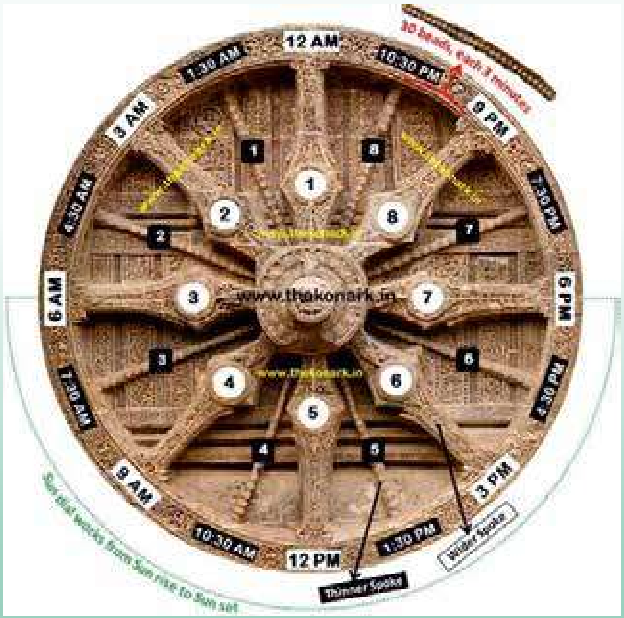

- Konark Wheel consists of **8 wider spokes & 8 inner spokes; 9 feet in diameter.**
- The temple features **24 (12 pairs) wheels** representing the wheels of Lord Surya's sun chariot.
- The **12 wheels signify the 12 months of the year and the 8 spokes represent the 8 prahars or time divisions of the day**.
- Konark sundial was **used to calculate the precise time of day based on the position of the sun.**
- The Sundial has great **astronomical significance.**
- Temple's architects used their knowledge of astronomy to create the sundial- **design is based on complex mathematical calculations that took into account the earth's rotation and the movements of the sun, moon, and stars.**
- Tracks the movement of the sun throughout the day and throughout the year. The wheel was designed **to align with the sun's rays at different times of the year, indicating the changing seasons and the solstices.**
- It is believed to have been used to calculate the **precise time for various religious ceremonies and rituals.**

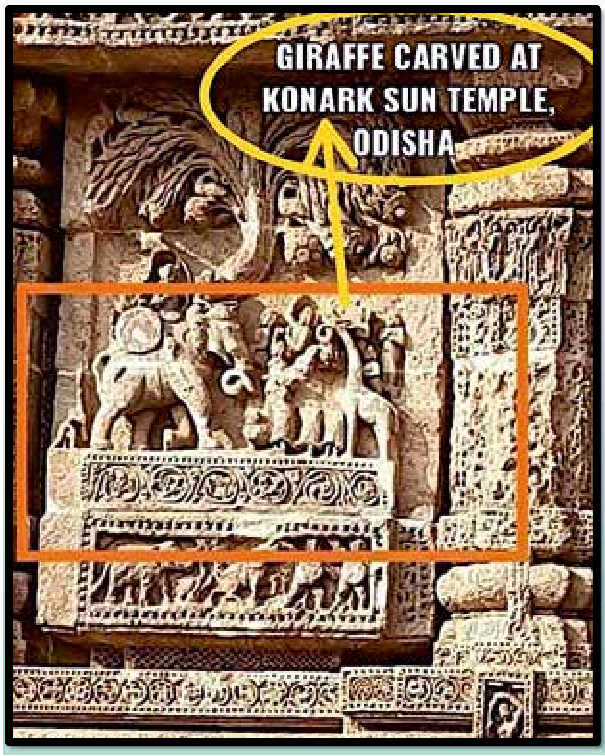

- **Are you able to notice something interesting in this sculpture? Yes, you are right, it's a giraffe.**
- **Does it indicate trade links with Africa? Probably yes.**
- **Giraffe is not native to India or Asia continent but is a natural habitat of Africa continent.**
- **The figure also shows a king is seating on an elephant and a group of African people standing with African lower garments.**

Kalinga dynasty had trade relations with African dynasty via sea route. it tells about the foreign travelers visiting India in the past and the international relations of our ancestors.

SCULPTURES WITH CHINESE TOUCH

CHINEESE DRAGON

800 years old ago

- Many sculptures on the walls of Sun Temple with Chinese men, musicians and traders with their characteristic features.
- The count of sculptures with Chinese men are quite high as compared to other foreign sculptures.
- How the artisans came to know about the appearance and detailed characteristics of Chinese people before 780 years?
- Odisha is located at the eastern coast of India, so the influence of Chinese may have been slightly more. Following are few sculptures on Konark Temple wall panels with Chinese people.

IMAGE OF CHILD BIRTH AND HEALING WHICH IS STILL IN PRACTICE BY THE BONDA TRIBE OF ORISSA

Traditional **healing practices** focus on benefits to the emotional, spiritual, psychological and cultural aspects of the **tribal** group

17

RAMA SETU AND THE MYSTERIES SURROUNDING IT

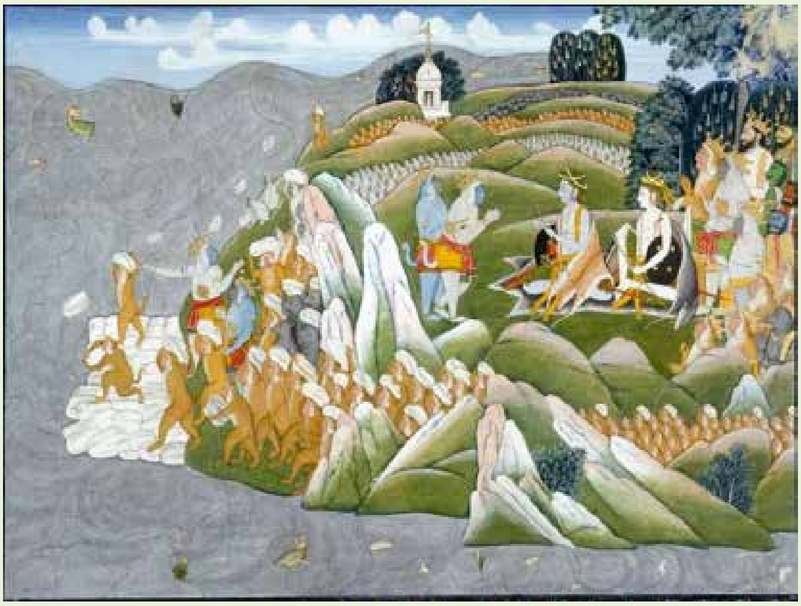

Rama Setu is one of the mysteries that many from across the world have tried to understand. It dates back by thousands of years, and is a marvel in itself, often making people wonder as to how a bridge over the sea could be made back then!

18

INTERESTING FACTS ABOUT RAMA SETU:

1)If geologists and archaeologists are to be believed, the rocks of the bridge are over 7000-years-old, while the sandbar is about 4000-years-old. This implies that the rocks were brought here from some other place.

2) This ancient bridge is basically a chain of natural limestone shoals, connecting Rameswaram Island (also known as Pamban Island) in Tamil Nadu and Mannar Island in Sri Lanka.

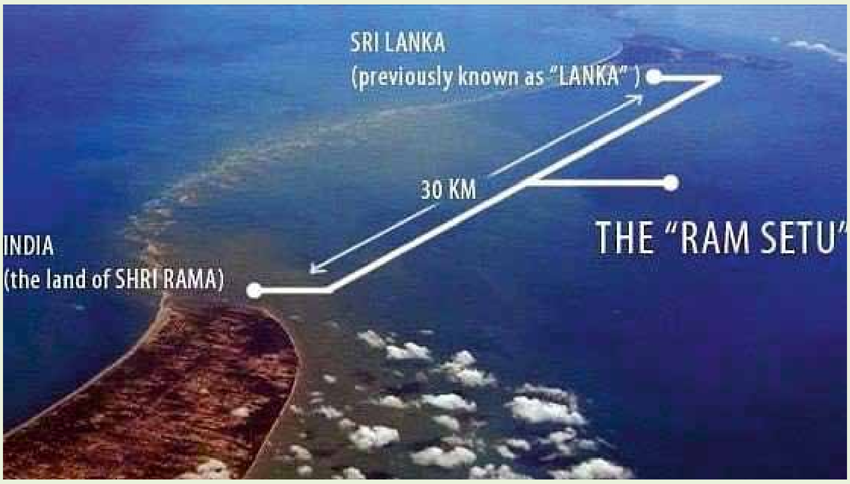

3) It is said that the bridge was walkable until the 15th century. But then the storms deepened the channel and made it inaccessible. According to the Ramanathaswamy Temple records, the bridge was above sea level until a cyclone destroyed it in 1480.

4) The bridge also finds mention in the western world in Ibn Khordadbeh's *Book of Roads and Kingdoms*, wherein the bridge is referred to as *Set Bandhai* or *Bridge of the Sea*.

19

ART & CRAFTS

Terracotta bull, Indus Valley Civilization, 2600-1900 BC,

- Ancient India, has done its share of revolutionizing and popularizing its originations to the present-day human society.

- The Indus Valley civilization, like Egyptians and Greeks, played an important role in establishing important milestones in **epistemology, arts and crafts, technology, clothes and fabrics, metrology, genetics, industrial production, and every other field imaginable**.

20

MATHEMATICS

The Concept Of Zero

Bakhshali manuscript, the Oldest record of Zero Symbol (Dotted form), 3rd-4th century CE, via University of Oxford

- In the long list of surprising Indian inventions, the astronomer **Aryabhata is always cited for first using the expression 'Kha' for zero in his numbering system.**

- 100 years later, another scientific genius, Brahmagupta employed the word *sunya* (empty), widely-used in present-day India, to denote zero.

- **Various synonyms such as *akasa* (sky)** are used in later years, connoting to the idea of an 'empty circle' and imagining the concept of zero in different forms, apart from simply tallying numbers. This is how the concept of zero transformed from an adjective to a noun (proper number).

21

AERO DYNAMICS AND AVIATION

22

MEDICINE & SURGERY

Plastic Surgery: Facial Reconstruction

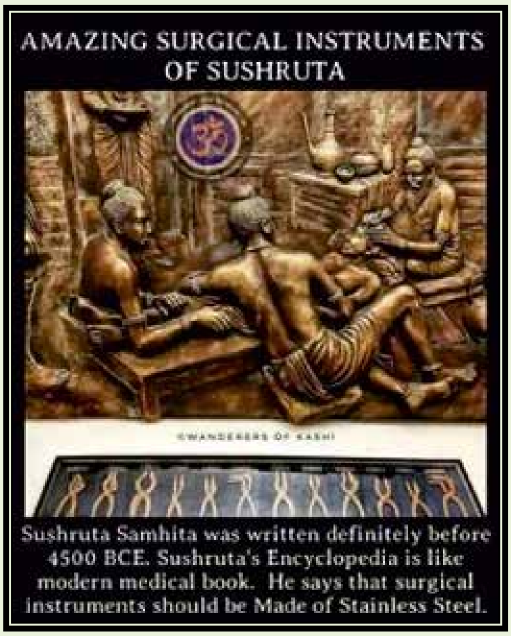

- Sushruta gathered all these learnings, including information about plastic surgery, in **Sushruta Samhita**.
- Many of the practices are prevalent today, such as a <u>nose job or skin grafting</u>.
- He describes the surgery of **rhinoplasty in great detail**, with steps as informative as using the patient's cheek or forehead flap to reconstruct a person's nose.
- Another source from 4th century India discusses the use of plastic surgery in **Ashtanga Hridyans** by the great ancient Indian scholar **Athreya**.

23

CHEMICAL SCIENCES

YOGA: CONNECTION OF MIND AND BODY

24

EDUCATION

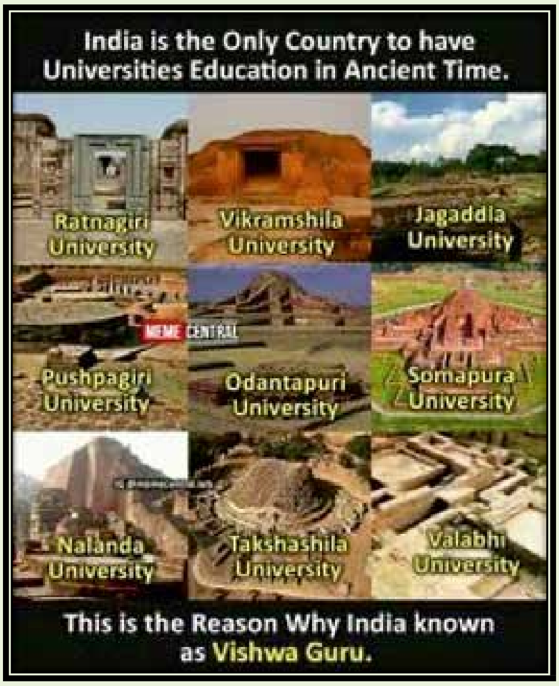

25

PRESERVATION OF INDIAN TRADITIONAL/INDIGENOUS KNOWLEDGE

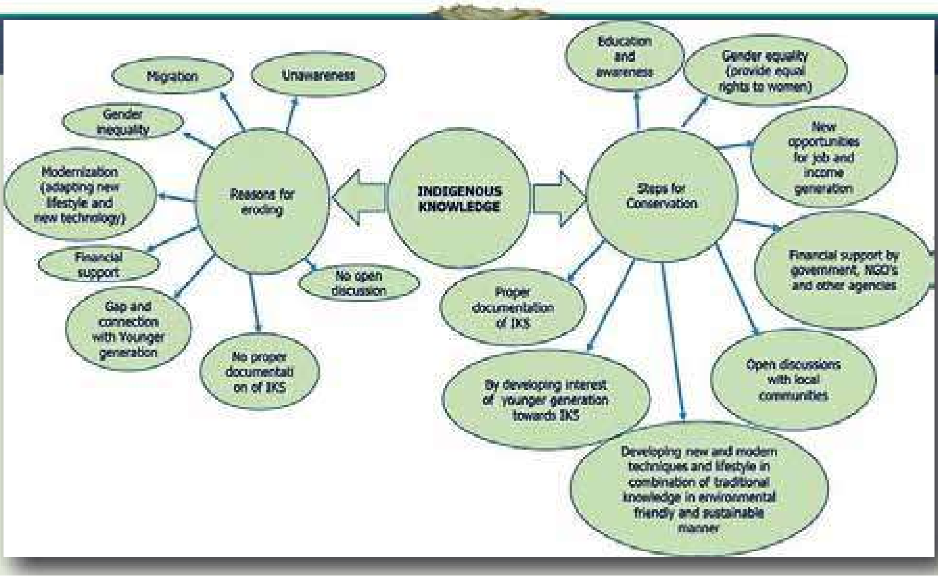

BEST PRACTICES OF TRADITIONAL ECOLOGICAL KNOWLEDGE (TEK) IN NE-INDIA

- Sustainable management of natural resources plays a critical role in poverty alleviation and overall socio-economic development.
- North East (NE) India is blessed as a biodiversity hotspot, being also home to around 150 ethnic tribes with diverse ethical, cultural and traditional beliefs, endorsing the region as a cultural paradise rich in natural resources and traditional ecological knowledge (TEK).
- twelve sustainable development goals (SDGs) ARE IDENTIFIED which are directly correlated to the TEK and practices of NE region.
- TEK and practices that can help in achieving various sustainable development targets of different SDGs in a more comprehensive and eco-friendly manner.
- TEK and practices present in the NE region of the country, such as traditional farming and irrigation systems, sacred groves, and cultural belief systems of different tribes, have been systematically studied and documented for each of the eight states of in NE India.
- Indigenous agricultural systems, watershed management, biodiversity conservation, and ethnomedicinal therapeutic systems in NE India form a vital part of the best practices of traditional knowledge.
- However, rapid urbanization, industrialization, and deforestation warrant an urgent need to systematically collate, document, analyze, and conserve the TEK of the indigenous communities of NE India.

- Natural resources are integral parts of nature's gift that do not require any action of mankind for its production or generation.
- The increasing effect of anthropogenic activities impose immense pressure on limited natural resources indispensable for the survival of all living creatures, including humans on earth.
- In developing countries like India, the extraction rate of natural resources is around 1580 tons/acre, approximately three times higher than the global extraction rate (Ministry of Environment, Forest and Climate Change, 2019).
- The well-known "storehouse of natural resources" for the NE region of India is under threat by unplanned exploitation and the ensuing significant resource scarcity.
- With the emergence of TEK as an efficient and practical tool, the knowledge of the indigenous people has become pivotal for inclusive natural resources management (NRM) through community participation.
- The interrelationship between NRM and TEK of NE plays a significant role in achieving SDGs. 12 identified SDGs such as **"Zero Hunger" (SDG-2), "Good health and wellbeing" (SDG-3), "Gender equality" (SDG5), "Clean water and Sanitation" (SDG-6), "Industry, Innovation and Infrastructure" (SDG-9), "Reduced Inequalities" (SDG-10), "Responsible Consumption and Production" (SDG-12), "Climate Action" (SDG-13), "Life Below Water" (SDG-14), "Life on Land" (SDG-15), "Peace, Justice and Strong Institution" (SDG-16), and "Partnership for the Goals" (SDG-17)** are directly linked to the TEK and practices of NE region.

MANIFESTATIONS OF THE TRADITIONAL ECOLOGICAL KNOWLEDGE WITH RESPECT TO THE NATURAL RESOURCES MANAGEMENT (NRM)

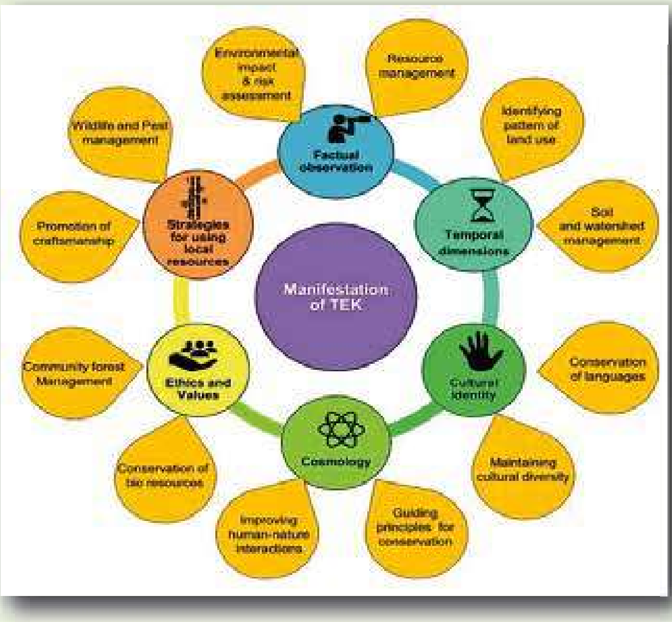

INTERLINKAGES of TKS and SDGs

IMPORTANT TRIBES OF THE NORTH EAST INDIA AND THEIR LIVELIHOODS

Sl. No.	States of NE	Important tribes of the areas	Tribal dominated landscape or geographical region	Major livelihood
1	Assam	Bodo, Mishing, Karbi, Rabha, Dimasa.	Karbi hill, Floodplain of Brahmaputra river valley near the Kaziranga National Park.	Agriculture, Bamboo craftsmen, pig rearing
2	Arunachal Pradesh	Adi, Aka, Apatani, Nyishi, Tagin, Khampti, Bugun, Mishmi, Monpa.	Border area close to Bhutan, Myanmar.	Agriculture, Bamboo craftmen, Weaving, Wetland cultivation
3	Manipur	Aimol, Angami, Chiru, Meiteis, Chothe.	Imphal Valley, river banks and border areas of the state.	Agriculture, Livestock rearing, Weaving, Blacksmith.
4	Meghalaya	Garo, Khasi, Jaintia.	Garo hills, Khasi hills and Jaintia hills.	Jhum Cultivation, Hunting.
5	Mizoram	Lusai, Pawi, Ralte, Hmar.	Southern part of the state, Kolodyne river banks, Border area of the state	Agriculture, Weaving.
6	Nagaland	Angami, Chakhesang, Khiamniungan, Kuki, Konyak, Lotha, Phom, Pochury, Rengma, Sangtam, Zeliang.	Hutton and Mills, In the border areas of the state.	Food Gathering, Shifting Cultivation, Hunting, Wet Cultivation.
7	Sikkim	Lepcha, Bhutia, Kirati, Limbu, Shresthas, Naong, Mon, Chang.	Dzongu Valley, Border areas of Nepal.	Agriculture, Livestock rearing.
8	Tripura	Tripuri, Jamtia, Chakma, Halam, Garo, Chaimal, Bhutia, Lepcha.	Slopes of the hills, Border area close to Bangladesh.	Shifting Cultivation, Agriculture, Pig rearing, Fisheries, Honey collection, Forest Produce selling.

PROMOTING TRIBAL COMMUNITIES AND INDIGENOUS KNOWLEDGE AS POTENTIAL SOLUTIONS FOR THE SUSTAINABLE DEVELOPMENT OF INDIA

Tribal community	Region	Traditional Knowledge/Practice	Related SDG targets	Intervening SDG goals
Water Conservation and Sustainable Water Management				
Mullu Kuruma	Wayanand, Kerala	Panam Keni: cylindrical structures made from wooden stems of toddy palms, located in wetlands where water table is near or above the ground.	6.1 access to safe and affordable drinking water for all 6.5 implement integrated water resources management 6.6 Protect and restore water related ecosystems 6.b Support and strengthen participation of local communities in improving water management	6, 9, 12, 13
Angami	Khonoma/Kwigema village of Nagaland	Cheo-ozihi: diversion of river water through channels using bamboo sticks towards terraces for irrigation.		
Bodo	Assam	Dongs: ponds constructed for storing rain-water used for irrigation.		
Maldhari	Gujarat	Virdas: shallow holes made in dry riverbeds and lakes for collecting freshwater.		
Shompen	Andaman and Nicobar Islands	Jackwells: shallow pits dug at the lower end of a gentle slope in which water is collected using longitudinally cut bamboo stems.		
Soil conservation and Sustainable agriculture				
Chakhesang	Nagaland	Zabo or Ruza used for rain water harvesting and soil management. The system comprises of protected forest land at the top, water harvesting tanks in the middle and paddy fields on the lower levels.	2.3 Double the income of small-scale food producers, women and indigenous people 2.4 Implement resilient agricultural practices that help maintain ecosystems and strengthen capacity for adaptation to climate change and improve land and soil quality 2.5 Maintain genetic diversity of seeds, cultivated plants and their wild species and promote equitable sharing of benefits arising from traditional knowledge 1.5 Build the resilience of the poor and those in vulnerable situations 8.2 Promote decent job creation 8.4 Decouple economic growth from environmental degradation	2, 3, 8, 13, 15
Indigenous farmers of Garhwal	Uttarakhand	Mixed cropping for enhancement of agro-diversity. The method of farming is well adapted to the rain fed regions of higher altitudes.		
Apatani	Ziro valley of Lower Subansiri district of Arunachal Pradesh	Aquaculture combined with rice farming systems. The practice leads to sustainable unification of land, water and farming systems. *Mipya* and *Emo* (indigenous varieties) are majorly cultivated.		
Wancho, Nocte and Tutsa	Arunachal Pradesh	Sustainable agro-ecological management strategies through categorization of land as *sung-mo* (cultivable land) and *chow-mo* (plantation sites). The tribes practice *jhum*/swidden agriculture involving multi-cropping systems.		
Indigenous farmers of Khonoma	Kohima, Nagaland	Alder based agro-forestry systems involving plantation of alder trees in *jhum* cycle leading to nitrogen fixation, moisture retention and biomass enrichment.		
Ho, Santhal, Munda, Oraon and Lohra	Jharkhand	Traditional agriculture practices involving legume based cropping systems, use of locally adapted crop varieties, heap method of composting, use of *karanj* oil for weed control and rain-water harvesting structures (*Doba*)		
Baiga	Dindori, Madhya Pradesh	Well developed system of rainfall prediction through natural indicators. This weather prediction is used to alter the timing and composition of their crops. '*Bewar*' agriculture system which comprises of mixed farming and no tillage is followed		

Tribal community	Region	Traditional Knowledge/Practice	Related SDG targets	Intervening SDG goals
Adi	Arunachal Pradesh	Preparation of Gundruk through natural fermentation process. Can be stored for a long time without refrigeration and is sold as a popular drink in local markets.	2.1 End hunger and ensure access by all in particular poor and vulnerable people to safe, nutritious and sufficient food 2.4 Ensure sustainable food production systems 12.3 Halve per capita global food waste and reduce food losses	1, 2, 3, 12
Ao Naga	Nagaland	Anishi, made by the edible Colocasia leaves.		
Bhotia (Tolchhas, Marchaas, Jadhs)	Uttarakhand	Well developed and preserved medicinal knowledge utilizing plant species for treatment of ailments like fever, headache, eye diseases etc.		
Gujjars, Tharu, Bhoxa	Jammu and Kashmir, Uttarakhand	Treatment of jaundice through 40 medicinal plants belonging to 31families in about 45 different formulations.		
Kani/Kanikaran	Tamil Nadu	Utilization of almost 54 species of plants belonging to 26 families for the treatment of skin disorders, cough, diarrhoea, rabies, tooth diseases, poison bites etc.		
Kurichya, Pariyar, Khasi, Jatin, Garo	Meghalaya, Manipur, Assam	Conservation of indigenous cultivars of rice (Pattambi, Champara, Valsana).		
Forest Management and Biodiversity Conservation				
Angami Naga	Khonoma, Nagaland	Khonoma Nature Conservation and Tragopan Sanctuary. The reserve is the result of local initiatives to preserve the Blyth's Tragopan, a flagship species along with the surrounding ecosystem.	15.1 Ensure conservation, restoration and sustainable use of terrestrial ecosystems and their services 15.2 Promote sustainable management of all types of forests 15.4 Ensure conservation of mountain ecosystem and its biodiversity 15.6 Promote fair and equitable sharing of benefits arising from use of genetic resources 15.9 Integrate ecosystem and biodiversity values into national and local planning	15, 13
Kaani/Kanikkar	Kanyakumari, Tamil Nadu	Forest conservation and sustainable resource utilization in the Kanyakumari Reserved Forests based on traditional practices and local knowledge.		
War Khasi	Meghalaya	Community forest management based on traditional ecological knowledge. The tribe segregates the forests into seven different categories (Law Raid, Law Shnong, Law Adong etc) based on management type and purpose.		
Maldharis	Gujarat	Conservation and protection of the Banni breed of buffalo as well as the Banni grasslands on which these animals graze.		
Gujjars and Bakarwals, Gaddis	Jammu and Kashmir, Himachal Pradesh	Climate adaptation through transhumance which involves seasonal movement of people with livestock between summer and winter pastures.		
Sustainable Livelihood and Infrastructure				
Gujjar community	Jammu and Kashmir	Houses are constructed using locally available building material, primarily mud and stone with animal dung used as plaster.	12.2 Sustainable management and efficient use of natural resources 12.5 Reduce waste generation through recycling and reuse 11.3 Integrated and sustainable human settlement	12, 11, 13
Toda, pastoral community	Niligiri Plateau region of Karnataka and Tamil Nadu	Traditional hamlets called munds built from locally procured material. The munds generally consist of three to seven thatched houses constructed in the shape of half barrel.		
Bakarwal and Gujjar	Jammu and Kashmir	The tribes use acrylic yarn for embroidery on old woollen blankets and convert them to handmade rugs.		

TRADITIONAL KNOWLEDGE AND PRACTICES OF NORTH EAST INDIA

DIFFERENT ECOSYSTEM APPROACHES FOR NRM IN NORTH EAST INDIA

Sl. No.	Name of the approaches	Tribe/ State	Approaches for NRM	Scale of applications	Framework
1.	Wet Rice Cultivation	Apatani/Arunachal Pradesh	Land use management, Soil Conservation, Watershed Management.	Local	Based on the climate, area topography, traditional belief/Inspires co-cultivation method for paddy and fish production.
2.	Terrace Cultivation	Khasi & Jaintia/Meghalaya	Soil Conservation, Biodiversity Conservation, Land use management.	Regional	Acquired or developed knowledge about local ecosystem and climate/ Inspires cultivation methods in hilly slopes.
3.	Alder based Farming System	Angami, Chekhang, Yimchunger, Chang, and Konyak/Nagaland	Soil Conservation	Local	Organic farming method based on local knowledge/Inspires tree-based farming system at higher altitude.
4.	Bamboo drip irrigation	Jaintia & Khasi/Meghalaya	Watershed management, Forest Conservation.	Regional	Based on the area topography and available forest products/Inspires irrigation system at higher altitude.
5.	Dong System	Bodo/Assam	Watershed Management, Water harvesting	Regional (Assam & West Bengal)	Based on the area topography & community participation/Inspires water storage and use method during dry period.
6.	Sacred groves	Bodo & Rabha/Assam, Bhutia and Nepalis/Sikkim, Meiti/ Manipur, and many more	Wildlife conservation, Biodiversity Conservation, Forest Conservation.	Global	Inheritance belief system / acquired or developed belief system/ Inspires biodiversity conservations.
7.	Bamboo cultivation and conservation	Meiti/Manipur, Jaintia & Khasi/ Meghalaya, Chinlampianga/ Mizoram and others	Forest Conservation, Soil Conservation.	Regional	Wide availability, Fast cultivation process/ Inspires utilization of local products.

9	Livestock panning and fallowing	Farmer used panning of cow, sheep, goat and fallowing the field at the end of winter to improve fertility of the field for the next crop	Aheer and Gadaria	Madhya Pradesh and Uttar Pradesh
10	Utera cropping system	Under rainfed agro-ecosystem, the next crop is sowing before harvesting to utilize the soil moisture of the previous crop	Baiga tribes	Madhya Pradesh
11	Alder-based farming system in Jhum cultivation	Alder (*Alnus nepalensis*) is cultivated in jhum cultivation, a legume tree that fixes atmospheric nitrogen for nutrients and leaf litter to retain the soil moisture	Indigenous tribes, Angami, Chukhesang, Chang, Yimchunger and Konyak	Nagaland
12	Farming below the sea level	In this process, a series of buds has been created to regulate the flooding and salinity in agriculture by the use of biobuds such as coconut tree, banana waste, bamboo, coir and clay	Kuttanad Farmer of costal area	Kerala
13	Kaipad (rice–fish farming)	Rice cultivation is performed from April to October and prawn/fish farming from November to April	Farmers of coastal area	Kerala
14	Pannendu Pantalu	It is known as 12-crop system, in which millets, pulses, oil crop and various vegetables are grown on the single piece of land	Most of the farmers	Andhra Pradesh
15	Homesteads (Kyaroo)	A number of tree species is growing for fuel, fodder and timber along with livestock, poultry and fish to satisfying the basic need of the farmer	Most of the farmers	Himachal Pradesh and Jammu and Kashmir
16	Zabo System	Zabo means impounding of water, mostly practised by the Chakhesang tribe of Nagaland up to 100% slope, which is a combination of forest, agriculture, animal husbandry and pisciculture	Chakhesang tribe	Nagaland
17	Sanda practice (double transplanting)	It is an excellent practice for water management in rainfed condition in which rice nursery is transplanted two times in a cropping season	Local farmers	Uttar Pradesh

35

DIFFERENT TRADITIONAL (ORGANIC) AGRICULTURAL PRACTICES PERFORMED IN INDIA

S. no	Traditional agricultural practices	Characteristic features	Performing community	State
1	Forest gardening	Selection of superior species which incorporated in home garden	Mostly forest tribal	Almost entire India
2	Rice fish culture	The Apatanis tribes practise aquaculture along with rice farming in their lower plots	Apatanis tribes	Arunachal Pradesh
3	Aquaforestry	Cultivating fish and prawn in saline water and growing coconut and other trees on bunds of ponds	Most of the coastal population	Coastal areas of Andhra Pradesh
4	Shifting cultivation	Burning the forest land for release of nutrients that support production for several years in the cultivation of annual as well as perennial crops	Nishis, Karbis, Kacharis	Northeast India
5	Kanabandi	Farmers build barrier by using pieces of small dead wood or local vegetation to check wind velocity within safer limits	Most of the local farmers of arid region	Rajasthan
6	Terraces or bun cultivation	It is a slope and valley type cultivation which useful for improving crop production and retaining moisture for soil conservation	Khasis, Jaintias and Garos	Meghalaya
7	Badi cropping system	It is similar to home gardening practice which is mainly used by tribal for the maintenance of soil fertility	Baiga tribes	Madhya Pradesh
8	Live bunding/ vegetative bunding	Bushes of subabul, shevri and grasses like vetiveria are planted between the bunds of field across the slope for soil conservation against the water erosion	Most of the local farmers	Uttar Pradesh

(Continued…)

36

TRADITIONAL FARMING SYSTEMS

Manifestation of TEK	Shifting Cultivation (Jhum Cultivation)	Wet rice Cultivation (Aji Cultivation)	Zabo farming system	Terrace Cultivation in Meghalaya (Bun Cultivation)	Alder based Agroforestry system	Rotatory cowshed based agroforestry system
Factual Observation	Controlled fire before cultivation process help to remove the invasive plant species and regulate the population of plant and animal parasites.	The nutrients are usually washout from the hills and stored in the flat land which also reduce the requirement of fertilizer.	The preservation of forest causes high rainfall.	These agricultural practices are effective in hilly slope with highly rainfed climatic condition.	Alder trees can successfully restore soil fertility by nitrogen fixation.	In situ collection of urine, litter, cow dung and other animal waste increases the soil fertility.
Management Systems	Various crop and pest management system such as mixed cropping, green manuring etc. successfully reduce the pest population in sustainable manner.	Recycling of agricultural by products and utilization of organic waste of villagers help to restore soil fertility for long period of time.	Strategies designed to transfer water from top hill area to the lower part of the hill. Water harvesting tanks are designed in the middle part to store water.	Several strategies such as terrace formation inside the plantation forest, removal of excess water from agricultural field are important for sustainable agriculture.	Co cultivation of agricultural crops with Alder tree helps to regain the soil fertility without any external input.	Various strategies such as formation of temporary cattle shed throughout the field before cultivation help in fertility management.
Past and current use of environment	Grass understory of the area was maintained by low intensity fire in the past.	Prior knowledge about land topography and nutrient distribution in soil help to choose the appropriate rice variety.	Prior knowledge about land topography and soil quality help us develop the channel and tanks.	Long history of resource utilization is present.	Past knowledge about alder trees and surrounding environment helps to develop this agroforestry system.	Prior knowledge about the nutrient potential of animal waste is present.
Ethics and Values	Ethnic groups of Northeast India considered forest, plant and animal as sacred and worshiped them.	They put human labors for the agricultural system and does not use any animal for the farming practices.	The farming system does not require chemical fertilizer. The farmers also live simple lifestyle which helps in natural resource conservation.	The farmers followed this farming system worship nature and try to conserve ecological balances of nature.	These agroforestry systems help in environment protection and ecological equilibrium maintenance.	The farmers also live simple lifestyle which helps in natural resource conservation.
Cultural Identity	Traditional people possess a strong connection with forest.	Bamboo is socially selected by the Apatani tribes as a keystone species which is use around the agricultural plot.	Traditional people possess a strong connection with forest.	Traditional farmers of Jaintia and Khasi hills followed this settled agriculture.	Traditional people possess a strong connection with forest and uses.	Traditional possess a strong connection with forest and animals.
Cosmology	The fertile land selection and allocation to the societies are based on cultural belief and decided by the village headman.	According to the cosmology of Apatani tribe, they isolated themselves in the valley and feel protected from other rivalrous tribes and outsiders.	Biophysical interaction and human intervention help to determine the conservation of natural resources.	Biophysical interaction and human intervention help to determine the conservation of natural resources.	Biophysical interaction and human intervention help to determine the conservation of natural resources.	The farmers believe in animism.

DIFFERENT TYPES OF SACRED FOREST/SACRED GROVES IN NORTH EAST INDIA

Sl. No.	States of NE	Local name of the sacred forest/ sacred grove	Districts covered by the Sacred groves	Plant species
1	Arunachal Pradesh	*Gumpa Forest*	Tawang, West Kameng, Lohit, Papumpare, Siang, Lower Subansari	*Terminalia chebula, Ficus benghalensis, Saraca asoca, Aegle marmelos, Ficus religiosa, Smutsia gigantea, Scolopus aquaticus, Nycticebus bengalensis, Hoolock leuconedys*
2	Assam	*Than, Madaico*	Karbi Analog, Halflong	*Dendrocalamus giganteus, Musa velutina, Smilax zeylanica, Areca catechu, Ehretia acuminata, Abroma augustum*
3	Manipur	*Umanglai*	Tamenglong,	*Alibizia lebbeck, Ficus racemosa, Cassia fistula, Cedrella toona, Cettiscinua menum, Erythrina sp., Xylosma longifolia, Ficus sp.*
4	Meghalaya	*Mayokpha, Ngawpui,*	East Khasi hills,	*Taxus baccata, Rhus chinensis, Castanea pumila,* and *Quercus glauc*
5	Mizoram	*Recreation forest managed by Val Upa (Young Mizo association)*	Mamit	*(Data not available)*
6	Nagaland	*Wan*	Mon	*(Data not available)*
7	Sikkim	*Gumpa, Devithan*	North Sikkim,Gangtok, Yuksom, Kishangonj	*Terminalia chebula, Ficus benghalensis, Saraca asoca,*
8	Tripura	*Darlong sacred groves (Khawbiak)*	Unakoti	*Dipterocarpus turbinatus, Artocarpus Roxb, Begonia surculigera,*

TRADITIONAL HEALTHCARE PRACTICES, WEATHER FORECASTING SYSTEM AND SACRED GROVES /SACRED ANIMALS

Manifestation of TEK	Sacred groves and Sacred Animal	Traditional Health Care Practices	Traditional weather forecasting System
Factual Observation	Some plant and animal species become endangered with time but are highly required to maintain the ecological balance. Conservation of such species helps to balance the ecosystem.	Knowledge about identification, classification, and utilization of various species help to innovate new medicinal drug molecule.	Traditional indicators help to inform the upcoming climate conditions. They also aware us about the upcoming natural disasters. The conservation of such traditional indicator will help in weather forecasting.
Management Systems	Various strategies such as prohibiting human intervention in sacred groves, protecting animals from hunting during mating season are considered very important for biodiversity conservation.	Various strategies related to traditional treatment processes such plant-based medicine formulation help to innovate new medicinal drugs.	Follow the traditional indicators for weather forecasting is great strategies for future.
Past and current use of environment	Long history of resource utilization and conservation is present.	Long history of resource utilization is present.	Long-term knowledge about the behavior of plant and animals in different condition are help to forecast the weather.
Ethics and Values	Ethnic groups of Northeast India considered forest, plant and animal as sacred and worshiped them. They lead simple life and thus help in conservation of landscapes.	They use medicinal plants just to cure the diseases.	No ethical value is associated with it.
Cultural Identity	Traditional people possess a strong connection with forest.	Traditional people possess a strong connection with forest.	Traditional people possess a strong connection with nature.
Cosmology	Biophysical interaction and human intervention help to determine the conservation of natural resources.	Interaction between human and nature help to maintain the ecological balance.	Ethnic group of northeast India worshiped nature.

BEST PRACTICES OF TRADITIONAL KNOWLEDGE SYSTEM IN NEHU

IDEATION ROOMS FOR FOSTERING INNOVATIVE IDEAS

During the process, brainstorming, problem solving, strategic thinking, whiteboarding and annotating happen.

ONE IDEA CAN CHANGE LIVES

IDEATION MATERIAL

- White marker boards
- Paper
- Sticky notes (as large as possible, a range of colours, five different types)
- Markers (whiteboard markers, permanent markers, many different colours)

Innovative ideas
- Students come and write their ideas
- Brainstorming of ideas

Ideation challenge
- Ideas presented before screening committee
- Evaluation

Incubate and Idea hackathon
- Shortlisted ideas participate the idea hackathon
- Prototype developed and submitted to MSME

Implementation
- Seed grant for start-ups
- Incubation Centre and Bio-nest programmes get involved

An '**Idea Presentation Seminar**' is continuously organised jointly by NEHU Unit for Ministry of MSME, Govt of India, and BIRAC Bio NEST Bioincubator (B3I) Facility, NEHU to incubate potent and innovative ideas

41

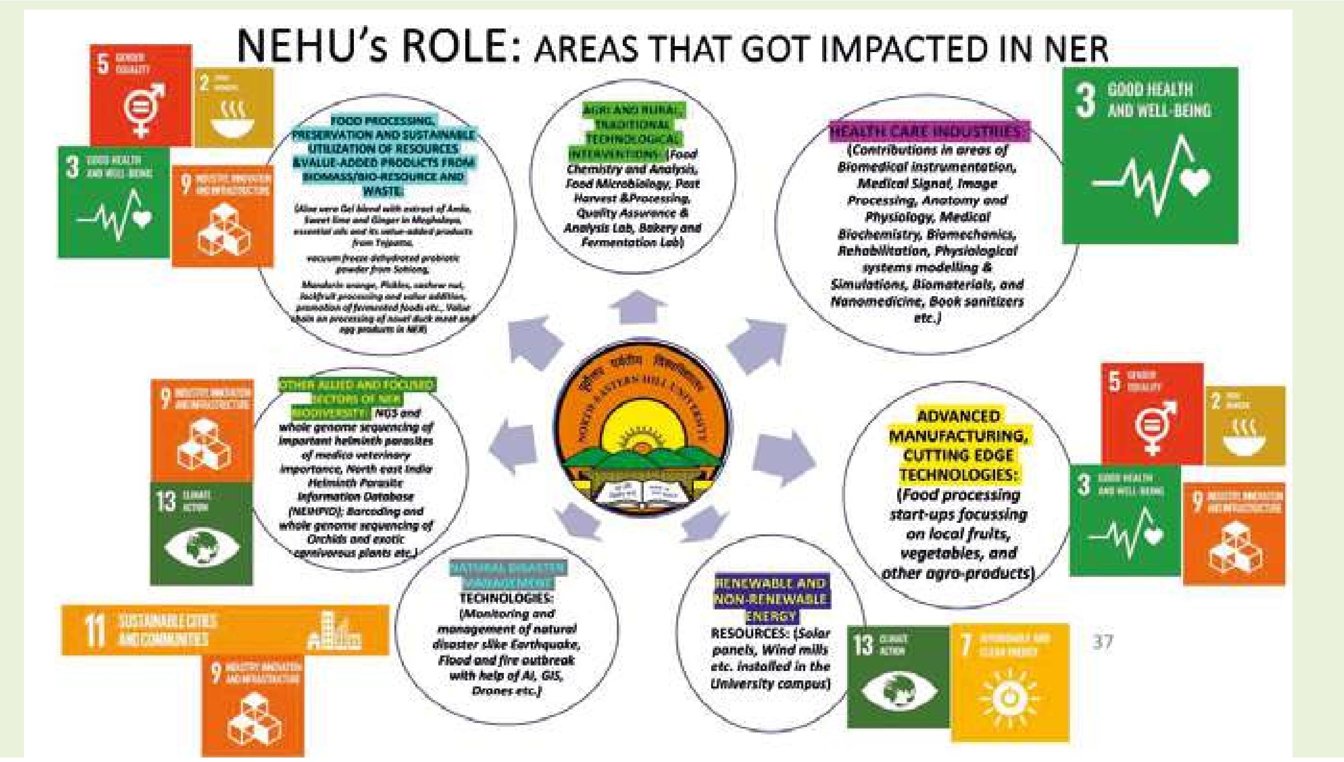

CASE STUDY –I: BIO NEST BIOINCUBATOR CENTRE

The first **Bio NEST Bioincubator Centre** of Garo Hills, Meghalaya funded by BIRAC, DBT, Govt. of India was launched on 6th October, 2021 at North-Eastern Hill University (NEHU), Tura Campus to support innovations and promote entrepreneurship in the field of agriculture, food and nutrition utilizing the natural indigenous resources of NER.

CASE STUDY –2: FIELD DEMONSTRATION UNIT OF BIOTECH KISAN HUB, NORTH-EASTERN HILL UNIVERSITY, TURA CAMPUS

- **The Field Demonstration Unit houses**
- **Mushroom growing unit,**
- **low cost shade net crop growing unit,**
- **composting unit, nursery unit,**
- **open field cultivation unit, stevia cultivation unit etc.**
- **Major high value vegetable crops taken in the demonstration unit - Naga Chilli, Capsicum, Tomato etc.**

44

CASE STUDY 3: NEHU, TURA CAMPUS ADOPTS VILLAGES

Village Adoption Programme of the **"Honey Village"** and **Bee Keeping Input Distribution** at **Gambegre C&RD Block, West Garo Hills, Meghalaya by NEHU, Tura Campus.**

Program conducted by **Incubation Centre, NEHU, Tura campus** and for villagers cum bee farmers who produce one of the finest honey in **DCIC, Tura** the world.

(*sponsored by ICAR-National Institute of Biotic Stress Management (NIBSM), Raipur*).

CASE STUDY –4:
TRIBAL HANDAMDE CRAFTS

NORTHEAST WOOD PRODUCTS

46

CASE STUDY 5:

STRATEGIES AND APPROACHES FOR ENHANCING CONSERVATION OF COMMUNITY FORESTS IN KHASI HILLS, OF MEGHALAYA: DEVELOPING COMMUNITY FOREST NETWORKS

Known as 'Nature's Museum', this forest is one of the oldest and most famous sacred groves of Meghalaya, harbouring a diversity of flowering and medicinal plants, trees, mushrooms, birds and insects.

CASE STUDY- 6 LIVING ROOT BRIDGE 'MOVING' TO CITY

NATURAL ROOT BRIDGE

@NEHU

The living root bridges are one of Meghalaya's most beautiful tangible heritage sites. These sites have recently been added to the tentative UNESCO world heritage site list.

TRADITIONAL TECHNOLOGY: naturally built bridges mainly built by firstly planting two rubber trees of the *Ficus elastica* on either side of a river. These trees usually take about a decade to grow and generate secondary aerial roots. These roots can then be weaved to construct sturdy structures and then form enormous roots for reinforcement. Next, the local bridge builders of the region would then direct the roots of the bridge by weaving a bamboo scaffolding. This scaffolding is used to gently push the aerial roots across the river until they are planted on the opposite side after being weaved onto it.

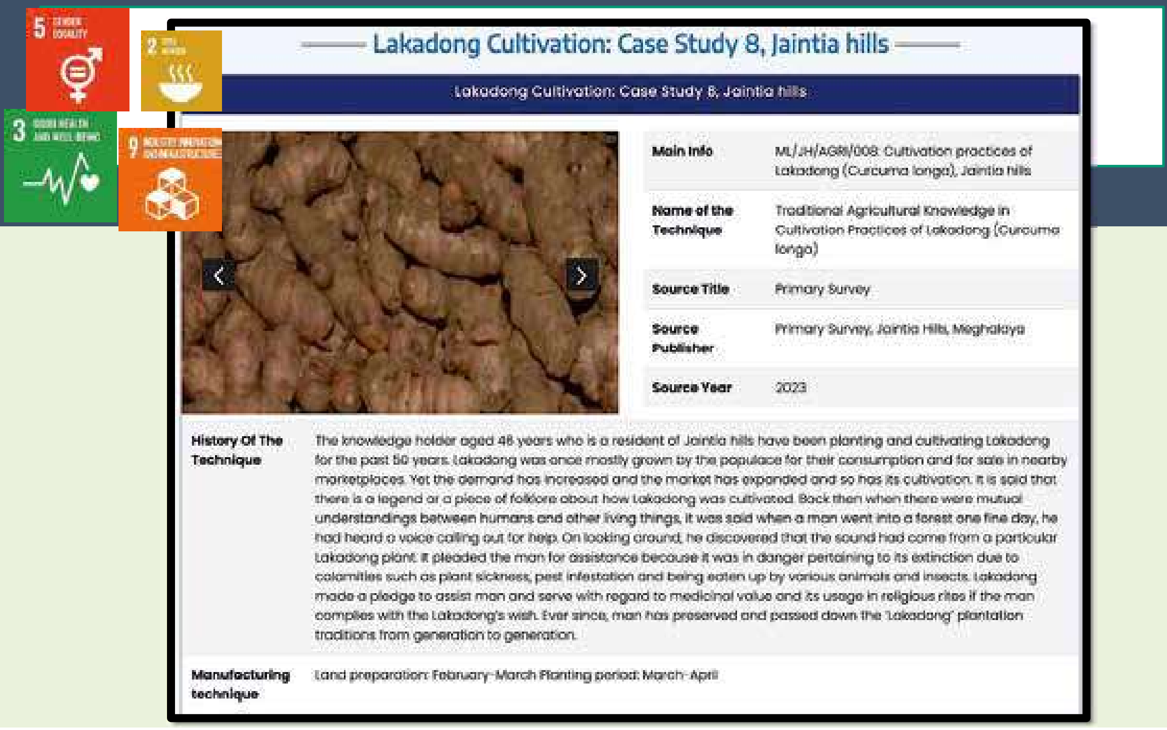

CONCLUSION

- **Improvement in digital documentation of TKS and practices** by developing app-based approaches for more effortless and rapid promotion.
- **Development of a regional database for different SDGs and targets for optimum and sustainable socioecological benefits.**
- Generation of **GI and IPR** to be based on applications of TKS and practices and customized by the Indian scientific fraternity.
- Empowerment of indigenous communities by focused dissemination and implementation of the various government initiatives like **Vocal for local, Skill India and Atmanirbhar Bharat**.
- Field-based training **High-quality knowledge management and capacity building through scientific-communities** and capacity building of educational institutions, government and non-government agencies and local groups.
- Achievement of sustainability through **TKS and practices in NE India based on localization of SDGs.**
- Establishment of participatory networks involving different stakeholders along **with local, regional and sectoral development.**
- **INTEGRATING THESE TKS IN REGIONAL LANGUAGES.**

Interventions by Speakers and Deendayal Research Institute volunteers on What We Learn

Rajendra Singh, Samaj Shilpi Dampati In-Charge spoke on 'Bal Sanskar'

नानाजी के सानिध्य में 14 साल तक हम लोगों ने काम किया। जब हम नानाजी से पूछते थे कि बच्चों के बीच में कैसे काम किया जाये, तो नानाजी ने कहा कि जहाँ बच्चे खेल रहे हैं वहाँ जाओ और उनके साथ खेलो, उनके साथ समरस हो जाओ, बच्चे अपने आप आपके पास आयेंगे। उस समय ना तो कोई एक्शन प्लान था और ना ही योजना की शुरुआत हुई थी, तो हम लोगों ने वही किया। एक वनवासी गाँव भरगवा में हम लोगों ने काम शुरू किया। और ठीक वही किया जो नानाजी ने कहा। हम लोग सफल हुए, हम उनके बीच में खेलते थे, वो बच्चे हमारे पास आने लगे 5, 10, 15, 20, 25 और एक समय ऐसा आया कि 60 से 75 बच्चे हमारे पास आते थे। आज वो बच्चे बड़े बड़े हो गये हैं। कुछ ने नौकरियाँ पा ली हैं, कुछ व्यवसाय कर रहे हैं, कुछ गाँव में सरपंच हो गये, पर आज जब हम जाते हैं तो जो

सम्मान मिलता है तो लगता है कि हमें बहुत कुछ मिला। जब मैंने नानाजी से पूछा कि नानाजी आप 2000 रु. दे रहे हैं, इसमें क्या होगा? हमारे परिवार का भरण पोषण कैसे होगा? नानाजी ने कहा उसकी चिंता मत करो, तुम आ जाओ, हम लोगों ने चिंता नहीं की और आ गये, सब कुछ ठीक चला है बाल संस्कार की जरूरत क्यों है? सभी लोगों ने बताया कि बाल संस्कार विहीन शिक्षा जो है वो मानव को पशुवत बनाती है, इसलिये शिक्षा के साथ साथ संस्कार भी जरूरी है, और इसी सोच के साथ बाल संस्कार वहीं से शुरू हुआ। हमारे सभी समाज शिल्पी दंपत्ति बाल संस्कार केंद्र चलाते हैं। उसका मुख्य उद्देश्य है, जैसा नानाजी कहते थे कि व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र ये सब अगर समरस नहीं होंगे, इनके बीच में तदात्म्य नहीं होगा, तो हम कुछ भी काम नहीं कर पायेंगे। और ये होगा बच्चों के माध्यम से बच्चे आगे बढ़ेंगे, तरुण बनेंगे, वही राष्ट्र की इकाई बनेंगे इसलिये उनको संस्कारित करना बहुत ज़रूरी है। तो इसलिये बच्चों को राष्ट्र के प्रति उनके दायित्व को निर्वहन से प्रेरित करना, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उनका कर्तव्य बोध जगाना, इसके लिये बाल संस्कार केंद्र चलाया जाता है। बाल संस्कार में बच्चे गाँव के इतिहास से, गाँवों के वातावरण से, अपनी परंपराओं से, अपने सामाजिक दायित्व बोध से, अपने पारिवारिक दायित्व बोध से परिचित हों, इसके लिये बाल संस्कार का कार्यक्रम किया जाता है, प्रतिदिन एक घंटे का यह कार्यक्रम होता है।

अब बच्चे चूंकि सुबह उठते हैं तो उनको अपने ईश्वर पर निष्ठा हो, उसके लिये सबसे पहले उनको प्रार्थना करायी जाती है। प्रार्थना में प्रातः स्मरण है 'कराग्रे वसते लक्ष्मी' ये होती है। कैसे करना है, ये उनको बताया जाता है। एकात्मता स्त्रोत कराया जाता है। इसके माध्यम से बच्चे अपने इतिहास हो, अपने वैज्ञानिकों, अपनी नदियों, अपने पर्वतों, अपने वीरांगनाओं, अपने तीज त्यौहार और सभी धार्मिक स्थान इन सभी से परिचित होते हैं। बाल संस्कार में गायत्री मंत्र का तीन बार उच्चारण भी कराते हैं। नीति के दोहे के माध्यम से हम लोग उनको नीतियों की बातें सिखाते हैं। जैसा कि अभी आदरणीय गोपाल भाई जी ने कहा कि गीत और कहानियों के माध्यम से बच्चे खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीखते हैं। तो इन सभी बातों का समावेश हम करते हैं। सुभाषित, अमृत वचन, ब्रह्मनाद, ओम का तीन बार उच्चारण उसके बाद वो अपने देश के महीने, वर्ष, तिथियों से परिचित हो उसके लिये दिन विशेष का पंचांग बच्चों के द्वारा ही कराया जाता है। साथ ही प्रेरक गीत, भजन, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक कहानिया आदि का अभ्यास कराया जाता है।

अधिकांशतः तो ये बच्चे ही बच्चों को बताते हैं। बच्चों की आपस में चर्चाएं भी होती हैं उनको एक विषय दिया जाता है, दूसरे दिन वो विषय तैयार करके आते हैं, उसमें गाँव के एक प्रबुद्ध व्यक्ति को भी आमंत्रित किया जाता है। उनके माध्यम से यह कार्यक्रम होता है। उसके लिये योग, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, श्रम साधना इसका भी समय भी लिखा है। कल्याण मंत्र, सर्वे भवन्तु सुखिनः के साथ बाल संस्कार का कार्यक्रम समाप्त होता है।

कुछ साप्ताहिक कार्यक्रम भी हम लोग करते हैं जिसमें बालसभा और गाँव का प्रबुद्ध व्यक्ति वो आके सप्ताह में एक बार बच्चों को उद्बोधन देता है। कुछ मासिक गतिविधियां भी हम लोग करते हैं जिसमें स्थानीय बैंक, डाकघर, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल जो आसपास की 5-10 किलोमीटर के उसका भी

कार्यक्रम हम लोग सप्ताह में एक बार करते हैं। कुछ अन्य कार्यक्रम भी करते हैं जैसे सहभोज एवं श्रद्धा पर्व, श्रद्धा पर्व के माध्यम से बच्चों को अपने परिवार के बुजुर्गों के प्रति सम्मान करना सिखाया जाता है।

वृक्षारोपण का भी कार्यक्रम होता है। सामूहिक सहयोग से साफ़-सफाई का और सायंकालीन प्रार्थना होती है। बच्चे संस्कारित होते हैं और जहाँ पर ये कार्यक्रम होता है, उन गांवों में आप स्वयं प्रत्यक्ष जाकर देख सकते हैं कि बड़ा परिवर्तन आया है। धन्यवाद।

Vaidya Vishnu Dutt Shukla from Shahpur Village, Majhgawan, Satna is a traditional vaid who learnt from a village vaid and in passing his knowledge on to his apprentices.

श्रद्धेय नानाजी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय को नमन करते हुए सभी लोगों को राम-राम।

मेरा नाम विष्णु दत्त शुक्ला है। ग्राम पंचायत शाहपुर के मजरा ग्राम गहिरा का रहने वाला हूं। आज से 15 वर्ष से मैं दादी मां का बटुआ चला रहा हूँ और उसके साथ में स्थानीय जड़ी बूटियों के द्वारा दादी मां का बटुआ का संचालन कर रहा हूँ। सब कुछ बहुत अच्छे प्रकार से चल रहा है। और इससे स्थानीय निवासियों को अच्छा लाभ मिल रहा है।

इसके साथ ही हम स्थानीय दो चार लोगों को दादी मां का बटुआ और स्थानीय जड़ी बूटियों के प्रति जागरूक कर रहे हैं और उनको सिखा भी रहे हैं, ताकि पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान आगे बढ़ता रहे, क्योंकि यदि यह सारा ज्ञान हम लेकर के चले गये तो उस ज्ञान का कोई अर्थ नहीं। उसकी विधि-विधान, जड़ी-बूटी उसका लोप हो जाता है। प्रकृति में जड़ी हमारे अगल-बगल होती है, पर हमको पता नहीं चलता अतः उसका ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS
25th-27th February 2024
SESSION IV
JOINT CLOSING FOR OUTCOMES
Moderators:
Vasant Pandit &
Dr. Seshadri Chari
DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, CHITRAKOOT

Closing Session Insights and comments for the Outcome Document

Shri Amitabh Vashistha's Initial remarks

25 फरवरी से श्रद्धेय नानाजी की 14वीं पुण्यतिथि के अवसर पर जो विचार श्रृंखला शुरू हुई, जिसके तहत इन तीन दिनों में लगभग 9 कार्यशालायें विभिन्न विषयों के ऊपर आयोजित हुईं। ये सत्र मुख्य रूप से SDG को ध्यान में रख के एक conclusion के रूप में है और कल इस पूरी कांफ्रेंस का सार संक्षेप वसंत पंडित जी देंगे। कल का उद्घाटन सत्र इतना उपयोगी रहा, श्रोता भी इतना आनंदित हुए। वो सत्र अपने समय से दोगुना चला। लग ही नहीं रहा था कि इसे विराम दिया जाये। आज भी लगभग इसी तरह की स्थितियां पैदा हुई। जो हम लोगों के तीन-तीन सत्र आयोजित हुई, ज़ीरो हंगर और क्वालिटी एजुकेशन के ऊपर। मेरे जिम्मे quality Education था, जहाँ मैं Modenator था। पहले दिन जो तीन सत्र रहे, Where we learn फर्स्ट सेशन था, दूसरा सेशन How we learn और तीसरा What we learn. बड़े विद्वान लोग अपने साथ में थे जिन्हें सुनना इतना ज्ञानवर्धक था कि लग ही नहीं रहा था कि सत्र खत्म किया जाये। पहले सत्र में आदरणीय शेषाद्रीचारी जी ने आरंभिक विचार रखे फिर श्री प्रियंक कानूनगो ने रिलिजियस इंस्टीट्यूशंस की शिक्षा में क्या भूमिका है? उस विषय को रखा। दोनों पक्ष रखे, नकारात्मक भी और सकारात्मक भी। और किस तरह से बाल संरक्षण आयोग उस पर काम कर रहा है वह भी उन्होंने बताया। आचार्य संजीव शर्मा साबरमती गुरुकुल अहमदाबाद से आये हैं, वहाँ पर बहुत लंबे समय से वैकल्पिक शिक्षा पद्धति पर काम किया जा रहा है। वे खुद 35 वर्ष के अनुभवी हैं उन्होंने भी एक पर्सपेक्टिव रखा। पर उनका जो ज्ञान अनुभव था कि उनको Where we learn पर कहा गया था, Where we learn के साथ-साथ उन्होंने How we learn and what

we learn पर भी अपनी बात रखी। दूसरा हमारे मॉडरेटर थे प्रोफेसर आर. सुदर्शन जी बहुत मूर्धन्य विद्वान हैं। प्रोफेसर आशीष पांडे जी आई.आई.टी. रुड़की से पधारे हैं, उन्होंने स्किल पर जोर दिया। और आज के जो सत्र हमारे आयोजित हुए उसमें यह भी फोकस रखा गया था कि किस तरह से शिक्षित किया जाये। विष्णु दत्त शुक्ला जी पधारे थे उन्होंने बताया कि किस तरह से उन्होंने परंपराओं के माध्यम से ही सीखा और आगे भी उन परंपराओं को लेकर जा रहे हैं तथा नए लोगों को सिखा रहे हैं। आदरणीय रवि दत्त पाठक जी, यहाँ बांदा क्षेत्र में वाटर यूनिवर्सिटी बन रही है, उसके कुलपति हैं, बहुत मूर्धन्य विद्वान हैं, आईआईटी के पढ़े हैं और विदेश में लंबा समय बिताया है, उन्होंने 'Becoming Human is all about the Education' यानि कि शिक्षा में मानवीयता की भावना परिलक्षित हो, इस विषय पर उन्होंने बात रखी। Understanding Disparity इस विषय पर प्रेजेंटेशन श्रीमान तेजेंद्र सिंह संधू जी ने किया। अंतिम सत्र जो आज का था उसके मॉडरेटर कम स्पीकर, अपने प्रोफेसर प्रभा शंकर शुक्ला जी नॉर्थ ईस्ट यूनिवर्सिटी से वाइस चांसलर है। चित्रकूट की धरा से उनका बहुत पुराना नाता है। उन्होंने उत्तर पूर्व में शिक्षकों की prespective रखा। प्रोफेसर भरत मिश्रा जी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति ने 'Role of Universities in Education' का विषय रखा। तो इस तरह से कल यह विमर्श हुए। और इसमें बड़ा अच्छा वक्तव्य वर्ल्ड बैंक के सलाहकार श्रीमान विष्णु दरबारी जी ने 'रोल ऑफ यूनिवर्सिटीज इन एजुकेशन फॉर ऑल' पर रखा। तो इस तरह से गुणवत्तायुक्त शिक्षा के विमर्श संपन्न हुये।

Vasant Pandit added:

आज हम लोगों ने चर्चा किया SDG 02 और SDG 04 अर्थात् कोई भूखा ना रहे और अच्छी शिक्षा (क्वालिटी एजुकेशन)। तो यह दोनों जो विषय पर कल और आज जो विमर्श हुआ। उसे हम लोग जोड़ लेंगे और आगे कैसे ले जायेंगे तो इस पर जब कल हम लोग का समय खत्म होगा तो हम 10-15 मिनट के लिये हम फ्लोर ओपन करेंगे वहाँ आप लोगों में से किसी के पास कुछ सुझाव है, उन्हें हमें दें। यह अपना पैनल है सब वॉइस चांसलर्स और डीन बैठे हैं उनके साथ मिलकर हम सभी सुझावों को डिजिटल करके कल के सत्र में आउटकम के रूप में प्रजेंट करेंगे।

Dr. Naresh Singh's insights

I think what I take from the life society, the first important point is that it is not about managing the environment, it is about managing ourselves as humans. So that point I think needs to be made very clear. And the life vision, the Prime Minister has

articulated, that we need to shift from mindless utilization and consumption of resources to a mindful way of both growing, consuming and reducing waste. So that's the first big point I would make. Then what do we take away from there and linking that to the points that I made during my own presentation, I think that leads us to begin to consider our own true nature as humans, i.e. our spiritual nature, and what does that mean, for a prosperous and sustainable society going forward. The implication is clear, that we cannot continue to measure progress by mere materialistic and economistic methods, but the criteria we use, the incentives we use, will need to shift to a basis that has a recognition of moral values, of spiritual values, and other qualitative ethical values that I refer to. So I just want to now make a quick link between the LiFE society and SDG 2 and SDG 4. My point on linking the LiFE society to SDG 2, is that yes, we have discussed at length what we eat, how we eat, and so on, and I think we also need to include how we waste. Because 50% of the waste produced in this country is food waste, wet waste. And that needs to be addressed. So that's one big point I want to include, linking to SDG 2.

And my point linking the LiFE society to SDG 4, will be that we need in our NEP, in the Education Policy, we need to begin to highlight issues relating to self-reflection, to our children from the time they are quite young, that they will begin to reflect on the meaning of their own lives, the spiritual wealth and tradition of this country. And I am not talking about religion, and religious values, I am talking about spiritual values. And I want to make that very clear. And by spiritual values, I mean the human experience of their own reality, and how we begin to understand that. That needs to be introduced into the education of our children, especially of our young children so that their value system, the very heart of their value system, is the one that is the most important, will begin to shift. The reason for this of course is that we keep talking about how we can move from GDP, per capita to happiness measures, and alternative

measures, but I think that's very superficial until we have an inner shift. And that has to come from education. Our generation is probably lost already. So we have to start in our education policy and bring this in.

मुझे लगता है कि मैं लाइफ सोसाइटी से क्या सीखता हूँ पहला महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि यह पर्यावरण के प्रबंधन के बारे में नहीं है, यह खुद को एक इंसान के रूप में प्रबंधित करने के बारे में है इसलिये मुझे लगता है कि उस बिंदु को बहुत स्पष्ट करने की आवश्यकता है और हमारे प्रधानमंत्री के पास जो जीवन दृष्टि है, उसमें यह स्पष्ट किया गया है कि हमें संसाधनों के बिना सोचे-समझे उपयोग और उपभोग से हटकर उत्पादन एवं उपभोग के सोच-समझकर तरीके अपनाने की जरूरत है। तो यह पहला बड़ा बिंदु है, जो मैं कहूंगा कि हम वहाँ से क्या लेते हैं, और इसे उन बिंदुओं से जोड़ते हैं जो मैंने अपनी प्रस्तुति के दौरान बताए थे। मुझे लगता है कि यह हमें मनुष्य के रूप में हमारी अपनी वास्तविक प्रकृति अर्थात् आध्यात्मिक प्रकृति और इसका एक समृद्ध और टिकाऊ समाज हेतु क्या मतलब है, पर विचार करने की ओर ले जाता है? अतः निहितार्थ स्पष्ट है, और वह है कि केवल भौतिकवादी और आर्थिक पद्धति के आधार पर प्रगति को मापना जारी नहीं रख सकते हैं, लेकिन जो मानदंड और प्रोत्साहन हम प्रयोग करते थे। उन्हें बदलने की आवश्यकता होगी। उनका आधार नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक मूल्यों और अन्य गुणात्मक मूल्यों का होगा। अब मैं Life Society और SDG2 और SDG4 के बीच एक त्वरित लिंक बनाता हूँ। Life Society और SDG-2 की linking पर मेरा मानना है कि इनमें link है, हमने what we eat और How we eat पर लम्बी चर्चा की है, पर मेरा मानना है कि हमें How we waste को भी चर्चा में शामिल करना चाहिये। क्योंकि इस देश में उत्पादित कचरे का 50% खाद्य अपशिष्ट अथवा गीला कचरा है और इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। तो यह सबसे बड़ा बिंदु है, जिसे मैं शामिल करना चाहूंगा।

Life Society और SDG-4 की लिंकिंग पर मेरा मानना है कि हमें अपने शिक्षा नीति में बच्चों में बहुत कम उम्र से ही Self-Reflection के issue को highlight कराना चाहिये। उन्हें बचपन से ही अपने स्वयं का जीवन, देश की आध्यात्मिक समृद्धि तथा परम्पराओं का ज्ञान होना चाहिये। तो क्या हम आध्यात्मिक संस्कार बचपन से दे सकते हैं और उसको किस तरीके से सिलेबस में, मतलब जो पढ़ाया जाता है, उसमें कैसे लाया जा सकता है? आध्यात्मिक संस्कार देने का यह मतलब नहीं है कि किसी एक विशेष धर्म के बारे में समझना, क्योंकि हम जानते हैं कि धर्म और रिलिजन यह दो अलग-अलग चीज हैं। आध्यात्मिक संस्कार का मतलब धार्मिक एजुकेशन या रिलिजन यह नहीं है। तो उस पर हमें ध्यान देना चाहिये, क्योंकि इस देश की जो आत्मा है, वह आध्यात्म है, इसलिये हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिये। और दूसरी बात यह आध्यात्मिक संरचना बचपन से ही करना चाहिये। क्योंकि अगर आगे चलकर हमें इन सभी विषयों के बारे में सोचना है और इसमें एक पॉलिसी डिसीजन अगर करना है तो उसके लिये सबसे पहले व्यक्ति में परिवर्तन होना आवश्यक है, जो अंदर से परिवर्तन अथवा आंतरिक परिवर्तन, यह बहुत आवश्यक है, और इस प्रकार का आंतरिक परिवर्तन के लिये आध्यात्मिक शिक्षण बहुत आवश्यक है।

Professor R. Sudarshan's insights

I participated in the discussions on quality education and the main points that were made in the session where Nareshji spoke were expanded and articulated in this session,

even though we didn't plan it that way, but that means it's important that the same points were re-emphasized. We first covered what existing institutions do, and existing institutions do a service to society in various ways. The Indian Institutes of Technology have contributed a lot. People who have graduated from these institutions have helped to build the country, contributed to its development, but we focused on building on top of what existing institutions have done. So again, the point that was reiterated in these sessions was that our existing institutions need to move forward and have a new agenda that they must incorporate that focuses on the inner learning that Nareshji emphasized, focuses on what is it to be a human being. Education must not be compartmentalized into different kinds of disciplines, but to have a more holistic understanding of the place of the human being in society and in the world at large. So that holistic understanding needs to be brought in. It can be done. There must be reforms in the curriculum. There must be motivation on the part of teachers and students. And so, much of the discussion was giving examples of how these little transformations can begin, are already occurring, and why more of that is needed to go forward. So again, the emphasis is that the education system must make each individual think what is the meaning and purpose of their life, and why it is that service to others is the objective of education, not your own self-advancement but caring for society and for the planet. So that is the message that came through in all the discussions on SDG 4.

एक आध्यात्मिक अधिष्ठान बनाने की बात थी उसी के आधार पर इस विषय को थोड़ा आगे ले जाते हुए, लेकिन सिर्फ आध्यात्मिक अधिष्ठान की बात नहीं है, बल्कि जो बचपन में जिस प्रकार के संस्कार देने चाहिये उन संस्कारों को continue करना चाहिये। इस प्रकार आज जो इंस्टीट्यूशंस है, जो संस्थाएं हैं, उच्च शैक्षणिक संस्थाएं हैं, उन्होंने अब

तक तो बहुत अच्छा काम किया है परंतु उनका जो दायरा रहा है। वह काफी हद तक सीमित दायरा रहा है। इसका मतलब है कि अब तक वह जो कर रहे थे, उसी को आगे कर रहे हैं। ऐसा नहीं कि उन्होंने अब तक जो किया वह गलत किया है। बहुत बड़े-बड़े संस्थान है इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट है, इन लोगों ने काफी अच्छा किया है परंतु यह करते समय उनको दो बातों का ध्यान रखना चाहिये पहली बात जो बच्चे पढ़ते हैं उसमें क्या उनका परिपूर्ण संस्कार होता है यानि उनके सर्वांगीण विकास होता है? वह पढ़ाई में बहुत अच्छे हो जाते हैं, लेकिन व्यक्ति के नाते उनके मन में क्या है? उन्हें आगे जीवन में क्या करना है? पढ़ना है, बहुत अच्छी कंपनी में नौकरी लेनी है, फाइव फिगर सैलरी लेनी है, महीने का 5 लाख रुपये का, चार लाख रुपये का पैकेज लेना है और हो सके तो देश छोड़कर अमेरिका या लंदन या कनाडा जाकर सेटल हो जाना है। पर जिस समाज में आप पैदा हुए, जिस समाज में आप रहे, जो समाज का आप पर ऋण है, वह ऋण आप उस समाज को वापस कैसे दे रहे हैं? आप उनके लिये क्या कर रहे हैं? इसके बारे में उनको कोई नहीं सिखाता है। इसलिये जो एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस है, उनको इसके बारे में भी सोचना चाहिये ताकि व्यक्ति का केवल बौद्धिक विकास और आर्थिक विकास ही न हो वरन उसका मानसिक विकास भी हो। इसे सर्वांगीण विकास कहते हैं, Holistic Development of an Individual, अर्थात् वह देश के लिये कुछ करें, समाज के लिये कुछ करें, समाज को अपना माने। वह यह मान ले कि मैं समाज का हूँ और समाज मेरा है। मैं समाज का घटक हूं। अब ये इस प्रकार के संस्कार उसके मन में कैसे आये और उन संस्कारों को वह कैसे अमिट कर सके, यह विचार भी SDG4 में जो हम क्वालिटी एजुकेशन की बात करते हैं, उसमें जोड़ना चाहिये। मतलब क्वालिटी एजुकेशन कहीं डिफाइन नहीं है परंतु उस क्वालिटी एजुकेशन में भारत को चाहिये कि इन विषयों को जोड़े। ऐसा नरेशजी का बहुत अच्छा विषय रहा, सविस्तार उन्होंने इस विषय को कहा भी और उनके पेपर्स भी हमारे पास हैं, जो आउटकम होगा उसमें हम इन सभी विषयों को जोड़ लेंगे।

Shri Deepak Khandekar's insights

आज की चर्चा में जो बातें आई, कल की भी कुछ बाकी था आज विशेष रूप से मैं कहूंगा कि 'जीरो हंगर' की हम बात तो जरूर कर रहे हैं लेकिन सारे वक्ताओं ने, सभी वैज्ञानिकों ने, जो वहाँ किसान भाई थे, उन सब ने जो भी बोला, उससे एक बात समझ में आई कि जीरो हंगर की बात नहीं है बल्कि 'जीरो माल न्यूट्रिशन' की बात हमें करनी है। किसी ने यह नहीं कहा कि गेहूँ, चावल नहीं मिल रहा है। तो जीरो हंगर को हमें जीरो मॉल-न्यूट्रिशन के तौर पर समझना है, और इस दिशा में फोकस बनाकर अब कार्य करने की आवश्यकता है। सब ने माइक्रो न्यूट्रिएंट्स की बात कही और मुझे जो सबसे बड़ा अचरज हुआ कि जिन दीदीयों ने अपने-अपने गाँव की बात कही, उन्होंने मॉल न्यूट्रिशन कैसे हैंडल किया तो कोई माइक्रोन्यूट्रिएंट्स का कोई सब्सटेंस था जिसको उन्होंने वहाँ सबको दिलाया, और उसे उन्होंने कहा कि हमने जीरो हंगर या 'मॉल न्यूट्रीशन' उसको उन्होंने एड्रेस किया। तो एक बात मुझे स्पष्ट हुई कि शायद अब हमारे गाँव में, गरीबों में, अमीरों में सब जगह माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की प्रॉब्लम है। अब इसे मॉल न्यूट्रिशन के तौर पर ही हमें देखना पड़ेगा। और दो-चार जो कमेंट्स मुझे बहुत ही सटीक लगे; एक व्यक्ति ने कहा कि काम तो बहुत बढ़िया आ रहे हैं लेकिन खा क्या रहे हैं, राम जाने मतलब अब खाने का आपकी आमदनी से भी संबंध विच्छेद हो गया है। आप अमीर हो या गरीब हो दोनों ही हालत में आपके माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की हालत खराब है। अब आप बहुत फोकस करके देखो कि आप क्या खा रहे हो? इस पर ध्यान देने की जरूरत आ गई है। तो मैं कहूंगा कि मैं पहले हमेशा माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की जो 'नो अवेलेबिलिटी' है या 'मॉल न्यूट्रिशन' है उसको कहीं ना कहीं पॉवर्टी से लिंक करता था, शायद हो सकता है कि 20 साल 30 साल पहले जो एक दिमाग में बैठ गया वहीं विषय बार-बार वह इस तरह से बैठा हुआ था, लेकिन आज मैं कहूंगा कि मेरी आंख खुली, ऐसा लगा कि शायद हम शहर में बैठकर भी जो खा रहे हैं, हमारी वास्तविक जो 'मॉल न्यूट्रिशन' की कंडीशन है वह चिंताजनक है। तो एक टिप्पणी जो मुझे बहुत सटीक लगी, बहुत आंखें खोलने वाली लगी, वो सीधे एक कृषक भाई से आई थी। उसने कहा कि दिल्ली और मुंबई में रहने वाले सब लोग जो हैं अब अपने लिये एक 'फैमिली फार्मर' रखें और वहाँ से वह अपना सारा खाने का सामान मंगवायें, तो उनको 'फैमिली डॉक्टर' की जरूरत नहीं पड़ेगी। तो वाकई ऐसा लगा कि हमने अपने स्वास्थ्य को एक तरह से हमने Commercialised Setup में डाल दिया है। तो हमको यह कहीं ना कहीं सीखने की जरूरत पड़ गई है पॉलिसी के तौर पर, इंडिविजुअल के तौर के पर और संस्थान के बतौर भी। तो यह तीनों समाज, व्यक्ति एवं परिवार सब मिलकर अब इसको कैसे एड्रेस करेंगे? इस विषय में सोचने की जरूरत है। और एक बहुत ही अच्छी बात जो बार-बार उभर के आ रही थी, जो पहले से ज्ञात थी कि हमारी खुद की जो परंपरायें थी, हम जो खुद भोजन करते थे, बचपन में जो खाते थे, वह बहुत अच्छा था उस भोजन की क्वालिटी थी, बहुत अच्छा टेस्ट था, उससे हम बीमार नहीं पड़ते थे। लेकिन अब पता नहीं क्या हो गया है, 50 साल में हम वैसे तो मानते हैं की प्रोग्रेस कर रहे हैं लेकिन शायद न्यूट्रिएंट्स पर, न्यूट्रीशन पर, हमें अपनी प्रोग्रेस दोबारा देखने की जरूरत है, कि क्या हम उतना ही अच्छा खा रहे हैं जो हम पहले खाते थे। तो यहाँ पर यह एक फोकस करने की जरूरत है कि हम अपनी हमारी जो भारतीय भोजन परंपरायें रही हैं उन पर हम दोबारा विचार करके उसको बहुत अच्छी तरह से समझ के कि किस तरह से हम उसको दोबारा अपनी जिंदगी में अगर उसको वापस लायें तो यह बहुत अच्छा रहेगा। यह यहाँ हम सब में बहुत बड़ी राय सब की आम राय है, लेकिन इस पर कैसे काम करना है? कैसे इसको वापस लाना है, कैसे जो खो गया है उसको ढूंढ के लाना है और जो नहीं खोया है, उसे खोने नहीं देना

है, यह हमारी फोकस अब हर लेवल पर होने की आवश्यकता है। तो यह जो कुछ आज मुझे सीखने को मिला और एक तरह से एक नया विचार जो आया, वह मैं आप सबके साथ शेयर करना चाहता हूँ और आग्रह करता हूँ कि उसको आप कितना ज्यादा से ज्यादा प्रोपेगेट किस तरह से कर सकते हैं, फील्ड लेवल पर, पॉलिसी लेवल पर, समिति लेवल पर इंस्टीट्यूशन लेवल पर, वह सब करने की आवश्यकता है। धन्यवाद, नमस्कार...

Dr. Sushil Chatruvedi's insights

सभी लोगों को प्रणाम एवं जो लोग सामने बैठे हैं उन सब का अभिनंदन। जो सत्र था, जिसमें हम लोगों ने बात की की 'क्या प्रोड्यूस करना है' यानि कि उत्पाद 'क्या होना चाहिये' और 'कैसे होना चाहिये।' यह जो सत्र था इसको अगर मैं SDG2 जो गोल है हमारा जीरो हंगर, अगर उससे हम लोग कनेक्ट करना चाहे तो एक बहुत बड़ी बात समझ में आई कि अब लौट चलें अपनी परंपराओं की ओर। सभी ने यह कहा कि जो हमारी पुरानी पद्धति थी चाहे वह खेती की पद्धति हो, चाहे प्रोड्यूस करने के लिये हो यहाँ खेती से मेरा केवल आशय है फसलों से नहीं है, उसमें फल फूल सब्जी सभी की बात आती है। तो एक तो यह बात आई। दूसरी बात आई, श्री अन्न की। श्री अन्न की बात होते हुए फिर वही बात आई कि हमें अपने जो पुराना सिस्टम था उसे जोड़ना चाहिये। परंपरागत खेती और प्राकृतिक खेती की भी चर्चा हुई। प्राकृतिक खेती का मतलब यही है कि हम कितना 'सस्टेनेबिलिटी' की बात कर रहे हैं, यानि कि सतत विकास की बात करें। यदि सतत विकास की हम बात करें तो उसमें हम केवल प्रोडक्शन की बात ना करें। अर्थात् उत्पादन हमारा लक्ष्य ना हो, हमारा लक्ष्य गुणवत्ता युक्त उत्पादन हो, भूमि के सुधार की बात हो या हमारे जो प्राकृतिक संसाधन है, उसके सुधार की बातें हों। अगर मैं सीधी बात करूं तो 'जीरो हंगर' की बात करते हुए हमें प्राकृतिक संसाधन का दोहन

उतना ही करना है जितना आवश्यक है। उसी में जल संरक्षण की बात भी सामने आती है। अगर Sustainability की बात करते हैं, यानि कि सतत विकास की हम बात करें तो सतत विकास दोनों क्रम में होगा। एक तो हमारा जो 'प्रोडक्शन सिस्टम' है यानि कि जहाँ से हम उत्पादन लेते हैं यानि कि जो हमारी भूमि है, हमारी जलवायु है उसकी बात करते हैं और उसी के साथ हम बात करते हैं कि सतत प्रक्रिया कहाँ होना चाहिये? कि जो हमारे उत्पाद है अर्थात् खेती से जो भी उत्पाद हैं वो स्वस्थ हो, वह पोषक हों। अगर हम उत्पाद की बात करेंगे तो पोषक की बात करेंगे और हमारे जो नेचुरल रिसोर्सेस हैं, उनके संरक्षण की बात करेंगे। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की बात करने का कदापि मेरा तात्पर्य नहीं है कि हमें उन्हें उपयोग में नहीं लाना है। हमें संसाधनों को उपयोग में लाना है, उपभोग में लाना है, लेकिन जो हमारा लालच आ जाता है उसको थोड़ा सा दूर रखना है। अगर ऐसा करेंगे तो देश में जो सकल खाद्यान्न उत्पादन आज इतना है कि 'जीरो हंगर' का जो लक्ष्य है उसको हम आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। अभी एक वक्ता ने जो कहा कि भूख की समस्या नहीं है, समस्या जो हम खा रहे हैं उसकी गुणवत्ता की है। तो अगर हम इन पर ध्यान देंगे तो मुझे कोई शक नहीं कि हमारा आने वाला भविष्य जो वह उज्जवल है। हमें करना केवल इतना है कि हमें भूमि और जल इन दोनों का उतना ही दोहन करना है जितना पर्याप्त है, पर्यावरण की चिंता अपने आप खत्म हो जायेगी। धन्यवाद....

!! जय कामतानाथ जी !!
श्रद्धांजलि
भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी
की 14वीं पुण्यतिथि पर आयोजित
कार्यशाला- 25-27 फरवरी 2024
▪ तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सतत् विकास के लक्ष्य
▪(एस.डी.जी - 2 भुखमरी से मुक्ति, एस.डी.जी- 4 सर्वोत्तम शिक्षा)
▪ कृषक उत्पादक संगठन के कार्यकर्ताओं में कौशल संवर्धन एवं उद्यमिता।
▪ महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका।
▪ मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण में पोषक अनाजों का महत्व।
▪ भारतीय प्राकृतिक खेती द्वारा मृदा एवं मानव स्वास्थ्य।
सम्मान-
▪ भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख उत्कृष्ट कृषक सम्मान - 2024
▪ सुमतिताई सुकलीकर महिला सशक्तिकरण सम्मान - 2024
▪ राजाबाई देशमुख महिला स्वावलम्बन सम्मान- 2024
मैं अपने लिए नहीं,
अपनों के लिए हूँ।
अपने वे है जो
पीड़ित और उपेक्षित है।
नानाजी देशमुख
स्थान- दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट

3rd International SDG Conference Concluding Remarks, 27th February 2024.

Shri Amitabh Vashistha, Moderator

तीन दिन की जो सेमिनार Sustainable Development Goals अर्थात् सतत विकास के जो लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र ने घोषित किये उनमें से दो लक्ष्य SDG 2 Zero Hunger और SDG 4 गुणवत्ता युक्त शिक्षा। No Hunger पर हमारी भारतीय सोच है, उसमें कहते हैं कि सब पोषित हों, तो इस विषय को लेकर सार्थक विमर्श हुआ। पहले दिन 25 तारीख को प्लेनरी Session था आदरणीय नरेश सिंह जी अपने बीच में पधारे उन्होंने एक बहुत अच्छा IQ और SQ के माध्यम से पॉलिसी मेकिंग में किस तरह से आध्यात्मिकता का एकीकरण हो, उस विषय पर अच्छा वक्तव्य रखा था और निश्चित रूप से SQ यानि स्पिरिट्युअलिटी क्वोशन्ट में जो भारत की अपनी ताकत है, उसे आज विश्व पहचान रहा है, अपने यशस्वी प्रधानमंत्री जी भी उसको पूरे विश्व में ले जा रहे हैं पॉलिसी मेकिंग में स्पिरिट्युअलिटी का होना बहुत आवश्यक है, इसपर नरेशजी ने बल दिया। SDG 2 और SDG 4 के ऊपर दो अलग-अलग सत्रों में लोहिया सभागार के भूतल पर और प्रथम तल पर कार्यशालायें आयोजित हुई, उनके प्रतिवेदन के लिये मैं आमंत्रित कर रहा हूँ। डॉक्टर आर. एस. नेगीजी, सब पोषित हों या हंगर फ्री अर्थात् SDG 2 पर हुए विमर्श का सार संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे।

Dr. Rajendra Singh Negi presenting a summary of the deliberations on SDG 2 on the 26th Parallel session.

आप सभी को सादर प्रणाम...

सतत विकास का लक्ष्य 'हंगर फ्री वर्ल्ड' पर जो विमर्श हुआ कि किस प्रकार से हमें कौन सी खेती पद्धति को अपनाना है कि एक सुरक्षित पौष्टिक आहार सबको पर्याप्त मात्रा में मिल सकें, जो इस पर तीन तकनीकी सत्र में विमर्श हुआ। जिसका पहला सत्र जो आयोजित हुआ वह WHAT TO GROW, दूसरा सत्र था HOW TO GROW और तीसरा WHAT TO EAT, हम क्या खायें कि जिससे हम लोग स्वस्थ रहें इस विषय पर आयोजित हुआ। प्रथम सत्र में उसमें डॉ. त्रिलोचन महापात्रा जी जो वर्तमान में अध्यक्ष हैं, पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण और पूर्व में जो है ICAR के डायरेक्टर जनरल रहे हैं, का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कुपोषण से निपटने में दालों की क्या भूमिका होती है, इस पर डॉ. ओम गुप्ता जी जो अपने फॉर्म डायरेक्टर एक्सटेंशन में है और डॉ. अमित गोस्वामी जी जो IARI में, वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं, उनका फल एवं सब्जियों का हमारे न्यूट्रिशन में क्या महत्व है उस पर प्रकाश डाला। इसके साथ दीनदयाल शोध संस्थान के अंतर्गत अपने जो कृषि विज्ञान केंद्र हैं और उसमें किसानों के द्वारा इसके अंतर्गत जो प्रयोग किये गये हैं वह अनुभव उन्होंने हम लोगों के बीच share किया। दूसरे सत्र में "How We Grow" पर तीन व्याख्यान हुए, जिसमें डॉ H.S. Kushwaha ji ने 'श्री अन्न' उत्पादन तकनीकी और उनका हमारे न्यूट्रिशन में क्या महत्व है इस पर प्रकाश डाला, दूसरा जो अपनी वर्तमान में जिस खेती की बात हो रही है रसायन मुक्त प्राकृतिक खेत जिस पर नानाजी भी कहते थे कि गौ आधारित खेती तथा पदमश्री श्री उमा शंकर पांडे जी द्वारा जो नारा दिया गया है, **"हर खेत में मेड़, हर मेड़ पर पेड़"** इस विषय पर उन्होंने अपना उद्बोधन दिया। तीसरा सत्र था कि "What To Eat" इसमें डॉक्टर S.S. Shuklaji जो जवाहरलाल कृषि विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं उन्होंने कहा हमारे खाद्य पदार्थ है उनको हम पोषक तत्त्वों से कैसे enrich कर सकते हैं इस विषय पर अपनी बात रखी। प्रवीर कृष्ण जी हालांकि हम लोगों के बीच

उपस्थित नहीं हो पाये परन्तु उन्होंने अपना प्रस्तुतिकरण भेजा था जिसपे उनका विषय था "Forest and food" यानि वन उपज का भोजन एवं आजीविका" में क्या महत्व है। साथ में अपने पौषिकीय गृह वाटिका है कि बात करते हैं कि हर घर में पौषिकीय गृह वाटिका हो ताकि हमको प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में हरी सब्जियां और फल मिल सके इसमें डॉ. ममता त्रिपाठी जी द्वारा जो उन्होंने महिलाओं के बीच में कार्य किया उन्होंने अपना अनुभव share किया। इस तरह से यह जो अपना तीन सत्र वाला जो सम्मेलन था वह सम्पन्न हुआ।

Shri Amitabh Vashistha, Moderator

SDG 4 गुणवत्ता युक्त शिक्षा, एक अच्छा विचार विमर्श हुआ। तीन सत्रों में जो चीज निकल के आई वह यही निकल के आई कि जो नानाजी ने चित्रकूट में जिस तरह से अपना काम यहाँ पर शिक्षा के बारे में किया वह नन्हीं दुनिया से लेकर महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय तक कि कैसे शिक्षा को बचपन में बोझा मुक्त किया जाये और अगर वह higher education है, तो वहाँ पर उसको कैसे रोजगार से जोड़ा जाये तो इतने दिनों में जो विसंगतियां पैदा हुई थी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति जो आई है, उसमें इन सबको समाहित किया गया है। SDG 4 गुणवक्तायुक्त शिक्षा की बात करती है तो उसी के संदर्भ में भी एक मंथन हुआ उसमें जो निकलकर आया। डॉ. मनोज त्रिपाठी जी उसके विषय में प्रतिवेदन रखेंगे।

Dr. Manoj Tripathi presented a summary of the deliberations on SDG 4 on the 26th Parallel session.

Sustainable Development Goals का जो Goal है गुणवक्तायुक्त शिक्षा, जो कि हमारे समाज की एक नितांत आवश्यकता है और यह गुणवक्तायुक्त शिक्षा हमारे समाज को स्वस्थ, स्वच्छ और समृद्ध बनाने में अपनी महती भूमिका निभाती है। इस संबंध में जो सेमिनार हुए वह तीन सेशन में पूरे हुए हैं जिसमें प्रमुख रूप से नव शिक्षाविदों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये हैं कि यह जो गुणवक्तायुक्त शिक्षा है इसमें और किन चीजों का समावेश किया जा

सकता है। भारत की दृष्टि से इसमें प्रथम सत्र में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए श्री प्रियंक कानूनगो जी ने बताया कि आज की जो शिक्षा विभिन्न संस्थानों के माध्यम से दी जा रही है उसमें से विशेष रूप से धर्म की शिक्षा को भी जोड़ा जा रहा है जो कि एक सुंदर समाज को निर्माण करने में महती भूमिका निभाएगी। दूसरे वक्ता के रूप में आचार्य श्री संजीव शर्मा जी जो कि गुरुकुल गुजरात से थे ने बताया कि भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनुसार ही शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिये भारत में जो प्राचीन शिक्षा पद्धति थी उसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, धर्म और पर्यावरण जैसे विषय सम्मिलित होते थे। अगले वक्ता के रूप में श्री शेषाद्रीचारी जी जो कि प्रखर विद्वान हैं ने बताया कि उच्च शिक्षण संस्थान 'क्वालिटी एजुकेशन' पर कार्य कर रहे हैं और किस प्रकार से कार्य का विषय है यह विचार का विषय हैं, सरकार शिक्षा पर अधिक बजट नही खर्च कर रही है। जो टोटल जीडीपी है उसका छह प्रतिशत शिक्षा के क्षेत्र में खर्च होना चाहिये परंतु अभी भी तीन प्रतिशत से कम हो रहा है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। संस्थान के माननीय प्रधान सचिव श्री अतुल जैन जी ने बताया कि नानाजी स्वयं एक शिक्षा शास्त्री थे उन्होंने नन्हीं दुनिया जैसे अभिनव शिक्षा परिसर को तैयार कराया, जहाँ बच्चा प्रकृति की गोद में रह करके प्रकृति के परिवेश के साथ ही शिक्षा प्राप्त करता है, अगले वक्ता के रूप में प्रोफेसर आशीष पांडे जी, आईआईटी रुड़की ने कहा कि छात्रों में कला कौशल और व्यावहारिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है केवल डिग्री धारकों को बढ़ाने से कुछ नहीं होगा उन्होंने पानी की वैश्विक समस्या पर भी अपने विचार प्रस्तुत किये। डॉक्टर रविकांत पाठक जी जो पर्यावरणविद् और साइंटिस्ट है उन्होंने अपनी बात को '**साविद्या या विमुक्तये**' से प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय शिक्षा का ध्येय वाक्य '**साविद्या या विमुक्तये**' है अर्थात शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे लोगों के दुख दूर हो सकें। हमारी शिक्षा की जो प्राचीन व्यवस्था थी उसमें विभिन्न प्रकार की ऐसी शिक्षाओं का समावेश हुआ करता था जो दुःख और दरिद्रता दूर करती थी। श्री गोपाल भाई जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि रविन्द्रनाथ टैगोर जी की पंक्ति है "हमारा देश सरल, सरस और बिमल बने," उनकी पंक्तियों को याद करते हुए उन्होंने विषय का प्रारंभ किया और बताया कि सुखद सामाजिक परिवर्तन केवल शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है। आज सामाजिक विसंगतियां निरंतर बढ़ रही हैं, अतः विद्यालयों में उपयुक्त वातावरण तैयार करना चाहिये।

मानव का मानव के साथ तथा प्रकृति के साथ परस्पर पूरकता का भाव होना आवश्यक है। श्री अनिल जी ने अपनी बात को रखते हुए कहा कि प्रधानमंत्री कौशल विकास केंद्र तथा Skill Development पर विभिन्न प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं। प्रो. भरत मिश्रा जी माननीय कुलगुरु ग्रामोदय विश्वविद्यालय ने बताया कि नानाजी का प्रारम्भ से ही यह कहना था कि चित्रकूट में जो काम शुरू हुए हैं वह समाज को कुछ उपयोगी दे सकें इस प्रकार की योजना हम बना रहे हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ साथ संस्कार पर भी शिक्षा होनी चाहिये। शिक्षा, स्वास्थ्य, सदाचार और स्वालंबन को आधार बनाकर चित्रकूट में नानाजी ने कार्य को प्रारंभ किया है। डॉक्टर प्रभाशंकर शुक्ला जी कुलगुरु नार्थ ईस्ट विश्वविद्यालय ने बताया कि हमारे देश में परंपरागत विज्ञान रहा है और अपने प्रजेंटेशन के माध्यम से ऐसे चित्र उन्होंने प्रस्तुत किया कि आज जो चीन और जो दूसरे बड़े देश हैं वह कह रहे हैं की हम नयी तकनीकी का विकास कर रहे हैं लेकिन वह कहाँ से खोज कर ला रहे हैं। उसका जो स्रोत है वह अपना भारत देश ही है। अतः हमें शिक्षा तकनीकी को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। श्री राजेन्द्र सिंह जी ने दीनदयाल शोध संस्थान गुणवत्तायुक्त शिक्षा के माध्यम से जो कार्य गांवों में कर रहा है, उसके बारे में अपनी व्याख्या प्रस्तुत की। इसके साथ ही परंपरागत वैद्य श्री विष्णुदत्त शुक्ला जी जो दीनदयाल शोध संस्थान के लाभार्थी भी हैं उन्होंने बताया कि हम लोग प्रकृति के साथ सामंजस्य बना करके गुणवत्तायुक्त शिक्षा के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य को स्वस्थ्य रखने का कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार से सार्थक संवाद के साथ यह सेमिनार समाप्त हुआ।

Shri Amitabh Vashistha, Moderator

आदरणीय शेषाद्रीचारी जी जो आरंभ से ही इस विमर्श से जुड़े हैं, वे विगत जो दो दिन के आउटकम और जो विगत दो सालों से हमने जो दो अंतरराष्ट्रीय कॉनफ्रेंस की तथा वर्षभर हम लोगों ने इनसे संबंधित विषयों पर वेबिनार्स किये, उन सबका जो आउटकम निकला उसका प्रतिवेदन करेंगे।

Dr. Seshadri Chari concluding remarks on the deliberations, the Outcome Document and our way forward.

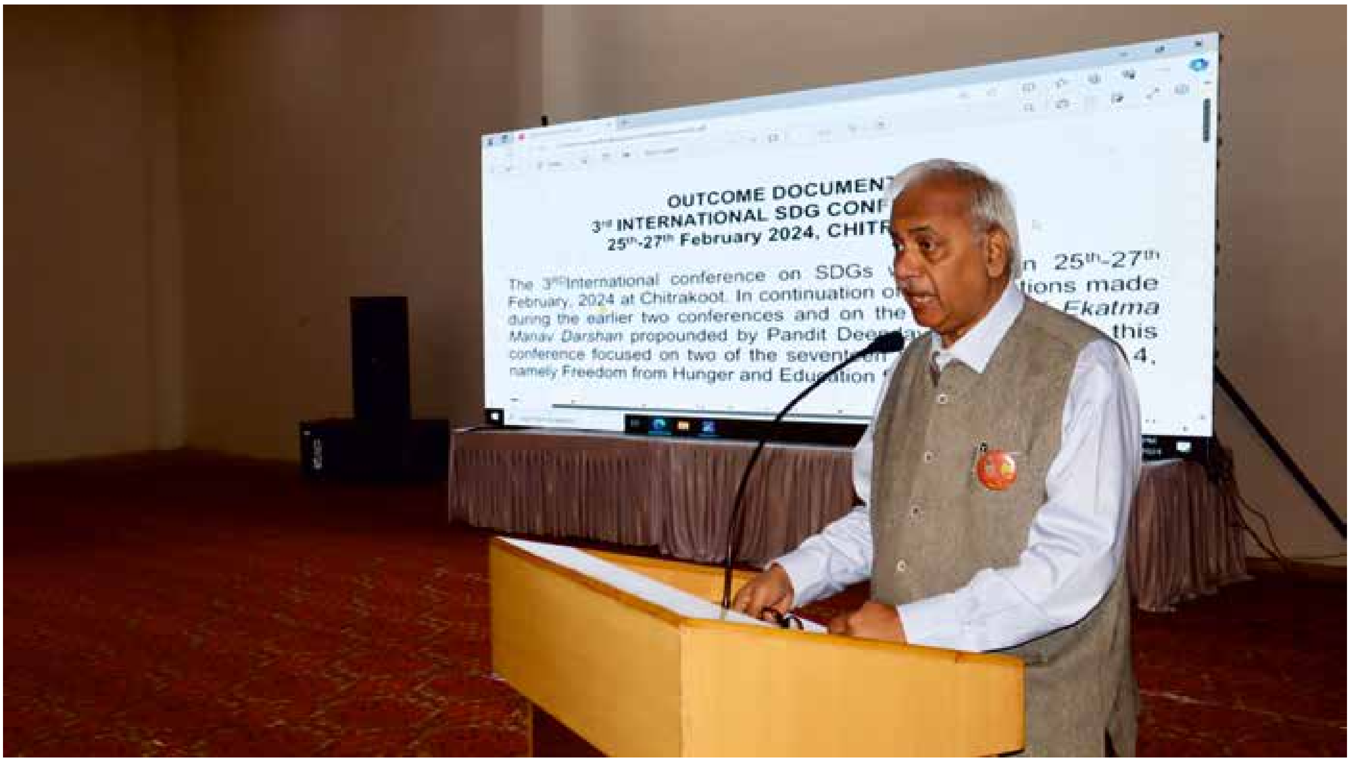

धन्यवाद जैसा कि हम अब तक सुन रहे थे पिछले तीन दिनों से हमने इन सभी विषयों पर चर्चा की है। हम सब यह जानते भी हैं कि पिछले तीन वर्षों से हम एक और प्रयोग कर रहे हैं जिस प्रयोग का नाम है कि 'वर्ल्ड SDG फोरम' एक संस्था है दुनिया में, जिसको 'वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम' कहते हैं जिसको किसी सरकार ने नहीं बनाया कुछ व्यक्तियों ने मिलकर सोचा कि दुनिया की जो आर्थिक रचना है वह कैसे होना चाहिये, इस पर सोचा और इकोनॉमिक फोरम बनाया। दुनिया भर के जितने भी देश हैं, उन सभी देशों की जितनी भी आर्थिक व्यस्थायें हैं, जिसको हम वर्ल्ड आर्डर कहते हैं, इकोनोमिक वर्ल्ड आर्डर के बारे में सोचते रहते है, सुझाव देते रहते है, कुछ देश सुझाव लेते और कुछ देश सुझाव नही लेते हैं, वे वहाँ जाते हैं। हमारे देश के भी अनेक लोग, मुख्यमंत्री से लेकर केंद्रीय मंत्री तक और व्यक्तिगत रूप से जिनको जाना हो उस कार्यक्रम में जाते हैं यानि यह People's मूवमेंट के नाते शुरू हुआ और बहुत बड़े पैमाने पर चल रहा है परंतु एक बात है कि वह चूंकि पाश्चात्य विचारधारा से चलने वाली संस्था है अतः वह उन्हीं प्रकार के विषयों पर अधिक रूचि लेते हैं। भारतीय विचार के आधार पर जो आर्थिक रचना-संरचना होना चाहिये, उस पर वह ज्यादा चिंतन नहीं करते हैं, तो इसी कड़ी में हम लोगों ने सोचा कि किसी भी देश के बारे में अगर सोचते हैं तो उसे देश की जो मूलभूत संस्थाएं हैं, मूलभूत धारणाएं हैं, उन धारणाओं के बारे में, उस देश के बारे में सोचना चाहिये। इस दृष्टिकोण को आगे रखते हुए वर्ल्ड SDG फोरम हमने बनाने की कोशिश की, बन भी गया है और काफी उस पर हम प्रगति भी कर रहे हैं। इस श्रृंखला में कुछ ऐसा भी विचार आया कि हर वर्ष एक इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस किया जाये, तो यह तीसरा इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस है। परंतु इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस हम सभी लोगों ने देखा होगा कि जब बड़े-बड़े इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस होते हैं, गरीबी उन्मूलन के बारे में विचार होता है तो यह सारे जो विचार होते हैं वह किसी बड़े शहर के फाइव स्टार होटल में होते हैं। पर हमने दो बातों के बारे में विचार किया, एक तो इन सभी विचार प्रक्रिया और इसका जो अधिष्ठान है वह भारतीय अधिष्ठान होना चाहिये, स्वाभाविक दृष्टि से जब इस अधिष्ठान के बारे में हम सोचते हैं तो हमारा जो अधिष्ठान या हमारा जो विचार है, उसका आधार है पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का एकात्म मानव दर्शन। हमारे सभी विचारों का मूलभूत आधार यही है। यह हो गया एक दर्शन अथवा एक विचार। परंतु इस विचार को यदि किसी ने व्यवहार में लाने की का प्रयत्न किया है और यशस्वी प्रयत्न किया है वह हमारे आदरणीय राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख। उन्होंने न केवल पंडित दीनदयाल जी के विचारों को आगे करने की कोशिश की बल्कि उन विचारों के आधार पर उन्होंने एक बहुत बड़ा काम किया है। जो चित्रकूट में हमने प्रत्यक्ष देखा है और देख भी रहे हैं। इस कड़ी में हम लोगों ने यह तय किया कि इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस हम जो करेंगे वह केवल और केवल चित्रकूट में करेंगे जहाँ पर एकात्म मानव दर्शन और उसके आधार पर जो रचनाएं होनी चाहिये, उनके आधार पर प्रत्यक्ष प्रयोग, यशस्वी प्रयोग और ऐसे प्रयोग जिनको हम दूसरे स्थान पर भी कर सकते हैं, सक्सेसफुल एक्सपेरिमेंट एंड रिप्लीकेबल एक्सपेरिमेंट यह दोनों विषय है। इस संदर्भ में दो वर्षों से यह कार्यक्रम हो रहे हैं। इस वर्ष हमने तय किया कि पूरे 17 SDG's है उन सभी SDG's इस पर विचार न करते हुए हम दो SDG का विचार इस बार करेंगे। एक SDG 2 और एक SDG 4। यानि SDG 2 जो भूख (हंगर) इस विषय से संबंधित है और SDG 4 यह शिक्षण (एजुकेशन) विषय से संबंधित है। इन दो वर्ष तथा दो दिनों की जो चर्चाएं हुई है उन चर्चाओं के आधार पर आगे क्या करना चाहिये, यह अनेक सत्रों में जिन लोगों ने विषय रखा, उन सभी सत्रों में जो-जो सुझाव आये, उन सभी सुझावों का निचोड़ एक दृष्टि से बना कर हमारे

कार्यकर्ताओं ने एक रिपोर्ट बनाया है। यह रिपोर्ट अंग्रेजी में है और उसकी यथासंभव हिंदी भाषांतर करने का मैं ही प्रयास करूंगा। 'आउटकम' इसको हमने 'आउटकम डॉक्यूमेंट' कहा है। आउटकम डॉक्यूमेंट इसीलिए कहा क्योंकि यह कोई 'रेजोल्यूशन' नहीं है, रेजोल्यूशन तो वह लोग पास करते हैं जिनको उस रेजोल्यूशन के बारे में कुछ लेना देना नहीं है। आउटकम डॉक्यूमेंट का मतलब यह है कि यह सुझाव आये हैं इन सुझावों को प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग करना यह हमारा काम है, आगे आने वाले वर्ष भर में, इसलिये इसको आउटकम डॉक्यूमेंट कहा। The Outcome Document of 3rd International SDG Conference 25th, 26th, 27th February, 2024 Chitrakoot; The 3rd International conference on SDG's held on 25th to 27th February 2024 at Chitrakoot in continuation of the resolution made during the earlier two conferences and on the templet of 'Ekatam Manavdarshan' propounded by Pt. Deendayal Upadhyaya ji. The Conference focus on two of the 17 SDG's, SDG-2 and SDG-4, namely freedom from Hunger and Quality Education. जो मैंने अभी प्रस्तावना रखी उस प्रस्तावना को हम यदि अंग्रेजी के एक वाक्य में लिया है तो Conference draws its inspiration from Rashtrarishi Nanaji Deshmukh. उनकी पुण्यतिथि पर 27 फरवरी को आज his seminal work in provisioning a working platform for the philosophy of Integral Humanism in the form of allround development of villages around Chitrakoot is illuminating our path in the ongoing process and activities of World SDG Forum undertaken by Deendayal Research Institute. दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट के अंतर्गत जो वर्ल्ड SDG फोरम हमने बनाया उसका जो मार्गदर्शक तत्व है, वह यहीं है, यह चित्रकूट में है, जो राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख ने यहाँ पर एकात्म मानव दर्शन के आधार पर उसकी एक जीती जागती रचना निर्माण करने का प्रयत्न किया, और वह प्रयत्न हम सभी देख रहे हैं। The third conference is focusing on SDG-2 and SDG-4, discuss and deliberated on all the aspects of these two important areas. The scholarly gathering of the eminent educationists, economists. agriculture experts and practitioners drawn from nearby villages suggested a way forward concerning SDG 2. यहाँ ऐसा नहीं है कि दिल्ली, मुंबई जैसे स्थानों से विषयों के विद्वान हीं आये हों, बल्कि प्रत्यक्ष रूप से इन सभी कार्यों को करने वाले, खेती करने वाले और ऐसे शिक्षाविद जो ग्रामीण क्षेत्र में पाठशालायें चलाते हैं, ऐसे लोगों की सहभागिता रही। धार्मिक दृष्टि से इन सभी कार्यों में जुड़े हुए धर्मगुरु भी इस कार्यशाला में आये। इसलिये एक दृष्टि से देखा जाये तो सिर्फ एकेडमिक दुनिया के लोगों का ही हमने सुझाव नहीं लिया बल्कि प्रत्यक्ष जमीनी स्तर पर काम करते हैं, ऐसे लोगों का हमने सुझाव इसमें लिया है। SDG 4 में जो चर्चा हुयी, उसका सार थाः The urgent need to relooked at the fundamentals of the problems concerning eradication of Hunger, while food production could have gone up marginally. The new technique are increasing per capita acre yield of food grains but the quality of output have deteriorated. जैसे कि अभी पिछले 1 घंटे भर में हमने सुना उसमें एक विषय आगे आया कि कुल मिलाकर, खेती से जो उत्पादन हम करते हैं उसमें थोड़ी-सी वृद्धि हुई है।

थोड़ी यह वृद्धि भी इसीलिए हुई है क्योंकि तकनीक में थोड़ा बहुत फर्क किया हुआ है इसके कारण एक वृद्धि है परंतु क्वांटिटी इंक्रीज हुआ लेकिन क्वालिटी इंक्रीज नहीं हुआ उल्टा क्वालिटी डिक्रीज हुआ है 60, 70, 80 साल पहले 100 साल पहले हमारे जो दादा, परदादा जो थे वह जितने पौष्टिक अन्न खाते थे उस दृष्टि में उस तुलना में आज हम जो अन्न खाते हैं उसमें पौष्टिक आधार कम है यानि पर एकड़ यील्ड जो है एक एकड़ में अगर 100 क्विंटल होता था तो आज 150 क्विंटल हो रहा है परंतु उसे वह 100 कुंतल जितना पौष्टिक था आज 150 कुंतल उतना पौष्टिक नहीं है। There is a need to find ways and means to educate people and put in practicum some activities regarding food waste, which aaccording to some experts form nearly 50% of the total waste both biodegradable and otherwise अनेक विद्वानों ने बताया है कि कुल मिलाकर दुनिया में जितना होता है, उसमें 50% waste food waste हैं, इसको काम करने की बहुत आवश्यकता है। दुनिया में ऐसे बहुत लोग हैं जिनको अन्न मिलता नहीं है, जो भूखे हैं, और दूसरी ओर अन्न खाया नहीं जाता है फेंका जाता है। तो यह बहुत बड़ा जो अंतर है वह कम होना चाहिये, बंद होना चाहिये। तीसरा एक विषय ऐसा आया कि जो quality of food का deterioration हो रहा है उसके कारण हम लोग Zero Hunger की बात करते हैं वह तीसरा विषय है, Agricultural practices increasingly becoming dependent on chemical fertilizers and pesticides which leave harmful structures residue in the form of products leading to harmful consequences to health and environment. Based on Chitrakoot Model of Farming a more structured and practical way of Organic farming should be promoted. चित्रकूट में राष्ट्र ऋषि नानाजी के नेतृत्व में जो प्रयोग हुए हैं। वे हमें उचित राह दिखाते हैं। जो खाद हम विदेशों से मंगाते हैं या फैक्ट्रीज में तैयार करते हैं वो केमिकल खाद है इस केमिकल खाद का उपयोग करने से अन्न की उत्पादन की मात्रा तो बढ़ी, परंतु उसकी गुणवत्ता बहुत गिर गई। इतना ही नहीं परंतु यह जो Chemical Residue है, और जो पेस्टिसाइड्स जिनका हम उपयोग करते हैं, वे पेस्टिसाइड और केमिकल फर्टिलाइजर हमारे अन्न के साथ मिल जाते हैं। तो एक दृष्टि से हम केवल अन्न नहीं खा रहे हैं उसके साथ केमिकल फर्टिलाइजर और पेस्टिसाइड के भी जो रेसिड्यू है वह भी हम खा रहे हैं। और इसका बहुत बुरा परिणाम हमारे शारीरिक और मानसिक संतुलन में होता है, इसको रोका जाना चाहिये। वह कैसे किया जाये इस पर दो दिन में बड़े चर्चाएं हुई हैं। बहुत लोगों ने बहुत से सुझाव दिए हैं, उसके आधार पर हम आगे काम करेंगे। This more ness view and action plan is needed to divise a workable strategy for not only Zero Hunger but more importantly on Zero Mal-nutrition. हम सब SDG 2 में जीरो हंगर की बात करते हैं मतलब कोई भूखा नहीं रहेगा लेकिन आगे चलकर हम भारत के दृष्टिकोण से विचार करें तो हम कहते हैं कि केवल कोई भूखा नहीं रहेगा ऐसा नहीं लेकिन हम क्या खाते हैं? क्या उससे हमें शारीरिक ताकत मिलती है? क्या हम आहार जो लेते हैं उसमें पौष्टिक आहार लेते हैं? केवल आहार लेना इतना ही काफी नहीं है बल्कि जो आहार हम ग्रहण करते हैं वह पौष्टिक भी हो इस दृष्टिकोण से हम क्या कर सकते हैं, कैसे विचार कर सकते हैं, और विचारों को कैसे कार्यान्वित कर सकते हैं, उस पर भी हमें सोचना चाहिये। उसके भी सुझाव बहुत आये हैं उन सुझावों को हम आगे करेंगे। SDG 4 जो एजुकेशन के संदर्भ में है, much needs

to be done of the three aspects of what we learn, how we learn, and why we learn. Education does not have universally accepted definition the need and steps in education. This is different for every person and society. One pattern can not fit all countries universally. It is therefore necessary to consider the following एक विचार जब SDG-4 सबके लिये शिक्षा इस विषय पर विचार आया है तो तीन विषयों पर दो दिन में चर्चाएं हुई एक What we learn, How we learn, Where we learn. हम क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं और वह कैसे करते हैं और क्यों करते हैं, यानि आज जो शिक्षण पद्धति है जिसको हम मैकाले की शिक्षण पद्धति कहते हैं। शिक्षण मतलब एजुकेशन इसका कोई यूनिवर्सल (वैश्विक) अधिकृत विचार नहीं है यानि एजुकेशन किसको कहें उसकी कोई व्याख्या नहीं है परिभाषा नहीं है। जब उसकी दुनिया भर में Globally Acceptable इस प्रकार की परिभाषा या व्याख्या अगर नहीं है तो पूरे दुनिया भर का जो शिक्षा का ढांचा है वह एक कैसे हो सकता है? जो अमेरिका में बैठा है वह व्यक्ति और जो चित्रकूट के गाँव में बैठा है वह व्यक्ति, एक ही विषय पढ़ेगा, एक ही तरीके से पढ़ेगा, उसका एक ही रबर स्टैंप मिलेगा, ऐसा विचार पश्चिम का विचार है, मगर यह हमारा विचार नहीं है। इसलिये हमारा विचार जो है, वह है कि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न है, प्रत्येक व्यक्ति की जो ग्रहण शक्ति है वह अलग है, प्रत्येक समाज के लिये शिक्षा अलग होना चाहिये। इसलिये इन सभी विषयों को लेकर एक नई शिक्षण नीति जिसको NEP 2020 कहते हैं, वह बनाया गया है। उसमें इन सभी विषयों का विचार किया गया है। परंतु जैसे-जैसे हम उन विषयों को कार्यान्वित करते हैं तब पता चलता है कि इसमें भी कुछ कमियां हैं। आखिर यह सब मनुष्य निर्मित विचार है इसलिये इसमें कमियां होना स्वाभाविक है, तो इन कमियों को दूर करके हमें शिक्षण पद्धति में ऐसा कैसा और क्या-क्या परिवर्तन लाना चाहिये जिसके आधार पर हम एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करें जो समाज समर्पित हो। इस प्रकार का विचार हम कैसे कर सकते हैं, यह कुल मिलाकर इन दो दिनों में प्रदर्शन में आया है। इसीलिए हमने एक विचार रखा the need and steps in education is different for every person and society. One pattern can not fit all countries universally. It is therefore necessary to consider to include spirituality and moral and ethical values in primary, secondary and higher education by integrating appropriate course material into the pedagogy at these levels. अर्थात् जो प्राइमरी एजुकेशन है, सेकेंडरी एजुकेशन है और हायर एजुकेशन है, इन तीनों स्तरों पर एक दृष्टि से देखा जाये तो केवल मैटेरियलिस्टिक विचार न देते हुए उसके साथ-साथ देश का जो हमारा आध्यात्मिक अधिष्ठान है, देश का जो आध्यात्मिक विचार है उसे सभी विद्यार्थियों तक कैसे पहुचायें? अध्यात्म का मतलब रिलिजन नहीं जिसको हम रिलिजन कहते हैं वह उपासना पद्धति है। उपासना पद्धति और धर्म-अध्यात्म यह सब अलग-अलग विषय हैं, हम उस चर्चा पर अभी नहीं जायेंगे। 2 दिनों में उसकी काफी चर्चाएं हुई है परंतु इतना कहना काफी है कि जो आध्यात्मिक विचार है इस देश का उसको हम सभी विद्यार्थियों तक कैसे पहुंचाएं परंतु इसमें एक बात ध्यान रखनी चाहिये जो प्राइमरी एजुकेशन है, जो स्कूल है, जो स्कूल के बच्चे हैं, 2 से 8 सालों के बच्चों तथा 15-20 साल के विद्यार्थी एवं इंजीनियर-डॉक्टरी पढ़ने वाला जो व्यक्ति है, इन तीनों व्यक्तियों को हम आध्यात्मिक विचार एक ही तरीके से नहीं दे सकते हैं। उनको अलग-अलग तरीके से देना पड़ेगा। तो इसको एक दृष्टि से देखा जाये तो जो सिलेबस है

अथवा जो पढ़ाई करते हैं उसमें हम कैसे उसको समाविष्ट कर सकते हैं। How to include Spiritual Teachings, Ethics and Morality in Education and Make it Part of the Syllabus? यह विचार है। तो यह हम कैसे कर सकते हैं, इस पर अनेक सुझाव आये हैं। उन सुझावों के आधार पर कुछ कार्यवाही करने की आवश्यकता है। दूसरी बात Teach about Indian Knowledge System and include a sense of belonging to the Society to strengthen social bonding. This will help bridge the gap between problems and solutions. जो भारतीय शिक्षण पद्धति Indian Knowledge System है और भारतीय ज्ञान संपदा है उसमें बहुत सी बातें हैं जिसे हम धीरे-धीरे छोड़ भी रहे हैं, भूल भी रहे हैं और कुछ बातों का हमें पता भी नहीं है। तो क्या इन बातों को हम फिर उजागर कर सकते हैं? और इसको आज के संदर्भ में किस तरीके से हम दूसरे लोगों विशेष रूप से विद्यार्थियों तक पहुंचा सकते हैं? छोटे-छोटे उदाहरण हैं, नानाजी अक्सर कहा करते थे कि सबके लिये घर बनना चाहिये, दुनिया में जितने लोग हैं, उनके लिये घर बनना चाहिये। लेकिन घर मतलब क्या? What is housing? What is the house? मतलब जिसमें सीमेंट स्टील है वही घर नहीं है। जो गाँव में रहता है, जो गाँव में उपलब्ध वस्तु है, चीज हैं उनसे वह गाँव में मकान बनाता है और वह मकान भी 50 साल 60-70 साल तक रहता भी है, कुछ टूटा नहीं है क्योंकि उसको पता है कि यहाँ का हवा, तापमान कैसा है, यहाँ का वातावरण कैसा है, यहाँ का माहौल कैसा है, कब गर्मी होगी, कब सर्दियां होगी, कब बारिश होगी, बारिश से हमको कैसे बचना चाहिये, गर्मी से कैसे बचना चाहिये। ऐसी दीवार बनाते थे जो सर्दियों में गर्म और गर्मियों में ठंडा रहती थी। तो यह टेक्नोलॉजी इंडियन नॉलेज सिस्टम है। यह कोई बहुत बड़ा रॉकेट साइंस नहीं है। तो इसको हम क्यों ना समझाएं? कोई सिविल इंजीनियर कॉलेज में पढ़ता है तो उसके लिये घर मतलब स्टील और सीमेंट से ही बनना चाहिये। पर ऐसा कोई नियम नहीं है। तो क्या इंडियन नॉलेज सिस्टम लोगों को नहीं बताना चाहिये? निश्चित रूप से बताना चाहिये। तो यह कैसे हो सकता है? और यह क्यों करना चाहिये? क्योंकि आज जो पढ़ा लिखा व्यक्ति है, उसे पहले एक तो नौकरी चाहिये और नौकरी मिलते ही कहीं विदेश में चले जाना चाहिये, यह जो एक mind set है इससे हमें वापस आकर प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक ऐसा विचार आना चाहिये कि यह समाज तुम्हारा है और तुम इस समाज के हो। समाज और व्यक्ति के बीच में जो बंधन है उसको और सुदृढ़ बनाने के ऐसे विचार को हम इंडियन नॉलेज सिस्टम के द्वारा अंतर्निमिष्ट कर सकते हैं। इस पर काफी लोग बाहर भी काम कर रहे हैं। हम इन सभी लोगों के कामों को इकट्ठा करके साल भर में क्या कर सकते हैं, उसका विचार करेंगे। तो कुल मिलाकर इन सभी विषयों पर दो दिनों में जो विचार हुए हैं और जो सुझाव आये हैं वह यह है कि The conference called up the participants to take up the philosophy of Integral Humanism propounted by Pt. Deendayalji and its practical application as evidenced in Chitrakoot Initiative of Rashtrarishi Nanaji Deshmukh to all stakeholders and policy makers for inclusion and implementation through public policy. अर्थात् जो पब्लिक पॉलिसी, नियम और जो नियोजन करते हैं, चाहे नीति आयोग है, या कोई मंत्रालय तो वे इन विषयों को ध्यान में रखते हुए वह सब काम करें। हम सब ऐसे लोग हैं जिनके कहने पर समाज जिनको सुनेगा और एक दृष्टि से देखा जाये तो आप समाज का नेतृत्व करने वाले लोग हैं। इस प्रकार का विचार हम सभी लोग यहाँ से जब अपने-अपने कार्यक्षेत्र में वापस जाते

हैं, तो हम इन सभी विचारों के बारे में विचार करें और इन विचारों को आगे ले जाने की कोशिश करें। इन दो दिनों में चर्चा करने के उपरांत जो यह ड्राफ्ट तैयार हुआ है, इसमें कुछ विषय और भी जोड़ सकते हैं अथवा कुछ विषय कम हो सकते हैं, इन सभी विषयों के बारे में आप सभी सुझाव देंगे, तो उन्हें भी इस ड्राफ्ट में शामिल कर लिया जायेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद...

Closing Remarks by Sh. Vasant Pandit, Convenor, World SDG Forum

सबको मेरा नमस्ते

कभी हम लोगों ने 3 साल पहले SDG पर काम करने का सोचा था, SDG सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स जो है वह 2015 में यूनाइटेड नेशंस ने इसको तय किया था और बहुत बड़ा संयोग हुआ। 25 सितंबर 2015 को यह SDG के 17 Goals उसकी UN ने घोषणा की और हम सब जानते हैं कि वह पंडित दीनदयाल जी का 100 वर्ष का जन्मदिन था। अगर सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स का जो मूल आधार है, तो वह एकात्म मानव दर्शन का ही सार है। जो दीनदयाल जी ने लिखा और जो नानाजी ने अपना पूरा जीवन इस धरातल पर उतारने हेतु दिया। तो जब से UN ने सस्टेनेबल Goals निकाला था, मैं सोच रहा था कि हम इसको एकात्म मानव दर्शन से कैसे जोड़ें। बहुत प्रयास के बाद 3 साल पहले हम लोगों ने सोचा था कि यह जो भगवान राम की भूमि और नानाजी का कर्मस्थान है। उसमें हम लोग यह काम शोकेस करें।

नानाजी को श्रद्धांजलि स्वरूप और उनकी कर्मभूमि चित्रकूट, जहाँ उन्होंने इसे धरातल पर उतारा, तो हम लोगों ने सोचा यहाँ से ही करना है। पहले SDG कॉन्फ्रेंस अप्रैल 2022 में किया था उसमें हम लोगों ने पूरा विषय समाज के सामने डाला था, वह दूसरी अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में हम लोगों ने SDG 1; कोई गरीब न रहे और SDG 3; सबका

स्वास्थ्य ठीक हो, इन दोनों विषय पर बात किया था। इस बार हम लोगों ने SGD 2 और SDG 4 लिया है। अगली कांफ्रेंस में 5 और 7 लेंगे 5 जेंडर इक्वलिटी (लैंगिक समानता) और SDG 7 जो Clean and Affordable Energy (स्वच्छ और सस्ती ऊर्जा) इन दोनों विषय को लेकर चौथी इंटरनेशनल SDG कॉन्फ्रेंस में हम विमर्श करेंगे। जो अभी दो दिन की चर्चा हुई। इसमें जो मूल चीज निकली और बाकी जो देश से और जो सोचने वाला है वह वही एक पूरा दुनिया घूम के आ गया। नानाजी और दीनदयाल जी बोले थे कि जब तक आध्यत्मिक सोच सरकार और पब्लिक पॉलिसी की नहीं होगी तो हम समाज को बदल नहीं सकते। आज हम लोग अपनी दुनिया को, देश को बर्बाद करते हैं और आगे जा नहीं सकते हैं तो यह आध्यात्मिक सोच बहुत लोग वापस उस पर आ गया है और उसको आगे लेने के लिये हम लोग कोशिश करते हैं। सोच में बदलाव लाना है। मुझे लगता है कि हम उसको एक लाइट स्विच ऑन-ऑफ जैसा नहीं कर सकते हैं। संस्थान का एक कृष्णा देवी स्कूल है जो आदिवासी बालिका का स्कूल है वह मेरा फेवरेट स्कूल है तो हम जाते रहते हैं वहाँ, 1998 में जो पहले बैच के बच्चे थे एक उमा लड़की है जो अभी कुछ काम करती हैं कोई गाँव में वह बहुत ब्राइट गर्ल थी, पढ़ाई के साथ-साथ नृत्य भी अच्छा करती थी। पर जब वह स्कूल छोड़कर गांव वापस गयी, जब वह मुझे स्कूल में मिलती थी तो वह मुझसे बिल्कुल आंख मिलाकर बात करती थी। पर जब वो अपने गांव में पहुंची और वहाँ मुझे मिली, तो घूंघट कर लिया। समाज के दवाब के कारण से उसको ऐसा करना पड़ा। दूसरा बैच जो अभी तीन-चार साल पहले जो पास आउट हुआ है, उन लड़कियों को कभी मैं गाँव में मिलता हूँ, तो वे घूंघट तो नहीं करतीं पर वह ऐसा करते हैं कोशिश करें आंख से आंख भी नहीं मिलाती। पर मेरी उम्मीद है जो तीसरा बैच आयेगा तो उसके बच्चे जैसा मुझे स्कूल में मिलते हैं, वो मुझे गाँव में भी वैसा ही मिलेगा आंख मिलाकर और हँस के। इस उदाहरण को देने का मेरा मतलब ये था कि बदलाव एक दिन में नहीं होंगे, बदलाव दो-तीन पीढ़ियों तक होते हैं।

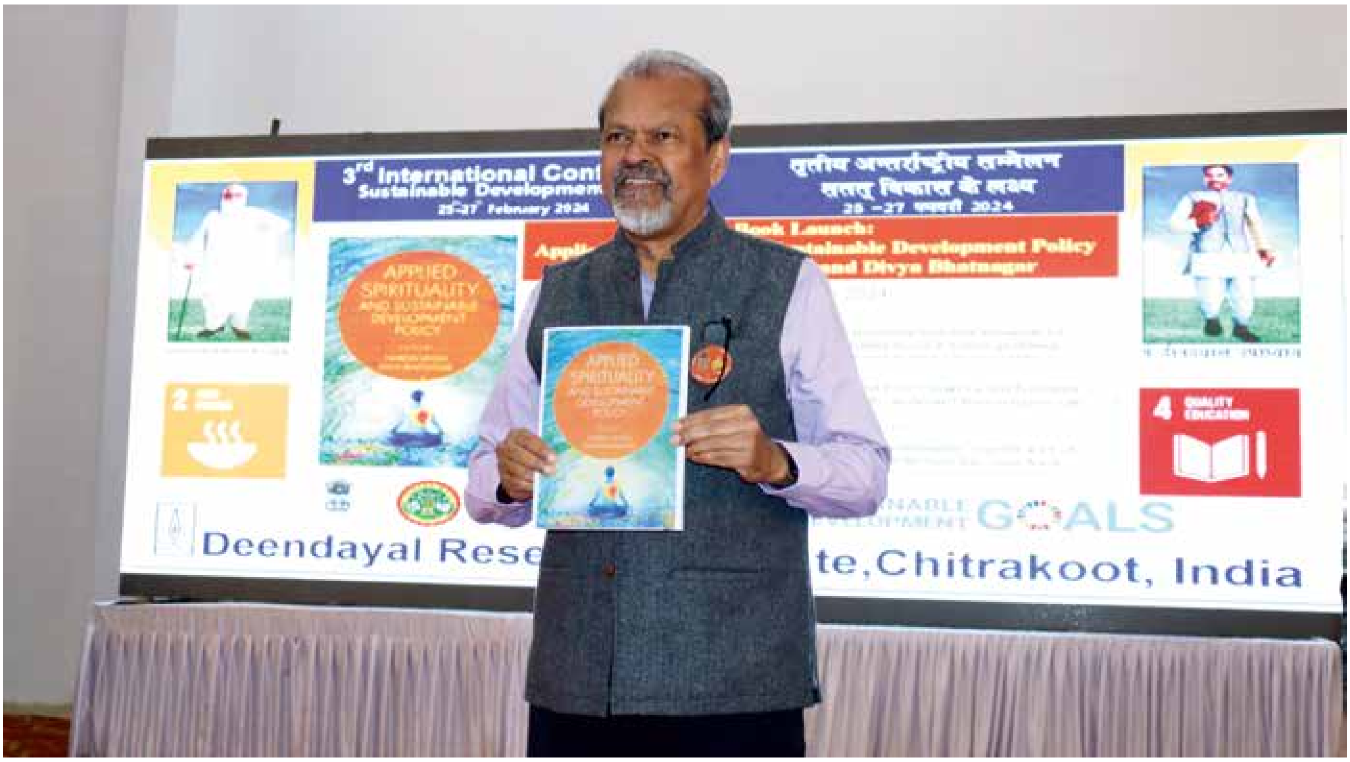

इसी तरह लगता है कि यह जो आध्यत्मिक सोच सरकार में लाना मुझे लगता है कि यह बहुत जल्दी नहीं कर सकते पर उस दिशा में प्रयास करना ही होगा। अगर ऐसा होता है, तो कुछ वर्षों में हम सकारात्मक परिणाम देखेंगे।

वही सब करने के लिये प्रोफेसर नरेश सिंह जी ने एक किताब लिखी है "स्पिरिचुअलिटी एंड पब्लिक पॉलिसी" और जो नानाजी यह चित्रकूट को कहते कि यह Hill of Knowledge अर्थात् ज्ञान का पर्वत, तो यह भगवान राम की भूमि पर और नानाजी का कर्म स्थान आज इस पुस्तक को प्रो. नरेश सबके सम्मुख विमोचित करेंगे।

आप सबके सहयोग से और मदद से कभी मैंने यह SGD पर काम शुरू किया था, संस्थान भी मेरे ऊपर विश्वास रखकर मुझे इसे करने दिया। अब धीरे-धीरे सभी को विषय की समझ आ रही है। मैं आप सबकी लगातार मदद के लिये धन्यवाद करता हूँ।

Closing remarks by Shri Deepak Khandekar:

सबको नमस्कार जो दो दिन यहाँ चर्चा करने को और सुनने को मिली उसे मस्तिष्क में कुछ प्रतिक्रियाएं हुई अब उसे इंप्रेशंस कहें या उसको अपने मनोविचार कहें मैं कुछ आपके सामने रखना चाहता हूँ सबसे पहले तो इंप्रेशन यह है अगर हम पोषण भोजन की बात कर रहे हैं तो हमें अपनी भारतीय परंपरा की जो भोजन व्यवस्था है, हमारी जो स्थानीय भोजन व्यवस्था हर क्षेत्र की है हमें वापस उस पर लौटना है। जिन लोगों ने यह व्यवस्था नहीं छोड़ी उन्हें पोषण की समस्या बहुत कम है जिन लोगों ने यह व्यवस्था छोड़ दी वह ज्यादा ग्रसित है यह एक ऐसा इंप्रेशन है कि हमें अपनी भोजन व्यवस्था वापस लानी है हमारी अपनी जो वास्तविक भोजन व्यवस्था थी या है वह हमारे सारे पोषक तत्वों को सम्मिलित करते हुए बनी थी और वही हमारे लिये सर्वोत्तम है। हर स्थान की

अपनी एक भोजन व्यवस्था है, उसकी एक भोजन पद्धति है हमें वह हर स्थान की भोजन पद्धति उसे यथावत बनाए रखें यह हमारी एक बहुत बड़ी आवश्यकता है, यदि हम कुपोषण से भलीभांति लड़ना चाहते हैं। हमें यह करना ही पड़ेगा यह सबसे पहली बात मुझे जो लगी कि मैं आपके सामने कहूँ। दूसरी जो बात आई की 'जीरो हंगर' हम कहते हैं लेकिन गेहूँ चावल की बात किसी ने नहीं की भोजन है लेकिन पोषण नहीं है यह दूसरा इंप्रेशन है खाना हम खा रहे हैं लेकिन जो पोषक तत्व हमें मिलना चाहिये खास तौर पर प्रोटीन की बात हुई माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की बात हुई वह हमें नहीं मिल रहे हैं या कम मिल रहे हैं या इतने कम मिल रहे हैं कि वह एक समस्या है। अपनी चर्चा में हम नीति के रूप में शिशुओं की बात करते हैं उनके पोषण की बात करते हैं। गर्भवती माता की बात करते हैं उनके पोषण की बात करते हैं लेकिन यह सभी आयु वर्ग की समस्या है। ऑस्टियोपोरोसिस की बात हुई कि 40-45 की उम्र में हम जो कहते हैं कैल्शियम नहीं है नतीजा यह होता है कि 70 की उम्र में वह हमको दुर्गति देखनी पड़ती है। तो स्पष्ट है कि पोषण एक ऐसी समस्या है जो सभी आयु वर्ग की है तो इसलिये हर आयु वर्ग के हिसाब से भी हमको पोषण क्या होना चाहिये, भोजन क्या होना चाहिये, वह ध्यान देने की आवश्यकता है। एक और जो बड़ी बात सामने आई हम अभी तक यह मानते हैं कि पोषण जो है वह गरीबों की समस्या है। भोजन की अनुपलब्धता या पोषक तत्वों की कमी गरीबों की समस्या ज्यादा है। लेकिन यह सब की समस्या है जो हमारा सबसे अमीर वर्ग है वह भी आज की तारीख में सुपोषित नहीं है। हम जो खा रहे हैं वह हमारे शरीर के लिये, हमारे लिये, हमारे जीवन के लिये उतना उपयुक्त अब नहीं रहा है। तो अब यह बड़ी भारी समस्या हो गई है सभी वर्गों की समस्या है और खास तौर पर शहरी वर्ग जो खाना खा रहा है, उसमें पोषण का बहुत अभाप है। तो यह एक और इंप्रेशन है जिस पर फोकस करके विचार करने की जरूरत है। एक बात आई कि हमें खाना क्या है? हम इस पर चर्चा तो कर लेते हैं लेकिन खाते क्या है जो उगाएंगे वह। कहेंगे जो उग गया है वह खा रहे हैं अब नीति यह होनी चाहिये की जो खाना है वह उगाना है। जब तक हम इस नीति पर नहीं जायेंगे तब तक क्या खाना है किस तरह से पोषण हो यह चर्चा बहुत ज्यादा मायने नहीं रखेगी यहाँ बहुत बड़ी चर्चा हुई। श्रीअन्न पर, दालों पर, सब्जियों पर, फलों पर वगैरा-वगैरा लेकिन एक बात सामने ये आयी कि किसान अंततः वही उगाएगा जो उसके लिये लाभप्रद होगा। वह अगर गेहूँ चावल है तो गेहूँ चावल हो गया तो गेहूँ चावल खाना है अब श्रीअन्न सबसे लाभप्रद कैसे हो दालों की खेती सबसे लाभप्रद कैसे हो हमें तकनीक पर भी ध्यान देना है और नीति पर भी ध्यान देना है यह दोनों चीज हमें आप कैसे करनी है यह फोकस करना है यह बहुत बड़ा इंप्रेशन इस पूरी चर्चा में आया कि जो उग गया वह खाने से काम नहीं चलेगा जो खाना है वह उगाना है यह नीति बनानी पड़ेगी प्रसंस्करण की बात हुई प्रसंस्करण में भी वही समस्या या नीति बनानी पड़ेगी। जो बाजार में सबसे सस्ता सुंदर सुलभ पैकेट है वो लाते हैं, खरीदते हैं, खोलते हैं, खा लेते हैं। शरीर के लिये कितना सुंदर सुलभ है नहीं मालूम अब प्रसंस्करण भी वैसा होना चाहिये कि जो खाना है वो प्रसंस्करण कर यह मार्केट ड्रिवन एक्सरसाइज जो manufactures के लिये सप्लायर के लिये लाभ होगा वो बाजार में बन जायेगा वो हो जायेगा फिर वो खा ले

तो ये भी एक बहुत बड़ी नीति जो परिवर्तन लाने की जरूरत है कि जो खाना है उसका प्रसंस्करण कैसे सबसे लाभप्रद हो सबसे सुलभ हो सबसे सुंदर हो सबसे सस्ता हो यह हमको तकनीक और नीति दोनों पर सोचने की जरूरत पड़ गई है यह कुछ इंप्रेशन थे जो मैंने सोचा कि आपके सामने मैं जरूर प्रस्तुत करूँ आपने मुझे सुना यहाँ बुलाया मुझे सम्मानित किया उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद...

News Coverage of the Conference

25th February 2024

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर डीआरआई परिसर में हुआ सेमिनार

चित्रकूट,(प्रचण्ड शक्ति न्यूज)। भारत रत्न नानाजी देशमुख के निर्वाण के 14 वर्ष पूर्ण होने पर उनकी 14वीं पुण्यतिथि पर 25-26-27 फरवरी को दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, विवेकानंद सभागार व बाल कला भवन में पांच अलग-अलग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन व संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। जिसका शुभारम्भ रविवार को सतना सांसद गणेश सिंह, बांदा चित्रकूट के सांसद आरके सिंह पटेल, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंका कानूनगो, बेस्ट इंडीज के प्रो नरेश सिंह, राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो मुकेश पांडे, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा, पदम उमाशंकर पांडे, मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री उषा ठाकुर, डॉ त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डॉ शांतनु दुबे, डॉ एसआरके सिंह, डॉ अंबेडकर महू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डीके शर्मा, डॉ शेषाद्री चारी, गजानन डांगे आदि विद्युत जनों के आतिथ्य में किया गया। सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक बसंत पंडित ने बताया कि 1968 में भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) ने चित्रकूट में पानी की कमी, आदिवासी बहुल और दूरदराज के इलाकों में संघर्ष मुक्त और आत्मनिर्भर गांवों के लिए अपने दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया है।

संस्थान की परियोजनाएं और उसके कार्य विशेष रूप से कृषि, जलवायु अनुकूल कृषि व बागवानी, आय सृजन और वित्तीय स्थिरता, जल और स्वच्छता, स्वास्थ्य और ज्ञान सह-निर्माण पर केंद्रित है और इन्हें बीड और गोंडा में सक्रिय रूप से दोहराया जा रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नाना जी ने ग्रामीण विकास के पांच लक्ष्य रखे जो भारत की जीवन शैली के अभिन्न अंग है। सतत विकास के लक्ष्य को संयुक्त राष्ट्र ने आईपर किया है। सतत विकास लक्ष्यों में एकात्म मानव दर्शन का बोध होता है। उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए डीआरआई के महाप्रबंधक अमिताभ वशिष्ठ ने बताया कि इस सम्मेलन के माध्यम से एसडीजी को प्राप्त करने में अपने प्रयासों के प्रमुख एजेंडे के रूप में मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास को बढ़ावा देने के लिए यह विमर्श सकारात्मक दिशा के रूप में कार्य करेगा। अपने उद्बोधन में सतना सांसद गणेश सिंह ने कहा कि पिछले 3 वर्षों से लगातार सतत विकास पर चर्चा हो रही है। पूरी दुनिया में कई ऐसी समस्याएं है जो एक जैसी है और इन समस्याओं का कहीं ना कहीं हल निकलना चाहिए, सतत विकास होना चाहिए, जो प्रकृति के अनुकूल हो। मध्य प्रदेश की पूर्व मंत्री उषा ठाकुर ने कहा कि हम इस आयोजन के माध्यम से भारत-भारतीयता और सनातन के तौर तरीकों को यहां सीखने का प्रयास कर रहे है। जब तक विश्व सनातन वैदिक तौर तरीकों की ओर नहीं मुड़ेगा जब तक सुख शांति की कल्पना नहीं हो सकती। यहाँ विविध सेमिनारों व कार्यशालाओं के अन्तर्गत भारतीय प्राकृतिक खेती एवं मानव स्वास्थ्य, पौधों की किस्म और किसानों के अधिकारों का संरक्षण अधिनियम, मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण में पोषक अनाजों का महत्व, कृषक उत्पादक संगठन में कार्यकर्ताओं में कौशल संवर्धन एवं उद्यमिता के अलावा महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका पर अलग-अलग स्थानों पर सेमिनार आयोजित किये जा रहे है। दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, बाल कला भवन एवं विवेकानंद सभागार में पांच अलग-अलग स्थान पर सेमिनार व कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। इस आयोजन में कई विश्वविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं की भागीदारी के साथ देशभर से प्रमुख विषय विशेषज्ञ चित्रकूट पधार चुके है।

02 भोपाल, सोमवार 26 फरवरी 2024

पन्ना, सागर, छतरपुर, सतना

दैनिक शौर्य टाईम्स

भारत रत्न नानाजी देशमुख की पुण्यतिथि के कार्यक्रमों का शुभारंभ

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर चित्रकूट के दीनदयाल परिसर में 5 स्थानों पर शुरू हुए सेमिनार, कार्यशाला एवं सम्मेलन

सतत विकास के लक्ष्यों पर आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में कई देशों व विभिन्न विश्वविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं से ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ पहुंचे चित्रकूट

दैनिक शौर्य टाईम्स

आचा

भारत रत्न नानाजी देशमुख की पुण्यतिथि के कार्यक्रमों का शुभारंभ

चित्रकूट।

भारत रत्न नानाजी देशमुख के निर्वाण के 14 वर्ष पूर्ण होने पर उनकी 14वीं पुण्यतिथि पर 25 से 27 फरवरी के बीच दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, विवेकानंद सभागार एवं बाल कला भवन में पांच अलग-अलग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन व संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। जिसका शुभारम्भ रविवार को सतना सांसद गणेश सिंह, बांदा चित्रकूट के सांसद आरके सिंह पटेल, प्रियंका कानूनगो, प्रो. नरेश सिंह, प्रो. अरविंद शुक्ला, प्रो. मुकेश पांडेय, डॉ. भरत मिश्रा, उमाशंकर पांडेय, ऊषा ठाकुर, डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, डॉ. शांतनु दुबे, डॉ. एसआरके सिंह, डॉ. अंबेडकर महू, प्रो. डीके शर्मा, डॉ. शेषाद्री चारी, गजानन डांगे आदि विद्युत जनों के आतिथ्य में किया गया।

चित्रकूट में रखा प्रकृति का ध्यान

सांसद गणेश सिंह ने कहा कि पिछले 3 वर्षों से लगातार सतत विकास पर चर्चा हो रही है। पूरी दुनिया में कई ऐसी समस्याएं हैं जो एक जैसी हैं और इन समस्याओं का कहीं ना कहीं हल निकालना चाहिए, सतत विकास होना चाहिए, जो प्रकृति के अनुकूल हो। चित्रकूट पर उन्होंने कहा कि चित्रकूट संतों की भूमि रही है प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है। 90 के दशक में नानाजी चित्रकूट आए उन्होंने प्रकृति का पूरा ध्यान रखा। जीवन और समाज निर्माण के विभिन्न बिंदुओं पर उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में काम खड़ा किया। सुश्री ठाकुर ने कहा कि हम इस आयोजन के माध्यम से भारत-भारतीयता और सनातन के तौर तरीकों को यहां सीखने का प्रयास कर रहे हैं। जब तक विश्व सनातन वैदिक तौर तरीकों की ओर नहीं मुड़ेगा जब तक सुख शांति की कल्पना नहीं हो सकती। नानाजी की पुण्यतिथि मनाने के पीछे उनके कृतित्व और उन्होंने जो जिया है जो सोच उनकी रही है उसे धरातल पर उतरना हम सब की जिम्मेदारी है।

स्वदेश

सतना - नव स्वदेश

26 Feb 2024

नव स्वदेश 02
सतना, सोमवार 26 फरवरी 2024

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि | चित्रकूट में कार्यक्रमों का शुभारंभ

पांच स्थानों पर शुरू हुए सेमिनार, कार्यशाला व सम्मेलन

चित्रकूट, (नव स्वदेश)।

भारत रत्न नानाजी देशमुख के निर्वाण के 14 वर्ष पूर्ण होने पर उनकी 14 वीं पुण्यतिथि पर 25-26-27 फरवरी को दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, विवेकानंद सभागार व बाल कला भवन में पांच अलग-अलग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन व संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। जिसका शुभारम्भ रविवार को सतना सांसद गणेश सिंह, बांदा चित्रकूट के सांसद आरके सिंह पटेल, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंका कानूनगो, वेस्ट इंडीज के प्रो नरेश सिंह, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो मुकेश पांडे, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा, पदम श्री उमाशंकर पांडे, मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री सुश्री उषा ठाकुर, डॉ त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डॉ शांतनु दुबे, डॉ एसआरके सिंह, डॉ अंबेडकर महू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डीके शर्मा, डॉ शेषाद्री चारी, गजानन डांगे आदि विद्वतजनों के आतिथ्य में किया गया।

किसने क्या कहा-

सुश्री उषा ठाकुर, पूर्व मंत्री - हम इस आयोजन के माध्यम से भारत- भारतीयता और सनातन के तौर तरीकों को यहां सीखने का प्रयास कर रहे हैं। जब तक विश्व सनातन वैदिक तौर तरीकों की ओर नहीं मुड़ेगा जब तक सुख शांति की कल्पना नहीं हो सकती।

गणेश सिंह, सांसद - पिछले 3 वर्षों से लगातार सतत विकास पर चर्चा हो रही है। पूरी दुनिया में कई ऐसी समस्याएं है जो एक जैसी है और इन समस्याओं का कहीं ना कहीं हल निकालना चाहिए, सतत विकास होना चाहिए, जो प्रकृति के अनुकूल हो।

[illegible], महानिदेशक डीआरआई - इस सम्मेलन के माध्यम से एसडीजी को प्राप्त करने में अपने प्रयासों के प्रमुख एजेंडे के रूप में मजबूत, टिकाऊ और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए यह विमर्श सकारात्मक दिशा के रूप में कार्य करेगा।

इन्होंने भी दिया उद्बोधन

उद्घाटन अवसर पर जिंदल स्कूल आफ गवर्नमेंट एंड पब्लिक पॉलिसी के कार्यकारी डीन वेस्टइंडीज के प्रोफेसर नरेश सिंह, डॉ शेषाद्री चारी, गजानन डांगे, बांदा सांसद आरके सिंह पटेल द्वारा भी अपना उद्बोधन दिया गया।

रखे विकास के पांच लक्ष्य

सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक वसंत पंडित ने बताया कि 1968 में भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) ने चित्रकूट में पानी की कमी, आदिवासी बहुल और दुरदराज के इलाकों में संघर्ष मुक्त और आत्मनिर्भर गांवों के लिए अपने दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया है। संस्थान की परियोजनाएं और उसके कार्य विशेष रूप से कृषि, जलवायु अनुकूल कृषि / वानिकी, आय सृजन और वित्तीय विकास, जल और स्वच्छता, स्वास्थ्य और ज्ञान सह-निर्माण पर केंद्रित है और इन्हें बीहड़ और गांव में सक्रिय रूप से दोहराया जा रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नाना जी ने ग्रामीण विकास के पांच लक्ष्य रखे जो भारत की जीवन शैली के अभिन्न अंग है। सतत विकास के लक्ष्य को संयुक्त राष्ट्र ने अंगीकृत किया है। सतत विकास लक्ष्यों में एकात्म मानव दर्शन का बोध होता है।

4 page3news www.page3newsthai.com
27 FEBRUARY, 2024
Page3News
INDIA

On the death anniversary of Nanaji, exhibition of nutritious grains " Shri Anna " inaugurated

Page3News / Sandeep Richhariya
• Chitrakoot / 26 Feb.

On the 14th death anniversary of Bharat Ratna Rashtrarishi Nanaji Deshmukh, an exhibition of nutritious grains " Shri Anna " was organized at Deendayal Complex, Chitrakoot. The exhibition was inaugurated by Satna MP Ganesh Singh, Chairman of the National Commission for Protection of Child Rights Priyanka Kanungo, Prof. Naresh Singh of BEST India, Rajmata Vijayaraje, Vice Chancellor of Scindia Agricultural University, Gwalior, Prof. Arvind Shukla, Vice Chancellor of Jhansi University, Prof. Mukesh Pandey, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University. Mhow Vice Chancellor Dr. Bharat Mishra, Padma Shri Umashankar Pandey, former Madhya Pradesh Government Minister Ms. Usha Thakur, Dr. Trilochan Mahapatra, Atari Director Dr. Shantanu Dubey, Dr. SRK Singh, Dr. Ambedkar Mhow University Vice Chancellor Prof. DK Sharma, Dr. Sheshadri Chari, Gajanan It was done by lighting the lamp by Dange and Satna Collector Anurag Verma and Superintendent of Police Ashutosh Gupta.

After the inauguration the exhibition was visited by all the guests. Vijay Gautam, scientist of Agricultural Science Center, Chitrakoot, in-charge of the exhibition, said that the consumption of coarse grains, which is considered a storehouse of nutrients, seems to be increasing continuously. Not only this, the year 2023 was celebrated as International Year of Millet. People are becoming more aware of millets and including them in their diet. Millets are cheaper than wheat and rice and are better for nutrition due to the presence of high protein, fibre, vitamins and iron etc.

In this exhibition , Agricultural Science Center Majhgawan, Ganiwan, Chhatarpur, Rewa, Katni, Umaria, Narsinghpur, Shahdol, Damoh, Dindori, Sidhi, Sagar, Panna, as well as Food Science Department, Animal Husbandry and Dairy Department of Jawaharlal Nehru Agricultural University, Satna, Madhya Pradesh Biodiversity Board, Bhopal along with display of endangered species, display of value added and organic pesticides of Shree Anna, value added products of mushroom and information about the training programs being conducted by Jan Shikshan Sansthan, Chitrakoot to make them self-reliant and self-reliant. The products made by the trainees were also displayed. Apart from this, a special exhibition has been organized to collect various information and make people aware. On this occasion, an exhibition was organized by the National Commission for Protection of Child Rights (NCPCR) on the principles of universality and integrity of child rights keeping in mind the equal protection of all children in the age group of 0 to 18 years.

26th February 2024.

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर डीआरआई परिसर में हुआ सेमिनार

चित्रकूट,(प्रचण्ड शक्ति न्यूज)। भारत रत्न नानाजी देशमुख के निर्वाण के 14 वर्ष पूर्ण होने पर उनकी 14वीं पुण्यतिथि पर 25-26-27 फरवरी को दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, विवेकानंद सभागार व बाल कला भवन में पांच अलग-अलग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन व संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। जिसका शुभारम्भ रविवार को सतना सांसद गणेश सिंह, बांदा चित्रकूट के सांसद आरके सिंह पटेल, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंका कानूनगो, बेस्ट इंडीज के प्रो नरेश सिंह, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो मुकेश पांडे, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा, पदम उमाशंकर पांडे, मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री उषा ठाकुर, डॉ त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डॉ शांतनु दुबे, डॉ एसआरके सिंह, डॉ अंबेडकर महू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डीके शर्मा, डॉ शेषाद्री चारी, गजानन डांगे आदि विद्युत जनो के आतिथ्य में किया गया। सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक बसंत पंडित ने बताया कि 1968 में भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) ने चित्रकूट में पानी की कमी, आदिवासी बहुल और दूरदराज के इलाकों में संघर्ष मुक्त और आत्मनिर्भर गांवों के लिए अपने दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया है।

संस्थान की परियोजनाएं और उसके कार्य विशेष रूप से कृषि, जलवायु अनुकूल कृषि व वानिकी, आय सृजन और वित्तीय स्थिरता, जल और स्वच्छता, स्वास्थ्य और ज्ञान सह-निर्माण पर केंद्रित है और इन्हें बीड और गोंडा में सक्रिय रूप से दोहराया जा रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नाना जी ने ग्रामीण विकास के पांच लक्ष्य रखे जो भारत की जीवन शैली के अभिन्न अंग है। सतत विकास के लक्ष्य को संयुक्त राष्ट्र ने आदॉप्ट किया है। सतत विकास लक्ष्यों में एकात्म मानव दर्शन का बोध होता है। उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए डीआरआई के महाप्रबंधक अमिताभ वशिष्ठ ने बताया कि इस सम्मेलन के माध्यम से एसडीजी को प्राप्त करने में अपने प्रयासों के प्रमुख एजेंडे के रूप में मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास को बढ़ावा देने के लिए यह विमर्श सकारात्मक दिशा के रूप में कार्य करेगा। अपने उद्बोधन में सतना सांसद गणेश सिंह ने कहा कि पिछले 3 वर्षों से लगातार सतत विकास पर चर्चा हो रही है। पूरी दुनिया में कई ऐसी समस्याएं है जो एक जैसी है और इन समस्याओं का कहीं ना कहीं हल निकालना चाहिए, सतत विकास होना चाहिए, जो प्रकृति के अनुकूल हो। मध्य प्रदेश की पूर्व मंत्री उषा ठाकुर ने कहा कि हम इस आयोजन के माध्यम से भारत-भारतीयता और सनातन के तौर तरीकों को यहां सीखने का प्रयास कर रहे है। जब तक विश्व सनातन वैदिक तौर तरीकों की ओर नहीं मुड़ेगा जब तक सुख शांति की कल्पना नहीं हो सकती। वहीं विविध सेमिनारों व कार्यशालाओं के अन्तर्गत भारतीय प्राकृतिक खेती एवं मानव स्वास्थ्य, पौधों की किस्म और किसानों के अधिकारों का संरक्षण अधिनियम, मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण में पोषक अनाजों का महत्व, कृषक उत्पादक संगठन में कार्यकर्ताओं में कौशल संवर्धन एवं उद्यमिता के अलावा महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका पर अलग-अलग स्थानों पर सेमिनार आयोजित किये जा रहे है। दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, बाल कला भवन एवं विवेकानंद सभागार में पांच अलग-अलग स्थान पर सेमिनार व कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। इस आयोजन में कई विश्वविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं की भागीदारी के साथ देशभर से प्रमुख विषय विशेषज्ञ चित्रकूट पधार चुके है।

4 सतना-आसपास स्टार सतना, मंगलव

नानाजी की पुण्यतिथि पर पोषक अनाज 'श्री अन्न' प्रदर्शनी का हुआ उद्घाटन

प्रशिक्षणार्थियों के उत्पादों की लगी प्रदर्शनी

स्टार समाचार | चित्रकूट

भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल परिसर चित्रकूट में पोषक अनाज "श्री अन्न" प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ सतना सांसद गणेश सिंह, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंका कानूनगो, बेस्ट इंडीज के प्रो नरेश सिंह, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो मुकेश पांडे, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भरत मिश्रा, उमाशंकर पाण्डेय, मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री उषा ठाकुर, डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डॉ. शांतनु दुबे, डॉ. एसआरके सिंह, डॉ. अंबेडकर महू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डीके शर्मा, डॉ. शेषाद्री चारी, गजानन डांगे एवं सतना कलेक्टर अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। उद्घाटन उपरांत सभी अतिथियों द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। प्रदर्शनी के प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र चित्रकूट के वैज्ञानिक विजय गौतम ने बताया कि पोषक तत्वों का भंडार माने जाने वाले मोटे अनाज की खपत लगातार बढ़ती नजर आ रही है। इस प्रदर्शनी में कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां, गनीवां, छतरपुर, रीवा, कटनी, उमरिया, नरसिंहपुर, शहडोल, दमोह, डिण्डौरी, सीधी, सागर, पन्ना,के साथ-साथ जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के खाद्य विज्ञान विभाग, पशु पालन एवं डेयरी विभाग सतना, मध्यप्रदेश जैव विविधता बोर्ड भोपाल द्वारा संकटग्रस्त प्रजातियों के प्रदर्शन के साथ श्री अन्न के मूल्यवर्धित व जैविक कीटनाशकों का प्रदर्शन, मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद एवं जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा आत्मनिर्भर तथा स्वावलम्बी बनाने हेतु संचालित किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी के साथ साथ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाये गए उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।

स्वसहायता समूहों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी

जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा भारत रत्न राष्ट्रऋषि नाना जी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर महिला सशक्तिकरण में स्वसहायता समूहों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी का आयोजन दीनदयाल परिसर स्थित बाल कला भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि उषा ठाकुर पूर्व पर्यटन व संस्कृति मंत्री मध्यप्रदेश शासन, कृष्ण मोहन मोघे पूर्व सांसद खरगौन, शिवमोहन मिश्र देव संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ रन्जन द्विवेदी पोस्ट डॉक्टोरल फैलो आई सी एस एस आर, विकास कुमार सहायक प्रबंधक डी आई सी, सन्ध्या उपेंद्र कुलकर्णी एवं जन शिक्षण संस्थान के निदेशक अनिल कुमार सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 10 स्वसहायता समहों एवं जन शिक्षण संस्थान के 75 अनुदेशकों सहित लगभग 305 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

मातृशक्ति के स्वास्थ्य पर कार्यशाला | नानाजी की पुण्यतिथि पर आयोजित विभिन्न संगोष्ठी एवं कार्यशाला की विचार श्रंखला में दूसरे दिन दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में प्रथम सत्र में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने एवं द्वितीय सत्र में पौध किस्म संरक्षण और तृतीय सत्र में मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य व पोषण में पोषक तत्व का महत्व पर विषय विशेषज्ञों द्वारा विस्तृत जानकारी रखी गई। प्रथम सत्र में डॉ. शिव शंकर सिंह, पदम श्री उमाशंकर पाण्डेय, श्याम बिहारी गुप्त एवं मोहम्मद असलम खान ने रासायनिक खेती के दुष्प्रभाव को विस्तार से बताया। द्वितीय सत्र में पौधों की किस्म का संरक्षण एवं पंजीयन कृषक अधिकार प्राधिकरण के सत्र में डॉ त्रिलोचन महापात्रा अध्यक्ष और डॉ. डीके अग्रवाल रजिस्टार जनरल, यूके दुबे डिप्टी रजिस्टार, डॉ. रवि प्रकाश एवं राज सिंह कुशवाहा ने विस्तार से कैसे देसी किस्म की खेती करें अनुभव साझा किया। तृतीय सत्र में डॉ आर एस ठाकुर ने मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य, पोषक अनाज का महत्व को विस्तार से बताया।

शुरू हुआ मानस पाठ, श्रद्धांजलि के साथ आज होगा भंडारा

भारतरत्न नानाजी देशमुख को 14 वीं पुण्यतिथि पर 26 फरवरी को प्रातः 7 बजे से श्रीरामचरितमानस पाठ का शुभारंभ हो चुका है, इस अवसर पर दीनदयाल परिसर में आयोजित मानस पाठ में पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ त्रिलोचन महापात्रा, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो, डीआरआई के प्रधान सचिव अतुल जैन, संगठन सचिव अभय महाजन, कोषाध्यक्ष वसंत पंडित, महाप्रबंधक अमिताभ वशिष्ट ने पूजा स्थल पर पहुंचकर मानस पाठ में सहभागिता की। 27 फरवरी को हवन के पश्चात दीनदयाल परिसर चित्रकूट के पंडित दीनदयाल उपाध्याय पार्क में बने राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख के श्रद्धा स्थल के समक्ष श्रद्धांजलि का कार्यक्रम रहेगा। उसके पश्चात प्रातः 10 बजे से साधु संतों के प्रसाद के बाद भंडारा का आयोजन होगा। कार्यक्रम जन सहभागिता से ही संपन्न हो रहा है, जिसके लिए चित्रकूट क्षेत्र के कई गांव एवं देश भर के कई स्थानों से नानाजी से जुड़े हुए तथा उनके कार्य के प्रति आस्था रखने वाले लोगों का चित्रकूट आना शुरू हो गया है। इस आयोजन को लेकर आयोजक मंडल द्वारा सारी तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के प्रबंध मंडल के सभी सदस्य नानाजी के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में चित्रकूट आ चुके हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन एवं संगठन सचिव अभय महाजन ने सभी से आग्रह किया है कि श्रद्धांजलि एवं भंडारा प्रसाद के लिए आम जनमानस सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

नानाजी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी

सतना @ पत्रिका. भारत रत्न नानाजी देशमुख की 14वीं पुण्यतिथि पर तीन दिवसीय कार्यक्रमों की कड़ी में रविवार को कार्यक्रम हुआ। इसका शुभारंभ सतना सांसद गणेश सिंह और बांदा-चित्रकूट सांसद आरके पटेल की मौजूदगी में हुआ। इस दौरान प्रियंका कानूनगो, प्रो. नरेश सिंह, प्रो. अरविंद शुक्ला, प्रो. मुकेश पांडे, डॉ. भरत मिश्रा, उमाशंकर पांडे, उषा ठाकुर आदि अतिथि मौजूद थे। कार्यक्रम दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, विवेकानंद सभागार व बाल कला भवन में पांच अलग-अलग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर के सम्मेलन व संगोष्ठी के रूप में हो रहे हैं।

एक मुट्ठी अनाज एवं एक रूपये के अंशदान से होगा नानाजी की 14वीं पुण्यतिथि पर विशाल भंडारा

नवभारत न्यूज

चित्रकूट 23 फरवरी, राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि कार्यक्रम के भले ही 3-4 दिन शेष है लेकिन जन सहभागिता का भाव गांव-गांव दिखाई दे रहा है।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्टीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने बताया कि नानाजी ने गांवों के विकास में जनता की पहल और सहभागिता को ही अपना ध्येय माना इसलिए पिछले 13 वर्षों से उनकी पुण्यतिथि का कार्यक्रम जन सहभागिता से ही संपन्न होता आ रहा है। नानाजी की पुण्यतिथि के अवसर पर ग्रामीण जनों को कृषि, पशुपालन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार, विवाद मुक्त ग्राम और अन्य क्षेत्रों की विभिन्न योजनाओं एवं प्रगति की जानकारी देने हेतु कार्यक्रम आयोजित होते आ रहे हैं। इसलिए नानाजी की 14 वीं पुण्यतिथि 27 फरवरी का कार्यक्रम भी जन सहभागिता से संपन्न होगा। इसके लिए प्रत्येक घर से कम से कम एक मुट्ठी अनाज और कम से कम एक रूपया अंशदान सहयोग रूप में आह्वान किया गया है। श्री महाजन ने कहा कि नानाजी स्थूल रूप से गए लेकिन उनके प्रति आस्था आज भी विद्यमान है, यहां लोगों में प्रबल आस्था दिखती है। ऐसी ही कुछ आस्था चित्रकूट क्षेत्र के ग्राम वासियों में भारत रत्न नानाजी देशमुख के लिए दिखी। मझगवां विकासखंड और चित्रकूट जनपद के गांव-गांव में आस्था के प्रति सहभागिता का नजारा देखने लायक है। नानाजी की पुण्यतिथि के लिए ग्रामवासी बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने में लगे हुए हैं। इसके लिए दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ ग्रामवासी एवं चित्रकूट के नगर वासी एकत्रीकरण में लगे हुए हैं। टोली के रूप में सभी लोग मझगवां एवं चित्रकूट जनपद के अधिकांश गांव एवं घरों तक पहुंच रहे है, पुण्यतिथि कार्यक्रम का आमंत्रण दिया जा रहा है और सहयोग की अपेक्षा की जा रही है। पुण्यतिथि का यह कार्यक्रम 26 फरवरी को प्रात: 7:00 बजे से अखंड मानस पाठ के साथ प्रारंभ होकर 27 फरवरी को हवन के पश्चात भंडारा प्रसाद के साथ संपन्न होगा। यह सारा कार्यक्रम दीनदयाल परिसर उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट में संपन्न होगा। श्रद्धांजलि एवं भंडारा प्रसाद के लिए आम जनमानस सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

भारत रत्न नानाजी देशमुख की पुण्यतिथि पर सम्मेलनों व संगोष्ठी का हुआ शुभारंभ

चित्रकूट (एसएनबी)। भारत रत्न नानाजी देशमुख की पुण्य तिथि पर दीनदयाल परिसर में तीन दिवसीय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन व संगोष्ठी का शुभारम्भ रविवार को हुआ। जिसमें नानाजी के योगदान पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक वसंत पंडित ने बताया कि 1968 में भारत रत्न नानाजी देशमुख ने स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान ने चित्रकूट में पानी की कमी, आदिवासी बहुल और दूरदराज के इलाकों में संघर्ष मुक्त और आत्मनिर्भर गांवों के लिए अपने दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नानाजी ने ग्रामीण विकास के पांच लक्ष्य रखें जो भारत की जीवन शैली के अभिन्न अंग है। डीआरआई के महाप्रबंधक अमिताभ वशिष्ठ ने बताया कि इस सम्मेलन के माध्यम से एसडीजी को प्राप्त करने में अपने प्रयासों के प्रमुख एजेंडे के रूप में मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास को बढ़ावा देने के लिए यह विमर्श सकारात्मक दिशा के रूप में कार्य करेगा। सतना सांसद गणेश सिंह ने कहा 90 के दशक में नानाजी चित्रकूट आए उन्होंने प्रति का पूरा ध्यान रखा। जीवन और समाज निर्माण के विभिन्न बिंदुओं पर उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में काम खड़ा किया।

उद्घाटन अवसर पर जिंदल स्कूल आफ गवर्नमेंट एंड पब्लिक पलिसी के कार्यकारी डीन वेस्टइंडीज के प्रो. नरेश सिंह, डा. शेषाद्री चारी, गजानन डांगे, बांदा सांसद आरके सिंह पटेल ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सोमवार को छात्र शक्ति द्वारा नानाजी देशमुख स्मृति विशाल तिरंगा यात्रा ग्रामोदय विश्वविद्यालय से भरत घाट तक निकाली जाएगी। इस मौके पर कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मुकेश पांडे, ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डा. भरत मिश्रा, उमाशंकर पांडे, पूर्व मंत्री उषा ठाकुर, डा. त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डा. शांतनु दुबे, डा. एसआरके सिंह आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

स्वदेश

सतना - नव स्वदेश

24 Feb 2024

नानाजी की पुण्यतिथि के लिए बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे ग्रामवासी

चित्रकूट, (नव स्वदेश)।

राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि कार्यक्रम के भले ही 3-4 दिन शेष है लेकिन जन सहभागिता का भाव गांव-गांव दिखाई दे रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव अभय महाजन ने बताया कि नानाजी ने गांवों के विकास में जनता की पहल और सहभागिता को ही अपना ध्येय माना इसलिए पिछले 13 वर्षों से उनकी पुण्यतिथि का कार्यक्रम जन सहभागिता से ही संपन्न होता आ रहा है।

नानाजी की पुण्यतिथि के अवसर पर ग्रामीण जनों को कृषि पशुपालन शिक्षा स्वास्थ्य स्वरोजगार विवाद मुक्त ग्राम और अन्य क्षेत्रों की विभिन्न योजनाओं एवं प्रगति की जानकारी देने

हेतु कार्यक्रम आयोजित होते आ रहे हैं। इसलिए नानाजी की 14 वीं पुण्यतिथि 27 फरवरी का कार्यक्रम भी जन सहभागिता से संपन्न होगा। इसके लिए प्रत्येक घर से कम से कम एक मुट्ठी अनाज और कम से कम एक रूपया अंशदान सहयोग रूप में आह्वान किया गया है श्री महाजन ने कहा कि नानाजी स्थूल रूप से गए लेकिन उनके प्रति आस्था आज भी विद्यमान है।

यहां लोगों में प्रबल आस्था दिखती है ऐसी ही कुछ आस्था चित्रकूट क्षेत्र के ग्राम वासियों में भारत रत्न नानाजी देशमुख के लिए दिखी। मझगवां विकासखंड और चित्रकूट जनपद के गांव-गांव में आस्था के प्रति सहभागिता का नजारा देखने लायक है। नानाजी की पुण्यतिथि के लिए ग्रामवासी बढ़.चढ़कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने में लगे हुए हैं इसके लिए दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ ग्रामवासी एवं चित्रकूट के नगर वासी एकत्रीकरण में लगे हुए हैं टोली के रूप में सभी लोग मझगवां एवं चित्रकूट जनपद के अधिकांश गांव एवं घरों तक पहुंच रहे है, पुण्यतिथि कार्यक्रम का आमंत्रण दिया जा रहा है और सहयोग की अपेक्षा की जा रही है।

स्वदेश

सतना - नव स्वदेश

27 Feb 2024

पेस्टिसाइड के उपयोग को प्रबंधित करने की जरूरतः डॉ. त्रिलोचन

चित्रकूट, (नव स्वदेश)।

राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की चौदहवीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में सोमवार को संयुक्त राष्ट्र के सतत दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित तृतीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार में भुखमरी की समाप्ति के सत्र सतत कृषि और अमृत काल एवं टिकाऊ कृषि और आजीविका के संदर्भ में हम क्या उगाते है हम क्या खाते है पर अपनी बात रखते हुए पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ.त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि सतत कृषि के लिए परिवेश को ध्यान में रखकर पेस्टिसाइड के उपयोग को प्रबंधित करने की जरूरत है। फसलों का जो विविधीकरण होना चाहिए वह नहीं हुआ है।

फसलों में विविधी करण की आवश्यकता है। सूक्ष्म सिंचाई की व्यवस्था होना चाहिए। 2047 तक हम पानी के 80 प्रतिशत उपयोग को 40 प्रतिशत तक लेकर आएंगे दीनदयाल शोध

नानाजी की पुण्यतिथि पर दूसरे दिन सम्पन्न हुए विविध कार्यक्रम

संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सेमिनार के संयोजक वसन्त पंडित ने कहा कि हमारी परंपरा में पुरुष पहले भोजन करता है फिर बच्चे और सबसे बाद में महिलाएं। इसलिये महिलाओं में कुपोषण ज्यादा है। मिलेटस् उगाने पर जोर देना चाहिये यह भुखमरी की समस्या का अच्छा समाधान है।

नानाजी स्वयं एक शिक्षा शास्त्री थे : अतुल जैन

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन ने कहा कि नानाजी स्वयं एक शिक्षा शास्त्री थे उन्होंने नन्ही दुनिया जैसा अभिनव शिक्षा परिसर तैयार कराया जहां बच्चा प्रकृति की गोद में आसपास परिवेश से सीखेगाआईआईटी रुड़की के प्रो.आशीष पांडे ने कहा कि छात्रों में कलाए कौशल और व्यवहारिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। केवल डिग्री धारकों को बढ़ाने से कुछ नहीं होगापर्यावरण विद् एवं वैज्ञानिक डॉ.रविकांत पाठक ने कहा कि श्सा विद्या या विमुक्तयेश् भारतीय शिक्षा का ध्येय वाक्य रहा है। आज भी यही आवश्यक है कि हम स्कूलोंमेंमनुष्य में आंतरिक विकास से संबंधित पाठ्यक्रम तैयार करें। हम कुछ भूल गए हैं उसे पुन स्मरण करें और शिक्षा ऐसी तैयार करें कि दुखों से मुक्ति मिल सकेए जीवन में आनंद का मार्ग प्रशस्त हो सकेए अंतर्मन में समृद्धि आ सके।

सतना

2 प्रदेश टुडे रीवा, मंगलवार 27 फरवरी 2024

ग्रामीण बच्चों को दे रहे मुफ्त शिक्षा

रामपुर बाघेलान। रामपुर बाघेलान के ग्राम [illegible] में पूर्व जनपद सदस्य निरंजन सिंह द्वारा ग्रामीण बच्चों को विगत दो वर्षों से निःशुल्क कोचिंग पढ़ाई जा रही है उनके सेवा कार्य को देखते हुए शुभम सोनी ने कोचिंग में पढ़ने वाले बच्चों को [illegible] डोनेट किया। शिक्षक निरंजन सिंह ने बताया की विगत तीन वर्षों से मैं गांव में ही रह रहा हूं दो वर्ष पहले दो बच्चे मेरे पास आये और बोले भैया मुझे गुणा करना [illegible] मैं उनको सवाल करना बताया और तभी से मन में विचार आया की ग्रामीण बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने से हमारे गांव के बच्चों का शिक्षा स्तर और बेहतर होगा।

नानाजी की पुण्यतिथि पर दूसरे दिन सम्पन्न हुए विविध कार्यक्रम

सतत विकास के लक्ष्यों पर आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विद्युतजनों ने रखे अपने विचार

प्रदेश टुडे संवाददाता सतना

राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की चौदहवीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में सोमवार को संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित तृतीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार में एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति के सत्र सतत कृषि और अमृत काल एवं टिकाऊ कृषि और आजीविका के संदर्भ में हम क्या उगाते है, हम क्या खाते है पर अपनी बात रखते हुए पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि सतत कृषि के लिए परिवेश को ध्यान में रखकर पेस्टिसाइड के उपयोग को प्रबंधित करने की जरूरत है। फसलों का जो विविधीकरण होना चाहिए वह नहीं हुआ है, फसलों में विविधीकरण की आवश्यकता है। सूक्ष्म सिंचाई की व्यवस्था होना चाहिए। 2047 तक हम पानी के 80 प्रतिशत उपयोग को 40 प्रतिशत तक लेकर आएंगे। दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सेमिनार के संयोजक वसन्त पंडित ने कहा कि हमारी परम्परा में पुरुष पहले भोजन करता है फिर बच्चे और सबसे बाद में महिलाएं। इसलिये महिलाओं में कुपोषण ज्यादा है। मिलेट उगाने पर जोर देना चाहिये यह भुखमरी की समस्या का अच्छा समाधान है। पूर्व आईएएस दीपक खांडेकर ने कहा कि सांवा, कोदो, काकुन, रागी बाजरा ये फसलें फिर से आनी चाहिये। ये मोटे अनाज ही इस सत्र का सार संक्षेप है और यही जीरो हंगर लायेगा। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की पूर्व प्राध्यापक डॉ ओम गुप्ता ने दलहनी फसलों और उसकी न्यूट्रीशन वैल्यू पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा जो खाओ वो उगाओ, वही उगाओ जो खाओ। पूसा अनुसंधान नई दिल्ली के बागवानी विशेषज्ञ डॉ अमित गोस्वामी ने कहा कि हम हर तरह के फल सब्जियां उगा तो रहे हैं लेकिन हम अपने आहार में बैलेंस डाइट नहीं ले पा रहे हैं। हमें स्वस्थ रहने के लिए अपने खान-पान में परिवर्तन करने की जरूरत है। सम्मेलन में स्थानिक कृषकों ने भी अपने-अपने अनुभवों को रखा। क्षेत्रीय युवा किसान नरेंद्र प्रताप पटेल ने मिलेट्स की खेती से बढ़ी हुई आमदनी का जिक्र किया। दीपक जायसवाल ने प्राकृतिक खेती में कम उत्पादन लागत का जिक्र किया। इन किसानों ने चित्रकूट क्षेत्र में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी एवं सतत मार्गदर्शन को इसका श्रेय दिया। लोहिया सभागार की दूसरी तल पर आयोजित एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के अंतर्गत चल रहे सम्मेलन में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो ने कहा कि धार्मिक संस्थाओं में खास तौर पर मदरसों में जो शिक्षा दी जाती है वह कितना उचित है। आज मदरसों में एक करोड़ 10 लाख बच्चे क्या सीख रहे हैं।

री 2024 आसपास Email.mpjsnews@gmail.com

कुपोषण और शिक्षा पर विद्वानों ने साझा किए विचार

राष्ट्रऋषि नानाजी की पुण्यतिथि पर विविध कार्यक्रम आयोजित

चित्रकूट,एमपीजेएस न्यूज। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की चौदहवीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रमों का सिलसिला लगातार जारी है। इसी श्रंखला में सोमवार को संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित तृतीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार में विशेष वक्ताओं ने अपने विचार रखे। एक परिसर के दो तलों में आयोजित दोनों कार्यक्रमों में विषय विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे। एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति के सत्र सतत कृषि और अमृत काल एवं टिकाऊ कृषि और आजीविका के संदर्भ में हम क्या उगाते है, हम क्या खाते है पर अपनी बात रखते हुए पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि सतत कृषि के लिए परिवेश को ध्यान में रखकर पेस्टिसाइड के उपयोग को प्रबंधित करने की जरूरत है तो वहीं दूसरे तल पर आयोजित एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के अंतर्गत चल रहे सम्मेलन में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो ने मदरसों में परोसी जा रही शिक्षा को कटघरे में खड़ा किया।

इसलिए महिलाओं में ज्यादा कुपोषण , मिलेट्स जरूरी

दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सेमिनार के संयोजक वसन्त पंडित ने कहा कि हमारी परंपरा में पुरुष पहले भोजन करता है फिर बच्चे और सबसे बाद में महिलाएं। इसलिये महिलाओं में कुपोषण ज्यादा है। मिलेटस् उगाने पर जोर देना चाहिये यह भुखमरी की समस्या का अच्छा समाधान है। पूर्व आईएएस दीपक खांडेकर ने कहा कि सांवा, कोदो, काकून, रागी बाजरा ये फसले फिर से आनी चाहिये। ये मोटे अनाज ही इस सत्र का सार संक्षेप है और वही जीरो हंगर लायेगा। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की पूर्व प्राध्यापक डॉ ओम गुप्ता ने दलहनी फसलों और उसकी न्यूट्रीशन वैल्यू पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा जो खाओ वो उगाओ- वही उगाओ जो खाओ। पूसा अनुसंधान नई दिल्ली के बागवानी विशेषज्ञ डॉ अमित गोस्वामी ने कहा कि हम हर तरह के फल सब्जियां उगा तो रहे हैं लेकिन हम अपने आहार में बैलेंस डाइट नहीं ले पा रहे हैं?। हमें स्वस्थ रहने के लिए अपने खान-पान में परिवर्तन करने की जरूरत है। सम्मेलन में स्थानिक कृषकों ने भी अपने-अपने अनुभवों को रखा। क्षेत्रीय युवा किसान नरेंद्र प्रताप पटेल ने मिलेटस की खेती से बढ़ी हुई आमदनी का जिक्र किया तो दीपक जायसवाल ने प्राकृतिक खेती में कम उत्पादन लागत का जिक्र किया। इन किसानों ने चित्रकूट क्षेत्र में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी एवं सतत मार्गदर्शन को इसका श्रेय दिया।

विशेषज्ञों ने कहा सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप हो शिक्षा

लोहिया सभागार की दूसरे तल पर आयोजित एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के अंतर्गत चल रहे सम्मेलन में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो ने कहा कि धार्मिक संस्थाओं में खास तौर पर मदरसों में जो शिक्षा दी जाती है वह कितना उचित है। आज मदरसों में एक करोड़ 10 लाख बच्चे क्या सीख रहे हैं, दारुल उलूम देवबंद स्कूल केवल एक प्रोफेशनल कोर्स चला रहा है बाकी केवल धर्म और संप्रदाय की शिक्षा दी जा रही है। इस पर सरकार को ध्यान देने की जरूरत है। गुरुकुल गुजरात के आचार्य संजीव शर्मा ने कहा कि भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनुसार शिक्षा होना चाहिए। भारत में जो प्राचीन पद्दति थी उसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, धनउ और पयाज्वरण जैसे विषय सम्मिलित होते थे। डॉ शेषाद्री चारी ने कहा कि क्या उच्च शिक्षा संस्थान क्वालिटी एजुकेशन पर कायउ कर रहे हैं यह विचार का विषय है। सरकार शिक्षा पर अधिक बजट नहीं रख रही है जबकि यह हुआ था कि देश की कुल जीडीपी का 6ब शिक्षा पर जाना चाहिए किंतु अभी तक तीन प्रतिशत से अधिक कभी नहीं रखा गया। दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन ने कहा कि नानाजी स्वयं एक शिक्षा शास्त्री थे उन्होंने नन्ही दुनिया जैसा अभिनव शिक्षा परिसर तैयार कराया जहां बच्चा प्रकृति की गोद में आसयास परिवेश से सीखेगा। आईआईटी रुड़की के प्रो आशीष पांडे ने कहा कि छात्रों में कला, कौशल और व्यवहारिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। केवल डिग्री धारकों को बढ़ाने से कुछ नहीं होगा। पर्यावरण विद् एवं वैज्ञानिक डॉ रविकांत पाठक ने कहा कि 'सा विद्या या विमुक्तये' भारतीय शिक्षा का ध्येय वाक्य रहा है। आज भी यही आवश्यक है कि हम स्कूलों में मनुष्य में आंतरिक विकास से संबंधित पाठ्यक्रम तैयार करें। हम कुछ भूल गए हैं उसे पुन स्मरण करें और शिक्षा ऐसी तैयार करें कि दुखों से मुक्ति मिल सके, जीवन में आनंद का मागउ प्रशस्त हो सके, अंतर्मन में समृद्धि आ सके। महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा ने सतत् विकास के लक्ष्य को नानाजी के कृतित्व के अनुरूप मानते हुए कहा कि नानाजी देशमुख युगानुकूल सामाजिक पुनरउचना के व्यावहारिक शिल्पी थे। वे गुणवत्ता पूणउ शिक्षा, समय अनुकूल शिक्षा, स्वावलंबन और आत्मविश्वास पूणउ शिक्षा के हिमायती थे। नानाजी का मानना था कि शिक्षा के माध्यम से हम समाज के अनछुए पहलुओं को स्पर्श करते हुए राष्ट्र का नवनिर्माण कर सकते हैं।

नानाजी की पुण्यतिथि पर दूसरे दिन सम्पन्न हुए विविध कार्यक्रम

नानाजी की पुण्यतिथि पर पोषक अनाज श्री अन्न प्रदर्शनी का हुआ उद्घाटन

चित्रकूट (जनभारत संदेश)। प्रदर्शनी में 13 केवीके सहित प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाये गए उत्पादों का किया गया प्रदर्शन

भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल परिसर चित्रकूट में पोषक अनाज -श्री अन्न- प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ सतना सांसद गणेश सिंह, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंका कानूनगो, वेस्ट इंडीज के प्रो नरेश सिंह, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो मुकेश पांडे, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा, पदम श्री उमाशंकर पांडे, मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री सुश्री उषा ठाकुर, डॉ त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डॉ शांतनु दुबे, डॉ एसआरके सिंह, डॉ अंबेडकर महू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डीके शर्मा, डॉ शेषाद्री चारी, गजानन डांगे एवं सतना कलेक्टर अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। उद्घाटन उपरांत सभी अतिथियों द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। प्रदर्शनी के प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र चित्रकूट के वैज्ञानिक मिलन गौतम ने बताया कि पोषक तत्वों का भंडार माने जाने वाले मोटे अनाज की खपत लगातार बढ़ती नजर आ रही है। यही नहीं, वर्ष 2023 इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट के रूप में मनाया गया। लोग मोटे अनाज के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं और इसे अपने आहार में शामिल कर रहे हैं। मोटे अनाज गेहूँ और चावल की तुलना में सस्ते होने के साथ-साथ उच्च प्रोटीन, फाइबर, विटामिन तथा आयरन आदि की उपस्थिति के चलते पोषण हेतु बेहतर आहार होते हैं।

इस प्रदर्शनी में कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां, पन्ना, छतरपुर, रीवा, कटनी, उमरिया, नरसिंहपुर, शहडोल, दमोह, डिण्डौरी, सीधी, सागर, पन्ना के साथ-साथ जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के खाद्य विज्ञान विभाग, पशु पालन एवं डेयरी विभाग सतना, मध्यप्रदेश जैव विविधता बोर्ड भोपाल द्वारा संकटग्रस्त प्रजातियों के प्रदर्शन के साथ श्री अन्न के मूल्यवर्धित व जैविक कीटनाशकों का प्रदर्शन, मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद एवं जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा आत्मनिर्भर तथा स्वावलम्बी बनाने हेतु संचालित किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी के साथ साथ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाये गए उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा विविध जानकारियों को एकत्र कर लोगों को जन जागरूक करने हेतु विशिष्ट प्रदर्शनी लगाई गई है। इस अवसर पर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) द्वारा बाल अधिकारों के सार्वभौमिकता और अखंडता के सिद्धांतों पर 0 से लेकर 18 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों की समान सुरक्षा को ध्यान में रखकर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने एवं मातृशक्ति के स्वास्थ्य पर कार्यशाला में विशेषज्ञों ने रखे विचार

नानाजी की पुण्यतिथि पर आयोजित विभिन्न संगोष्ठी एवं कार्यशाला की विचार श्रृंखला में दूसरे दिन दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में प्रथम सत्र में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने एवं द्वितीय सत्र में पौध किस्म संरक्षण और तृतीय सत्र में मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य व पोषण में पोषक तत्व का महत्व पर विषय विशेषज्ञों द्वारा विस्तृत जानकारी रखी गई। प्रथम सत्र में डॉ शिव शंकर सिंह, पदम श्री उमाशंकर पांडे, श्याम बिहारी गुप्त एवं मोहम्मद असलम खान ने रासायनिक खेती के दुष्प्रभाव को विस्तार से बताया और कैसे प्राकृतिक खेती करके मिट्टी में जीवाणुओं की संख्या बढ़कर उत्पादन को बढ़ा सकते हैं। द्वितीय सत्र में पौधों की किस्म का संरक्षण एवं पंजीयन कृषक अधिकार प्राधिकरण के सत्र में डॉ त्रिलोचन महापात्रा अध्यक्ष और डॉ डीके अग्रवाल रजिस्ट्रार जनरल, यूके दुबे डिप्टी रजिस्ट्रार, डॉ रवि प्रकाश एवं राज सिंह कुशवाहा ने विस्तार से कैसे देशी किस्म की खेती करें, उन्हें संरक्षित रखें, पंजीयन करें साथ ही किसानों से प्रत्यक्ष रूप से वार्ता की एवं अनुभव साझा किया। तृतीय सत्र में डॉ आर एस ठाकुर ने मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य, पोषक अनाज का महत्व को विस्तार से बताया। जिसमें कैसे मोटे अनाजों के उत्पाद तैयार करें जैसे रागी लड्डू, रागी बिस्किट, कोदो चावल आदि उत्पाद बनाने पर विस्तार से बताया गया।

नानाजी की 14 वीं पुण्यतिथि पर मानस पाठ का शुभारंभ

श्रद्धांजलि के साथ 27 फरवरी को होगा भंडारा का आयोजन

चित्रकूट (जनभारत संदेश)। भारतरत्न नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर 26 फरवरी को प्रातः 7 बजे से श्रीरामचरितमानस पाठ का शुभारंभ हो चुका है, इस अवसर पर दीनदयाल परिसर में आयोजित मानस पाठ में पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ त्रिलोचन महापात्रा, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो, डीआरआई के प्रधान सचिव अतुल जैन, संगठन सचिव अभय महाजन, कोषाध्यक्ष वसंत पंडित, महाप्रबंधक अमिताभ वशिष्ठ ने पूजा स्थल पर पहुंचकर मानस पाठ में सहभागिता की। 27 फरवरी को हवन के पश्चात दीनदयाल परिसर चित्रकूट के पंडित दीनदयाल उपाध्याय पार्क में बने राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख के श्रद्धा स्थल के समक्ष श्रद्धांजलि का कार्यक्रम रहेगा। उसके पश्चात प्रातः 10 बजे से साधु संतों के प्रसाद के बाद भंडारा का आयोजन होगा। यह सारा कार्यक्रम जन सहभागिता से ही संपन्न हो रहा है, जिसके लिए चित्रकूट क्षेत्र के कई गांव एवं देश भर के कई स्थानों से नानाजी से जुड़े हुए तथा उनके कार्य के प्रति आस्था रखने वाले लोगों का चित्रकूट आना शुरू हो गया है। इस आयोजन को लेकर आयोजक मंडल द्वारा सारी तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के प्रबंध मंडल के सभी सदस्य नानाजी के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में चित्रकूट आ चुके हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन एवं संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने सभी से आग्रह किया है कि श्रद्धांजलि एवं भंडारा प्रसाद के लिए आम जनमानस सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

सतत् विकास के लक्ष्यों पर आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विद्युतजनों ने रखे अपने विचार

चित्रकूट (जनभारत संदेश)। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की चौदहवीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में सोमवार को संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार में एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति के सत्र सतत कृषि और अमृत काल एवं टिकाऊ कृषि और आजीविका के संदर्भ में हम क्या उगाते हैं, हम क्या खाते हैं पर अपनी बात रखते हुए पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि सतत कृषि के लिए परिवेश को ध्यान में रखकर पेस्टिसाइड के उपयोग को प्रबंधित करने की जरूरत है। फसलों का जो विविधीकरण होना चाहिए वह नहीं हुआ है, फसलों में विविधीकरण की आवश्यकता है। सूक्ष्म सिंचाई की व्यवस्था होना चाहिए। 2047 तक हम पानी के 80 प्रतिशत उपयोग को 40 प्रतिशत तक लेकर आएंगे।

दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सेमिनार के संयोजक श्री वसन्त पंडित ने कहा कि हमारी परंपरा में पुरुष पहले भोजन करता है फिर बच्चे और सबसे बाद में महिलाएं। इसलिये महिलाओं में कुपोषण ज्यादा है। मिलेटस् उगाने पर जोर देना चाहिये यह भुखमरी की समस्या का अच्छा समाधान है। पूर्व आईएएस दीपक खांडेकर ने कहा कि सांवा, कोदो, काकून, रागी बाजरा ये फसलें फिर से आनी चाहिये। ये मोटे अनाज ही इस सत्र का सार संक्षेप है और यही जोरो शोर से लगेगा। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की पूर्व प्राध्यापक डॉ ओम गुप्ता ने दलहनी फसलों और उसकी न्यूट्रीशन वैल्यू पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा जो खाओ वो उगाओ- वही उगाओ जो खाओ। पूसा अनुसंधान नई दिल्ली के बागवानी विशेषज्ञ डॉ अमित गोस्वामी ने कहा कि हम हर तरह के फल सब्जियां उगा तो रहे हैं लेकिन हम अपने आहार में बैलेंस डाइट नहीं ले पा रहे हैं। हमें स्वस्थ रहने के लिए अपने खान-पान में परिवर्तन करने की जरूरत है। सम्मेलन में स्थानिक कृषकों ने भी अपने-अपने अनुभवों को रखा। क्षेत्रीय युवा किसान नरेंद्र प्रताप पटेल ने मिलेटस की खेती से बढ़ी हुई आमदनी का जिक्र किया। दीपक जायसवाल ने प्राकृतिक खेती में कम उत्पादन लागत का जिक्र किया। इन किसानों ने चित्रकूट क्षेत्र में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी एवं सतत मार्गदर्शन को इसका श्रेय दिया।

लोहिया सभागार की दूसरे तल पर आयोजित एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के अंतर्गत चल रहे सम्मेलन में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो ने कहा कि धार्मिक संस्थाओं में खास तौर पर मदरसों में जो शिक्षा दी जाती है वह कितना उचित है। आज मदरसों में एक करोड़ 10 लाख बच्चे क्या सीख रहे हैं, दारुल उलूम देवबंद स्कूल केवल एक प्रोफेशनल कोर्स चला रहा है बाकी केवल धर्म और संप्रदाय की शिक्षा दी जा रही है। इस पर सरकार को ध्यान देने की जरूरत है।

गुरुकुल गुजरात के आचार्य संजीव शर्मा ने कहा कि भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनुसार शिक्षा होना चाहिए। भारत में जो प्राचीन पद्धति थी उसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, धर्म और पर्यावरण जैसे विषय सम्मिलित होते थे।

डॉ शेषाद्री चारी ने कहा कि क्या उच्च शिक्षा संस्थान क्वालिटी एजुकेशन पर कार्य कर रहे हैं यह विचार का विषय है। सरकार शिक्षा पर अधिक बजट नहीं रख रही है जबकि यह हुआ था कि देश की कुल जीडीपी का 6% शिक्षा पर जाना चाहिए किंतु अभी तक तीन प्रतिशत से अधिक कभी नहीं रखा गया।दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन ने कहा कि नानाजी स्वयं एक शिक्षा शास्त्री थे उन्होंने नन्ही दुनिया जैसा अभिनव शिक्षा परिसर तैयार कराया जहां बच्चा प्रकृति की गोद में आसपास परिवेश से सीखेगा।

आईआईटी रुड़की के प्रो आशीष पांडे ने कहा कि छात्रों में कला, कौशल और व्यवहारिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। केवल डिग्री धारकों को बढ़ाने से कुछ नहीं होगा। पर्यावरण विद् एवं वैज्ञानिक डॉ रविकांत पाठक ने कहा कि %सा विद्या या विमुक्तये% भारतीय शिक्षा का ध्येय वाक्य रहा है। आज भी यही आवश्यक है कि हम स्कूलों में मनुष्य में आंतरिक विकास से संबंधित पाठ्यक्रम तैयार करें। हम कुछ भूल गए हैं उसे पुन स्मरण करें और शिक्षा ऐसी तैयार करें कि दुखों से मुक्ति मिल सके, जीवन में आनंद का मार्ग प्रशस्त हो सके, अंतर्मन में समृद्धि आ सके। महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा ने सतत् विकास के लक्ष्य को नानाजी के कृतित्व के अनुरूप मानते हुए कहा कि नानाजी देशमुख युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना के व्यावहारिक शिल्पी थे। वे गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, समय अनुकूल शिक्षा, स्वावलंबन और आत्मविश्वास पूर्ण शिक्षा के हिमायती थे। नानाजी का मानना था कि शिक्षा के माध्यम से हम समाज के अनछुए पहलुओं को स्पर्श करते हुए राष्ट्र का नवनिर्माण कर सकते हैं।

सशक्तिकरण के लिए स्थानीय संसाधनों को आजीविका का साधन बनाकर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनें मातृ शक्ति - ऊषा ठाकुर

महिला सशक्तिकरण में स्वसहायता समूहों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी आयोजित

चित्रकूट (जनभारत संदेश)। चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित एवं कौशल विकास उद्यमशीलता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा भारत रत्न राष्ट्रऋषि नाना जी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर महिला सशक्तिकरण में स्वसहायता समूहों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी का आयोजन दीनदयाल परिसर स्थित बाल कला भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि उषा ठाकुर पूर्व पर्यटन व संस्कृति मंत्री मध्यप्रदेश शासन, कृष्ण मोहन मोघे पूर्व सांसद खरगौन, शिवमोहन मिश्र देव संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ रज्जन द्विवेदी पोस्ट डॉक्टोरल फैलो आई सी एस एस आर, विकास कुमार सहायक प्रबंधक डी आई सी, सन्ध्या जोंद कुलकर्णी एवं जन शिक्षण संस्थान के निदेशक अनिल कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया गया। कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए निदेशक जन शिक्षण संस्थान ने बताया कि स्वयं-सहायता समूह भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण और गरीबी उन्मूलन के प्रभावी आधार के रूप में उभरे हैं। समाज में महिलाओं के वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने व उन्हें सक्षम बनाने जिससे कि वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकें और परिवार और समाज में अच्छे से रहकर आत्मनिर्भर एवम स्वावलम्बी बन सकें। सन्ध्या जोंद कुलकर्णी ने कहा कि आर्थिक सशक्तीकरण, कौशल विकास, सामाजिक एकजुटता और ऋण तक पहुँच को बढ़ावा देकर स्वयं सहायता समूह महिलाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने और अपने समुदायों के विकास में योगदान करने में सक्षम बनाते हैं। शिवमोहन मिश्रा ने कहा कि महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचत के माध्यम से उन्हें बचत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, ऋण के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को ऋण प्रदान करते हैं व प्रशिक्षण के माध्यम से स्वयं सहायता समूह महिलाओं को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान करते हैं जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त बनाती हैं। डॉ रज्जन द्विवेदी ने बताया कि स्व सहायता समूह, समरूप ग्रामीण निर्धनों द्वारा स्वेच्छा से गठित एक समूह है जिसमें समूह के सदस्य अपने आप से जितनी भी बचत आसानी से कर सकते हैं उसका अंशदान उत्पादक, उपभोग अथवा आपातकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋण के रूप में देने के लिए परस्पर सहायक होते हैं। विकास कुमार द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा जिले में संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान कर उनसे लाभान्वित होकर आत्मनिर्भर बनने पर जोर दिया। कृष्णमुरारी मोघे ने भारत सरकार द्वारा समाज के विभिन्न समुदायों एवं विशेषकर मातृशक्ति के सशक्तिकरण हेतु किये जा रहे कार्यों की जानकारी प्रदान की और मातृशक्ति को उनसे लाभान्वित होने पर जोर दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए उषा ठाकुर ने कहा कि महिला राष्ट्र की आधार शक्ति है आप अपनी अंतर निहित शक्तियों को जागृत करिए और उन्हें पहचानिए। दुनिया का कोई भी ऐसा कार्य नहीं है जिसे आप सर्वाधिक बेहतर तरीके से नहीं कर सकती हैं। ईश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तो उन्होंने शक्ति का केंद्र मातृशक्ति को ही बनाया। यदि हम देखें तो दुर्गा शक्ति का केंद्र है तो विद्या का केंद्र सरस्वती है और वहीं धन की देवी लक्ष्मी को कहा जाता है। आप सभी मातृशक्ति इन तीनों देवियों के संयुक्त विग्रह को आत्मसात कर विश्व गुरु भारत के सपने को यथार्थ में बदल सकती हैं। भारत का इतिहास मातृशक्ति के कार्यों से भरा पड़ा है भारत और भारतीयता की ताकत आध्यात्मिकता है। आप अपने संस्कारों और विचारों को बेहतर बनाने हेतु कार्य करते हुए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों को अपने आजीविका का साधन बनाकर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनिए। कार्यक्रम में प्रतिभाग कर रहे प्रतिभागियों में अंजली भारद्वाज, रेनू, अनुपमा, श्वेता, महिमा ,दीपकुमारी सहित कई अन्य ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में 10 स्वसहायता समूहों एवं जन शिक्षण संस्थान के 75 अनुदेशकों सहित लगभग 305 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय का 11वा दीक्षांत समारोह 29 फरवरी अपराह्न 2 बजे से 28 फ़रवरी तक दीक्षांत पंजीयन होगा

चित्रकूट (जनभारत संदेश)। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह 29 फरवरी 2024 को अपराह्न दो बजे से होगा। कुलपति प्रो भरत मिश्रा ने आज कार्यक्रम संयोजक प्रो आई पी त्रिपाठी और कुलसचिव नीरजा नामदेव से आयोजन के संबंध में विचार विमर्श किया। कुलसचिव नीरजा नामदेव ने बताया कि दीक्षांत कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास 28 फरवरी को अपराह्न 4 बजे से होगा। उन्होंने बताया कि दीक्षांत समारोह में डिग्री प्राप्त करने वालों को निर्धारित शुल्क जमा करके 28 फरवरी तक दीक्षांत पंजीयन कराना होगा। उपकुलसचिव अकादमी डॉ कुसुम कुमारी सिंह और उपकुलसचिव परीक्षा डॉ ललित कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से बताया कि यूजी, पीजी एवम पीएचडी डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों तथा मैडल पाने वाले विद्यार्थियों की सूची और सम्पूर्ण विवरण यूनिवर्सिटी वेबसाइट पर देखी जा सकती है। समारोह संयोजक प्रो आई पी त्रिपाठी ने बताया भव्य समारोह के लिए आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई है।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन 27 एवम 28 फ़रवरी को

चित्रकूट (जनभारत संदेश)। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट एवं महाकौशल विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित और मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद भोपाल एवं नेशनल अकेडमी आफ साइंस इंडिया द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2024 कार्यक्रम 27 एवम 28 फरवरी को होगा। इस कार्यक्रम का उद्घाटन 27 फरवरी को अमरपाल सिंह, सचिव राजभवन भोपाल करेंगे।

विज्ञान एवं पर्यावरण संकाय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विज्ञान की विभिन्न गतिविधियों - वाद विवाद, निबंध प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता ,ऑनलाइन क्विज एवं विज्ञान के मॉडल प्रदर्शन के होंगे। 28 फरवरी को राष्ट्रीय संगोष्ठी होगी।जिसका विषय -सतत भविष्य के लिए विज्ञान एवं विकसित भारत के लिए स्वदेशी तकनीक - निर्धारित किया गया है। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो एस पी गौतम पूर्व अध्यक्ष मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग एवं अध्यक्षता ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो भरत मिश्रा करेंगे।

सतना स्टार

सोमवार, 26 फरवरी 2024

आसपास

नानाजी की पुण्यतिथि पर पोषक अनाज 'श्री अन्न' प्रदर्शनी का हुआ उद्घाटन

दैनिक सतना स्टार चित्रकूट। भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल परिसर चित्रकूट में पोषक अनाज +श्री अन्न+ प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ सतना सांसद गणेश सिंह, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंका कानूनगो, बेस्ट इंडीज के प्रो नरेश सिंह, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो मुकेश पांडे, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा, पदम श्री उमाशंकर पांडे, मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री सुश्री उषा ठाकुर, डॉ त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डॉ शांतनु दुबे, डॉ एसआरके सिंह, डॉ अंबेडकर महू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डीके शर्मा, डॉ शेषाद्री चारी, गजानन डांगे एवं सतना कलेक्टर अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

उद्घाटन उपरांत सभी अतिथियों द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। प्रदर्शनी के प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र चित्रकूट के वैज्ञानिक विजय गौतम ने बताया कि पोषक तत्वों का भंडार माने जाने वाले मोटे अनाज की खपत लगातार बढ़ती नजर आ रही है। यही नहीं, वर्ष 2023 इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट के रूप में मनाया गया। लोग मोटे अनाज के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं और इसे अपने आहार में शामिल कर रहे हैं। मोटे अनाज गेहूँ और चावल की तुलना में सस्ते होने के साथ-साथ उच्च प्रोटीन, फाइबर, विटामिन तथा आयरन आदि की उपस्थिति के चलते पोषण हेतु बेहतर आहार होते हैं।

इस प्रदर्शनी में कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां, गनीवां, छतरपुर, रीवा, कटनी, उमरिया, नरसिंहपुर, शहडोल, दमोह, डिण्डौरी, सीधी, सागर, पन्ना,के साथ-साथ जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के खाद्य विज्ञान विभाग, पशु पालन एवं डेयरी विभाग सतना, मध्यप्रदेश जैव विविधता बोर्ड भोपाल द्वारा संकटग्रस्त प्रजातियों के प्रदर्शन के साथ श्री अन्न के मूल्यवर्धित व जैविक कीटनाशकों का प्रदर्शन, मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद एवं जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा आत्मनिर्भर तथा स्वावलम्बी बनाने हेतु संचालित किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी के साथ साथ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाये गए उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा विविध जानकारियों को एकत्र कर लोगों को जन जागरूक करने हेतु विशिष्ट प्रदर्शनी लगाई गई है। इस अवसर पर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा बाल अधिकारों के सार्वभौमिकता और अखंडता के सिद्धांतों पर 0 से लेकर 18 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों की समान सुरक्षा को ध्यान में रखकर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

नाना जी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि

चित्रकूट में चल रहे तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

सतना। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी.2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी.4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन मंगलवार को दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में हो गया। समारोह सत्र के शुभारंभ चित्रकूट क्षेत्र से पधारे सभी संत समाज का अतिथियों द्वारा स्वागत सम्मान से हुआ। जिसमें संत समाज से मंडला से मदन मोहन गिरी महाराजए रामजी दास जी महाराजए मदन गोपाल दास जी महाराज, दिव्य जीवन दास जी महाराज, सीता शरण दास जी महाराज, नयागांव आश्रम से प्रपन्नाचार्य जी महाराज, राम हृदय दास जी, पवन बाबा, केशव जी महाराज, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ रामनारायण त्रिपाठी सहित सैकड़ों की संख्या में संत वृंद उपस्थित रहे। दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सम्मेलन के संयोजक वसंत पंडित ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स,एसडीजी के 17 बिंदु है। सतत विकास को लेकर यह आयोजन चित्रकूट में हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 17 बिंदुओं को लेकर वर्ष 2015 से 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सतत विकास के इन 17 लक्ष्यों में से एसडीजी 2 एवं 4 पर यहाँ चिंतन हुआ है। आगे भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें करना है। वर्ष 2030 तक एसडीजी पर काम चलेगा। इससे वर्ल्ड एसडीजी फोरम को स्थाई रूप प्रदान करने में सहयोग मिलेगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लोबल फोरम तैयार किया गया है। जिसमें ग्रामोदय से सर्वोदय और लोकल टू ग्लोबल भाव के साथ जो सोच नाना जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की रही उसी सोच के अनुरूप वर्ल्ड एसडीजी फोरम की स्थापना हुई है।

भारत रत्न नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि को लेकर उद्यमिता विद्यापीठ में बैठक

प्रदेश टुडे संवाददाता सतना

दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा भारत रत्न राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि के रूप 25.26.27 फरवरी को श्रद्धांजलि समारोह भंडारा प्रसाद एवं उसी अवसर पर राष्ट्रीय सेमिनार दीनदयाल परिसर चित्रकूट में होने वाले इस आयोजन को लेकर सारी व्यवस्थाओं को मूर्तरूप दिया जा रहा हैए प्रतिदिन जगह जगह बैठकों का सिलसिला जारी है। सतना, पन्ना, बांदा, अतर्रा, रीवा, महोबा, छतरपुर में भी तैयारियों एवं व्यवस्था को लेकर बैठक का आयोजन हुआ। इस दृष्टि से बुधवार को लोहिया सभागार उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट में व्यवस्था बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें व्यवस्था से जुड़े सभी प्रतिनिधि उपस्थित रहे। बैठक में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव अभय महाजन एवं कोषाध्यक्ष बसंत पंडित द्वारा व्यवस्था से जुड़े सभी पहलुओं पर चर्चा की गई। 27 फरवरी को भण्डारा प्रसाद के लिये 600 से भी अधिक ग्राम आबादियों तथा जहां जहां संस्थान का सम्पर्क रहा है उन सभी संस्थाओं और विचार परिवार से जुड़े सभी लोगों की इस आयोजन में सहभागिता रहेगी और दूरदराज से लोग चित्रकूट आकर श्रद्धेय नानाजी को उनकी 14 वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस आयोजन को लेकर नगर के लोगों सहित कार्यक्रम में व्यवस्था की दृष्टि से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों एवं संस्थान के प्रमुख कार्यकर्ताओं की टोली गांव गांव एवं नगर के प्रत्येक घरों में आमंत्रण के साथ साथ भंडारा प्रसाद हेतु एक मुट्ठी अनाज एवं एक रुपए सहयोग हेतु संकलन में लगे हुए

अन्य जगहों पर भी बैठकों का दौर जारी

--नानाजी देशमुख की चौदहवीं पुण्यतिथि--

यूएन के सतत विकास लक्ष्य 'जीरो हंगर' एवं 'क्वालिटी एजुकेशन' पर चल रहे तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का हुआ समापन

चित्रकूट 27 फरवरी। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन मंगलवार को दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में हो गया। समारोह सत्र के शुभारंभ चित्रकूट क्षेत्र से पधारे सभी संत समाज का अतिथियों द्वारा स्वागत सम्मान से हुआ। जिसमें संत समाज से मंडला से मदन मोहन गिरी महाराज, रामजी दास जी महाराज, मदन गोपाल दास जी महाराज, दिव्य जीवन दास जी महाराज, सीता शरण दास जी महाराज, नयागांव आश्रम से प्रपन्नाचार्य जी महाराज, राम ह्रदय दास जी, पवन बाबा, केशव जी महाराज, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ रामनारायण त्रिपाठी सहित सैकड़ों की संख्या में संत वृंद उपस्थित रहे। दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सम्मेलन के संयोजक वसंत पंडित ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) के 17 बिंदु है। सतत विकास को लेकर यह आयोजन चित्रकूट में हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 17 बिंदुओं को लेकर वर्ष 2015 से 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सतत विकास के इन 17 लक्ष्यों में से एसडीजी 2 एवं 4 पर यहाँ चिंतन हुआ है। आगे भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें करना है। वर्ष 2030 तक एसडीजी पर काम चलेगा। इससे वर्ल्ड एसडीजी फोरम को स्थाई रूप प्रदान करने में सहयोग मिलेगा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लोबल फोरम तैयार किया गया है। जिसमें ग्रामोदय से सर्वोदय और लोकल टू ग्लोबल भाव के साथ जो सोच नाना जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की रही उसी सोच के अनुरूप वर्ल्ड एसडीजी फोरम की स्थापना हुई है। आरआईएस मेंबर डॉ शेषाद्री चारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पिछले तीन वर्षों से वर्ल्ड एसडीजी फोरम के रूप में प्रयोग कर रहे हैं उसके अंतर्गत हर वर्ष सतत विकास के लक्ष्यों के अंतर्गत अलग-अलग लक्ष्यों पर गहन मंथन विमर्श करते है। एकात्म मानव दर्शन के आधार पर जो रचनाएं होना चाहिए उसके आधार पर प्रत्यक्ष काम चित्रकूट में देखने को मिलता है। इसीलिए सतत विकास के 17 लक्षणों में से दो लक्ष्य पर सम्मेलन के लिए सबसे उपयुक्त स्थान चित्रकूट को चुना है।

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन ने कहा कि पिछले तीन दिनों में जो भी कार्यशाला एवं संगोष्ठी हुई है उनमें सबसे खास यह रहा है कि महिलाओं का योगदान कहीं न कहीं पुरुषों से कम नहीं रहा। सबने घुंघट से बाहर आकर हर परिचर्चा में बढ़ चढ़कर भागीदारी की और अपने कृषि और सामाजिक अनुभवों को सबके समझ रखा।

दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्र पराक्रमादित्य ने कहा कि व्यक्ति निर्माण के द्वारा समाज में परिवर्तन आएगा। इस प्रकार के सभी आयोजन व्यक्ति निर्माण की पाठशाला है। मध्य प्रदेश शासन के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि 60 वर्ष के बाद राजनीति छोड़कर समाज जीवन में अपना सर्वस्व लगाकर भारतीय राजनीति में सर्वोच्च उदाहरण नानाजी ने प्रस्तुत किया है। समापन अवसर पर वेस्टइंडीज के प्रो नरेश सिंह द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन भी हुआ। महंत रामजी दास महाराज जी द्वारा आशीर्वचन और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मध्य प्रदेश शासन के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, सतना सांसद गणेश सिंह, इंदौर के पूर्व सांसद कृष्ण मुरारी मोघे, सीधी विधायक रीति पाठक, जबलपुर विधायक शशि तिवारी, पूर्व मंत्री राम खेलवान पटेल, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के डॉ बीके जैन, विश्व बैंक के सलाहकार विष्णु दरबारी, पूर्व आईएएस दीपक खांडेकर, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 भरत मिश्रा, इंदौर से राजेश खंडेलवाल, डॉ प्रमोद नेमा, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य डॉ दिव्या गुप्ता, दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्र पराक्रमादित्य सिंह, उपाध्यक्ष उत्तम बनर्जी, निखिल मुडंन, प्रधान सचिव अतुल जैन, महाप्रबंधक अमिताभ वशिष्ठ सहित दीनदयाल शोध संस्थान की सभी प्रबंध मंडल के सदस्य मौजूद रहे।

सतना, मंगलवार, 27 फरवरी 2024 नेज़ा Nezaa 2

यूएन के सतत विकास लक्ष्य जीरो हंगर एवं क्वालिटी एजुकेशन पर चल रहे तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

स्वदेश

सतना - नव स्वदेश

28 Feb 2024

सतना

नव स्वदेश | 12

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर वृहद आयोजन, हजारों लोगों ने दी श्रद्धांजलि

भजनों की दी प्रस्तुति

सियाराम कुटीर में पुष्पार्चन

इन्होंने दी श्रद्धांजलि

11 हजार परिवारों से मिला 16 लाख का अंशदान, 66 क्विंटल अनाज का संकलन

दैनिक प्रचण्ड शक्ति

चित्रकूट

नानाजी देशमुख की मनाई गई चौदहवीं पुण्यतिथि

यूएन के सतत विकास लक्ष्य जीरो हंगर एवं क्वालिटी एजुकेशन पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का हुआ समापन

चित्रकूट.(प्रचण्ड शक्ति न्यूज)। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन मंगलवार को दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में हो गया। समारोह सत्र के शुभारम्भ चित्रकूट क्षेत्र से पधारे सभी संत समाज का अतिथियों द्वारा स्वागत सम्मान से हुआ। जिसमें संत समाज से मड़ला से मदन मोहन गिरी महाराज, रामजी दास महाराज, मदन गोपाल दास महाराज, दिव्य जीवन दास महाराज, सीता शरण दास महाराज, नयागांव आश्रम से प्रपन्नाचार्य महाराज, राम हृदय दास, पवन बाबा, केशव महाराज, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ रामनारायण त्रिपाठी सहित सैकड़ों की संख्या में संत वृंद उपस्थित रहे।

दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सम्मेलन के संयोजक वसंत पंडित ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) के 17 बिंदु है। सतत विकास को लेकर यह आयोजन चित्रकूट में हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 17 बिंदुओं को लेकर वर्ष 2015 से 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सतत विकास के इन 17 लक्ष्यों में से एसडीजी 2 एवं 4 पर यहाँ चिंतन हुआ है। आगे भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें करना है। वर्ष 2030 तक एसडीजी पर काम चलेगा। इससे वर्ल्ड एसडीजी फोरम को स्थाई रूप प्रदान करने में सहयोग मिलेगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लोबल फोरम तैयार किया गया है। जिसमें ग्रामोदय से सर्वोदय और लोकल टू ग्लोबल भाव के साथ जो सोच नाना जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की रही उसी सोच के अनुरूप वर्ल्ड एसडीजी फोरम की स्थापना हुई है। आरआईएस मेंबर डॉ शेषाद्री चारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पिछले तीन वर्षों से वर्ल्ड एसडीजी फोरम के रूप में प्रयोग कर रहे हैं उसके अंतर्गत हर वर्ष सतत विकास के लक्ष्यों के अंतर्गत अलग-अलग लक्ष्यों पर गहन मंथन विमर्श करते है। एकात्म मानव दर्शन के आधार पर जो रचनाएं होना चाहिए उसके आधार पर प्रत्यक्ष काम चित्रकूट में देखने को मिलता है। इसीलिए सतत विकास के 17 लक्ष्यों में से दो लक्ष्य पर सम्मेलन के लिए सबसे उपयुक्त स्थान चित्रकूट को चुना है। दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन ने कहा कि पिछले तीन दिनों में जो भी कार्यशाला एवं संगोष्ठी हुई है उनमें सबसे खास यह रहा है कि महिलाओं का योगदान कहीं न कहीं पुरुषों से कम नहीं रहा। सबने घुंघट से बाहर आकर हर परिचर्चा में बढ़ चढ़कर भागीदारी की और अपने कृषि और सामाजिक अनुभवों को सबके समक्ष रखा। दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्र पराक्रमादित्य ने कहा कि व्यक्ति निर्माण के द्वारा समाज में परिवर्तन आएगा। इस प्रकार के सभी आयोजन व्यक्ति निर्माण की पाठशाला है। मध्य प्रदेश शासन के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि 60 वर्ष के बाद राजनीति छोड़कर समाज जीवन में अपना सर्वस्व लगाकर भारतीय राजनीति में सर्वोच्च उदाहरण नानाजी ने प्रस्तुत किया है। समापन अवसर पर वैस्टइंडीज के प्रो नरेश सिंह द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम के अंत में महंत रामजी दास महाराज जी द्वारा आशीर्वचन और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समापन अवसर पर मध्य प्रदेश शासन के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, सतना सांसद गणेश सिंह, इंदौर के पूर्व सांसद कृष्ण मुरारी मोघे, सीधी विधायक रीति पाठक, जबलपुर विधायक शशि तिवारी, पूर्व मंत्री राम खेलावन पटेल, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के डॉ बीके जैन, विश्व बैंक के सलाहकार विष्णु दरबारी, पूर्व आईएएस दीपक खांडेकर, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा, इंदौर से राजेश खंडेलवाल, डॉ प्रमोद नेमा, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य डॉ दिव्या गुप्ता, दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्र पराक्रमादित्य सिंह, उपाध्यक्ष उत्तम बनर्जी, निखिल मुंडन, प्रधान सचिव अतुल जैन, महाप्रबंधक अमिताभ वशिष्ठ सहित दीनदयाल शोध संस्थान की सभी प्रबंध मंडल के सदस्य देश भर से कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय का 11वां दीक्षांत समारोह 29 फरवरी को

0 आज तक दीक्षांत पंजीयन होगा

चित्रकूट,(प्रचण्ड शक्ति न्यूज)। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह 29 फरवरी 2024 को अपराह्न दो बजे से होगा। कुलपति प्रो भरत मिश्रा ने कार्यक्रम संयोजक प्रो आई पी त्रिपाठी और कुलसचिव नीरजा नामदेव से आयोजन के संबंध में विचार विमर्श किया। कुलसचिव नीरजा नामदेव ने बताया कि दीक्षांत कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास 28 फरवरी को अपराह्न 4 बजे से होगा। उन्होंने बताया कि दीक्षांत समारोह में डिग्री प्राप्त करने वालों को निर्धारित शुल्क जमा करके 28 फरवरी तक दीक्षांत पंजीयन कराना होगा। उपकुलसचिव अकादमी डॉ कुसुम कुमारी

सतना स्टार
मंगलवार, 27 फरवरी 2024

शहर-आसपा

नानाजी देशमुख की चौदहवीं पुण्यतिथि

यूएन के सतत विकास लक्ष्य जीरो हंगर एवं क्वालिटी एजुकेशन पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

दैनिक सतना स्टार चित्रकूट। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन मंगलवार को दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में हो गया। समारोह सत्र के शुभारंभ चित्रकूट क्षेत्र से पधारे सभी संत समाज का अतिथियों द्वारा स्वागत सम्मान से हुआ। जिसमें संत समाज से मंडला से मदन मोहन गिरी महाराज, रामजी दास जी महाराज, मदन गोपाल दास जी महाराज, दिव्य जीवन दास जी महाराज, सीता शरण दास जी महाराज, नयागांव आश्रम से प्रपन्नाचार्य जी महाराज, राम हृदय दास जी, पवन बाबा, केशव जी महाराज, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ रामनारायण त्रिपाठी सहित सैकड़ों की संख्या में संत वृंद उपस्थित रहे।

दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सम्मेलन के संयोजक वसंत पंडित ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) के 17 बिंदु है। सतत विकास को लेकर यह आयोजन चित्रकूट में हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 17 बिंदुओं को लेकर वर्ष 2015 से 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सतत विकास के इन 17 लक्ष्यों में से एसडीजी 2 एवं 4 पर यहाँ चिंतन हुआ है। आगे भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें करना है। वर्ष 2030 तक एसडीजी पर काम चलेगा। इससे वर्ल्ड एसडीजी फोरम को स्थाई रूप प्रदान करने में सहयोग मिलेगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लोबल फोरम तैयार किया गया है। जिसमें ग्रामोदय से सर्वोदय और लोकल टू ग्लोबल भाव के साथ जो सोच नाना जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की रही उसी सोच के अनुरूप वर्ल्ड एसडीजी फोरम की स्थापना हुई है। आरआईएस मेंबर डॉ शेषाद्री चारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पिछले तीन वर्षों से वर्ल्ड एसडीजी फोरम के रूप में प्रयोग कर रहे हैं उसके अंतर्गत हर वर्ष सतत विकास के लक्ष्यों के अंतर्गत अलग-अलग लक्ष्यों पर गहन मंथन विमर्श करते है। एकात्म मानव दर्शन के आधार पर जो रचनाएं होना चाहिए उसके आधार पर प्रत्यक्ष काम चित्रकूट में देखने को मिलता है। इसीलिए सतत विकास के 17 लक्षणों में से दो लक्ष्य पर सम्मेलन के लिए सबसे उपयुक्त स्थान चित्रकूट को चुना है।

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन ने कहा कि पिछले तीन दिनों में जो भी कार्यशाला एवं संगोष्ठी हुई है उनमें सबसे खास यह रहा है कि महिलाओं का योगदान कहीं न कहीं पुरुषों से कम नहीं रहा। सबने घुंघट से बाहर आकर हर परिचर्चा में बढ़ चढ़कर भागीदारी की और अपने कृषि और सामाजिक अनुभवों को सबके समक्ष रखा। दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्र पराक्रमादित्य ने कहा कि व्यक्ति निर्माण के द्वारा समाज में परिवर्तन आएगा। इस प्रकार के सभी आयोजन व्यक्ति निर्माण की पाठशाला है।

मध्य प्रदेश शासन के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि 60 वर्ष के बाद राजनीति छोड़कर समाज जीवन में अपना सर्वस्व लगाकर भारतीय राजनीति में सर्वोच्च उदाहरण नानाजी ने प्रस्तुत किया है। समापन अवसर पर वेस्टइंडीज के प्रो नरेश सिंह द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम के अंत में श्री महंत रामजी दास महाराज जी द्वारा आशीर्वचन और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इनकी रही उपस्थिति

समापन अवसर पर मध्य प्रदेश शासन के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, सतना सांसद गणेश सिंह, इंदौर के पूर्व सांसद कृष्ण मुरारी मोघे, सीधी विधायक रीति पाठक, जबलपुर विधायक शशि तिवारी, पूर्व मंत्री राम खेलावन पटेल, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के डॉ बीके जैन, विश्व बैंक के सलाहकार विष्णु दरबारी, पूर्व आईएएस दीपक खांडेकर, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भरत मिश्रा आदि रहे।

प्रगतिशील महिला-पुरुष कृषकों को नानाजी के श्रद्धांजलि समारोह में किया गया सम्मानित

नवभारत न्यूज

चित्रकूट। भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी की 14 वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि समारोह में जिले के प्रगतिशील महिला-पुरुष कृषकों को कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के माध्यम से भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख उत्कृष्ट कृषक सम्मान, सुमति ताई सुकलीकर महिला सशक्तिकरण सम्मान, राजा बाई देशमुख महिला स्वावलंबन सम्मान से सम्मानित किया गया।

सतना जिले के ऐसे उन्नतशील कृषक जिन्होंने खेती को लाभ का धंधा बनाने, परंपरागत पोषकीय अनाज उत्पादन, पशु पालन, परंपरागत किस्मों का संरक्षण, जलवायु अनुकूल कृषि आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है, उन कृषकों को यह सम्मान मंचासीन अतिथि मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, सतना सांसद गणेश सिंह, सीधी विधायक रीति पाठक, संत समाज से पूज्य संत राम जी दास जी महाराज, कामदगिरि प्रमुख द्वार से मदन गोपाल दास जी महाराज, दिव्य जीवन दास जी महाराज, सीता शरण दास जी, सती अनसूईया आश्रम से पवन बाबा, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ रामनारायण त्रिपाठी, मंडला से मदन मोहन गिरी जी महाराज एवं राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य डॉ दिव्या गुप्ता एवं दीनदयाल शोध संस्थान प्रबंध मंडल की सदस्य श्रीमती अनुजा ताई परचुरे एवं कुमुद सिंह द्वारा प्रदान दिया गया। कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा ग्रामीण अंचल में बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करने हेतु श्रीमती मैना सिंह बरहठा पछीत, सामाजिक कार्यों में सहभागिता हेतु ग्रामीण महिलाओं को प्रेरित करने के लिए श्रीमती कमलेश कुमारी गौतम बरौंधा, महिला कृषकों को कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु श्रीमती पुष्पा सोनी ताला अमरपाटन को 'सुमती ताई सुकलीकर महिला सशक्तिकरण सम्मान' दिया गया।

वहीं विषम परिस्थितियों में परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु सराहनीय एवं अनुकरणीय कार्य करने के लिए श्रीमती शुभा मवासी देवलहा एवं श्रीमती फुला देवी कन्दर को राजा बाई देशमुख महिला स्वावलंबन सम्मान प्रदान किया गया। नानाजी देशमुख उत्कृष्ट कृषक सम्मान-2024' के अन्तर्गत गोपालन आधारित प्राकृतिक खेती हेतु दीपेंद्र जायसवाल हिरौंदी, पोषक अनाजों की खेती हेतु लालमन कुशवाहा खुजा विहटा, फसल विविधीकरण हेतु नरेन्द्र प्रताप सिंह अमहा टेढ़ी पतवनिया, जैव विविधता संरक्षण हेतु चन्दन सिंह सोहास सोहावल, 1.5 एकड़ समेकित खेती पद्धति के लिए इंद्रपाल कुशवाहा पगार कला, सब्जी व मसाला उत्पादन पर कार्य हेतु श्रीमती सुमित्रा देवी कुशवाहा लालपुर अमरपाटन, बकरी पालन के लिए श्रीमती चुनकी सतनामी मोटवा भरगवां, मशरूम उत्पादन में श्रीमती पूनम कुशवाहा डेलनी पिपरीकला, सीमित संसाधनों में अधिक आय सृजन हेतु लक्ष्मी प्रसाद कुशवाहा बम्होरी तिलाई रामपुर बघेलान, वर्षा जल संरक्षण उपायों हेतु रामकुशल कोल करहिया खो?री तथा सामाजिक कार्यों में पहल व सहभागिता के लिए कृष्ण कुमार गौतम पटनी पटनाखुर्द को राष्ट्रऋषि नाना जी देशमुख उत्कृष्ट कृषक अवार्ड से सम्मानित किया गया।

चित्रकूट में चल रहे तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

नवभारत न्यूज

चित्रकूट 27 फरवरी। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 14 वीं पुण्यतिथि पर दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन मंगलवार को दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में हो गया।

समारोह सत्र के शुभारंभ चित्रकूट क्षेत्र से पधारे सभी संत समाज का अतिथियों द्वारा स्वागत सम्मान से हुआ। जिसमें संत समाज से मंडला से मदन मोहन गिरी महाराज, रामजी दास जी महाराज, मदन गोपाल दास जी महाराज, दिव्य जीवन दास जी महाराज, सीता शरण दास जी महाराज, नयागांव आश्रम से प्रपन्नाचार्य जी महाराज, राम हृदय दास जी, पवन बाबा, केशव जी महाराज, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ रामनारायण त्रिपाठी सहित सैकड़ों की संख्या में संत वृंद उपस्थित रहे। दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सम्मेलन के संयोजक वसंत पंडित ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) के 17 बिंदु है। सतत विकास को लेकर यह आयोजन चित्रकूट में हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 17 बिंदुओं को लेकर वर्ष 2015 से 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सतत विकास के इन 17 लक्ष्यों में से एसडीजी 2 एवं 4 पर यहाँ चिंतन हुआ है। आगे भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें करना है। वर्ष 2030 तक एसडीजी पर काम चलेगा। इससे वर्ल्ड एसडीजी फोरम को स्थाई रूप प्रदान करने में सहयोग मिलेगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लोबल फोरम तैयार किया गया है।

---

4 सतना-आसपास स्टार

www.starsamachar.com

सतना, बुधवार, 28 फरवरी 2024 स्टार समाचार

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि के साथ हजारों लोगों ने ग्रहण किया प्रसाद

- विविध क्षेत्रों से नानाजी के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट पहुंचकर दी श्रद्धांजलि

स्टार समाचार | चित्रकूट

भारत रत्न नानाजी देशमुख के स्मृति चिन्ह के रूप में दीनदयाल परिसर चित्रकूट में श्रद्धा स्थल पर उनकी 14 वीं पुण्यतिथि 27 फरवरी को देश भर के विभिन्न क्षेत्रों से समान उद्देश्य वाले कार्यकर्ताओं, जन प्रतिनिधियों एवं नानाजी के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट पहुंच कर नानाजी के श्रद्धा स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके अलावा संस्थान के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं और चित्रकूट क्षेत्र के लोगों द्वारा विधि-विधान पूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित किया। एक दिन पूर्व ही नानाजी को श्रद्धांजलि देने वाले क्षेत्रीय ग्रामीण दीनदयाल परिसर में आने लगे थे। प्रातः से ही चित्रकूट क्षेत्र के ग्रामीण लोग आना शुरू हो गए और पंडित दीनदयाल पार्क में बने नानाजी के श्रद्धा स्थल पर पुष्पांजलि का दौर चलता रहा, वहीं दूसरी ओर श्रीरामचरितमानस पाठ का हवन पूजन कार्यक्रम में भी लोग अपनी आहुति पूर्ण कर रहे थे। दीनदयाल परिसर के ग्राउंड में भंडारा प्रसाद का कार्यक्रम प्रातः 10 बजे से साधु-संतों के प्रसाद से प्रारंभ होकर अनवरत देर शाम तक चलता रहा। जिसमें हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। भण्डारा के दौरान विवेकानंद सभागार में ग्रामोदय विश्वविद्यालय एवं सुरेन्द्रपाल विद्यालय के संगीत विभाग एवं बच्चों द्वारा भजनों की प्रस्तुति की गई।

एक मुट्ठी अनाज एवं एक रुपए के अंशदान से हुआ भंडारा

27 फरवरी को होने वाला विशाल भंडारा प्रसाद आम जनमानस के एक मुट्ठी अनाज एवं एक रुपए अंशदान सहयोग से संपन्न हुआ। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं की टोली मझगवां एवं चित्रकूट जनपद के अधिकांश गांव एवं घरों तक पहुंची, पुण्यतिथि कार्यक्रम का आमंत्रण दिया और सहयोग की अपेक्षा की। इसमें संत समाज ने भी बढ़-चढ़कर भागीदारी की। हरेक गांव में आस्था के प्रति सहभागिता का नजारा देखने लायक था। जिसमें 11 हजार 52 परिवारों से प्रत्यक्ष संपर्क के दौरान 16 लाख 75 हजार 72 रुपया का अंशदान तथा 66 क्विंटल अनाज का संकलन हुआ।

सियाराम कुटीर में भी पुष्पार्चन

देशभर के कई स्थानों से नानाजी से जुड़े हुए तथा उनके कार्य के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट आकर नानाजी के आवास सियाराम कुटीर में भी जाकर उनको श्रद्धा सुमन अर्पित किए। संत महंतों ने भी अपनी पूरी टोली के साथ सियाराम कुटीर आकर नानाजी के कक्ष में पहुंचकर उनको याद किया।

श्रद्धांजलि

भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख

KRISHI VIGYAN KENDRA, REWA (MP)
कृषि विज्ञान केन्द्र
आपका हार्दिक स्वागत करता है

Khadi India

भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख
"मैं अपने लिये नहीं अपनों के लिए हूँ,
अपने वे हैं जो पीड़ित और उपेक्षित हैं।"
- नानाजी देशमुख
"I do not stand for myself but for my kith and kin;
my kith and kin are those who are oppressed and neglected."
- Nanaji Deshmukh

देश का स्पोर्टस हब बनता मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश ने राष्ट्रीय स्पोर्टस मैप में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। राज्य सरकार के गंभीर प्रयासों, खेल अधोसंरचनाओं में निरंतर विस्तार, प्रशिक्षण के स्तर में गुणवत्तापूर्ण सुधार और खिलाड़ियों के प्रोत्साहन देने के उत्कृष्ट परिणाम हासिल हुए हैं। खेल अकादमियों का संचालन, खेल पुरस्कार, खेलों के लिये विशेष छात्रवृत्ति, पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार और खेल संघों को खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से मध्यप्रदेश देश का स्पोर्टस हब बन गया है।

खेल अकादमियों का संचालन योजना अंतर्गत विभाग द्वारा 18 खेलों की 11 अकादमियाँ संचालित की जा रही है। खेल अकादमियों एवं फीडर सेन्टर्स में 996 खिलाड़ियों को बोर्डिंग एवं डे-बोर्डिंग योजना अंतर्गत प्रवेश प्रदान कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा रही है।

भारत सरकार द्वारा मध्यप्रदेश के 3 खिलाड़ियों यथा शूटिंग खिलाडी ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर, हॉकी खिलाड़ी सुशीला चानू, केनोइंग-क्याकिंग की पैरा खिलाड़ी प्राची यादव को अर्जुन अवॉर्ड एवं हॉकी ऑलिपियन के प्रशिक्षक श्री शिवेन्द्र सिंह को द्रोणाचार्य अवार्ड-2023 से सम्मानित किया गया। मध्यप्रदेश राज्य को 23 साल बाद यह अवसर मिला है, जब मध्यप्रदेश के एक साथ 3 खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड एवं एक प्रशिक्षक को द्रोणाचार्य अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। गोवा में आयोजित 37वीं राष्ट्रीय खेल में मध्यप्रदेश के 416 खिलाडियों द्वारा 37 खेलों में प्रतिभागिता कर 112 पदक (37-स्वर्ण, 36-रजत, 39-कॉस्य) प्राप्त कर पदक तालिका में चौथा स्थान प्राप्त किया। यह हमारे खिलाड़ियों का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है।

खेलो एम.पी यूथ गेम्स

खेलों इण्डिया यूथ गेम्स-2022 की तर्ज पर मध्यप्रदेश राज्य में खेलो एम.पी यूथ गेम्स-2023 का आयोजन मध्यप्रदेश के सभी जिलो में किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश के 1,20,105 खिलाड़ियों द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया। यह आयोजन निरंतर प्रतिवर्ष किया जायेगा। भोपाल को स्पोट्‌र्स हब तथा मध्यप्रदेश में स्पोट्‌र्स टूरिज्म को बढ़ाने के लिये नाथू बरखेडा स्पोट्‌र्स सांईस सेन्टर की स्थापना की जा रही है। प्रथम चरण में एथलेटिक्स सिंथेटिक ट्रेक मय फुटबॉल स्टेडियम एवं हॉकी सिंथेटिक टर्फ मय पवेलियन द्वितीय चरण में "इंडोर स्पोट्‌र्स कॉम्पलेक्स" का निर्माण तथा तृतीय चरण में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण प्रस्तावित है। इसके लिये विभाग द्वारा 985 करोड़ 76 लाख रुपये का व्यय किया जायेगा।

खेल अधोसंरचना का विस्तार

अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय स्तर की खेल अधोसंरचना निर्माण में मध्यप्रदेश राज्य अग्रणी राज्य की श्रेणी में है। मध्यप्रदेश में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के 18 हॉकी टर्फ निर्मित है तथा 3 हॉकी टर्फ निर्माणाधीन है। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के 10 एथलेटिक्स सिंथेटिक निर्मित है। विभाग के स्वामित्व के 107 स्टेडियम/खेल प्रशिक्षण केन्द्र निर्मित है तथा 56 निर्माणाधीन है।

37 वर्षों के बाद टोक्यो ओलम्पिक-2020 में मध्यप्रदेश के खेल अकादमियों के खिलाडियों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन कर 10 खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभागिता की गई एवं पुरूष हॉकी में एक कांस्य पदक प्राप्त किया गया। आगामी ओलम्पिक, फ्रांस (पेरिस) गेम्स-2024 में अकादमी के खिलाड़ी अधिक संख्या में प्रतिनिधित्व कर सकें, इसके लिये खिलाड़ियों को आधुनिक उच्च प्रशिक्षण के लिये विदेशी प्रशिक्षक से विदेश में प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जायेगा तथा विदेशी प्रशिक्षक को भी आमंत्रित किया जायेगा।

माँ तुझे प्रणाम योजना अंतर्गत माह जून-2023 में मध्यप्रदेश के 909 युवाओं को तनोत माता का मंदिर (राजस्थान), वाघा-हुसैनीवाला (अमृतसर पंजाब), कन्याकुमारी (तमिलनाडु) की अनुभव यात्रा कराई गई। योजना अंतर्गत प्रतिवर्ष 3,000 युवाओं को भ्रमण यात्रा पर भेजने का लक्ष्य रखा गया है। मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग अकादमी भोपाल में विश्व कप (राइफल/पिस्टल), एशियाई शूटगन शूटिंग चैम्पियनशिप और विश्व जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप का आयोजन आगामी माहों में किया जाना प्रस्तावित हैं।

वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोट्र्स कॉम्पलेक्स

मध्यप्रदेश में वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोट्र्स कॉम्पलेक्स योजना शुरू करेंगे। इसके अंतर्गत प्रत्येक जिले में एक स्पोट्र्स कॉम्पलेक्स का निर्माण किया जायेगा। ब्रेकडांस अकादमी की स्थापना की जा रही है। ई-स्पोट्र्स अकादमी एवं जिला उज्जैन में मलखम्ब एवं जिम्नास्टिक अकादमी की स्थापना की जाना प्रस्तावित है।

मध्यप्रदेश में खेल अधोसंरचना का निर्माण, जन निजी भागीदारी योजना से किया जाना प्रस्तावित है। मध्यप्रदेश के प्रतिभावान खिलाड़ियों का खेल अकादमियों में चयन हो सके, इसके लिये प्रत्येक खेल अकादमी के न्यूनतम 5 फीडर सेंटर स्थापित किये जायेंगे। माह अक्टूबर, 2024 में आयोजित नेशनल गेम्स, उत्तराखण्ड-2024 में मध्यप्रदेश से अधिकाधिक खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभागिता कर पदक अर्जित करने के प्रयास किये जायेंगे।

ओलम्पिक गेम्स-2024 में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों की अधिकाधिक प्रतिभागिता का प्रयास किया जायेगा। पुलिस विभाग में प्रतिवर्ष उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सब इंसपेक्टर के 10 पद एवं कान्सटेबल के 50 पद पर नियुक्ति की जायेगी।

वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोट्र्स कॉम्पलेक्स योजना अंतर्गत भविष्य की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए खेल अधोसंरचना को 4 श्रेणी राजभोगी शहर, संभागीय मुख्यालय, बड़े जिला मुख्यालय, छोटे जिला मुख्यालय में स्पोट्र्स कॉम्पलेक्स स्थापित करने की कार्य-योजना तैयार की जायेगी। खेल संघों की खेल प्रतियोगिताओं एवं पंजीकृत खिलाड़ियों की जानकारी ऑनलाइन की जायेगी।

लेख : 005 **बी**

रोज़गार के लिये युवाओं को कौशल सम्पन्न बनाने का संकल्प

प्रदेश के हर युवा को कौशल सम्पन्न बनाकर रोज़गार प्राप्त करने योग्य बनाने के लिये राज्य सरकार ने बदलते परिदृश्य के अनुरूप रणनीतियों में बदलाव किया है। प्रत्येक युवा प्रतिभावान है। ऊर्जा और क्षमता से भरपूर है। उनकी शक्ति का उपयोग प्रदेश के विकास में तभी किया जा सकता है जब वे पूरी क्षमता और प्रतिभा के साथ कौशल सम्पन्न बनें। हर युवा के हाथ में हुनर हो और वे स्वयं के साथ-साथ प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने योगदान दे सके। इस लक्ष्य के साथ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं के माध्यम से उदयोगों की आवश्यकताओं को देखते हुए उनका बेहतर कौशल उन्नयन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व और कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री श्री गौतम टेटवाल के मार्गदर्शन में “कौशल युक्त- बेरोजगार मुक्त” प्रदेश बनाने के संकल्प को पूरा करने के लिये युवाओं को बेहतर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रोजगार मेलों के माध्यम से उन्हें रोजगार के अवसर भी मिल रहे हैं। हाल ही में 22 नवीन आईटीआई स्वीकृत किये गये हैं।

बारह जिलों में 22 विकासखण्डों में नवीन शासकीय आईटीआई जल्दी ही खोले जायेंगे। अब आईटीआई की संख्या 290 हो गयी है। नवीन 22 आईटीआई के शुरू होने पर 5 हजार 280 अतिरिक्त बच्चों को प्रशिक्षण मिल सकेगा। भारत सरकार की “वामपंथ उग्रवाद से प्रभावित 48 जिलों में कौशल उन्नयन” योजना में मण्डला जिले के विकासखंड मवई में एक आईटीआई स्वीकृत किया गया है।

भारत सरकार की ग्रेडिंग में उल्लेखनीय उपलब्धि

प्रशिक्षण महानिदेशालय, भारत सरकार के द्वारा जारी ग्रेडिंग स्कोर में प्रदेश की 8 आईटीआई ने 10 में से 9+, 35 आईटीआई ने 8+, 87 ने 7+, 138 ने 6+, 208 ने 5+ एवं 232 आईटीआई ने 4+ ग्रेडिंग स्कोर प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। प्रदेश में सर्वोच्च ग्रेडिंग प्राप्त शासकीय आईटीआई रहटगाँव एवं हरदा ने 10 में से 9.20 ग्रेडिंग स्कोर प्राप्त किया है।

ग्लोबल स्किल पार्क में प्रतिवतर्ष 6000 युवाओं को प्रशिक्षण

विकसित भारत संकल्प अनुसार प्रदेश में तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रणाली को सुदृढ़ करते हुए प्रदेश के युवाओं, महिलाओं एवं समाज के सभी वर्गों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का तकनीकी एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण देने के लिये राज्य शासन द्वारा ग्लोबल स्किल्स पार्क की स्थापना की गई है। साथ ही रीवा, सागर, ग्वा्लियर एवं जबलपुर में भी ग्लोबल स्किल्स पार्क की स्वीकृति दी जा चुकी है।

भोपाल में 36 एकड़ में बने ग्लोबल स्किल्स पार्क में छात्रों के रहने के लिये सर्वसुविधायुक्त छात्रावास भी है। कुल 600 छात्रों एवं 600 छात्राओं को छात्रावास की सुविधा मुहैया कराई जायेगी। इसके अलावा 216 प्रशिक्षकों को भी तमाम सुविधाओं के साथ रहने हेतु हॉस्टल रूम्स आवंटित किये जायेंगे। इस पार्क के माध्यम से प्रतिवर्ष 6000 युवाओं

को विश्व स्तरीय कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ा जायेगा। पार्क में साइबर एण्ड नेटवर्क सिक्योरिटी, एनीमेशन मोशन ग्राफिक्स और गेमिंग टेक्नोलॉजी सहित नवीनतम तकनीकों से संबंधी प्रशिक्षण दिया जायेगा, जिससे युवाओं को तुरंत रोजगार मिल सके। बेहतर प्रशिक्षण के लिये आईटीआई दिल्ली, आईटीआई इंदौर, राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय और नेशनल पावर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट से एग्रीमेंट किये गये हैं।

पी.एम. विश्वकर्मा योजना

पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को सहायता देने के लिये पी.एम. विश्वकर्मा योजना शुरू की गई है। योजना में टूल किट खरीदने के लिये 15 हजार रूपये का अनुदान मिलेगा। साथ ही पहली बार में एक लाख और दूसरी बार में 2 लाख रूपये का सस्ता ऋण मिलेगा। प्रारंभिक प्रशिक्षण 5 से 7 दिन का और 15 दिन का एडवांस प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रशिक्षण के दौरान 500 रूपये प्रतिदिन भत्ता भी मिलेगा। प्रशिक्षण के बाद सर्टिफिकेट भी मिलेगा। प्रशिक्षण के लिये हितग्राहियों के चयन की प्रक्रिया जारी है। एक परिवार से एक ही को लाभ मिलेगा।

योजना में कारीगर बढ़ई, सुनार, गुडिया और खिलौना निर्माता, नाव निर्माता, कुम्हार, नाई, अस्त्रकार, मूर्तिकार (पत्थर तराशने वाला), माला निर्माता (मालाकार), लोहार, मोची (चर्मकार)/ जूता कारीगर, धोबी, हथौड़ा, टूल किट निर्माता, राजमिस्त्री, दजी, ताला बनाने वाला, टोकरी, चटाई, झाडू निर्माता कॉयर बुनकर और मछली पकड़ने का जाल निर्माता शामिल है।

आदिवासी बहुल जिलों में बालिकाओं को प्रशिक्षण

मध्यप्रदेश में संकल्प योजनान्र्गत यूएन-वूमेन एवं मध्यप्रदेश कौशल विकास एवं रोजगार निर्माण बोर्ड के बीच आदिवासी बहुल जिलों में बालिकाओं को तकनीकी शिक्षा देने के उद्देश्य से एमओयू हुआ। इसका लक्ष्य बालाघाट, मंडला, डिण्डौरी और छिंदवाड़ा सहित 12 आदिवासी बहुल जिलों में एक हजार बालिकाओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण मिलेगा।

मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना

राज्य शासन द्वारा औपचारिक शिक्षा प्राप्त युवाओं को पंजीकृत औद्योगिक एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में "आन द जाब ट्रेनिंग" की सुविधा देने के लिये "मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना" लागू की गई है। इस योजना में एक लाख युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। यह देश की सबसे वृहद एवं व्यापक "आन द जाब ट्रेनिंग" योजना है। योजना में 10 हजार 522 युवा प्रशिक्षण ले रहे हैं। इसमें 21 हजार 660 प्रतिष्ठान पंजीकृत हैं।

मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना में 18 से 29 वर्ष के युवा पात्र होंगे हैं, जो मध्यप्रदेश के स्थानीय निवासी हैं तथा जिनकी शैक्षणिक योग्यता 12वीं अथवा आईटीआई या उच्च है। योजना के तहत चयनित युवा को "छात्र-प्रशिक्षणार्थी" कहा जायेगा। प्रशिक्षण के दौरान 8000 से 10000 रुपये प्रतिमाह स्टाइपेंड प्राप्त होगा। 12वीं पास को 8000 रूपये, आईटीआई पास को 8500 रूपये, डिप्लोमा पास को 9000 रूपये तथा स्नातक एवं उच्च योग्यता धारक को 10000 रूपये प्रतिमाह स्टाइपेंड दिया जा रहा है। प्रशिक्षण उपरान्त इन्हें प्रमाण-पत्र दिया जायेगा। युवाओं को हुनरमंद बनाकर उन्हें रोजगार एवं स्व-रोजगार से जोड़ने के लिये राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

लेख : 007 **बी**

ऊर्जा सुरक्षा और क्षमता बढ़ाने की नई रणनीति

आम नागरिकों के जीवन में खुशहाली बढ़ाने और आर्थिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिये ऊर्जा सुरक्षा देने और क्षमता बढ़ाने की नई रणनीति पर मध्यप्रदेश सरकार ने काम करना शुरू कर दिया है। विद्युत क्षेत्र के विकास और विस्तार के लिये राज्य सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में सभी आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं। प्रतिदिन गैर कृषि उपभोक्ताओं को 24 घंटे एवं कृषि उपभोक्ताओं को 10 घंटे गुणवत्तापूर्ण बिजली मिल रही है।

विद्युत उपलब्ध क्षमता 21840 मेगावाट हो गई है। दिनांक 29 दिसम्बर, 2023 को प्रदेश के इतिहास में सर्वाधिक 17586 मेगावाट शीर्ष मांग की पूर्ति की गई। वित्तीय वर्ष 2023-24 के बचे महीनों में 1007 मेगावाट तथा 2024-25 के दौरान 5008 मेगावाट विद्युत उपलब्ध क्षमता बढ़ाने की रणनीति पर काम शुरू हो गया है।

विद्युत कंपनियों ने विद्युत व्यवस्था एवं विद्युत प्रणाली को मजबूत बनाने के लिये कई उल्लेखनीय काम किये हैं। इनमें 184 मेगावाट विद्युत उपलब्ध क्षमता में वृद्धि, 12 नवीन अति उच्चदाब उपकेन्द्रों की स्थापना, 636 सर्किट किमी अति उच्चदाब लाईन का निर्माण, 23 नवीन 33/11 के.व्ही. उपकेन्द्रों की स्थापना, 606 किमी 33 केव्ही एवं 884 किमी 11 केव्ही लाइनों का निर्माण एवं 2373 वितरण ट्रांसफार्मरों की स्थापना प्रमुख हैं। अप्रैल से दिसंबर, 2023 के बीच कुल 7335 करोड़ यूनिट विद्युत प्रदाय की गयी, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि से 545 करोड़ यूनिट यानि 8 प्रतिशत ज्यादा है।

उपभोक्ताओं को भरपूर लाभ

उपभोक्ताओं के हित में कई योजनाएँ शुरू की गई हैं। अटल गृह ज्योति योजना में प्रदेश के ऐसे सभी घरेलू उपभोक्ताओं को योजना का लाभ दिया जा रहा है, जिनकी मासिक खपत 150 यूनिट तक है। पात्र उपभोक्ताओं को प्रथम 100 यूनिट की खपत के लिये अधिकतम 100 रूपये का बिल दिया जा रहा है। अंतर की राशि सब्सिडी के रूप में वितरण कंपनियों को दी जा रही है। योजना में 100 वाट तक के संयोजित भार के 30 यूनिट तक की मासिक खपत वाली उपभोक्ता श्रेणी एल.व्ही. 1.1 के अनुसूचित जाति/जनजाति के गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले उपभोक्ताओं को प्रति माह 25 रूपये का बिल दिया जा रहा है। राज्य शासन द्वारा वितरण कंपनियों को योजना के लिये वर्ष 2022-23 में 8082 करोड़ रुपये की सब्सिडी दी गई। वर्ष 2023-24 के बजट में 4690 करोड़ रुपये की सब्सिडी का प्रावधान है। इस योजना से लगभग 103 लाख घरेलू उपभोक्ताओं को प्रतिमाह लाभ मिल रहा है।

अटल कृषि ज्योति योजना में 10 हार्सपॉवर तक के अनमीटर्ड स्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को 750 रूपये प्रति हार्सपॉवर प्रतिवर्ष एवं 10 हार्सपॉवर से अधिक के अनमीटर्ड स्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को 1500 रुपये प्रति हार्सपॉवर प्रतिवर्ष की फ्लेट दर से बिजली मिल रही है। साथ ही 10 हार्सपॉवर तक के मीटरयुक्त स्थाई कृषि पंप कनेक्शन एवं अस्थाई मीटर्ड एवं अनमीटर्ड कृषि पंप कनेक्शनों को भी मासिक नियत प्रभार एवं ऊर्जा प्रभार में रियायत दी गई है। इस योजना से लगभग 26 लाख कृषि उपभोक्ताओं को लाभ मिल रहा है। वितरण कंपनियों को वर्ष 2022-23 में 12995 करोड़ रुपये की सब्सिडी दी गई। वर्ष 2023-24 में 11520 करोड़ रुपये का बजट में प्रावधान किया गया है।

किसानों के हित में 1 हेक्टेयर तक भूमि एवं 5 हार्सपावर तक के कृषि पंप वाले अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के किसानों को निःशुल्क बिजली दी जा रही है। इसकी प्रतिपूर्ति के लिये राज्य शासन द्वारा वितरण कंपनियों को वर्ष 2022-23 में 4997 करोड़ रुपये की सब्सिडी प्रदान की गई एवं वर्ष 2023-24 में इसके लिये 5775 करोड़ रुपये का बजट में प्रावधान किया गया है। इससे लगभग 9.36 लाख कृषि उपभोक्ताओं को लाभ मिल रहा है।

कृषक/कृषकों के समूहों स्थायी कृषि पंप कनेक्शन देने मांग को देखते हुए "मुख्यमंत्री कृषक मित्र योजना" लागू की गई

है। कृषक/कृषकों के समूह के 3 एच.पी. या अधिक क्षमता के स्थायी पंप कनेक्शन के लिये वितरण कंपनी द्वारा 200 मीटर दूरी तक 11 के.व्ही. लाइन का विस्तार एवं वितरण ट्रांसफार्मर स्थापित किया जायेगा। अधोसंरचना विकास लागत की केवल 50 प्रतिशत राशि का वहन संबंधित कृषक/कृषकों के समूह करेंगे। यह योजना 2 वर्षों तक प्रभावशील रहेगी। प्रथम वर्ष में योजनांतर्गत 10,000 पंप कनेक्शन देने का लक्ष्य है।

रिवेम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (आरडीएसएस)

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गुणवत्तापूर्ण विद्युत पूर्ति के उद्देश्य से परिणाम आधारित वितरण क्षेत्र योजना रिवेम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (RDSS) लागू की गई है। योजना का उद्देश्य वितरण कंपनियों की समग्र तकनीकी एवं वाणिज्यिक हानियों को कम करना तथा बिजली की प्रतियूनिट लागत तथा राजस्व के अंतर को समाप्त करना है।

योजना में केंद्र सरकार द्वारा प्रीपेड मीटर एवं सिस्टम मीटरिंग कार्य के लिये 15 प्रतिशत राशि तथा विद्युत् अधोसंरचना के उन्नयन एवं सुदृढ़ीकरण कार्यों के लिये 60 प्रतिशत राशि अनुदान के रूप में विद्युत वितरण कंपनियों को देने का प्रावधान है।

इस योजना को वर्ष 2025-26 तक पूरा किया जाना है। योजना में प्रीपेड स्मार्ट मीटरिंग एवं सिस्टम मीटरिंग वितरण हानियों में कमी के लिये प्रस्तावित कार्य एवं प्रणाली सुदृढ़ीकरण एवं आधुनिकीकरण के कार्य शामिल है। राज्य सरकार ने लगभग 24,170 करोड़ रुपये की कार्ययोजना को स्वीकृति दी है। लगभग 2.64 लाख स्मार्ट मीटर स्थापित हो गये हैं एवं वितरण हानियों में कमी के लिये अधोसंरचना निर्माण के लिये लगभग रुपये 7794 करोड़ के कार्यादेश जारी हो गये हैं। इसमें से लगभग रूपये 875 करोड़ के कार्य किये जा चुके हैं।

आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश-2023 के अंतर्गत भविष्य की विद्युत मांग की आपूर्ति करने के लिये पारेषण प्रणाली के विस्तार के लिये टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धात्मक निविदाओं के माध्यम से अति उच्चदाब उपकेन्द्रों एवं उससे संबंधित लाइनों के निर्माण कार्य को शामिल किया गया है। टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धा बोली (टीबीसीबी) के माध्यम से राज्य में 1 नग 400 के.व्ही., 7 नग 220 के.व्ही. तथा 27 नग 132 के.व्ही. उपकेन्द्रों तथा संबद्ध पारेषण लाइनों का निर्माण होगा। अब तक 10 उपकेन्द्रों तथा संबंद्ध पारेषण लाइनों के कार्य पूरे किये जा चुके है।

उपभोक्ता सेवाओं में सुधार

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत प्रदाय संबंधी शिकायतों के निराकरण के लिये केन्द्रीयकृत कॉल सेंटरों (1912) को क्रियाशील कर उनकी क्षमता बढ़ाई गई है। शिकायतों के निराकरण के बाद उपभोक्ता संतुष्टि के लिये फीडबैक व्यवस्था का भी प्रावधान है। असंतुष्ट उपभोक्ताओं से मैदानी अधिकारियों द्वारा व्यक्तिगत सम्पर्क कर, उनकी समस्या का निराकरण किया जाता है। नये कनेक्शन, संयोजित भार में वृद्धि/कमी, टैरिफ श्रेणी में परिवर्तन, नाम परिवर्तन जैसी महत्वपूर्ण सेवाएं ऑनलाइन दी जा रही है। उच्च एवं निम्न दाब के नये कनेक्शन के लिये आवेदन नाम/भार और उपयोग परिवर्तन, प्रोफाईल में परिवर्तन, बिल भुगतान एवं शिकायत, सेल्फ फोटो रीडिंग, मीटर स्थान परिवर्तन एवं स्थाई विच्छेदन के लिये कंपनियों द्वारा स्मार्ट बिजली एप उपयोग में ला रहे हैं।

उद्योगों के लिये छूट

ग्रामीण फीडरों के माध्यम से आपूर्ति प्राप्त करने वाले उच्चदाब उपभोक्ता के नियत प्रभार में 5 प्रतिशत की छूट और न्यूनतम खपत में 20 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। ओपन एक्सेस खपत में कमी कर वितरण कंपनी से बिजली क्रय करने पर बढ़ी हुई खपत पर 1 रुपये प्रति यूनिट की छूट और कैप्टिव प्लांट से खपत में कमी कर वितरण कंपनी से बिजली क्रय करने पर बढ़ी हुई खपत पर 2 रुपये प्रति यूनिट की छूट मिलेगी।

लेख : 008 **बी**

राजस्व महाअभियान

डेढ़ लाख राजस्व प्रकरणों का निराकरण

राजस्व प्रशासन में पारदर्शिता लाने और आंतरिक प्रक्रियाओं को मजबूत बनाने के प्रयासों के चलते मध्यप्रदेश में राजस्व प्रकरणों का समाधान करने राजस्व महाअभयिान शुरू किया गया है। बहुत कम समय में ही डेढ़ लाख राजस्व प्रकरणों का निराकरण हो गया है।

राजस्व न्यायालयों में लंबित प्रकरणों का समय-सीमा में निराकरण करने, नये राजस्व प्रकरणों को आरसीएमएस पर दर्ज करने, नक्शे पर तरमीम, पीएम किसान का सेच्युरेशन, समग्र का आधार से ई-केवाईसी और खसरे की समग्र आधार से लिंकिंग सहित आमजन की राजस्व से संबंधित समस्याओं के निराकरण में 15 जनवरी, 2024 से शुरू राजस्व महाअभियान की शुरूआत से ही अच्छे परिणाम आने लगे हैं। यह महाअभियान 29 फरवरी तक चलेगा। इसमें समय-सीमा पार कर चुके राजस्व विभाग के नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन और अभिलेख दुरुस्ती के 2 लाख 41 हजार 784 प्रकरणों का निराकरण किया जायेगा। अब तक लगभग डेढ़ लाख राजस्व प्रकरणों का समाधान हो चुका है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर पर शुरू किये गये महाअभियान से लंबित प्रकरणों के निराकरण में तेजी आई है।

कैसे होता है त्वरित निराकरण?

राजस्व रिकॉर्ड के वाचन के लिये पटवारी को समय-सारणी दी गई। गाँव में खसरा बी-1 का वाचन किया गया। नागरिकों को समग्र ई-केवाईसी और समग्र से खसरे की लिंकिंग के लिये समग्र वेब पोर्टल एमपी ऑनलाइन/सीएसई के कियोस्क के माध्यम से समग्र में आधार की ई-केवाईसी कराने की सुविधा नागरिकों को निःशुल्क दी जा रही है। आरसीएमएस पर प्रकरण दर्ज कराने के लिये नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रख लोक सेवा केन्द्रों के अतिरिक्त एमपी ऑनलाइन और सीएसई के कियोस्क के माध्यम से भी आरसीएमएस पर प्रकरण दर्ज कराये जा रहे हैं। समय-सीमा पार कर चुके लंबित प्रकरणों को न्यायालय में नियमित सुनवाई कर नामांतरण, बंटवारा, भू-अभिलेख दुरुस्ती के प्रकरणों का निराकरण किया जा रहा है।

रिकॉर्ड में दर्ज ऐसे भू-स्वामी, जिनकी मृत्यु काफी समय पहले हो चुकी है परंतु उनके उत्तराधिकारियों के पक्ष में नामांतरण का प्रकरण दर्ज नहीं हुआ है उनका महाअभियान में उत्तराधिकार नामांतरण के प्रकरणों को दर्ज कर निराकरण किया जा रहा है।

ग्रामीणों और किसानों में उत्साह

नामांतरण के लंबित एक लाख 54 हजार 116 प्रकरणों में से एक लाख 3 हजार 849 प्रकरणों का निराकरण कर दिया गया है। निराकरण के लिये शेष रहे 50 हजार 267 प्रकरण अभयिान की समाप्ति तक निराकृत हो जायेंगे। बंटवारा के 30 हजार 969 प्रकरणों में से 18 हजार 266 प्रकरणों का निराकरण हो चुका है। सीमांकन के लंबित 31 हजार 953 प्रकरणों में से 17 हजार 243 का निराकरण किया जा चुका है। बंटवारा और सीमांकन के लंबित शेष प्रकरणों को फरवरी अंत तक निराकृत करने लक्ष्य तय किया गया है। अभिलेख दुरुस्ती के लंबित 24 हजार 746 प्रकरणों में से 6 हजार 289 प्रकरणों का निराकरण किया जा चुका है। राजस्व महाअभियान की रोजाना समीक्षा की जा रही है। राजस्व महाअभियान से ग्रामीणों और किसानों में उत्साह है। उनके लंबित प्रकरणों का अभियान में निराकरण हुआ है।

राजस्व महाअभियान के दौरान लगभग एक लाख प्रकरण दर्ज किये गये हैं। दर्ज किये गये प्रकरणों का प्रक्रिया का पालन करते हुए त्वरित निराकरण किया जा रहा है। राजस्व महाअभियान की सतत निगरानी के लिये राजस्व विभाग द्वारा डेशबोर्ड का संचालन किया जा रहा है। इससे राज्य स्तर, जिला स्तर और तहसील स्तर तक महाअभियान के दौरान हो रहे कार्यों की प्रगति की प्रतिदिन समीक्षा की जा रही है।

पिछले 2 माह में मुख्यमंत्री आवासीय भू-अधिकार योजना में प्राप्त 17 लाख 8 हजार 532 आवेदन में से 14 लाख 54 हजार 640 अधिकार-पत्र के लिये पात्र पाये गये हैं। मुख्यमंत्री नगरीय भू-अधिकार योजना में कुल प्राप्त 2 लाख 35 हजार 713 आवेदन में से एक लाख 51 हजार 643 आवेदनों का निराकरण किया जा चुका है और शेष के निराकरण की प्रक्रिया जारी है।

लेख : 009

हर गरीब बेघर को घर का उपहार- गरीबों को घर देने में म.प्र. में आगे

अपने घर का सपना संजोये गरीब परिवारों की उम्मीदें पूरी करने में मध्यप्रदेश सरकार ने देश में सर्वोत्तम प्रदर्शन किया है। विकास की रेल में डबल इंजन लगने से गति तीव्रतम हो गई है। मध्य प्रदेश को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में 38 लाख 415 आवास निर्माण लक्ष्य मिला था। अब तक 36 लाख 40,371 आवास बनाकर मध्य प्रदेश देश में दूसरे स्थान पर आ गया है। 3.79 लाख आवासों का निर्माण चल रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सोच है कि घर की चाबी- सम्मान, आत्मविश्वास, सुनिश्चित भविष्य, नई पहचान और बढ़ती संभावनाओं का द्वार खोलती है। इसी सोच के साथ 2016 में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की शुरूआत हुई थी। हर नागरिक का सपना है उसके परिवार का अपना घर हो। अपना सपना पूरा करने में कई बाधाएं आती हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) इन बाधाओं को करने में प्रभावी सिद्ध हुई है। परिणामस्वरूप मध्यप्रदेश में लाखों लोगों के पास अपना घर है।

ग्रामीण क्षेत्रों में बेघर परिवारों और कच्चे एवं जीर्ण-शीर्ण मकानों में रहने वाले परिवारों को 2024 तक बुनियादी सुविधाओं सहित पक्के मकान की सुविधा देने का लक्ष्य है। यह नागरिकों की गरिमा से जुड़ी योजना है। अधिक से अधिक महिलाओं, दिव्यांगों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक समुदायों को आवास की सुविधा मिल।

आवास में बुनियादी सुविधाओं की आपूर्ति के लिये अन्य योजनाओं का भी सहयोग लिया गया है। शौचालय को पीएमएवाई-जी आवास का अभिन्न अंग बनाया गया है। आवास को केवल तभी पूरा माना जायेगा जब शौचालय का निर्माण कार्य पूरा हो। मनरेगा में 90/95 श्रम दिवस की अकुशल मजदूरी का प्रावधान है। सौभाग्य योजना में बिजली का कनेक्शन, प्रधानमंत्री उज्जवला योजना से एलपीजी का कनेक्शन निशुल्क प्रदान किया जाता है। जल जीवन मिशन में पाइप से जल आपूर्ति की जा रही है। केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं को साथ लाकर गरीब जरूरतमंदों को आवास सुरक्षा दी गई है।

जनजातीय परिवारों में आई खुशी

प्रदेश के गुना जिले की ग्राम पंचायत मूंदरा खुर्द में रहने वाली सहरिया जनजाति के लिये प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) परिवर्तनकारी साबित हुई। कच्चे टूटे मकान में रहने वाले सहरिया परिवारों के अब पक्के मकान हैं। उन्होंने अपने आशियाने को नीले रंग से रंगा। दूर से ही उनके मकान पहचाने जा सकते हैं। ग्राम पंचायत मूंदरा खुर्द की कृष्णा बाई कहती हैं कि प्रधानमंत्री आवास योजना से उनकी गरिमा बढ़ी है।

शाजापुर जिले की ग्राम पंचायत भीलखेड़ी की रामकुंवर बाई गरीबी और दिव्यांगता के कारण जीवन भर कई अड़चनों का सामना करती आईं। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण ने उन्हें सहारा दिया। रामकुंवर बाई बताती है कि

योजना में माध्यम से जब उनका खुद का पक्का मकान तैयार हो गया तो उनके पति बालाराम खुशी से झूम उठे। पहले कभी इतनी खुशी नहीं हुई थी। उनका कच्चा मकान चूल्हे के धुएं से भर जाता था। अब घर भी पक्का है और एलपीजी कनेक्शन भी मिल गया। घर में शौचालय है और पाइप कनेक्शन से जल भी मिल रहा है। कई महिलायें अपने आवास का सपना पूरा होते देखकर अभिभूत हो रही है। आवास का आवंटन संयुक्त रूप से पति और पत्नी के नाम से हो रहा है। यह महिला सशक्तिकरण के लिये यह अनूठी पहल है।

लाभार्थियों की सूची की वैधता ग्राम सभा प्रमाणित करती है। इससे केवल जरूरतमंद लोगों को ही मदद मिलती है। अच्छी गुणवत्ता वाले आवासों के लिये राजमिस्त्रियों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किये गये हैं। प्रधानमंत्री जनमन मिशन में विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह को लाभ देने के लिये सर्वे चल रहा है। अब तक 64594 हितग्राहियों के आवास स्वीकृत कर 45520 के खाते में प्रथम किश्त के पैसे दे दिये गये हैं।

गुणवत्ता के लिये कड़ी निगरानी

मकान के निर्माण के विभिन्न चरणों की जियोटैग्ड तथा टाईम स्म्पटैड फोटोग्राफ को वित्तीय सहायता राशि की अगली किश्तों की रिलीज के साथ जोड़ा जाता है। फोटोग्राफ को निर्माण की गुणवत्ता तथा आवासों के पूरा होने की समीक्षा के लिये उपयोग किया जाता है। लाभार्थियों के निर्धारण से लेकर मकान के निर्माण तक से जुड़ी सहायता प्रदान करने तक के कार्य एमआईएस आवाससॉफ्ट पर किये जाते हैं। लाभार्थियों के खाते में भुगतान प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से किया जाता है। योजना के सफल क्रियान्वयन के लिये कई स्तरों पर निगरानी की जाती है। सामुदायिक भागीदारी से सामाजिक लेखा-परीक्षा, सांसदों की अध्यक्षता में दिशा समिति की बैठक, राष्ट्र स्तरीय निगरानीकर्ता के माध्यम से योजना के संचालन की समीक्षा नियमित रूप से की जाती है।

गरीब आवासहीनों के अपने आवास के सपने को साकार करने के लिये केंद्र सरकार के अंतरिम बजट 2024-25 में परिवारों की संख्या बढ़ने के कारण नई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में अगले पांच वर्षों में दो करोड अतिरिक्त मकानों का निर्माण शुरू करने का प्रावधान है। मध्यप्रदेश में हर जरूरतमंद गरीब को छत मिलने का संकल्प पूरा होगा।

लेख : 0010

रामराज्य की परिकल्पना को साकार करता मप्र

मध्यप्रदेश में रामराज्य और सुशासन की अवधारणा को साकार करने के लिये प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री डा मोहन यादव के नेतृत्व में प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रही है। सुशासन ही रामराज्य का स्वरूप है।

राज्य सरकार ने 60 दिनों की अल्पावधि में जन कल्याण के लिये जो निर्णय लिये हैं उससे रामराज्य की परिकल्पना के अनुरूप हैं। इस निर्णय-प्रक्रिया में सहभागी बनना सभी के लिये सौभाग्य की बात है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम हमारे रोम-रोम में बसे हैं। वे हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हर कदम साथ हैं। यह रामराज्य की मूल अवधारणा में निहित शासन, त्वरित न्याय, खुशहाल और बेहतर समाज तथा जनभागीदारी शामिल है।

चित्रकूट एवं ओरछा सहित प्रदेश में संपूर्ण राम वन गमन पथ के सर्वांगीण विकास के लिये कार्य प्रारंभ हो गया है। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के चरण जिन-जिन स्थानों पर पड़े हैं उन्हें तीर्थ स्थलों के रूप में विकसित करने का संकल्प भी सरकार ने लिया है। सुशासन में समाज के सभी अंगों की सहभागिता जरूरी है। सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए प्रदेश के शूरवीरों के जीवन और राष्ट्र के प्रति बलिदान की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने के साथ भावी पीढ़ी को प्रेरित करने के लिये भारत वीर संग्रहालय की स्थापना का भी निर्णय लिया है।

भगवान श्रीराम की अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा से सभी गौरवान्वित हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में दृढ़ संकल्पित होकर राम राज्य और सुशासन की अवधारणा को धर्म, संस्कृति और विकास के बेहतर समन्वय के रूप में आगामी महाशिवरात्रि से गुड़ीपड़वा के मध्य उज्जैन में भव्य विक्रम व्यापार और उद्योग मेले का आयोजन होने जा रहा है। यह प्रदेश के धार्मिक, सांस्कृति, आध्यात्मिक और आर्थिक विकास का प्रतिबिंब होगा। इसमें विक्रम वैदिक घड़ी, विक्रम पंचांग के लोकार्पण के साथ सम्राट विक्रमादित्य अलंकरण समारोह भी आयोजित किया जायेगा।

धर्मप्रेमी जनता को बाबा महाकाल की नगरी के लिये हवाई यात्रा की सुविधा भी मिलेगी। प्रदेश में श्री केदारनाथ धाम की तरह इंदौर से उज्जैन एवं ओंकारेश्वर (ममलेश्वर) ज्योतिर्लिंग, जबलपुर से चित्रकूट, ग्वालियर से ओरछा एवं पीताम्बरा पीठ के लिये हेलीकॉप्टर सेवाएं प्रारंभ की जायेंगी।

मध्यप्रदेश आध्यत्मिक और प्रभु श्रीराम के प्रति असीम श्रद्धा से सुशासित है। प्रदेशवासियों ने अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिकता की खुशियों को प्रभात फेरियों, कलश यात्राओं तथा विशेष स्वच्छता अभियान और दीपदान की रोशनी से जगमग कर अभिव्यक्त किया। लोकाचार और व्यवहार में भी वह अनंत खुशियां दिखाई दी। अयोध्या और हरिद्वार की तर्ज पर मध्यप्रदेश के घाटों को विकसित करने का निर्णय लिया गया है। पवित्र

नगरी चित्रकूट को विश्व स्तरीय धार्मिक एवं पर्यटन स्थल के स्वरूप में विकसित करने और मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना से प्रदेश के वरिष्ठ नागरिकों को हवाई और रेल मार्ग से भगवान श्रीराम के दर्शन के लिये अयोध्या की यात्रा का संकल्प जनता की खुशहाली का प्रतीक है।

सुशासन के लिये मुख्यमंत्री डॉ. यादव की सोच स्पष्ट है कि समाज के सभी वर्गों की सहभागिता के साथ सबके विकास को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ें। प्रदेश में प्रत्येक स्तर पर त्वरित पारदर्शी उत्तरदायी और संवेदनशील शासन व्यवस्था को सुनिश्चित करने की दिशा में प्रभावी कदम उठाये जा रहे हैं। प्रत्येक संभाग में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिये प्रत्येक संभाग में एम्स की तर्ज पर मध्यप्रदेश इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस मेडिकल साइंस स्थापित करने की ओर कदम बढ़ाए जा रहे है।

सुशासन का समग्र परिणाम जवाबदेही, पारदर्शिता, भागीदारी, प्रभावशीलता और दक्षता में दिखाई पड़ता है। नियम स्पष्ट और सरल हों जिसे आम आदमी आसानी से समझ सके, उसे कोई परेशानी न हो। प्रदेश के बहुसंख्यक किसानों की बेहतरी के लिये मुख्यमंत्री सिंचाई टास्क फोर्स का गठन तथा प्राकृतिक खेती को समृद्ध और आधुनिक बनाएं जाने की कोशिशें, मध्यप्रदेश में दाल मिशन की शुरूआत, बागवानी के क्षेत्रफल को 20 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 30 लाख हेक्टेयर किया जाने के निर्णय सुशासन की दिशा में बेहद सकारात्मक संदेश है।

सतत् विकास के कुछ दूरदर्शी तथा व्यापक उद्देश्य है जो भाषा, वर्ग, जाति तथा क्षेत्रीय पाबंदियों से परे है। समता तथा न्याय के साथ अधिकांश लोगों का जीवन स्तर पोषित हो और मुक्त, समावेशीय तथा भागीदारी निर्णय प्रक्रिया हो, यही सुशासित प्रदेश चाहता है। राम राज्य की अवधारणा पर आधारित लोककल्याण के कार्य मध्यप्रदेश के करोड़ों लोगों की बेहतरी का मार्ग प्रशस्त कर रहे है।

लेख : 0014 **बी**

स्वच्छ भारत मिशन में मध्यप्रदेश ने देश भर में श्रेष्ठता का परचम फहराया

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता को हमेशा श्रेष्ठ स्थान पर रखा। महात्मा गांधी देश में आधुनिक तरक्की के साथ-साथ स्वच्छ भारत की कल्पना भी करते थे। महात्मा गांधी स्वच्छता को जन आंदोलन बनाना चाहते थे। उनका मानना था कि स्वच्छ भारत से ही पूरी दुनिया में भारत की अच्छी पहचान बनेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गांधी के इस सपने को पूरा करने के लिये वर्ष 2014 से स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत की। उनके इस जन आंदोलन से स्वच्छ भारत मिशन में कचरे और कचरे में काम करने वाले लोगों के प्रति सोच बदली है। मध्यप्रदेश के सभी शहरों ने इस दिशा में पिछले 9 वर्षों में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास किये हैं। नागरिकों के सकारात्मक प्रयासों से व्यक्तिगत शौचालय, सार्वजनिक शौचालय सुविधा, अपशिष्ट प्रबंधन आदि मध्यप्रदेश में स्वच्छता जनआंदोलन को नई गति मिली है।

स्वच्छता के मामले में इंदौर बना देशभर में ब्रांड अम्बेसडर

देश में जब भी स्वच्छ शहरों की बात होती है तो लोग इंदौर का जिक्र जरूर करते है। इंदौर पिछले 7 वर्षो से सारे हिन्दुस्तान में सर्वश्रेष्ठ शहर के रूप में पहला पुरस्कार प्राप्त कर रहा है। अब इंदौर स्वच्छता के मामले में देश में ब्रांड अम्बेसडर बन गया है। इस पुरस्कार को लगातार प्राप्त करने में इंदौर के नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। नागरिक अब शहर की स्वच्छता को लेकर सजग और जागरूक हुये है। शहर को स्वच्छ रखने के महत्वपूर्ण कार्य में वे प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रहे है। पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने के लिये कार्बन उत्सर्जन को सीमित और कम करने के प्रयास किये जा रहे है। इंदौर शहर में इस मामले में आय भी प्राप्त की जा रही है। कार्बन क्रेडिट से राशि अर्जित करने वाला इंदौर देश का पहला शहर है।

स्वच्छ राज्य के रूप में मध्यप्रदेश की पहचान

स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) में मध्यप्रदेश ने वर्ष 2023 में श्रेष्ठ राज्य के रूप में देशभर में दूसरे स्थान की रैंकिंग प्राप्त की है। इस वर्ष राज्य के 6 शहरों ने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। स्वच्छ सर्वेक्षण में सफाई के मापदण्डों के अनुसार केन्द्रीय शहरी विकास मंत्रालय द्वारा स्टार रेटिंग भी दी जाती है। राज्य के कई शहरों ने अच्छी रेटिंग प्राप्त कर अपनी जगह बनाई है।

ओडीएफ सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाले शहरों की संख्या बढ़ी

प्रदेश में ओडीएफ डबल प्लस का सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाले निकायों की संख्या वर्ष 2023 में 361 हो गई है।

वर्ष 2022 में यह संख्या 324 हुआ करती थी। इसी के साथ मलजल प्रबंधन के मामले में 6 शहरों को वॉटर प्लस प्रमाणीकरण प्राप्त हुआ है। प्रदेश में खुले में शौच को स्थायी रूप से रोकने के लिये 5 लाख 79 हजार से अधिक जरूरतमंद परिवारों को व्यक्तिगत शौचालय तैयार कर प्रदान किये गये हैं। इसके साथ ही प्रदेश में 2 हजार 500 से अधिक सार्वजनिक शौचालय कॉम्पलेक्स का निर्माण भी कराया गया है। स्वच्छता आंदोलन में नगरीय विकास विभाग द्वारा कचरा मुक्त शहरों के रूप में विकसित करने के लिये भी कार्य किया जा रहा है। इस मामले में मध्यप्रदेश के 158 शहरों को यह प्रमाणीकरण प्राप्त हुआ । इस श्रेणी में इंदौर को 7 स्टॉर शहर और भोपाल को 5 स्टॉर शहर का दर्जा प्राप्त हुआ है। प्रदेश के नगरीय निकायों में सिंगल यूज प्लास्टिक और पॉलिथिन को प्रतिबंधित किया जा चुका है। स्थानीय निकायों में अपशिष्ट प्रसंस्करण क्षमता बढ़ाने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में प्रदेश 97 प्रतिशत से अधिक उत्सर्जित अपशिष्ट का प्रसंस्करण करने में सक्षम है।

ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन

वर्तमान में मध्यप्रदेश ठोस अपशिष्ट के लिये 2 प्रक्रियाओं पर कार्य कर रहा है। पहला कलस्टर आधारित परियोजनाओं का क्रियान्वयन। जिसमें केन्द्रीय निकाय में अन्य आस-पास के निकायों में कचरा लाकर उसका उचित विधि से प्रसंस्करण किया जा रहा है। इस पद्धति में 5 क्लस्टर्स में 60 नगरीय निकायों को शामिल किया गया है। प्रदेश में गीले कचरे से खाद बनाई जा रही है। रीवा और जबलपुर में प्रतिदिन संग्रहित होने वाले कचरे से बिजली का निर्माण किया जा रहा है। दूसरी पद्धति में नगरीय निकाय के संग्रहित होने वाले कचरे को निकाय स्वयं अपने साधनों से प्रसंस्कृत कर रहे हैं। इंदौर में 550 टन प्रतिदिन गीले कचरे को प्रतिदिन प्रसंस्करण की क्षमता की ईकाई स्थापित की गयी है। स्थापित इकाई से बायो सीएनजी का निर्माण किया जा रहा है। प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में 62 हजार सफाई मित्र स्वच्छता अभियान में दिन-रात सहयोग कर रहे है।

इन प्रयासों से संकल्प के साथ मध्यप्रदेश देश के अन्य प्रमुख राज्यों के लिये आदर्श बनकर उभरेगा और कचरा प्रबंधन क्षेत्र में प्रदेश की आत्मनिर्भरता की संकल्पना को साकार करेगा।

लेख : 0017 **बी**

रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना बनेगी श्रीअन्न (मिलेट्स) उत्पादक किसानों के लिये वरदान

रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना श्रीअन्न (मिलेट्स) उत्पादक किसानों के लिये वरदान साबित होगी। इससे मिलेट्स उत्पादक कृषकों को अपने उत्पादों का उचित दाम मिलेगा, जिससे अन्य किसानों को मिलेट्स उत्पादन के लिये प्रोत्साहन भी मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री बनने के बाद मिलेट्स उत्पादक किसानों के हित में योजना को लागू करने का ऐतिहासिक फैसला लिया। उन्होंने फैसला ही नहीं लिया, बल्कि 3 जनवरी को जबलपुर में हुई पहली ही कैबिनेट में योजना के प्रस्ताव को पारित भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के इस निर्णय ने बता दिया कि वे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा डिण्डोरी की मिलेट क्वीन श्रीमती लहरीबाई को सम्मानित करने के फैसले को नजीर मानते हुए प्रदेश को मिलेट प्रदेश बनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे।

रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में राज्य सरकार, महासंघ द्वारा क्रय किये गये कोदो-कुटकी पर किसानों को भुगतान किये गये न्यूनतम क्रय मूल्य के अतिरिक्त सहायता राशि के रूप में किसानों के खातों में एक हजार रूपये प्रति क्विंटल डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के तहत प्रदाय करेगी। इस योजना के लागू होने से श्रीअन्न (मिलेट्स) उत्पादक कृषकों को अधिक से अधिक लाभान्वित करने के लिये उनकी क्षमता संवर्धन, कोदो-कुटकी की विशिष्ट पैकेजिंग एवं ब्राँडिंग गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। इससे कृषकों को बेहतर विपणन व्यवस्था उपलब्ध कराते हुए उत्पादों का उचित मूल्य दिलाने में सहायता मिलेगी। योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये शासन ने पूर्व से संचालित लघु धान्य प्र-संस्करण, विपणन इत्यादि कार्यों में संलग्न एफपीओ/समूह को महासंघ के रूप में संगठित करने के लिये मार्गदर्शी निर्देश जारी किये हैं।

योजना से प्रदेश में श्रीअन्न उत्पादन में संलग्न कृषकों, एफपीओ/समूह को राज्य स्तरीय महासंघ के रूप में संगठित कर नवीन तकनीकी के उपयोग से श्रीअन्न, विशेषकर कोदो-कुटकी एवं उसके प्र-संस्कृत उत्पादों को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान स्थापित कराने में मदद मिलेगी। इससे एफपीओ द्वारा गठित फेडरेशन के माध्यम से श्रीअन्न के लिये वेल्यू चेन विकसित करने और कोदो-कुटकी की खेती में संलग्न कृषकों की आय में वृद्धि करने में मदद मिलेगी।

श्रीअन्न/कोदो-कुटकी के विपणन एवं प्र-संस्करण में कार्यरत एफपीओ महासंघ गठित किया जा रहा है। यह श्रीअन्न के उपार्जन, भंडारण, प्र-संस्करण, ब्रॉण्ड बिल्डिंग एवं उत्पाद विकास आदि कार्य करेगा। कम्पनी अधिनियम-2013 के अंतर्गत कम्पनी के रूप में महासंघ का गठन होगा। योजना के लाभार्थी एफपीओ फेडरेशन के सदस्य होंगे। ये ही सामान्य सभा के सदस्य भी होंगे एवं रोटेशन प्रणाली के आधार पर इनके द्वारा संचालक मण्डल के संचालकों एवं अध्यक्ष का चुनाव किया जायेगा। नवीन एफपीओ को महासंघ में शामिल करने में बोर्ड का निर्णय अंतिम रहेगा।

योजना के क्रियान्वयन की नोडल संस्था किसान-कल्याण तथा कृषि विकास को बनाया गया है। मॉनीटरिंग व्यवस्था को पुख्ता करने के लिये विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इससे योजना के क्रियान्वयन की उच्चतम स्तर पर बेहतरीन मॉनीटरिंग और समीक्षा होगी। इससे योजना के स्टेक होल्डर्स को लाभान्वित करने की प्रक्रिया में आने वाली दिक्कतों का निराकरण किया जाकर उन्हें अधिक से अधिक लाभ प्रदान किया जा सकेगा।

जनजातीय गरिमा की स्थापना के साथ आर्थिक समृद्धि का महाअभियान

केन्द्र और मध्य सरकार की साझा जनकल्याणकारी नीतियों, योजनाओं और विकास कार्यक्रमों से अब मध्यप्रदेश में जनजातीय गरिमा की पुनर्स्थापना का पुण्य कार्य शुरू हो गया है। साथ आर्थिक समृद्धि के नये पडाव हासिल करने का सिलसिला तेजी से चल पड़ा है।

मध्यप्रदेश में तीन विशेष पिछड़ी जनजातियों बैगा, भारिया एवं सहरिया के अलावा कई जनजातीयां रहती हैं। जनजातीय समुदाय के सामाजिक-शैक्षणिक विकास और संस्कृति संरक्षण और हर क्षेत्र में उन्हें प्रतिनिधित्व देने के नवाचारी प्रयासों को प्रत्येक योजना में शामिल किया गया है।

देश की 75 विशेष पिछड़ी जनजातियों के समग्र विकास के लिये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान - पीएम जनमन की शुरूआत की है। इन जनजातीय समूहों के सामाजिक और आर्थिक कल्याण से जुड़े पीएम जनमन में बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजातियों के जीवन में पूर्णतः बदलाव के लिये नई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में रई रणनीतियों के साथ प्रभावी प्रयास किये जायेंगे।

हर जरूरी सुविधा उपलब्ध होगी

पीएम जनमन में 9 प्रमुख केनद्रीय मंत्रालयों की 11 महत्वपूर्ण नागरिक सेवाएं इन विशेष पिछड़ी जनजातियों के घर तक पहुँचाई जायेंगी। पीएम जनमन में लक्षित वर्ग/जनजाति समूह के सभी लोगों को उनकी पसंदीदा डिजाईन के अनुसार शौचालय सहित पक्का मकान बनाकर दिया जायेगा। हर घर में नल से स्वच्छ जलापूर्ति की जायेगी। इन जनजातियों के गाँवों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिये गाँव-गाँव तक पक्की सड़कें बनाई जायेंगी। इनके घर तक बिजली आपूर्ति की स्थायी व्यवस्था की जायेगी। इन जनजतियों के सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिये और बेहतर प्रयास किये जायेंगे तथा आवश्यकतानुसार स्कूल सह छात्रावास भी निर्मित किये जायेंगे।

पीएम जनमन में इन विशेष पिछड़ी जनजातियों के कौशल विकास के लिये इन्हें व्यावसायिक/कौशल प्रशिक्षण देने के अलावा प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में भी कारगर प्रयास किये जायेंगे। बहुउद्देशीय केन्द्र और मोबाइल मेडिकल वेन में एएनएम के माध्यम से सबको स्वास्थ्य सुविधाओं की बेहतर पहुँच के दायरे में लाया जायेगा।

सौ से अधिक आबादी वाले प्रत्येक टोलों-मजरों में आंगनवाड़ी केन्द्र द्वारा बेहतर सुविधाओं की उपलब्धता एवं बहुसेवा केन्द्र में भी आंगनवाड़ी की सुविधा देकर सबको पोषण के लक्ष्य की पूर्ति की जायेगी। वनधन विकास केन्द्रों के जरिये इन जनजातियों की आजीविका में सुधार लाने के प्रयास किये जायेंगे। साथ ही इन जनजातियों के गाँव-गाँव तक बेहतर टेलिकॉम कनेक्टविटी भी सुनिश्चित की जायेगी।

पीएम जनमन में इन विशेष पिछड़ी जनजातियों को भारत सरकार की पहले से संचालित योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ भी दिलाया जायेगा। इन महाअभियान में लक्षित समुदाय को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत मुफ्त राशन एवं प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के अंतर्गत निःशुल्क एलपीजी कनेक्शन दिये जायेंगे। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत आयुष्मान भारत कार्ड, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत संस्थागत प्रसव, सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन एवं टीबी उन्मूलन के प्रयास तेज किये जायेंगे।

शैक्षणिक अधोसंरचना का विस्तार

इसके अलावा प्रधानमंत्री पोषण (पीएम पोषण) के माध्यम से इन जनजातियों के स्कूली बच्चों को मिड-डे-मील (मध्यान्ह भोजन) उपलब्ध कराया जायेगा। इन जनजातियों को बैंकिंग सुविधाओं का सीधा लाभ देने के लिये प्रधानमंत्री जनधन योजना से जोड़ा जायेगा। साथ ही इस वर्ग की बालिकाओं को सुकन्या समृद्धि योजना का लाभ भी दिलाया जायेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश में पीएम जनमन में होने वाले विभिन्न विकास कार्यों एवं कल्याण गतिविधियों को मंजूरी दी है। विशेष पिछड़ी जनजातीय क्षेत्रों के 23 जिलों में नए आंगनवाड़ी केन्द्रों, छात्रावासों, बहुउद्देश्यीय केंद्रों, सड़कों और आवासों का निर्माण किया जायेगा। "सक्षम आंगनवाड़ी एवं पोषण 2.0" योजना के अंतर्गत विशेष जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में 194 नवीन आंगनवाड़ी केन्द्रों की स्थापना एवं संचालन किया जायेगा। विशेष पिछड़ी जनजाति क्षेत्रों के ऐसे मजरे टोले, जिनकी जनसंख्या 100 या अधिक है और जहाँ आंगनवाड़ी केन्द्र नहीं है, वहाँ नए केन्द्र खोले जायेगे। पीएम-जनमन में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति बाहुल्य बसाहटों में निवासरत परिवार के बच्चों के लिये गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुविधा के साथ-साथ 20 जिलों के 55 स्थानों पर 110 बसाहटों के निकट बालक और बालिकाओं के लिये पृथक-पृथक छात्रावासों का निर्माण किया जायेगा।

वित्तीय वर्ष 2023-24 से पीएम-जनमन में विशेष पिछड़ी जनजाति बाहुल्य जिलों में 60 लाख रूपये प्रति केन्द्र की लागत वाले बहुउद्देशीय केन्द्रों का निर्माण किया जायेगा। विशेष पिछड़ी जनजाति क्षेत्रों में अलग-अलग 11 गतिविधियों के लिये मध्यप्रदेश में 125 बहुउदेशीय केन्द्रों के निर्माण की स्वीकृति दे दी है। इसके लिये शत-प्रतिशत वित्तीय सहायता भारत सरकार उपलब्ध करायेगी।

आवास सुविधाएं बढ़ेंगी

ग्रामीण विकास विभाग द्वारा क्रियान्वित की जाने वाली योजना में बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजातियों की बसाहट में सड़क संपर्क एवं आवास निर्माण की नवीन योजना को भी सैद्धांतिक अनुमोदन दे दिया गया है। विशेष पिछड़ी जनजातियों की मात्र 100 जनसंख्या वाले गाँवों को भी पक्की सड़क से जोड़ा जायेगा। कुल 981 संपर्क विहिन बसाहटों में 2403 किलोमीटर लम्बाई के 978 मार्ग एवं 50 पुल बनाये जायेंगे। इस कार्य के लिये 3 वर्षों में 2354 करोड़ रूपये निवेश किये जायेंगे। शासन द्वारा विशेष पिछड़ी जनजातीय बहुल क्षेत्रों में प्रति हितग्राही आवास निर्माण के लिये 2 लाख रूपये दिये जायेंगे। मनरेगा से अकुशल श्रमिक की 90/95 दिवस की मजदूरी के बराबर 27 हजार रूपये और स्वच्छ भारत मिशन से शौचालय निर्माण के लिये 12 हजार रूपये दिये जायेंगे। इससे प्रदेश में एक लाख से अधिक लक्षित हितग्राही परिवार लाभांवित होंगे।

पढ़ाई की पूरी व्यवस्था

जनजातीय क्षेत्रों में 63 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय संचालित हैं। इनमें 25 हजार विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना में कक्षा 11वीं, 12वीं एवं महाविद्यालयीन कक्षाओं में पढ़ रहे दो लाख से अधिक विद्यार्थियों को 319 करोड़ रूपये छात्रवृत्ति वितरित की जा चुकी है।

उच्च माध्यमिक शिक्षक, माध्यमिक शिक्षक तथा प्राथमिक शिक्षक संवर्ग में 16 हजार 776 पदों पर भर्ती की गई है। विभाग के अधीन 1078 आश्रम, 197 जूनियर छात्रावास, 1032 सीनियर छात्रावास, 210 उत्कृष्ट सीनियर छात्रावास एवं 154 महाविद्यालयीन छात्रावास संचालित हैं। इनमें एक लाख 31 हजार 470 विद्यार्थी निवासरत हैं। इसके अतिरिक्त विभाग में 22 हजार 913 प्राथमिक शालायें, 6788 माध्यमिक शालायें, 1109 हाईस्कूल, 898 उच्चतर

माध्यमिक विद्यालय एवं 26 क्रीड़ा परिसर भी स्वीकृत हैं। वर्तमान में 89 आदिवासी विकासखंडों और 6 विशेष पिछडी जनजाति बाहुल्य जिलों में कुल 380 बारहमासी छात्रावास व आश्रम संचालित हैं। इस वित्त वर्ष में 208 करोड़ रूपये छात्रावास शिष्यवृत्ति और 117 करोड़ 32 लाख रूपये आश्रम शिष्यवृत्ति दी जा चुकी है।

आवास भत्ता योजना में 140 करोड़ 13 लाख रूपये व्यय कर लगभग एक लाख 25 हजार से अधिक विद्यार्थियों को लाभ दिया गया है। विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना में 251 लाख रूपये व्यय किये जा चुके हैं। जनजातीय वर्ग के विद्यार्थियों के लिये 47 स्मार्ट क्लासेस का संचालन किया जा रहा है। विभाग के अधीन 94 सीएम राईज स्कूल संचालित किये जा रहे हैं। सीएम राईज स्कूलों के संचालन व अन्य प्रोत्साहन गतिविधियों के लिये 10 करोड़ 32 लाख रूपये व्यय किये जा चुके हैं। बस्ती विकास योजना में 627 कार्यों के लिये 42 करोड़ 80 लाख रूपये व्यय किये जा चुके हैं।

विभाग के अधीन संचालित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, कन्या शिक्षा परिसरों एवं आदर्श आवासीय विद्यालयों में प्रतियोगी परीक्षाओं की शिक्षा के अलावा 9 विद्यालयों में कोपा ट्रेड एवं 16 विद्यालयों में वोकेशनल कोर्सेस का संचालन किया जा रहा है। विभाग द्वारा छिंदवाडा, श्योपुर, शहडोल, डिडौरी एवं मंडला जिलें में कम्प्यूटर प्रशिक्षण कौशल विकास केन्द्रों में 100 विद्यार्थियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। राशन आपके द्वार योजना अंतर्गत 473 हितग्राहियों को 10 करोड़ रूपये से अधिक राशि मार्जिन मनी के रूप में दी जा चुकी है। 414 कस्टमाइज्ड वाहन तैयार किये गये हैं तथा 321 हितग्राहियों द्वारा आश्रित ग्रामों में राशन बांटा जा रहा है। अनूसुचित जनजाति प्रतिभा योजना में 19 लाख 20 हजार रूपये व्यय कर 76 विद्यार्थियों को लाभांवित किया जा चुका है। विभाग की सभी योजनाओं का लाभ पाने के लिये हितग्राहियों को स्वयं का प्रोफाइल पंजीयन कराने की सुविधा दी गई है। प्रोफाइल पंजीयन के अंतर्गत अब तक 22 लाख से अधिक प्रोफाइल पंजीकृत हो चुके है।

वन अधिकार अधिनियम 2006 के अंतर्गत 2 लाख 70 हजार दावों को मान्यता दी गई। वन अधिकार पत्रधारकों को कपिल धारा कूप, भूमि सुधार/मेढ़बंधान सिंचाई के लिये सिंचाई पंप और पाईप लाईन, आवास तथा शार्ट टर्म लोन एवं प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ भी दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना में वर्ष 2021-22 से 5 वर्षों हेतु 2523 चयनित ग्रामों के लिये 399 करोड़ 63 लाख रूपये भारत सरकार से मिल चुके हैं। संविधान के अनुच्छेद 275-एक के अंतर्गत जनजाति क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिये वित्त वर्ष 2023-24 में तीन वर्ष की अवधि के लिये 641 करोड़ 51 लाख रूपये की कार्ययोजना प्रस्तावित कर मंजूरी के लिये भारत सरकार को भेजी गई है।

रोज़गार के भरपूर अवसर

जनजातीय कार्य विभाग के अधीन मध्यप्रदेश आदिवासी वित्त एवं विकास निगम द्वारा संचालित 'भगवान बिरसा मुण्डा स्वरोजगार योजना' में अब तक 561 पात्र हितग्राहियों को 22 करोड़ 10 लाख 64 हजार 895 रूपये वित्तीय सहायता दी जा चुकी है। टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना में अब तक 490 पात्र हितग्राहियों को दो करोड़ 66 लाख 5 हजार 165 रूपये वितरित किये जा चुके हैं। सिर्फ 209 प्रकरण अंतिम निराकरण के लिये लंबित हैं। इस योजना में जनजातीय युवाओं को 10 हजार से एक लाख रूपए तक की स्व-रोज़गार परियोजनाओं के लिये वित्तीय सहायता बैंकों के माध्यम से दी जाती है। मुख्यमंत्री अनुसूचित जनजाति विशेष परियोजना वित्त पोषण योजना में जनजातीय युवाओं को आजीविका, स्वरोजगार एवं नवाचार से संबंधित सामुदायिक अधोसंरचना निर्माण तथा इससे जुड़ी अन्य गतिविधियों की दो करोड़ रूपये तक की परियोजनाओं का शत-प्रतिशत शासन अनुदान से किया जाता है।

लेख : 20 **बी**

मध्यप्रदेश में हैं श्रमिकों की सर्वाधिक सामाजिक सुरक्षा योजनाएं

मुख्यमंत्री पद ग्रहण करने के 15 दिनों में ही ठोस पहल करते हुए जिस प्रकार हुकुमचंद मिल इंदौर के मजदूरों को मुख्यमंत्री डा मोहन यादव ने उनका हक दिलाया उससे स्पष्ट हो गया है कि वे ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिनके लिये कमजोर और वंचित लोगों का हित सर्वोच्च प्राथमिकता है। हुकुमचंद मिल के मजदूरों के तीन दशकों का संघर्ष के बदले अब श्र मि क परिवारों में खुशियां लौट आई हैं। इस निर्णय से 4 हजार 800 से अधिक श्रमिकों को 464 करोड़ रुपये की बकाया राशि मिली यह मध्य प्रदेश के लिये एक ऐतिहासिक निर्णय साबित हुआ।

श्रम का सम्मान करने में मध्यप्रदेश सरकार हर कदम पर आगे रही है। कामगारों की सामाजिक सुरक्षा को मध्यप्रदेश में निरंतर बढ़ती रही है। मजदूरों के लिये 22 प्रकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के संचालन के साथ मध्यप्रदेश मजदूर परिवारों के हित सर्वाधिक योजनाएं चलाना वाला राज्य बन गया है। इन योजनाओं का लाभ देने के लिये श्रम सेवा पोर्टल काम कर रहा है।

मुख्यमंत्री जन कल्याण (संबल) योजना में पिछले डेढ़ दशकों में 4.92 लाख़ मजदूरों को 4749 करोड रुपये की सहायता दी ग़ई है। श्रमिक बन्धुओं के लिये सर्वाधिक योजनाएं चलाई जा रही हैं। इनमें अनुग्रह सहायता, स्थाई एवं अस्थाई रूप से अपंग होने पर सहायता, मध्य प्रदेश श्रम कल्याण बोर्ड के अंतर्गत श्रमिकों को शैक्षणिक छात्रवृत्ति योजना, शिक्षा पुरस्कार योजना, रियायती मूल्य पर कॉपी वितरण योजना, कन्या विवाह सहायता योजना, कल्याणी सहायता योजना, मुख्यमंत्री जन कल्याण प्रसूति सहायता योजना, कक्षा दसवीं और 12 वीं के लिये सुपर-5000 योजना, सायकिल और उपकरण खरीदने के लिये अनुदान योजना, उत्तम श्रमिक पुरस्कार योजना, श्रमिक साहित्य पुरस्कार योजना, अनुग्रह सहायता योजना जैसी योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

श्रम कल्याण मंडल की विभिन्न योजनाओं में 6646 श्रमिकों को 4 करोड़ 30 लाख 67 हजार रुपये की सहायता दी गई। चालू वित्त वर्ष में मंडल की विभिन्न योजनाओं में 2043 मजदूरों को एक करोड़ 41 लाख 18 हजार रुपये की सहायता दी गई है। इन योजनाओं के प्रारंभ से अब तक 5 लाख 86 हजार मजदूरों को 35 करोड़ 77 लाख की सहायता दी गई।

मध्य्रदेश स्लेट पेंसिल कर्मकार कल्याण मंडल के माध्यम से 2008-09 से 2022-23 तक 17,274 श्रमिकों को 8 करोड 55 लाख रूपये की सहायता दी गई। मध्यप्रदेश भवन एवं संनिर्माण कर्मकार मंडल में दर्ज सभी कामगारों को सहायता दी जा रही है।

श्रमिकों को ओवरटाइम के लिये उनकी सहमति जरूरी होगी। श्रमिकों को न्यूनतम वेतन और महंगाई भत्ता दिया जायेगा तथा समय सीमा में वेतन भुगतान करना होगा। कामगारों का स्वास्थ्य नियमित परीक्षण कराया जा रहा है। हाल में 35 शिविर लगाकर 7000 श्रमिकों का स्वास्थ्य परीक्षाण किया गया।

कानूनी सुरक्षा कवच

मुख्यमंत्री डा मोहन यादव मानते हैं कि आर्थिक विकास में श्रम शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। केंद्र सरकार ने 29 केंद्रीय कानूनों को एक साथ लाकर चार श्रम संहिताएं लागू की हैं। इनमें वेतन संहिता 2019, औद्योगिक संबंध संहिता 2020, सामाजिक सुरक्षा संहिता 2020 और व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता 2020 शामिल है। ये संहिताएं पुराने श्रम कानूनों को सरल बनाने और निर्णय प्रक्रिया में सुधार लाने के उददेश्य से लागू की गई हैं।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम मनरेगा में श्रमिकों की मजदूरी बढ़कर 202 रुपये हो जायेगी। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के माध्यम से जीवन और दिव्यांगता कवर दिया जाता है।

आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना स्वास्थ्य कवर प्रदान करती है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को वृद्धावस्था सुरक्षा प्रदान करने के लिये भारत सरकार ने प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन (पीएम-एसवाईएम) पेंशन योजना शुरू की। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम में वन नेशन वन राशन कार्ड योजना से सार्वजनिक वितरण प्रणाली, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, गरीब कल्याण रोजगार अभियान, महात्मा गांधी बुनकर बीमा योजना, दीन दयाल अंत्योदय योजना, पीएमस्वनिधि, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना आदि जैसी अन्य योजनाएं भी मजदूरों सहित असंगठित श्रेत्र के श्रमिकों के लिये उनकी पात्रता मानदंडों के आधार पर उपलब्ध हैं।

ई-श्रम पोर्टल के माध्यम से संगठित एवं असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों का पंजीयन कर उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती है। सामाजिक सुरक्षा का चक्र पहली बार इतने व्यापक तौर पर असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों तक पहुंचा है।

महिला श्रमिकों के संरक्षण, सुरक्षा

महिला श्रमिकों के संरक्षण, सुरक्षा और सशक्तिकरण के लिये कानूनी प्रावधान किये गये है। समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1978, मातृत्व हितलाभ अधिनियम, कारखाना अधिनियम में बदलाव कर विशेष प्रावधान बनाये गये है।

महिला श्रमिकों के कल्याण के लिये अनुदान सहायता योजना भी संचालित की जा रही है। मुख्यमंत्री श्रम स्वरोजगार योजना और जनकल्याण योजना से महिला श्रमिकों को सशक्त किया जा रहा है। सरकार महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों और क्षेत्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों के नेटवर्क के माध्यम से महिला श्रमिकों को प्रशिक्षण दे रही है। महिला श्रमिकों के लिये दत्तोपंत ठेंगड़ी नेशनल बोर्ड फॉर वर्कर्स एजुकेशन एंड डेवलपमेंट (तत्कालीन केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड) द्वारा विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। उन्हें उनके अधिकारों, कर्तव्यों और सुरक्षात्मक प्रावधानों के बारे में निरंतर जागरूक किया जा रहा है।

संबल योजना से मिला संबल

असंगठित श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिये मुख्यमंत्री जन कल्याण संबल 2.0 योजना से श्रमिकों को संबल मिला है। योजना में सामान्य मृत्यु होने पर 2 लाख रुपये की सहायता, दुर्घटना मृत्यु में 4 लाख रुपये की सहायता, आंशिक दिव्यांगता में 1 लाख रुपये की सहायता एवं स्थाई दिव्यांगता में 2 लाख रुपये सहायता राशि मिलती है। वर्ष 2022-23 में सहायता के 1 लाख 55 हजार 261 प्रकरणों में 1580 करोड़ रुपये से अधिक राशि दी गई।

संगठित क्षेत्र के श्रमिकों तथा उनके परिवारजनों के कल्याण के लिये मध्य प्रदेश श्रम कल्याण निधि अधिनियम 1982 के प्रावधानों के अंतर्गत मध्य प्रदेश श्रम कल्याण मंडल गठित किया गया है। मंडल द्वारा विभिन्न योजनाएं जैसे उत्तम श्रमिक पुरस्कार योजना, कल्याणी सहायता योजना,अंतिम संस्कार सहायता योजना, विवाह सहायता योजना, अनुग्रह सहायता आदि योजनाएं संचालित की जा रहीं है। मंडल द्वारा वर्ष 2023- 24 में विभिन्न योजनाओं में 10748 श्रमिकों को 5 करोड़ 44 लाख 71 हजार 907 रुपये की सहायता दी गई है।

निर्माण कार्यों में लगे श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा के लिये मध्य प्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के माध्यम से 2023-24 में 4 लाख 53 हजार 487 श्रमिकों का नवीन पंजीयन किया गया है। मंडल द्वारा निर्माण श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये 17 योजनाएं संचालित है जिनमें प्रसूति सहायता योजना,आयुष्मान भारत योजना, मुख्यमंत्री जन कल्याण योजना, निर्माण पीठा श्रमिक आश्रय योजना आदि शामिल है।

मध्य प्रदेश राज्य प्रवासी श्रमिक आयोग के माध्यम से अन्य राज्यों में श्रमिक के रूप में कार्य कर रहे थे या कार्य कर रहे हैं उन्हें शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ दिलाया जा रहा है।

न्याय के लिये नवाचार

श्रमिकों से संबंधित सभी प्रकार के अर्द्धन्यायिक प्रकरणों का निराकरण पारदर्शिता के साथ निर्धारित समय-सीमा में करने के लिये लेबर केस मैनेजमेंट सिस्टम बनाया गया है। श्रमिक बिना कार्यालय में उपस्थित हुए अपने निवास से या किसी भी एमपी ऑनलाईन कियोस्क के माध्यम से प्रकरण ऑनलाईन दर्ज कर सकते है तथा प्रकरण से संबंधित अद्यतन जानकारी प्राप्त कर सकते है। असंगठित श्रमिकों के पंजीयन के लिये ई-श्रम पोर्टल उपलब्ध है। दिसंबर, 2023 तक मध्यप्रदेश में 1.73 करोड असंगठित श्रमिकों को ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत किया गया है। श्रमोदय विद्यालयों के अंतर्गत भर्ती किये जाने वाले विद्यार्थी को संपूर्ण एडमिशन प्रक्रिया ऑनलाइन कर दी गई है।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के मार्गदर्शन में मजदूरों के कल्याण के लिये नवाचारी प्रयास किये जा रहे हैं। जल्दी ही इन प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे।

लेख 21

संकल्प से सिद्धि तक

मध्यप्रदेश सरकार जनता की सच्ची सेवक

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारी डबल इंजन सरकार ने प्रदेश के चहुंमुखी विकास एवं हर नागरिक का कल्याण करने की जिम्मेदारी उठाई है। यह यात्रा सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के मूलमंत्र पर गरीब कल्याण का लक्ष्य लेकर अनवरत आगे बढ़ती रहेगी।

विकसित भारत-विकसित मध्यप्रदेश

पीएमश्री धार्मिक पर्यटन हेली सेवा तथा
पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा का शुभारंभ
धार्मिक पर्यटन विकास का महत्वपूर्ण कदम

पीएमश्री एयर एम्बुलेंस का शुभारंभ
गंभीर बीमार तथा दुर्घटनाग्रस्त मरीजों को एयरलिफ्ट से समय पर उपचार की सुविधा।
आयुष्मान कार्ड धारकों को निःशुल्क लाभ

₹35000 करोड़ लागत की 3.37 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता की **पार्वती- कालीसिंध-चंबल लिंक** परियोजना स्वीकृत

सागर में **रानी अवंतीबाई लोधी** विश्वविद्यालय,
गुना में **क्रांतिवीर तात्या टोपे** विश्वविद्यालय एवं
खरगोन में **क्रांतिसूर्य टंट्या भील** विश्वविद्यालय का शुभारंभ

₹350 करोड़ की लागत से **इंदौर में एलिवेटेड कॉरिडोर** का भूमिपूजन।
भोपाल, देवास, ग्वालियर, जबलपुर एवं **सतना** में भी
एलिवेटेड कॉरिडोर प्रगतिशील

औद्योगिक विकास को तेज करने के उद्देश्य से उज्जैन में दो दिवसीय
रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का सफल आयोजन

प्रधानमंत्री जी द्वारा **सायबर तहसील परियोजना**
का सभी 55 जिलों में शुभारंभ
जनहितैषी विषयों पर त्वरित निर्णय- **बीआरटीएस हटाने का फैसला**

गेहूं के **समर्थन मूल्य** ₹2275 के साथ ₹125 प्रति क्विंटल
बोनस देने का निर्णय

तेंदूपत्ता संग्राहकों का मानदेय ₹3000 प्रति बोरा
से बढ़ाकर किया ₹4000

मोदी की गारंटी है आज - मध्यप्रदेश में विकास राज

मध्यप्रदेश शासन

मोदी की गारंटी

यानी गारंटी पूरी होने की गारंटी

मध्यप्रदेश का उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा कदम

पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस

मध्यप्रदेश में हर जिला मुख्यालय पर चिन्हित एक शासकीय महाविद्यालय का पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उन्नयन, इसके लिए **₹ 460 करोड़** का प्रावधान

महाविद्यालयों में सभी प्रकार के पाठ्यक्रम होंगे उपलब्ध

अब 'डीजी लॉकर' से डिग्री और मार्कशीट की उपलब्धता सुलभ

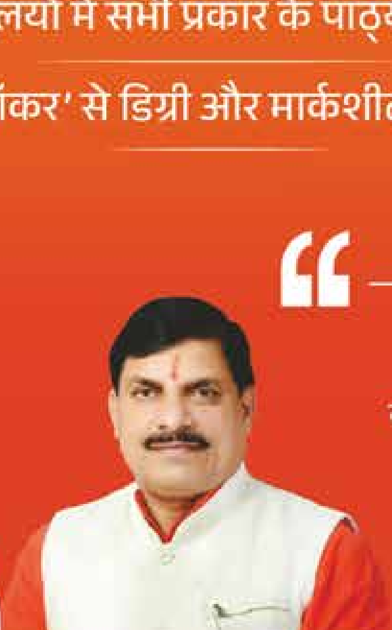

" युवाओं में क्षमताओं का निर्माण कर, उन्हें कौशलवान और रोज़गार सक्षम बनाने में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस अहम भूमिका निभाएंगे।

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश